सौन्दर्य की रेखाएँ

इंगलैंड के अमर उपन्यासकार ऑस्कर वाइल्ड के
जगत्-विख्यात उपन्यास
'पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे' का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक
रामस्वरूप दुबे

१९५७
आत्माराम एण्ड सन्स
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

प्रकाशक
रामलाल पुरी
आत्माराम एण्ड सन्स
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

मूल्य ५)

मुद्रक
श्यामकुमार गर्ग
हिन्दी प्रिंटिंग प्रैस
क्वीन्स रोड, दिल्ली-६

अपनी बात

"दि पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे" को मैंने प्रथम बार १५ अगस्त '५० को पढ़ा। इस उपन्यास ने मुझे इतना प्रभावित किया—यह मुझे इतना अच्छा लगा कि अपने हिन्दी भाषा-भाषी भाई-बहिनों को इसका रसास्वादन कराने का लोभ मैं संवरण न कर सका। सितम्बर से ही मैंने इसका अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया और तभी इसके धारावाहिक प्रकाशन की बात 'सुमित्रा' मासिक के सम्पादक से तय भी हो गयी। 'सौन्दर्य की रेखाएँ' नाम से इसका अनुवाद क्रमशः सन् १९५२ तक प्रकाशित होता रहा। पुस्तक रूप में इसे शीघ्र प्रकाशित कराने की तीव्र इच्छा होते हुए भी जीवन के अनेक अनिवार्य झंझटों तथा अपने मन के अनुकूल प्रकाशक न मिलने के कारण इसके प्रकाशन में लगभग डेढ़ वर्ष का विलम्ब हो गया। आज मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'सौन्दर्य की रेखाएँ' को सुन्दरतम् रूप में प्रकाशित करने की क्षमता रखने वाले 'आत्माराम एण्ड सन्स' ने मेरे मन का भार हल्का कर दिया है।

उपन्यास के अनुवाद कार्य में 'क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर' के भूतपूर्व प्राध्यापक श्री लियोनार्ड शिफ तथा प्रयाग विश्वविद्यालय के रिसर्च स्कॉलर श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी से मुझे जो मूल्यवान सहायता मिली है। उसके लिए मैं उक्त दोनों सज्जनों का हृदय से आभारी हूं।

१०८, ८७ तीसरी मंजिल
पी० रोड, कानपुर
१०-६-५४

रामस्वरूप दुबे

दो शब्द

श्री रामस्वरूप दुबे, एम० ए०, एल-एल० बी० ने विश्व-विख्यात साहित्यकार आस्कर वाइल्ड की अमर रचना "दि पिक्चर आफ डोरियन ग्रे" का "सौन्दर्य की रेखाएं" रूप में अनुवाद करने में असाधारण सफलता प्राप्त की है। विश्व में आस्कर वाइल्ड के आज करोड़ों पाठक हैं किन्तु जो अंग्रेजी नहीं जानते वे हिन्दी भाषा-भाषी भी इस श्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक उपन्यास का रसास्वादन कर सकें, इसके लिए दुबे जी स्वयं माध्यम बने हैं, आस्कर वाइल्ड की कृतियों का जिस किसी ने भी पढ़ा वह प्रभावित हुए बिना न रह सका। हमें विश्वास है कि इस हृदयग्राही अनुवाद में पाठकों को मौलिक उपन्यास जैसा ही आनन्द आयगा। दुबे जी अनेक विदेशी रचनाओं के सफल अनुवादक ही नहीं वरन् स्वयं अच्छे लेखक भी हैं। 'नए चित्र' और 'कन्हैया' इनके दो मौलिक कहानी-संग्रह हैं और 'स्वातंत्र्य कथा' एक सुन्दर खंड काव्य। कहानी और कविता के अतिरिक्त इनके एकांकी नाटक, समीक्षात्मक लेख तथा बालोपयोगी रचनाओं को हिन्दी के श्रेष्ठ मासिक पत्रों में अच्छा स्थान मिलता रहा है।

इस उपन्यास को हिन्दी के पाठकों के हाथों में देते हुए हमें अत्यंत आनन्द हो रहा है। आशा है कि पाठकों को तो इसमें पूर्ण सन्तोष होगा ही, हिन्दी के मौलिक उपन्यासाकार भी इस उपन्यास के सजीव वर्णन, सफल चरित्र-चित्रण तथा अनुभूति के अनुपम वाक्यों से बहुत कुछ सीख सकेंगे।

प्रकाशक

ऑस्कर वाइल्ड

(सन् १८५४-१९०० ई०)

ऑस्कर वाइल्ड का जन्म सन् १८५४ में डबलिन में हुआ था। ट्रिनिटी कॉलेज, डबलिन तथा मैगडेलन कालेज, ऑक्सफोर्ड में शिक्षित इस विश्व-विख्यात साहित्यकार की प्रतिभासर्वतोमुखी थी। वह वाल्टर पेटर (Walter Pater)—जो कि सौंदर्य आन्दोलन (Aesthetic Movement) का नेता माना जाता था—के सिद्धान्तों के प्रति आकर्षित था। वाल्टर पेटर से प्रभावित होकर कला के लिए मानने वाले—कला का जीवन में कोई उपयोग न मानने वाले उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध के नए लेखकों में ऑस्कर वाइल्ड अग्रणी था। इसकी प्रवृत्ति अत्यंत विलासी थी। नैतिक नियंत्रण के बहिष्कार ने जब अधिक जोर पकड़ा और अनेक अफवाहें फैलने लगीं तो सन् १८९५ में उसे 'रीडिंग गैओल' (Reading Gaol) नाम के कारागार में दो वर्ष के लिए बन्दी का जीवन व्यतीत करना पड़ा। लोग उसे नीच-प्रकृति का मनुष्य समझने लगे। परिणाम यह हुआ कि उसकी कृतियों को उसके जीवन काल में यथोचित मान न मिल सका। कारागार से मुक्ति के बाद वह फ्रांस में रहा और वहीं ४६ वर्ष की अवस्था में सन् १९०० में उसकी मृत्यु हो गई।

ऑस्कर वाइल्ड ने कवि, कथाकार, नाटककार तथा आलोचक के रूप में सभी साहित्यांगों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उसका पहला काव्य-संग्रह सन् १८८१ में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में लोगों को हुड, टेनीसन, आरनल्ड, रीमेटी, स्विनबर्न आदि सौन्दर्य-प्रेमी कवियों की प्रतिध्वनि मिली। "दि बैलेड ऑफ रीडिंग गैओल" (The Ballad of Reading Gaol) नामक काव्य ग्रंथ में ऑस्कर वाइल्ड के यथार्थ जीवन की अनुभूतियों—जीवन की कठोर एवं क्रूर अनुभूतियों के स्पष्ट दर्शन होते हैं। इस कृति में उसके विलासपूर्ण भावों की प्रेरणा देखने को नहीं मिलती। मृत्यु के पश्चात् सन् १९४९ में प्रकाशित क्रूर अनुभूतियों के पूर्ण संग्रह "डि प्रो-फंडिस" (De Pro-Fundis) को इधर बहुत पसन्द

किया गया "दि इम्पार्टेन्स ऑफ बियिंग अर्नेस्ट" (The Importance of Being Earnest), "लेडी विन्डरमियर्स फैन" (Lady Windermere's Fan), "ए वीमैन ऑफ नो इम्पार्टेन्स" (A Woman of No Importance) तथा "दि आइडियल हस्बैंड" (The Ideal Husband) उसके तर्कपूर्ण कथोपकथनों से युक्त नाटक हैं। "दि पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे" (The Picture of Dorian Gray) उसका सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस उपन्यास में ऑस्कर वाइल्ड की सभी विशेषताओं के दर्शन होते है। "लार्ड आर्थर सैविल्स क्राइम" (Lord Arthur Savile's Crime) "दि स्फिंक्स विदाउट ए सीक्रेट" (The Sphinx Without A Secret), "दि कैंटरवाइल घोस्ट" (The Canterville Ghost), "दि मॉडल मिल्यानियर" (The Model Millionaire), "दि यंग किंग" (The Young King), "दि बर्थ डे ऑफ दि इन्फैन्टा" (The Birthday of The Infanta), "दि फिशरमैन एंड हिज़ सोल" (The Fisherman And His Soul), "दि स्टार-चाइल्ड" (The Star-Child), "दि हैप्पी प्रिन्स" (The Happy Prince), "दि नाइटिंगेल एंड दि रोज़" (The Nightingle And The Rose), "दि सैल्फिश जाइंट" (The Selfish Giant), "दि डिवोटेड फ्रैंड" (The Devoted Friend), "दि रिमार्केबिल राकेट" (The Remarkable Rocket) बड़ी-छोटी सुन्दर कहानियाँ हैं। काव्य, कथा तथा नाटक के अतिरिक्त उसके निबन्ध और आलोचना ने भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया। "दि क्रिटिक एज एन आर्टिस्ट" (The Critic As An Artist) निबन्ध में उसने सौंदर्य-दर्शन के पक्ष में अत्यंत सबल तर्क उपस्थित किये हैं। इसमें उसका कथन है कि कला ही मनुष्य को पूर्णता प्राप्त करा सकती है। उसकी "इन्टेन्संस" (Intentions) नामक आलोचना की पुस्तक साहित्य और कला, कथन-विष, वेश-परिवर्तन आदि विषयों से सम्बंधित वाद-विवाद-पूर्ण सुन्दर गद्य का नमूना है। उसकी आलोचना की भी भाषा अत्यंत संयत, सुन्दर एवं भावपूर्ण है।

सौंदर्य की रेखाएँ

प्राक्कथन

कलाकार सौंदर्य की सृष्टि करता है। कला का उद्देश्य कला को उभारना और कलाकार को छिपाना होता है। आलोचक वही है जो सौंदर्य-विषयक अपने विचारों को दूसरे ढंग से अथवा दूसरे रूप में प्रकट कर सके। उत्कृष्ट तथा निकृष्ट प्रकार की आलोचना आत्म-कथा का ही एक रूप है। जो सौंदर्य में कुरूपता खोजते हैं वे प्रभावहीन होते हैं और उनके विचार दूषित होते हैं। ऐसा करना दोषपूर्ण होता है। जो सौंदर्य में सुन्दरता की खोज करते है उनका मानसिक धरातल ऊँचा है। ऐसों के ही लिए आशा है। वे ही चुने हुए व्यक्ति होते हैं जिनके लिए सुन्दरता सौंदर्य का ही अर्थ रखती है। पुस्तक नैतिक है अथवा अनैतिक, ऐसा कुछ नहीं है। पुस्तकें भली प्रकार अथवा बुरी प्रकार लिखी जाती हैं, बस। उन्नीसवीं सदी की यथार्थता के प्रति अरुचि—बर्बर का दर्पण में अपना ही मुख देखकर क्रोध करने के समान है। उन्नीसवीं सदी की रोमांस के प्रति अरुचि क्रोधित बर्बर के दर्पण देखने के समान है।

व्यक्ति का नैतिक जीवन कलाकार का विषय है किन्तु कला की नैतिकता दोषपूर्ण माध्यम को दोषरहित रूप में प्रयुक्त करने में सन्निहित है। कोई भी कलाकार कुछ भी सिद्ध करने की इच्छा नहीं करता। सत्य को भी सिद्ध किया जा सकता है।

कलाकार की सहानुभूति नैतिक नहीं होती। कलाकार में नैतिक सहानुभूति का होना उसकी शैली का अक्षम्य ढंग होता है।

कलाकार अस्वस्थ नहीं होता, उसमें सभी कुछ प्रकाशित करने की सामर्थ्य होती है।

कलाकार के लिए कला के साधन हैं विचार और भाषा। दोष और गुण उसकी कला के उपादान हैं।

रीति के दृष्टिकोण से प्रत्येक कला का आदर्श संगीतज्ञ की कला है। भावना के दृष्टिकोण से अभिनेता का चातुर्य ही उसकी रीति है।

बाह्य और उसका चिह्न ही कला का एकमात्र रूप है। जो बाह्य के भीतर पैठने की चेष्टा करते हैं वे खतरा उठाते हैं और जो चिह्न को पढ़ने की चेष्टा करते हैं वे भी उन्हीं जैसे हैं। कला दर्शक का चित्रण करती है उसके जीवन का नहीं। किसी कला-कृति के विषय में मत-वैभिन्य होने का अर्थ यह होता है कि कृति नवीन है, जटिल है और शक्तिपूर्ण है। आलोचकों का मत-वैभिन्य कलाकार के लिए अनुकूल होता है।

उपयोगी कृति का निर्माता उस समय तक क्षम्य है जब तक वह अपनी कृति की प्रशंसा नहीं करता। निरर्थक वस्तु के निर्माण का बहाना उसकी अत्यन्त प्रशंसा में प्रकट हो जाता है।

सभी कला बिलकुल व्यर्थ है।

—आस्कर वाइल्ड

स्टूडियो का वातावरण गुलाब की सुगन्धि से व्याप्त था और जब वाटिका के वृक्षों में ग्रीष्म की हलकी हवा बहने लगती है तो बकाइन की घनी, इत्र जैसी सुगन्धित अथवा लाल फूलोंवाली झाड़ी की भीनी सुगन्धि खुले हुए द्वार से प्रवेश पा जाती है।

फारस के बने कालीन की दीवाल से लगी लम्बी गद्दी पर लेटे और नियमानुसार अनेक सिगरेटों का धूम्रपान करते हुए लॉर्ड हेनरी वाटन लैबरनम[1] के शहद-से मीठे और शहद जैसे ही रँग के फूलों की झलक पा जाता था। इन छोटे से पौधों के भय से काँपती-सी टहनियाँ अग्नि-शिखा-सी सुन्दरता के भार को कठिनता से वहन करती प्रतीत होती थीं, और जब-तब उड़कर निकलनेवाली चिड़ियों की अद्भुत छाया विशाल खिड़की पर पड़े हुए टसरी रेशम के परदे पर धीरे-धीरे पड़कर क्षणिक जापानी प्रभाव-सा डालती थीं। उसे टोकियो के उन पीले और कठिन परिश्रम से थके चेहरोंवाले पेंटरों का ध्यान आ जाता जो कला के स्थिर माध्यम द्वारा तीव्रता और गति का भाव प्रकट करते थे। लम्बी और न कटी हुई घास में से राह निकलती हुई शहद की मक्खियों का उदास स्वर अथवा बहते हुए जंगली शहद का थका देने वाला चक्कर शान्ति को अधिक कष्टदायक बनाता-सा प्रतीत होता था। लन्दन का क्षीण कोलाहल वाद्य के दूर से सुनायी देते हुए अंतिम स्वर के समान था।

कमरे के मध्य सीधे चौखटे में जड़ा हुआ असाधारण सुन्दर व्यक्तित्व वाला आदम-कद एक चित्र खड़ा था और उसके सामने कुछ ही दूर पर स्वयं चित्रकार बेसिल हावर्ड बैठा हुआ था। यह वही चित्रकार था जिसके

---

१. पीले चमकीले फूलों का छोटा-सा पौधा।

कुछ वर्ष पूर्व गायब हो जाने पर जनता बहुत उत्तेजित हो गयी थी और उसके विषय में अनेक विचित्र अनुमान लगाये गये थे।

पटुता से चित्रित किये गये मनोहर तथा सुन्दर रूप को चित्रकार ने जब देखा तो आनन्द की एक मुस्कान उसके चेहरे पर खेल गयी—ऐसी मुस्कान जो वहीं स्थित होती-सी प्रतीत हुई। किन्तु अचानक ही वह चिहुँका और आँखें बन्द करते हुए उसने पलकों पर अँगुलियाँ इस प्रकार रख लीं मानों वह किसी ऐसे अनोखे स्वप्न को अपने मस्तिष्क में बन्दी बनाये रखना चाहता हो जिसके भंग हो जाने का उसे भय हो।

'बेसिल, यह तुम्हारी सर्वोत्तम कृति है, आज तक की सर्वोत्तम !'—लार्ड हेनरी ने धीमे स्वर में कहा, 'आगामी वर्ष तुम इसे ग्रासवेनर निश्चय ही भेज दो। एकेडेमी अत्यन्त विशाल और गँवारू लगती है। मैं जब कभी वहाँ गया तो या तो दर्शकों की इतनी भीड़ पायी कि चित्रों को देख ही न सका और त्रसित हुआ अथवा इतने अधिक चित्र दिखलायी दिये कि मैं दर्शकों को न देख सका जो और भी बुरा था। ग्रासवेनर ही एक-मात्र उपयुक्त स्थान है।'

'मेरा विचार इसे कहीं भेजने का नहीं है,'—उसने अपने सिर को पीछे की ओर उसी भद्दे ढंग से उछालते हुए उत्तर दिया जिसे देखकर उसके आक्सफोर्ड के मित्र उस पर हँसा करते थे।

'नहीं, मैं इसे कहीं न भेजूँगा।'

लार्ड हेनरी ने पलकें ऊपर उठायीं और उसकी आश्चर्यचकित दृष्टि अफीम से विषाक्त बड़े सिगार के हल्के नीले मालाकार, लहरदार चक्कर बनाते हुए धुएँ को पार कर गयी।

'इसे कहीं न भेजोगे ? मेरे प्यारे साथी, ऐसा क्यों ? इसका कोई कारण ? तुम चित्रकार लोग कितने बेढंगे होते हो। तुम लोग संसार में प्रसिद्धि पाने के लिए एक कार्य करते हो और जब तुम्हें प्रसिद्धि प्राप्त हो जाती है तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि तुम उससे पिंड छुड़ाना चाहते हो। यह तुम लोगों की मूर्खता है, क्योंकि संसार में चर्चा होने से कुछ बुरा है तो यही कि तुम्हारे विषय में कोई बात न हो। इस प्रकार का चित्र तुम्हें इंगलैंड के समस्त तरुणों में प्रमुख स्थान प्रदान करेगा और

भावुक वृद्ध तुमसे ईर्षा करने लगेंगे।'

'मैं जानता हूँ कि तुम मेरी हँसी उड़ाओगे,' उसने उत्तर दिया, 'किन्तु सचमुच ही मैं इसे प्रदर्शित नहीं कर सकता। इसमें मैंने बहुत सीमा तक स्वयं को ही व्यक्त किया है।'

लार्ड हेनरी लम्बी गद्दी पर फैल गया और हँस पड़ा।

'हाँ, मैं जानता था कि तुम हँसोगे, फिर मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सही है।'

'बहुत सीमा तक स्वयं को इसमें व्यक्त किया है! मैं कहता हूँ कि तुम इतने शेखीखोर हो यह मैं न जानता था और वास्तव में मुझे तुम दोनों में कोई समानता नहीं दिखलाई देती। तुम्हारा खुर्दरा उग्र चेहरा तथा कोयल जैसे काले बाल और यह तरुण एडोनिस (कामदेव), जिसका शरीर हाथीदाँत तथा गुलाब की पत्तियों से निर्मित प्रतीत होता है! बल्कि प्यारे बेसिल, यह नारकीसस[1] है और तुम—तुम बुद्धि प्रकाशित करते हो। लेकिन सुन्दरता वास्तविक सुन्दरता का वहीं अन्त हो जाता है जहाँ बुद्धि-प्रकाशन का आरम्भ होता है। बुद्धि स्वयं अतिशयोक्ति का एक ढंग है और मुखाकृति के मेल की नाशक है। जहाँ कोई सोचने बैठा कि उसकी नाक अथवा उसका माथा या कुछ ऐसा ही भयानक अंग प्रमुखता प्राप्त कर लेता है। बुद्धि-जीवी मनुष्यों को देखो। वे कितने भयानक लगते हैं। हाँ, सिवाय गिर्जाघर के, लेकिन वहाँ उन्हें सोचना नहीं पड़ता। एक पादरी अस्सी वर्ष की अवस्था तक भी यही कहता रहता है जो उसे अठारह वर्ष की अवस्था में कहने के लिए बतलाया गया था और उसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि वह सदैव पूर्ण प्रसन्न दिखलाई देता है। तुम्हारा रहस्यपूर्ण तरुण मित्र—जिसका नाम तुमने कभी नहीं बतलाया पर जिसका चित्र वास्तव में मुझे मोहित कर लेता है, कभी नहीं सोचता। मुझे इसका पूर्ण विश्वास है। वह कोई मस्तिष्कहीन सुन्दर व्यक्ति है। जाड़े में जब हमें कोई फूल देखने को नहीं मिलते और गर्मियों में

---

१. एक यूनानी युवक जो जल में प्रतिबिम्बित अपनी ही छाया पर आसक्त हो गया था।

जब अपना बुद्धि-व्यवसाय करने के लिए हमें आवश्यक होता है उस समय उसे सदैव यहाँ होना चाहिए। बेसिल, आत्मप्रशंसा मत करो, तुम में उसकी तनिक भी समानता नहीं है।'

'हेनरी, तुम मेरा अभिप्राय नहीं समझे'—चित्रकार ने उत्तर दिया—'वास्तव में मैं उस जैसा नहीं हूँ यह मैं भली भाँति जानता हूँ। सचमुच उस जैसा होने पर मुझे दुख होता। तुम कंधे सिकोड़ते हो ? मैं सच कह रहा हूँ। शारीरिक और मानसिक अन्तर में भी एक घातकता है। घातकता, जो इतिहास में शासकों के डगमगाते पगों का पीछा करती आई है। अपने साथियों से भिन्न न होना ही अच्छा होता है। इस संसार में कुरूप और मूर्खों को भी बहुत कुछ प्राप्त है। वे आराम से बैठ सकते हैं और मुँह फाड़कर देख सकते हैं। यदि वे विजय के विषय में कुछ नहीं जानते तो कम-से-कम हार के ज्ञान से भी वे मुक्त हैं। हमको जिस प्रकार रहना चाहिए वैसे ही वे बखेड़ों से दूर, निष्पक्ष और शान्त जीवन यापन करते हैं। वे न किसी पर विपत्ति ढाते हैं और न विरोधियों द्वारा विपत्ति में पड़ते ही हैं। हेनरी, तुम्हारी मर्यादा और धन, मेरा मस्तिष्क—जैसा भी है, मेरी कला—जो भी इसका मूल्य हो, डोरियन ग्रे का सुन्दर मुखड़ा—देवताओं ने हमें जो कुछ भी दिया है उसके लिए हम सभी को भुगतना होगा, भयानक रूप में भुगतना होगा।'

'डोरियन ग्रे ? क्या उसका यही नाम है ?'—लार्ड हेनरी ने स्टूडियो के आरपार बेसिल के समीप जाते हुए पूछा।

'हाँ, उसका यही नाम है। मैं तुम्हें यह नहीं बतलाना चाहता था।'

'लेकिन क्यों ?'

'ओह, मैं समझा नहीं सकता। जब मैं व्यक्तियों को बहुत पसन्द करता हूँ तो उनके नाम कभी किसी को नहीं बतलाता। बताना उनके एक भाग से वंचित हो जाने जैसा है। गुप्त रखना मुझे प्रिय हो गया है। ऐसा करने से हमारा यह वर्तमान जीवन हमारे लिए रहस्यपूर्ण और आश्चर्यजनक हो जाता है। साधारण वस्तु भी गुप्त रखने से आनन्ददायक हो जाती है। अब जब मैं शहर छोड़ता हूँ तो यह कभी नहीं बतलाता कि कहाँ जा रहा हूँ। यदि मैं बतला देता हूँ तो अपना सभी

आनन्द खो बैठता हूँ। यह एक मूर्खतापूर्ण आदत है, यह मैं मानता हूँ, लेकिन इससे जीवन में बड़ा रोमांस आ जाता है। मेरे विचार में तुम इस कारण मुझे बहुत बड़ा मूर्ख समझते होगे।'

'कदापि नहीं'—लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—'कदापि नहीं, मेरे प्यारे बेसिल ! तुम संभवतः भूल रहे हो कि मैं विवाहित हूँ और विवाह का एक जादू यह है कि दोनों के लिए प्रवंचना का जीवन परमावश्यक हो जाता है। मैं इस बात की जानकारी कभी नहीं रखता कि मेरी पत्नी कहाँ है और मेरी पत्नी यह कभी नहीं जानती कि मैं क्या कर रहा हूँ। जब हम मिलते हैं—हम प्रायः मिलते हैं, जब हम एक साथ दावत पर जाते हैं अथवा ड्यूक के यहाँ जाते हैं, हम लोग अत्यन्त गम्भीर होकर एकदम सारहीन गप्पें एक दूसरे को सुनाते हैं। मेरी पत्नी इस काम में अत्यन्त निपुण है, वास्तव में मुझसे कहीं अधिक प्रवीण है। वह अपनी तारीखों में कभी नहीं गड़बड़ाती और मैं सदैव गड़बड़ा जाता हूँ। लेकिन जब वह मुझे खोज लेती है तो झगड़ती बिलकुल नहीं। कभी-कभी मैं इच्छा करने लगता हूँ कि वह मुझ से झगड़े, किन्तु वह मुझपर केवल हँसती ही है।'

'हेनरी, अपने विवाहित जीवन के विषय में जिस ढंग से तुम बातें करते हो उससे मुझे घृणा होती है'—बेसिल हावर्ड ने वाटिका की ओर जानेवाले द्वार की ओर बढ़ते हुए कहा, 'मुझे विश्वास है कि तुम सचमुच ही एक अत्यन्त सफल पति हो लेकिन तुम्हें अपने पर लज्जा आती है। तुम एक असाधारण व्यक्ति हो। तुम कभी नैतिक चर्चा नहीं करते। तुम्हारी कुटिलता रौबमात्र है। स्वाभाविक होना भी निरा रौब ही है और अत्यन्त उत्तेजक रौब !'—लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा और दोनों तरुण साथ-साथ बाहर वाटिका में चले गये और लम्बी लारेल झाड़ी की छाया में एकान्त में पड़े एक लम्बे बाँस पर बैठ गये। चिकने पत्तों पर सूर्य का प्रकाश फिसल रहा था और घास में डेजी के सफेद फूल काँप रहे थे।

कुछ देर बाद लार्ड हेनरी ने अपनी घड़ी निकाल ली।

'बेसिल, मुझे अब जाना ही है'—वह बड़बड़ाया—'और जाने से पूर्व मैं तुम से उस प्रश्न का उत्तर देने के लिए आग्रह करता हूँ जो कुछ समय

पूर्व मैंने तुमसे किया था ।

'वह क्या है ?'—चित्रकार ने भूमि पर निर्निमेष दृष्टि डाले हुए कहा ।

'तुम अच्छी तरह जानते हो ।'

'मैं नहीं जानता, हेनरी ।'

'अच्छा, मैं बतलाता हूँ । तुम मुझे यह समझाओ कि डोरियन ग्रे के चित्र को प्रदर्शित क्यों नहीं करोगे ? मैं वास्तविक कारण जानना चाहता हूँ ।

'मैंने तुम्हें वास्तविक कारण बतला दिया था ।'

'नहीं, तुमने नहीं बतलाया । तुमने कहा था कि उसमें बहुत सीमा तक तुम स्वयं हो इसी से । और यह तुम्हारा बचपन है ।'

'हेनरी'—बेसिल हावर्ड ने उसके मुख पर दृष्टि डालते हुए कहा—'भावाभिभूत होकर जो भी चित्र बनाया जाता है वह स्वयं चित्रकार का होता है बैठे हुए 'माडेल' का नहीं । बैठनेवाला तो केवल एक घटना है, अवसर है । चित्रकार उसे चित्रित नहीं करता बल्कि रंगे चित्रपट पर वह चित्रकार स्वयं ही अभिव्यक्त हो जाता है । इस चित्र को प्रदर्शित न करने का कारण यही है कि मुझे भय है कि मैंने स्वयं अपनी आत्मा का भेद इसमें खोल दिया है ।'

लार्ड हेनरी हँसा, 'और वह क्या है ?'—उसने पूछा ।

'मैं तुम्हें बतलाऊँगा'—हावर्ड ने कहा, किन्तु घबराहट का भाव उसके मुख पर झलक आया ।

'मैं आशा की मूर्ति बन गया हूँ, बेसिल !'—उसके साथी ने उसे ताकते हुए कहा ।

'ओह, बतलाने को अधिक नहीं है हेनरी,'—चित्रकार ने उत्तर दिया—'और मुझे भय है कि तुम कठिनता से समझ सकोगे । संभव है, तुम विश्वास न कर सको ।'

लार्ड हेनरी मुस्कराया, उसने झुककर घास से 'डेजी' का एक सुर्ख फूल तोड़ लिया और उसे देखने लगा ।

'मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं समझ जाऊँगा'—ध्यान से सुनहरी पौधे के श्वेत पुष्प को देखते हुए उसने उत्तर दिया—और जहाँ तक विश्वास

करने का प्रश्न है मैं प्रत्येक विश्वसनीय बात का विश्वास कर सकता हूँ।'

वायु ने कुछ पुष्पों को हिलाकर वृक्षों से गिरा दिया और तारक-समूह-जैसे बकाइन के पुष्प शिथिल वायु में इधर-से-उधर उड़ने लगे। दीवाल के पास एक टिड्ढा गाने लगा और नीले डोरे-जैसा एक पतला और लम्बा परदार सर्प अपने भूरे महीन वस्त्र-जैसे परों पर तेजी से तैरता-सा चला गया। लार्ड हेनरी को ऐसा लगा मानो वह बेसिल हावर्ड के हृदय की धड़कन सुन रहा हो और आने वाली बात उसे विस्मित करने लगी।

कुछ देर बाद चित्रकार ने कहा—'बात केवल यह है कि दो महीने पूर्व मैं लेडी ब्रेण्डन के यहाँ एक सामाजिक सम्मेलन में गया था। तुम जानते हो कि हम बेचारे कलाकारों को जब-तब समाज में इसलिए प्रकट होना पड़ता है कि जनता हमें जंगली समझने की भूल न करे; संध्या-कालीन कोट और एक श्वेत टाई पहिने—जैसा कि तुमने मुझ से एक बार कहा था कि कोई भी—दलाल भी सभ्य होने की प्रसिद्धि पा सकता है, मैं गया था। हाँ, तो जब प्रकोष्ठ में प्रवेश पाने के दस मिनट बाद तक मैं बड़े लोगों, आवश्यकता से अधिक वस्त्रों से लदी विधवा बेगमों और उकता डालने वाले विद्वानों, से बातें करता रहा तो अचानक मैंने ऐसा अनुभव किया कि कोई मुझे ताक रहा था। मैं घूमा और पहिली बार डोरियन ग्रे के दर्शन किये। जब हमारी आँखें मिलीं तो मैं स्वयं को पीला पड़ता अनुभव करने लगा। एक विचित्र भय-सा मुझ पर छा गया। मैंने यह समझ लिया कि मैं ऐसे व्यक्ति के सम्मुख था जिसके सामने बने रहने पर उसका आकर्षण मेरे स्वभाव, मेरी आत्मा और मेरी कला को भी आत्मसात कर लेगा। मैं अपने जीवन पर कोई भी बाह्य प्रभाव नहीं चाहता था। हेनरी, तुम स्वयं जानते हो कि मैं स्वभाव से ही कितना स्वतन्त्र हूँ। मैं सदैव ही स्वयं अपना स्वामी रहा हूँ—कम-से-कम डोरियन ग्रे से मिलने से पूर्व तक। उसके बाद—लेकिन मैं नहीं जानता कि तुम्हें कैसे समझाऊँ, मुझे कुछ ऐसा संकेत-सा मिलता प्रतीत हुआ कि मेरे जीवन का महान् परिवर्तन निकट ही आ गया है। मुझे एक विचित्र अनुभूति थी कि भाग्य में मेरे लिए अतीव प्रसन्नता और अतीव दुख दोनों

ही थे। मैं कुछ भयभीत-सा हुआ और प्रकोष्ठ के बाहर जाने के लिए मुड़ पड़ा। ऐसा करने के लिए मेरी आत्मा ने नहीं, बल्कि कायरता ने प्रेरित किया था। पलायन की चेष्टा के लिए मैं स्वयं को कोई सम्मान नहीं दे सकता।'

'आत्मा और कायरता वास्तव में एक ही हैं, बेसिल ! आत्मा फर्म का व्यापारिक नाम है, इससे अधिक और कुछ नहीं।'

'मुझे इस पर विश्वास नहीं है, हेनरी ! और मेरे विचार में तुम भी इस पर विश्वास नहीं करते। तथापि, जो भी मेरा उद्देश्य रहा हो, सम्भव है, गर्व-भावना रही हो, क्योंकि मैं बहुत घमण्डी था। मैं निश्चय ही द्वार की ओर बढ़ा पर लेडी ब्रेण्डन के कारण लड़खड़ा गया। 'मि० हावर्ड, तुम भाग जाने के लिए तो इतनी जल्दी नहीं जा रहे हो ?'—वह चिल्ला पड़ी। 'तुम उसकी तीखी आवाज से परिचित हो ?'

'हाँ, वह सौंदर्य के अतिरिक्त सभी बातों में मोरनी है'—हेनरी ने अपनी लम्बी अस्थिर अँगुलियों से 'डेजी' के टुकड़े करते हुए कहा।

'मैं उससे छुटकारा नहीं पा सका। वह मुझे राजवंशियों, बिल्ले तथा पट्टियों से अलंकृत महापुरुषों और शुक-नासिका वाली तथा टियरा[1] पहिने प्रौढ़ महिलाओं के पास ले गई। उसने मुझे अपना परम मित्र बतलाया। इससे पूर्व मैं उससे केवल एक बार मिला था पर उसने तो मुझे मान देने का विचार कर लिया था। मेरे विचार में मेरा कोई चित्र उस समय बहुत प्रसिद्ध हो गया था, कम-से-कम पेनी[2] वाले पत्रों में उसकी चर्चा हो गई थी और उन्नीसवीं सदी की अमरता का यही माप है। अचानक मैं उसी तरुण के सम्मुख पड़ गया जिसके व्यक्तित्व ने मुझमें इतनी विचित्र हलचल उत्पन्न कर दी थी। हम लोग अत्यन्त समीप थे, लगभग एक दूसरे का स्पर्श पाये हुए से। हमारे नेत्र पुनः मिले। यह मेरी विचार-हीनता थी पर मैंने लेडी ब्रेण्डन से उसका परिचय कराने के लिए कहा। सम्भवतः यह ऐसी विचारहीनता नहीं थी, यह अवश्यम्भावी

---

१. स्त्रियों के सामने के बालों पर पहिनने का हार।

२. एक विदेशी सिक्का।

था। बिना किसी परिचय के ही हम लोगों का वार्तालाप हो गया होता, मुझे इसका पूरा विश्वास है। बाद को डोरियन ने मुझे ऐसा बताया था। उसने भी यह अनुभव किया था कि एक दूसरे का परिचय हमारे भाग्य में था।'

'और लेडी ब्रेण्डन ने इस अनोखे तरुण का वर्णन कैसे किया?' उसके साथी ने पूछा, 'मैं जानता हूँ कि वह अतिथियों को अपना संक्षिप्त परिचय बड़ी शीघ्रता से दे डालती है। मुझे स्मरण है, जब वह मुझे पट्टियों और बिल्लों से ढँके कठोर और अरुण मुख वृद्ध के पास ले गई तब मेरे कान में आश्चर्यजनक वर्णन इतने उच्च स्वर में किया गया जिसे प्रकोष्ठ में बैठे प्रत्येक व्यक्ति ने भली प्रकार सुन लिया होगा। मैं तो भाग खड़ा हुआ। मैं अपने लिए व्यक्तियों की खोज करना स्वयं पसन्द करता हूँ, लेकिन लेडी ब्रेण्डन अपने अतिथियों के साथ वही व्यवहार करती हैं जो एक नीलाम करने वाले अपने सामान के साथ। वह या तो एकदम असंगत बातें बतलाती है अथवा जो वह जानना चाहता है उसे छोड़कर उसके विषय में सभी अन्य बातें बता डालती हैं।'

'बेचारी लेडी ब्रेण्डन! तुम उस पर अन्याय कर रहे हो हेनरी!'—हावर्ड ने उदासीन स्वर में कहा।

'मेरे प्यारे साथी, वह फैशनेबिल नारी के स्वागत-कक्ष की स्थापना करने चली और खोल सकी केवल एक रेस्ट्राँ! मैं उसकी प्रशंसा कैसे कर सकता था? लेकिन उसने डोरियन ग्रे के विषय में क्या कहा यह मुझे बतलाओ?'

'ओह, कुछ इस प्रकार—"सुन्दर छोकरा—बेचारी प्यारी माँ और मैं एकदम अभिन्न। यह बिलकुल भूलती हूँ कि क्या करता है—भय है कि वह कुछ नहीं करता—अरे हाँ, प्यानो बजाता है—अथवा वायलिन, क्यों मिस्टर ग्रे?" हम में से कोई भी अपनी हँसी न रोक सका और हम तभी मित्र हो गये।'

'हास्य मित्रता के लिए तनिक भी बुरा आरम्भ नहीं है और अन्त के लिए तो बहुत ही अच्छा है'—तरुण लार्ड ने दूसरा डेजी तोड़ते हुए कहा।

हावर्ड ने अपना सिर हिलाया ।

'हेनरी, तुम समझते नहीं हो कि मित्रता क्या है।'—वह बड़बड़ाया, 'अथवा शत्रुता ही क्या है । तुम हर एक को पसन्द करते हो अर्थात् सबके प्रति उदासीन हो ।'

'तुम कितने अन्यायी हो !'—लार्ड हेनरी अपने हैट को पीछे की ओर करते हुए और उलझे हुए श्वेत चमकदार रेशमी डोरों जैसे लघु बादलों को ऊपर देखते हुए चिल्लाया—'हाँ, यह तुम्हारा बहुत बड़ा अन्याय है। मैं व्यक्तियों का अन्तर बहुत बड़ा देखता हूँ । मैं सुन्दर मित्र पसन्द करता हूँ, अच्छे चरित्रवालों से परिचय प्राप्त करता हूँ और बुद्धिमानों से शत्रुता रखता हूँ । शत्रु बनाने योग्य मनुष्यों को छाँटने में बहुत सावधान नहीं रहा जा सकता । मेरा कोई भी शत्रु मूर्ख नहीं है । उन सबका मस्तिष्क कुछ न कुछ उन्नत अवश्य है और इसी कारण वे मुझे पसन्द करते हैं । क्या मैं घमण्डी हूँ ?'

'मेरे विचार में ऐसा ही था, हेनरी ! लेकिन तुम्हारे श्रेणी-विभाजन के अनुसार मैं केवल परिचित ही रहा होऊँगा ।'

'मेरे प्यारे बेसिल, तुम परिचित से बहुत कुछ अधिक हो ।'

'और एक मित्र से बहुत कम । मेरे विचार में एक भाई जैसा ?'

'ओह, भाई ! मैं भाइयों की परवाह नहीं करता । मेरा बड़ा भाई मरने का नहीं और छोटे भाई कभी भी कुछ करते प्रतीत नहीं होते !'

'हेनरी !'—हावर्ड क्रोधित होकर चिल्लाया ।

'मेरे प्यारे साथी, मैं पूर्ण गम्भीरता के साथ नहीं कह रहा हूँ फिर भी मैं अपने सम्बन्धियों को तुच्छ समझे बिना नहीं रह सकता । मेरे विचार में, ऐसा संभवतः इस कारण है कि, कोई भी अपने जैसे ही दोषों से पूर्ण व्यक्तियों का साथ नहीं दे सकता । उच्च वर्ग के कथित दोषों के ऊपर होनेवाले अंग्रेजी प्रजातन्त्र के क्रोध से मुझे सहानुभूति है । अधिकांश व्यक्ति यह सोचते हैं कि मद्य-पान, मूर्खता और अनैतिकता पर उनका ही विशेषाधिकार होना चाहिए और यदि हम में से कोई मूर्ख बनता है तो वे अपनी रक्षित वस्तुओं पर अनधिकृत आक्रमण समझते हैं । जब निर्धन साउथवर्क ने तलाक के लिए न्यायालय में प्रवेश किया, उनका क्रोध अत्युग्र

था और मैं अब भी नहीं सोच सकता कि निम्न श्रेणी के दस प्रतिशत मनुष्य भी ठीक ढंग से रहते हैं।'

'तुमने जो कुछ कहा उसके एक शब्द से भी मैं सहमत नहीं हूँ, बल्कि हेनरी, मेरा तो विश्वास है कि तुम स्वयं इन विचारों के नहीं हो।'

लार्ड हेनरी ने अपनी नुकीली बादामी दाढ़ी पर हाथ फेरा और फुंदनेदार आबनूस के बेंत से पेटेंट लैदर के जूतों के अग्रभाग को खट-खटाया।

'बेसिल, तुम कैसे अंग्रेज हो। तुमने यह राय दुबारा दी है। यदि कोई एक सच्चे अंग्रेज के सामने अपना विचार रखता है तो सदैव के उतावलेपन में वह स्वप्न में भी नहीं सोचता कि विचार ठीक है अथवा गलत। उसके सामने महत्त्वपूर्ण बात यही रहती है कि वह स्वयं उस पर विश्वास करता है अथवा नहीं। विचार कितना महान् है इसका कोई सम्बन्ध व्यक्त करनेवाले की सच्चाई से नहीं है। वास्तव में संभावनाएँ ये हैं कि मनुष्य जितना अधिक कपटी होगा उसका विचार उतना ही बौद्धिक होगा, क्योंकि वह विचार उसकी आवश्यकताओं, इच्छाओं तथा ईर्षा से रंजित न होगा। तथापि मैं तुमसे राजनीति, समाजविज्ञान अथवा मनोविज्ञान पर वाद-विवाद करने का विचार नहीं रखता हूं। सिद्धान्तों की अपेक्षा मुझे व्यक्ति अधिक पसन्द है और सिद्धान्तहीन व्यक्तियों को मैं संसार की प्रत्येक वस्तु से अच्छा समझता हूँ। मुझे डोरियन ग्रे के विषय में और बतलाओ। उससे तुम्हारा मिलना कितनी बार होता है?'

'प्रतिदिन, यदि मैं उसे प्रतिदिन न देख पाऊँ तो प्रसन्न न रह सकूँ। वह मेरे लिए परमावश्यक है।'

'कितनी विचित्र बात है। मैं सोचता था कि तुम अपनी कला के अतिरिक्त और किसी की कभी चिन्ता ही न करोगे।'

'अब वही मेरी सम्पूर्ण कला है'—चित्रकार ने गंभीरता से कहा, 'हेनरी, मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि संसार के इतिहास में केवल दो महत्त्व-पूर्ण युग हैं—पहिला कला के लिए एक नये माध्यम का होना और दूसरा कला के लिए एक नये व्यक्तित्व का होना। तैलचित्र के आविष्कार का जो महत्त्व वेनिस के रहनेवालों के लिए था, वही महत्त्व किसी दिन डोरियन

ग्रे के चेहरे का मेरे लिए होगा। यही नहीं कि मैं उससे भेंट करता हूँ, रेखाचित्र बनाता हूँ, स्केच बनाता हूँ—वास्तव में मैं यह सब कर चुका हूँ, बल्कि वह मेरे लिए एक मॉडल अथवा चित्र के लिए बैठने वालों से कहीं अधिक है। मैं तुम्हें यह नहीं बताऊँगा कि उसका जो उपयोग मैंने किया है उससे मुझे संतोष नहीं मिला अथवा यों कहलो कि वह इतना सुन्दर है कि कला उसका चित्रण करने में असमर्थ है। ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे कला प्रदर्शित न कर सके, और मैं जानता हूँ कि डोरियन ग्रे से मिलने के बाद मैंने जो काम किया है वह अच्छा है, मेरे जीवन का सर्वोत्तम काम है। लेकिन किसी विचित्र ढंग से—क्या तुम मुझे समझ सकोगे?—उसके व्यक्तित्व ने मुझे कला में एक नए ढंग का निर्देश दिया, एक बिलकुल ही नये ढंग की शैली। मैं वस्तुओं को भिन्न दृष्टिकोण से देखा करता हूँ। भिन्न दृष्टिकोण से ही मैं उन पर विचार करता हूँ। मैं जीवन को इस प्रकार चित्रित कर सकता हूँ जिस प्रकार पहले नहीं कर सकता था। 'विचार के दिनों में आकार का एक स्वप्न' यह किसने कहा है? मैं भूलता हूँ। लेकिन डोरियन ग्रे मेरे लिए यही रहा है। इस छोकरे की केवल दृष्टिगोचर होनेवाली उपस्थिति—यद्यपि उसकी आयु २० वर्ष से अधिक है पर मेरे लिए वह छोकरे से अधिक नहीं है। केवल उसकी दृष्टिगोचर होनेवाली उपस्थिति—आह, उस सबका क्या अर्थ हुआ, क्या तुम समझ सकोगे? मुझे आश्चर्य है। अचेतनावस्था में वह एक नये स्कूल की परिभाषा मुझे समझाता है, एक स्कूल जिसमें "रोमांटिक स्प्रीट" का प्रबल उत्साह होगा, यूनानी उत्साह की पूर्णता। आत्मा और शरीर का सामंजस्य—यह कितना है। हमने अपने पागलपन में इन दोनों को अलग कर दिया है और भद्दी वास्तविकता का आविष्कार कर लिया है, एक शून्य आदर्श! हेनरी, काश तुम जानते कि डोरियन ग्रे मेरे लिए क्या है। तुम्हें मेरे उस "लैंडस्केप" की याद है जिसके लिए एगन्यू मुझे उतना बड़ा मूल्य दे रहा था पर मैंने उसे न दिया? यह मेरी सबसे अच्छी कृतियों में से एक है। और ऐसा क्यों है? क्योंकि जब मैं उसे चित्रित कर रहा था तो डोरियन ग्रे मेरे समीप बैठा था। कोई अच्छा प्रभाव उससे मुझ में आ रहा था और मैंने अपने जीवन में पहली बार सादे चौखटे में वह आश्चर्य

देखा जिसके लिए मैं सदैव उत्सुक रहता था पर सदैव ही वंचित रह जाता था।'

'बेसिल, यह अनोखी बात है। मैं डोरियन ग्रे के दर्शन अवश्य करूँगा।'

हावर्ड उठकर खड़ा हो गया और वाटिका में ऊपर-नीचे चहलकदमी करने लगा। थोड़ी देर बाद वह लौट आया।

'हेनरी,' उसने कहा—'डोरियन ग्रे ही मेरी कला का लक्ष्य है। तुम्हें उसमें विशेषता न दिखती हो पर मुझे उसमें सभी कुछ दिखाई देता है। अपनी अनुपस्थिति में वह मेरी कला में और भी अधिक स्पष्ट हो उठता है। जैसा कि मैंने कहा है वह मेरे लिए नये ढंग का संकेत है। कुछ टेढ़ी रेखाओं और रंगों की मनोहरता तथा सूक्ष्मता में मैं उसे पाता हूँ, बस।'

'तब तुम उसके चित्र को प्रदर्शित क्यों न करोगे ?'—लार्ड हेनरी ने प्रश्न किया।

'क्योंकि बिना किसी उद्देश्य के ही मैं इस विचित्र कलात्मक मूर्ति-पूजा के भाव को प्रदर्शित कर बैठा हूँ जिसके विषय में मैंने वास्तव में कोई चर्चा नहीं की। वह इसके विषय में कुछ भी नहीं जानता और कभी कुछ जानेगा भी नहीं। लेकिन संसार संभवतः इसका अनुमान कर ले और मैं संसारवालों की तुच्छ तथा गौर से पूछताछ करती-सी आँखों के सामने अपनी आत्मा को नग्न न करूँगा। मेरी आत्मा उनके सूक्ष्म दर्शन के लिए कभी भी न रखी जायगी। उसमें मेरी बहुत कुछ झलक है, बहुत कुछ झलक है।'

'कवि तुम जैसे सावधान नहीं होते। वे अपने भावावेग के प्रकाशन का उपयोग जानते हैं। आजकल भग्न-हृदय के अनेक संस्करण प्रकाशित होते हैं।'

'इसके लिए वे घृणा के पात्र हैं'—हावर्ड चिल्लाया, 'एक कलाकार को सुन्दरतम वस्तुओं की सृष्टि करनी चाहिए, पर अपने जीवन का कुछ भी उनमें न रखना चाहिए। हम एक ऐसे युग में रहते हैं जिसमें कला को आत्म-कथा समझा जाता है। सौंदर्य के गूढ़ सार से हम वंचित हो गये हैं। किसी दिन मैं बतलाऊँगा कि दुनिया क्या है और इसीलिए दुनिया मेरे डोरियन ग्रे के चित्र को कभी न देख सकेगी।'

'बेसिल, मेरे विचार में तुम भूलते हो पर मैं तुम से तर्क न करूँगा। बुद्धिहीन सदैव तर्क करते हैं। मुझे बताओ कि क्या डोरियन ग्रे तुम्हें बहुत चाहता है ?'

चित्रकार कुछ क्षण विचार-निमग्न रहा।

'वह मुझे पसन्द करता है'—कुछ रुककर उसने उत्तर दिया—'मैं जानता हूँ कि वह मुझे चाहता है। वास्तव में मैं उसकी बहुत प्रशंसा करता हूँ। जिन बातों के विषय में मैं यह जानता हूँ कि उन्हें कह डालने से मुझे दुख होगा उन्हीं बातों को उससे कह डालने में मुझे एक अनोखा आनन्द प्राप्त होता है। वह मेरा मनमोहन है और हम स्टूडियो (चित्र-शाला) में बैठे हजारों बातें किया करते हैं। कभी-कभी वह निरा विचार-हीन हो जाता है और मुझे दुखित करने में वास्तविक आनन्द-सा लेने लगता है। हेनरी, ऐसे अवसरों पर मैं अनुभव करता हूँ कि मैंने एक ऐसे व्यक्ति को आत्म-समर्पण कर दिया है जो उसे कोट में लगाने के एक फूल, अहं की तुष्टि के लिए एक साज, ग्रीष्म के एक दिन के लिए एक आभूषण-सा समझता है।'

'ग्रीष्म में दिन बड़े होते हैं, बेसिल !'—लार्ड हेनरी बुदबुदाया—'संभवतः उसकी अपेक्षा तुम अधिक शीघ्र ऊबोगे। यह एक सुखप्रद विचार नहीं है पर इसमें कोई सन्देह नहीं है कि सौंदर्य की अपेक्षा प्रतिभा अधिक स्थायी है। यही कारण है कि सब अधिक शिक्षा पाने के लिए इतना कष्ट उठाते हैं। जीवन के लिए इस घोरतम संघर्ष में हम कुछ ऐसा चाहते हैं जो स्थायी हो इसीलिए हम स्थायी बनाने की मूर्खतापूर्ण आशा में अपने को तलछट और तथ्यों से भर लेते हैं। सर्वज्ञ मनुष्य—यही आज का आदर्श है। और सर्वज्ञ मनुष्य का मस्तिष्क एक भयानक वस्तु है; एक विचित्र वस्तुओं के संकलन की दूकान है, सब वस्तुएँ विशाल और मिट्टी (निरर्थक) और दाम उचित मूल्य से कहीं अधिक। मेरे विचार में तुम्हीं पहिले ऊबोगे। कोई दिन ऐसा आयेगा जब तुम अपने मित्र को देखकर उसे चित्र के लिए अपरत्र समझोगे अथवा उसके भाव इत्यादि में परिवर्तन पाओगे। तुम अपने मन में उसे बहुत बुरा-भला कहोगे और गंभीरता के साथ सोचोगे कि उसने तुम्हारे साथ अनुचित

व्यवहार किया है। दूसरी बार जब तुम उससे मिलोगे तो तुम उसके प्रति रूखे और उदासीन होगे। ऐसी स्थिति अत्यन्त शोचनीय होगी क्योंकि वह तुम में परिवर्तन कर देगी। जो कुछ भी तुमने मुझे बतलाया है एक यथार्थ रोमांस है। इसे कला का रोमांस कहा जा सकता है और किसी भी प्रकार के रोमांस की सबसे बड़ी बुराई यह है कि मनुष्य उस भावानुभूति को खो बैठता है।'

'हेनरी, ऐसी बात मुँह से न निकालो। जब तक मैं जीवित हूँ डोरियन ग्रे का व्यक्तित्व मुझ पर छाया रहेगा। मेरी अनुभूति को तुम अनुभव नहीं कर सकते। तुम प्रायः बदल जाते हो।'

'वाह, मेरे प्यारे मित्र बेसिल! इसी कारण तो मैं अनुभव कर सकता हूँ। जो सच्चे हैं वे प्रेम का ही परिचय पाते हैं, परन्तु जो निर्मोही हैं वे ही प्रेम की विषमताओं का परिचय पाते हैं।'—और लार्ड हेनरी ने एक सुन्दर चाँदी की डिबिया को हल्का-सा आघात दिया और आत्मानुभूति तथा तुष्टि का रुख लिये सिगरेट पीने लगा, मानो उसने एक वाक्यांश में संसार को समेटकर रख दिया हो।

चहचहाती हुई गौरइयों की खड़खड़ाहट आइवी[1] के हरे सुनहरे पत्तों से आ रही थी और नीले बादलों की छायाएँ स्वालो[2] पक्षियों के समान एक दूसरे का पीछा करते हुए घास पार कर रही थीं। वाटिका कितनी आनन्ददायक थी। और अन्य व्यक्तियों के भावावेग कितने प्रसन्नतापूर्ण थे—उनके विचारों से कहीं अधिक प्रसन्नतापूर्ण; उसे ऐसा प्रतीत हुआ। अपनी आत्मा और अपने मित्र के आसक्तिपूर्ण भाव—वे जीवन की मनोहरता थे। मूक आनन्द के साथ उसने उस थकानेवाले 'लंच' की कल्पना कर ली जिसे उसने बेसिल हावर्ड के साथ इतनी देर तक बातें करके खो दिया था। यदि वह अपनी चाची के यहाँ गया होता तो लार्ड हुडबाडी से अवश्य मिला होता और समस्त वार्त्ता निर्धनों को खिलाने तथा आदर्श निवास-गृहों की आवश्यकता पर केन्द्रित रहती। प्रत्येक वर्ग ने उन

---

१. सदा हरी रहनेवाली एक लता।

२. पतले पैर और लम्बे डैनों का तेज उड़ने वाला एक पक्षी।

आदर्शों के महत्त्व पर उपदेश दिये होते जिनके व्यवहृत करने की उनके अपने जीवन में कोई आवश्यकता न थी। धनी समृद्धि के मूल्य पर बोले होते और आलसियों की वाणी परिश्रम की मर्यादा पर मुखरित हुई होती। उन सबसे पलायन अच्छा रहा था। जैसे ही उसने अपनी चाची के विषय में सोचा उसे एक विचार आता प्रतीत हुआ। वह हावर्ड की ओर घूमा और बोला—

'मेरे प्यारे साथी, मुझे अभी याद आया···'

'क्या याद आया, हेनरी ?'

'कि मैंने डोरियन ग्रे का नाम कहाँ सुना।'

'कहाँ सुना ?'—हावर्ड ने कुछ क्रुद्ध होकर पूछा।

'इतना क्रोध मत करो, बेसिल ! मैंने अपनी चाची लेडी अगथा के यहाँ सुना था। उन्होंने मुझे बतलाया था कि उन्हें एक अनोखा तरुण मिल गया जो 'ईस्ट एण्ड' में उनकी सहायता करेगा और जिसका नाम डोरियन ग्रे था। यह कहने के लिए मुझे बाध्य होना पड़ता है कि उन्होंने उसे सुन्दर नहीं बतलाया। स्त्रियाँ—कम से कम अच्छी स्त्रियाँ सौंदर्योपासक नहीं होतीं। उन्होंने कहा था कि वह बहुत उत्साही है और उसका स्वभाव बहुत अच्छा है। मैंने शीघ्र ही एक ऐसे व्यक्ति की कल्पना की जो चश्मा पहिने, शिथिल बालोंवाला भयानक रूप से चित्तियोंयुक्त और पैरों से खूँदता-सा चलनेवाला हो। काश, मैं यह जानता कि वही तुम्हारा मित्र था।'

'हेनरी, मुझे प्रसन्नता है कि तुम नहीं जानते थे।'

'क्यों ?'

'मैं नहीं चाहता कि तुम उससे मिलो।'

'तुम नहीं चाहते कि मैं उससे मिलूँ ?'

'हाँ।'

'मि० डोरियन ग्रे स्टूडियो में आ गये हैं'—खानसामा ने वाटिका में प्रवेश करते हुए कहा।

'अब तुम मेरा परिचय अवश्य करा दो'—हेनरी ने हँसते हुए कहा। धूप में धुंधियाते-से खड़े नौकर की ओर घूमकर उसने कहा—

'पारकर, मि० ग्रे से प्रतीक्षा करने को कहो। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।'

नौकर ने झुककर अभिवादन किया और ऊपर चला गया।

तब बेसिल ने लार्ड हेनरी की ओर देखा।

'डोरियन ग्रे मेरा परम मित्र है। वह बहुत सीधे और सुन्दर स्वभाव का है। तुम्हारी चाची ने उसके विषय में जो कुछ कहा वह ठीक है। उसे बिगाड़ना मत। उसे प्रभावित न करना। तुम्हारा प्रभाव बुरा पड़ेगा। संसार बहुत बड़ा है और इसमें बहुत से उत्तम व्यक्ति हैं। मेरी कला में जो कुछ सौंदर्य इसके कारण हैं उसे मुझसे दूर न कर देना, कलाकार के रूप में मेरा जीवन उस पर निर्भर है। हेनरी, ध्यान रखना, मैं तुम पर विश्वास रखता हूँ।'

वह अत्यन्त धीमे स्वर में बोला था और शब्द उसकी इच्छा के विपरीत मानो मरोड़ खाकर निकले थे।

'क्या मूर्खतापूर्ण बातें करते हो !'—लार्ड हेनरी ने मुस्कराते और हावर्ड का हाथ पकड़ते हुए कहा। यह उसे सहारा-सा देकर ले गया।

२

प्रवेश करते ही उन्होंने डोरियन ग्रे को देखा। वह उनकी ओर पीठ किये प्यानो पर बैठा स्कूमैन की पुस्तक 'वन के सदृश्य' के पृष्ठ उलट रहा था।

'बेसिल, यह तुम मुझे अवश्य दे दो'—वह चिल्लाया—'मैं इसका अध्ययन करना चाहता हूँ। यह अत्यन्त मनोहर है।'

'डोरियन, तुम आज कैसे बैठते हो इसी पर निर्भर है।'

'ओह, मैं बैठते-बैठते ऊब गया हूँ और मुझे अपना आदम-क़द चित्र नहीं चाहिए'—उस छोकरे ने हठ और ढिठाई के साथ वाद्य-स्टूल पर झूमते हुए उत्तर दिया। लार्ड हेनरी पर दृष्टि पड़ते ही क्षणभर के लिये एक हलकी अरुणिमा से उसके कपोल रंजित हो गये और वह चौंक गया। 'क्षमा करना बेसिल, मुझे ज्ञात न था कि तुम्हारे साथ कोई है।'

'डोरियन, यह लार्ड हेनरी वाटन है, आक्सफोर्ड का मेरा पुराना मित्र। मैं अभी बतला रहा था कि तुम कितने श्रेष्ठ बैठने वाले हो और अब तुमने सब बिगाड़ दिया।'

'तुमसे मिलने में मेरा आनन्द नष्ट नहीं हुआ मिस्टर ग्रे !'—लार्ड हेनरी ने आगे बढ़कर अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा—'मेरी चाची ने तुम्हारे विषय में मुझे प्रायः बतलाया है। तुम उसके कृपापात्रों में से एक हो और मुझे भय है कि उसके शिकार भी।'

'लेडी अगैथा मुझसे आजकल अप्रसन्न हैं,'—डोरियन ने एक विचित्र अनुपात भरी दृष्टि लिये हुए उत्तर दिया—'पिछले मंगलवार को मैंने उनके साथ ह्वाइट-चैपल के एक क्लब जाने का वचन दिया था और मैं वास्तव में उसके विषय में बिलकुल भूल गया। हमारा साथ-साथ एक गीत होने को था, मेरे विचार में तीन गीत। मैं नहीं जानता कि वह क्या कहेगी। मुझे तो इस विषय में कुछ कहते भी बहुत डर लग रहा है।'

'ओह, मैं अपनी चाची से तुम्हारी सुलह करा दूँगा। वह तुम्हारे प्रति अत्यन्त अनुरक्त है और मेरे विचार से तुम्हारे वहाँ न होने से कुछ बिगड़ता नहीं। सुनने वालों ने उसे सम्मिलित गीत ही समझा होगा। जब चाची अगैथा प्यानो पर बैठती हैं तो दो व्यक्तियों जैसा ही स्वर निकालती हैं।'

'वह उसके लिये भी अत्यन्त बुरा है और मेरे लिए भी बहुत अच्छा नहीं है'—डोरियन ने हँसते हुए उत्तर दिया।

लार्ड हेनरी ने उस पर दृष्टि जमाई। हाँ, वह वास्तव में बहुत सुन्दर था—सुरेखित अरुण अधर, निश्शंक नीली आँखें और घुंघराले सुनहले केश ! उसकी मुखाकृति में कुछ ऐसा था जिसके कारण वह शीघ्र ही विश्वासपात्र बन जाता था। युवावस्था का समस्त खरापन और प्रबल पवित्रता वहाँ विराज रही थी। ऐसा लगता था कि उसने अपने को संसार से अछूता रखा हो। आश्चर्य नहीं था कि बेसिल हावर्ड उसका पुजारी हो गया था।

'सर्वजन प्रिय होने के लिए तुम अत्यन्त मनोहर हो मिस्टर ग्रे, अत्यन्त मनोहर !'—लार्ड हेनरी ने कहा और अपने आपको गद्दी पर गिराकर अपना सिगरेट-केस खोला।

चित्रकार अपने रंग मिलाने और तूलिकाएँ तैयार करने में व्यस्त था। वह कुछ चिंतित दिखाई देता था और जब उसने लार्ड हेनरी के

अंतिम कथन को सुना तो उसने घूरा, कुछ झिझका और तब कहा—'हेनरी, मैं आज इस चित्र को समाप्त कर डालना चाहता हूँ। यदि मैं तुम्हें चले जाने के लिए कहूँ तो क्या तुम मुझे अत्यन्त उजड्ड समझोगे?'

लार्ड हेनरी मुस्कराया और डोरियन ग्रे की ओर देखने लगा। 'मिस्टर ग्रे, क्या मैं जाऊँ?'—उसने पूछा।

'ओह, लार्ड हेनरी, कृपया नहीं! मैं देखता हूँ कि बेसिल का मनोभाव उदास है और उसका उदास होना मुझे असह्य हो जाता है। इसके अतिरिक्त मैं तुमसे यह जानना चाहता हूँ कि मुझे सर्व-जन-प्रिय क्यों न होना चाहिए।'

'मिस्टर ग्रे, मैं नहीं जानता कि म तुम्हें यह बता सकूँगा। यह इतना कठिन विषय है कि इस सम्बन्ध में गम्भीरतापूर्वक बात करना आवश्यक है। लेकिन अब जब तुमने मुझे रुकने को कहा है तो मैं निश्चय ही नहीं भागूँगा? तुम बुरा तो नहीं मानते बेसिल? तुमने मुझे प्रायः बतलाया है कि तुम्हारे मॉडल से कोई बात करे तुम्हें यह अच्छा लगता है।'

हावर्ड ने ओठ काटे। 'यदि डोरियन चाहता है तो तुम निश्चय ही ठहरो। डोरियन की तरंगें उसके अतिरिक्त सभी के लिए नियम-बन्धन नहीं होती हैं।'

लार्ड हेनरी ने अपना हैट और दस्ताने उठा लिये।

'तुम्हारा आग्रह बहुत है बेसिल, किन्तु मुझे भय है कि मुझे जाना ही होगा। मैंने एक सज्जन से आर्लियन्स पर मिलने का वचन दिया है। मिस्टर ग्रे, नमस्कार! किसी दिन दोपहर बाद मुझसे कर्जन स्ट्रीट में मिलो। पाँच बजे के लगभग मैं हमेशा ही घर पर रहता हूँ। जब तुम आओ तो मुझे लिख देना, न मिल पाने पर मुझे दुख होगा।'

'बेसिल'—डोरियन ग्रे चिल्लाया—'लार्ड हेनरी वाटन के चले जाने पर मैं भी चला जाऊँगा। चित्रण में व्यस्त रहते समय तुम्हारे अधर कभी नहीं खुलते और मंच पर खड़े हुए प्रसन्न दीखने की चेष्टा करना अत्यन्त निरुत्साहपूर्ण होता है। रुकने के लिए कहो, यह मेरा आग्रह है।'

'हेनरी, डोरियन पर और मुझ पर कृपा करने के लिए रुक जाओ।' एकाग्रचित्त होकर चित्र पर देखते हुए हावर्ड ने कहा। 'यह बिलकुल सच

है कि काम करते समय न तो मैं कभी बात ही करता हूँ और न सुनता ही हूँ। बेचारे मेरे मॉडल निश्चय ही उकता जाते होंगे; मेरी प्रार्थना है कि तुम रुको।'

'लेकिन आर्लियन्स पर मिलने वाले सज्जन ?'

चित्रकार हँसा। मेरे विचार में उसमें कोई असुविधा न होगी। हेनरी, पुनः बैठ जाओ। और डोरियन, तुम अब पीठिका पर खड़े हो जाओ। अधिक हिलो-डुलो नहीं, और न लार्ड हेनरी की बातों पर ही ध्यान दो। सिवाय मेरे उसका अपने सभी मित्रों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।'

एक तरुण यूनानी शहीद जैसी चाल से डोरियन ग्रे पीठिका पर चढ़ गया और अपने प्रेमपात्र बनाये हुए लार्ड हेनरी की ओर ओठ निकालकर असंतोष का भाव प्रदर्शित कर दिया। वह हेनरी से बहुत भिन्न था, उन दोनों में बहुत स्पष्ट अन्तर था। उसका स्वर भी अत्यन्त सुन्दर था। कुछ क्षण के उपरान्त उसने उससे कहा—'क्या तुम्हारा प्रभाव बहुत बुरा पड़ता है, लार्ड हेनरी ? उतना ही बुरा जितना बेसिल बतलाता है ?'

'अच्छे प्रभाव जैसी कोई वस्तु है ही नहीं, मि० ग्रे ! सभी प्रभाव बुरे—वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बुरे हैं।'

'क्यों ?'

'क्योंकि किसी व्यक्ति को प्रभावित करने के लिए अपनी ही आत्मा को दे डालना होता है। उसके विचार स्वाभाविक नहीं होते और वह अपनी स्वाभाविक तरंगों में जलता भी नहीं। उसके गुण उसके लिए वास्तविक नहीं होते। उसके पाप, यदि पाप जैसा कुछ है, उधार लिये हुए प्रतीत होते हैं। किसी दूसरे का ही संगीत उसमें गूँजता है। वह ऐसे चरित्र का अभिनय करता है जो उसके लिए नहीं लिखा गया। जीवन का ध्येय आत्म-विकास है। अपने स्वभाव को पूर्णतया समझने के लिये ही हम में से प्रत्येक व्यक्ति यहाँ (संसार में) आया है। प्रमुख कर्तव्य—अपने प्रति कर्तव्य को उन्होंने भुला दिया है। हाँ, वे दानी हैं, वे भूखों को भोजन और भिखमंगों को वस्त्र देते है। लेकिन स्वयं उनकी आत्माएँ भूखी और नंगी रहती हैं। हमारी जाति अपना साहस खो बैठी है, जैसे

हम कभी साहसी थे ही नहीं। समाज का भय जो हमारी नैतिकता का आधार है और ईश्वर का भय जो धर्म का रहस्य है—इन्हीं दोनों से हम शासित हैं लेकिन फिर भी·····'

'एक अच्छे लड़के की तरह से अपना सिर दाहिनी ओर कुछ और तो घुमाओ'—अपने कार्य में एकाग्र चित्रकार ने कहा, छोकरे के चेहरे पर वह केवल एक ऐसी दृष्टि देख सका जिसे उसने पहिले कभी न देखा था।

'लेकिन फिर भी'—लार्ड हेनरी ने क्रम बढ़ाते हुए अपनी धीमी सुरीली वाणी में कहा, उसका हाथ चारित्रिक विशेषता से युक्त आकर्षक ढंग में घूमा जैसा ईटन में भी घूमा करता था—'मुझे विश्वास है कि यदि मनुष्य अपना पूरा जीवन रह सकता होता, प्रत्येक भाव को आकार दे सकता होता, अपने प्रत्येक विचार को प्रदर्शित कर सकता होता, अपने प्रत्येक स्वप्न को साकार कर सकता होता, तो संसार को एक ऐसे नवीन आनन्द की अनुभूति हुई होती कि हम मध्यकालीन मर्जों को भूल जाते और यूनानी आदर्श—संभवतः यूनानी आदर्श से सुन्दर और तत्त्वपूर्ण आदर्श पा जाते। लेकिन हम में से परम साहसी भी स्वयं अपने से भयभीत हैं। असभ्यता का अन्त जीवन को नष्ट करनेवाले दुखपूर्ण आत्मत्याग में पुनर्जागृत हुआ है। अपनी अस्वीकृतियों के लिए हम दण्डित होते हैं। जिस परमेच्छा को हम नष्ट करने की चेष्टा करते हैं वही हमारे मस्तिष्क में छाकर रह जाती है और विषैला प्रभाव डालती है। व्यक्ति एक बार पाप करता है और तत्पश्चात् पाप से उसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता। क्योंकि पाप कार्य-शुद्धि का एक ढंग होता है। फिर आनन्द की स्मृति अथवा पश्चात्ताप की भावना के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहता। प्रलोभन से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय आत्मसमर्पण है। स्वयं को रोकने पर आत्मा उन्हीं वस्तुओं की प्रतीक्षा में ऊबने लगती है जो निषिद्ध हैं तथा उन्हीं की इच्छा करने लगती है जिनके विकट नियमों के कारण वह और भी विकट तथा अनियमित हो गयी है। यह कहा गया है कि संसार की महान् घटनाएँ मस्तिष्क में उत्पन्न होती हैं और संसार के महान् पाप जहाँ जन्मते हैं वह स्थान भी मस्तिष्क ही है, केवल मस्तिष्क! मिस्टर ग्रे, तुम स्वयं अपनी गुलाब जैसी अरुण जवानी और गुलाब जैसे श्वेत

बचपन में ऐसी प्रबल इच्छाओं से युक्त रहे जिनसे तुम डरे, भयोत्पादक विचार तुम्हें आये, जागृत-स्वप्न और सुषुप्तावस्था में ऐसे स्वप्न तुम्हें आये जिनकी स्मृतिमात्र तुम्हारे कपोलों को लज्जा से रंजित कर दे.....'

'रुको !'--डोरियन ग्रे की वाणी लड़खड़ायी--'रुको ! तुम मुझे घबड़ाये दे रहे हो। मैं नहीं जानता कि मैं क्या कहूँ। तुम्हारी बातों का कुछ उत्तर है, किन्तु याद नहीं आ रहा ! मुझे सोचने दो।'

लगभग दस मिनट तक वह गतिहीन, खुले अधर तथा विचित्र चमकती हुई आँखें लिये खड़ा रहा। एकदम नये प्रभावों की अस्पष्ट अनुभूति उसे हो रही थी फिर भी उसे ऐसा लगता था कि वे उसी के अन्तर से उत्पन्न थे। बेसिल के मित्र ने जो थोड़े से शब्द उससे कहे थे—निश्चय ही अचानक कहे थे और जो वास्तव में सच होने पर भी झूठ लगते थे, ऐसे मर्मस्पर्शी थे जो पहिले कभी न छू पाये थे और अब वही उसके हृदय की धड़कनों में लहराने तथा स्पन्दित करते प्रतीत हो रहे थे।

ऐसी हलचल संगीत ने की थी, संगीत ने उसे कई बार व्याकुल किया था। लेकिन संगीत स्पष्ट नहीं था। संगीत एक नये संसार के विपरीत हम में गड़बड़ ही पैदा करता है। शब्द ! केवल शब्द ! वे कितने भयानक थे। कितने स्पष्ट और कितने क्रूर ! उससे भागा नहीं जा सकता था। फिर भी उसमें कितना कलात्मक चमत्कार था। ऐसा प्रतीत होता था कि आकारहीन वस्तुओं को आकार देने की उसमें क्षमता थी और क्षमता थी बेला अथवा सारंगी जैसा अपना निज का सुमधुर संगीत रखने की। केवल शब्द ! क्या शब्दों से भी अधिक वास्तविक कुछ था ?

हाँ, उसके बचपन में कुछ ऐसी बातें थीं जिन्हें वह समझ नहीं सका था। वे बातें अब समझ में आ रही थीं। अचानक ही उसका जीवन आन्दोलित हो गया था। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अग्नि पर चल रहा था। पहिले उसने इसे क्यों नहीं जाना ?

अपनी चातुर्यपूर्ण मुस्कान सहित लार्ड हेनरी उसे देख रहा था। जब कुछ न कहना चाहिए था उस ठीक मनोवैज्ञानिक क्षण को वह समझता था। उसकी उत्सुकता विशेष रूप से बढ़ गयी थी। उसके शब्दों ने जो

आकस्मिक प्रभाव डाला था उस पर उसे अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था और सोलह वर्ष की अवस्था में जिस पुस्तक को पढ़कर उसे नया ज्ञान हुआ था उसकी याद करके वह विस्मित था कि क्या डोरियन ग्रे को भी वैसी ही अनुभूति हो रही है। उसने तो एक लक्ष्यहीन बाण छोड़ दिया था। क्या वह निशाने पर जा लगा ? छोकरा कितना मनोहर था।

कला में शक्ति से ही प्रदर्शित हो सकनेवाली उत्कृष्टता तथा पूर्णता को हावर्ड ने अपने उत्साहपूर्ण स्पर्श से चित्रित कर डाला। परिव्याप्त स्तब्धता का उसे कोई ज्ञान न था।

'बेसिल, मैं खड़े-खड़े थक चुका हूँ'—डोरियन ग्रे अचानक चिल्लाया 'मुझे अवश्य बाहर जाना चाहिए और वाटिका में बैठना चाहिए। यहाँ साँस घुट रही है।'

'मेरे प्रिय, मुझे अत्यन्त खेद है। चित्रण करते समय मैं और कुछ सोच ही नहीं पाता हूँ। आज जैसे तुम कभी नहीं रहे। तुम एकदम स्थिर थे और मैं जो प्रभाव चाहता था मैंने पा लिया—अधखुले अधर और तुम्हारे नेत्रों की चमक! मैं नहीं जानता कि हेनरी तुमसे क्या कहता रहा, परन्तु उसने निश्चय ही अनोखा भाव प्रदर्शित करा दिया। मेरे विचार में वह तुम्हारी प्रशंसा करता रहा है, परन्तु तुम्हें उसके एक भी शब्द का विश्वास नहीं करना चाहिए।'

'निश्चय ही उसने मेरी प्रशंसा नहीं की और सम्भवतः यही कारण है कि जो कुछ भी उसने कहा मुझे उस पर विश्वास नहीं है।'

'तुम जानते हो कि तुम्हें मेरी सब बातों पर विश्वास है'—लार्ड हेनरी ने उसे स्वप्नवत् शिथिल आँखों से देखते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे साथ वाटिका में चलूँगा। स्टूडियो में बेहद गर्मी है। हमें कुछ शीतल पेय लेना चाहिए, कुछ स्ट्राबेरी[1] के साथ।'

'अवश्य' हेनरी! तनिक घंटी बजाओ, पारकर के आते ही जो भी तुम चाहते हो मैं मँगा दूंगा। मुझे यह पृष्ठभूमि बनानी है इसलिए मैं बाद में सम्मिलित हो जाऊँगा। डोरियन को अधिक देर तक न रोकना।

---

१. एक प्रकार का लसदार पीली चितलीवाला बेर।

आज-जैसी चित्रण के लिए उपयुक्त अवस्था मेरी कभी नहीं रही। यह मेरी उत्कृष्ट कलाकृति होगी, यही मेरा सर्वोत्तम नमूना है।'

लार्ड हेनरी वाटिका में गया और डोरियन ग्रे को बकाइन के बड़े शीतल पुष्पों में मुख छिपाये इस प्रकार सुगन्ध-पान करते पाया मानो शराब पी रहा हो। वह उसके निकट गया और कंधे पर हाथ रख दिया।

'तुम ठीक ही कह रहे हो'—वह फुसफुसाया—'आत्मा को केवल इन्द्रियाँ ही तोष दे सकती हैं, जिस प्रकार इन्द्रियों को भी आत्मा के अतिरिक्त और कहीं से तोष प्राप्त नहीं हो सकता।'

छोकरा चौंककर पीछे हट गया। वह नंगे सिर था। पत्तों ने उसके विद्रोही घुँघराले बालों को उछालकर सुनहरे रेशों को उलझा दिया था। उसके नेत्रों में भय की झलक थी, जैसी अचानक जग जाने पर दिखायी देती है। उसके सुन्दर नथुने फूले और किसी गुप्त भाव ने उसके अरुण अधरों में कँपकँपी उत्पन्न कर दी।

'हाँ,'—लार्ड हेनरी ने कहा—'आत्मा को इन्द्रियों द्वारा और इन्द्रियों को आत्मा द्वारा तोष देना जीवन का एक महान्तम रहस्य है। तुम अनोखे हो। तुम अपने ज्ञान के विषय में जितना समझते हो उससे अधिक जानते हो जैसे कि तुम्हारे इच्छित ज्ञान से तुम्हारा ज्ञान कम है।'

डोरियन ग्रे ने भृकुटि चढ़ायी और सिर घुमा लिया। अपने पास खड़े हुए लम्बे और आकर्षक तरुण को पसन्द किये बिना वह न रह सका। उसके जैतून के रंग जैसे अद्भुत चेहरे और थके से भाव में उसे दिलचस्पी हो गई। उसके धीमे और शिथिल स्वर में कुछ ऐसा था जो एक दम आकर्षक था। उसके शीतलश्वेत फूल जैसे हाथों में भी एक विचित्र सौंदर्य था। जैसे ही वह बोलता, वे संगीत के समान गतिवान् होते और ऐसा प्रतीत होता कि उनकी भी निज की भाषा है। किन्तु उसे उसका भय लग रहा था और भयभीत होने पर लज्जित था। एक अपरिचित ही उसे उसका ज्ञान कराने के लिए क्यों रह गया था। वह बेसिल हावर्ड को महीनों से जानता था लेकिन उनकी मित्रता ने उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया। अचानक ही उसके जीवन ने ऐसे व्यक्ति का परिचय पा लिया था जो उसे जीवन का रहस्य बताता प्रतीत होता था।

फिर भी इसमें डरने की क्या बात थी ? वह स्कूली बच्चा अथवा लड़की नहीं था। भयभीत होना हास्यास्पद था।

'चलो, हम लोगों को छाया में बैठना चाहिए'—लार्ड हेनरी ने कहा—'पारकर पेय ले आया है और यदि तुम इस तीव्र प्रकाश में तनिक भी और रुकोगे तो एकदम विरूप हो जाओगे और फिर बेसिल तुम्हारा चित्र कभी न बनायेगा जो कि अशोभन होगा। निश्चय ही तुम्हें धूप की तपन से बचना चाहिए।'

'इससे क्या होगा ?'—वाटिका के किनारे बैठते समय डोरियन ग्रे ने हँसते हुए कहा।

'तुम्हें इससे पूर्ण प्रयोजन होना चाहिए, मिस्टर ग्रे !'

'क्यों ?'

'क्योंकि तुम्हारी जवानी अत्यन्त अनोखी है, और रखने योग्य जवानी ही है।'

'लार्ड हेनरी, मैं ऐसा अनुभव नहीं करता।'

'नहीं, तुम अभी अनुभव नहीं करते। किसी दिन जब तुम वृद्ध, झुर्रीदार और विरूप हो जाओगे, जब विचार तुम्हारे मस्तक पर रेखाएँ डाल देंगे और जब वासना की भयानक अग्नि तुम्हारे अधरों को अंकित कर देगी, तुम अनुभव करोगे, विकट रूप में अनुभव करोगे। अभी तुम जहाँ भी जाते हो सबको मोहित कर लेते हो। क्या ऐसा सदैव होता रहेगा ?·····मि० ग्रे, तुम्हारी मुखाकृति अत्यन्त सुन्दर है। भृकुटि न चढ़ाओ। तुम अत्यन्त सुन्दर हो। और सौंदर्य प्रतिभा का एक रूप है—बल्कि प्रतिभा से भी वस्तुतः श्रेष्ठ है क्योंकि इसके लिये व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है। यह सूर्य-प्रकाश, वसन्त-ऋतु अथवा काले पानी में चाँद कहलानेवाले चाँदी के गोले की छाया के समान संसार का महान् सत्य है। इस पर शंका नहीं की जा सकती। इसे शासन का दिव्य अधिकार प्राप्त है। इससे सुन्दर राजकुमार-से लगने लगते हैं। तुम मुस्कराते हो ? आह, जब तुम इसे खो बैठोगे, तब न मुस्कराओगे·····। लोग कभी-कभी कहते हैं कि सुन्दरता छिछली होती है। सम्भव है ऐसा हो, लेकिन सुन्दरता कम से कम विचार जैसी छिछली नहीं होती। मेरे

लिए सुन्दरता अद्‌भुत से भी अद्‌भुत है। मुखाकृतियों द्वारा अनुमान लगाना केवल मूर्खों के लिए ही संभव नहीं है। संसार का वास्तविक रहस्य दृश्य है, अदृश्य नहीं·····, हाँ मिस्टर ग्रे, देवताओं ने तुम्हारे ऊपर कृपा की है लेकिन देवता जो कुछ देते हैं शीघ्र ही छीन लेते है। यथार्थ और पूर्ण जीवन के तुम्हारे थोड़े से ही वर्ष शेष हैं। तुम्हारे तारुण्य के साथ ही तुम्हारा सौंदर्य नष्ट हो जायगा और तब तुम अचानक ही देखोगे कि तुम विजयी नहीं होते अथवा उस साधारण विजय पर संतोष करना पड़ेगा जिसकी अतीत स्मृति हार की अपेक्षा और भी अधिक कड़वी होगी। प्रत्येक महीना अपने अन्त के साथ-साथ तुम्हें किसी भयानकता के निकट लाता जाता है। समय तुमसे द्वेष रखता है और तुम्हारे कमल तथा गुलाब जैसे सौंदर्य से संघर्ष निरत है। तुम पीले पड़ जाओगे, गालों में गड्ढे पड़ जायँगे और आँखें धुँधली पड़ जायँगी। तुम्हारी भयंकर हानि होगी·····, आह, जब तक जवान हो अपनी जवानी को समझ लो। अपने सोने से दिनों को उकतानेवाली बातें सुनने, तुच्छ असफलता को सुधारने की चेष्टा करने अथवा नासमझ साधारण और निकृष्ट के लिए जीवन देने में व्यर्थ नष्ट न करो। ये हमारे युग के अस्वस्थ उद्देश्य तथा झूठे आदर्श हैं। जिओ, अपने मन का जीवन बिताओ। कोई भी अवसर मत चूको। नयी हलचलों की खोज में रहो। किसी बात से भयभीत न होओ·····एक नयी हिडोनिज्म[1]—हमारी शताब्दि की यही माँग है। तुम्हीं इसके लाक्षणिक आकार हो सकते हो। तुम्हारे व्यक्तित्व के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। इस समय दुनिया तुम्हारी है·····तुमसे मिलते ही मैंने देखा कि तुम अपने आप से और अपनी योग्यता से अनभिज्ञ हो। तुम में ऐसा बहुत कुछ था जिसने मुझे मोहित कर लिया और तुम्हारे विषय में तुम्हें कुछ बतलाने की मेरी इच्छा हो आयी। मैंने सोचा कि तुम्हारा नष्ट हो जाना बहुत बुरा होगा, क्योंकि तुम्हारी जवानी इतनी अस्थायी होगी—बहुत ही कम टिकेगी। साधारण पहाड़ी पुष्प मुरझा जाते हैं किन्तु पुनः मुकुलित होते हैं। लेबरनम[2]

१. 'आनन्द ही सर्वोत्तम है'—यह विचार।

२. चमकीले पीले फूलों का नन्हा-सा पौदा।

आगामी जून में भी इतना ही पीला होगा जितना इस समय है। महीने भर में क्लीमेटिस[1] पर बैंगनी फूल लग जायँगे और प्रतिवर्ष इसके हरे पत्तों की रात्रि में बैंगनी तारे शोभित होंगे। लेकिन हमें हमारी जवानी पुनः नहीं मिलती। बीस वर्ष की अवस्था वाली आनन्द की नाड़ी धीमी पड़ जाती है, हमारी पिंडलियाँ बेकार हो जाती हैं और बुद्धि सड़ती है। हम भयानक कठपुतलों की हीनावस्था को प्राप्त हो जाते हैं, जिन प्रबल उमंगों से हम डरते थे और जिन मनोहर आकर्षणों की ओर झुकने का हमें साहस न था, उन्हीं की स्मृति हमें घेरती है। जवानी ! संसार में जवानी के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।'

डोरियन ग्रे ने आँखें विस्फारित करके आश्चर्य सहित यह सुना। बकाइन की टहनी उसके हाथ से छूटकर कंकड़ पर गिर पड़ी। एक रुआँदार मक्खी आई और क्षण भर उसके चारों ओर गुनगुनाती रही। तत्पश्चात् वह नन्हें फूलों के तारों-से अंडाकार गोले पर चलने लगी। हम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वस्तुओं से घबड़ाकर अथवा अव्यक्त भाव की किसी नयी उमंग से प्रेरणा पाकर अथवा जब हमें भयभीत करनेवाला कोई विचार हमारे मस्तिष्क को अचानक ही घेर लेता है और हार मानने के लिए विवश कर देता है तब साधारण वस्तुओं में हमें जो दिलचस्पी होती है उसी विचित्र दिलचस्पी से उसने इसे देखा। कुछ समय बाद मक्खी उड़ गई। उसने उसे टीरिया की कानवलवुलस लतिका के बिगुल जैसे चितकीदार पुष्प में धीरे-से घुसते देखा। पुष्प कँपता प्रतीत हुआ और उसके बाद इधर-उधर हिलने लगा।

अचानक ही चित्रकार स्टूडियो के द्वार पर दिखलायी दिया और उनको शीघ्र ही अन्दर आने का संकेत किया। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और मुस्करा दिया।

'मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ' वह चिल्लाया—'प्रकाश बिलकुल ठीक है और तुम लोग अपने पेय लिये आ सकते हो।'

---

१. झाड़ीदार लता।

वे उठ खड़े हुए और व्यर्थ टहलते हुए साथ-साथ चल दिये। दो हरी और श्वेत तितलियाँ उनके पास से उड़ती हुई निकल गईं और वाटिका के कोने में नाशपाती के पेड़ पर एक चिड़िया गा उठी।

'मिस्टर ग्रे, तुम्हें मुझसे मिलकर प्रसन्नता हुई ?' लार्ड हेनरी ने उसे देखते हुए पूछा।

'हाँ, मैं अभी प्रसन्न हूँ। क्या मैं सदैव प्रसन्न रह सकूंगा, मुझे संदेह है।'

'सदैव ! यह एक भयानक शब्द है। इसे सुनकर मैं काँप उठता हूँ। स्त्रियाँ इसे प्रयुक्त करने की बहुत शौकीन होती हैं। सदैव के लिए स्थायी बनने की चेष्टा के कारण वे सब रोमांस मिट्टी कर देती हैं। यह एक अर्थहीन शब्द भी है। मनोविकार और जीवन पर्यन्त की आसक्ति में यही अन्तर है कि मनोविकार अधिक स्थायी होता है।'

जैसे ही उन्होंने स्टूडियो में प्रवेश किया, डोरियन ग्रे ने अपना हाथ हेनरी के कन्धे पर रख दिया—'ऐसी अवस्था में हमारी मित्रता को मनोविकार ही रहने दो—वह फुसफुसाया और अपने उत्साह पर लज्जारुण होते हुए पीठिका पर चढ़कर विशेष भाव में खड़ा हो गया।

लार्ड हेनरी एक बड़ी बेंत की कुर्सी पर लुढ़क गया और उसे देखने लगा। हावर्ड के पीछे हटकर चित्र को दूर से देखने के सिवाय चित्रपट पर चल रही तूलिका की एकमात्र आवाज़ ही शान्ति भंग करती थी। खुले हुए द्वार में से प्रवेश करनेवाली तिरछी किरणों में नृत्य करते हुए धूल-कण सुनहरे हो गये थे। गुलाब की सघन सुगन्ध प्रत्येक वस्तु पर छाया-सी प्रतीत होती थी।

लगभग चौथाई घंटे बाद हावर्ड ने चित्रण बन्द कर दिया, एक बड़ी तूलिका के पिछले भाग को दाँतों से काटता और भृकुटि चढ़ाता हुआ डोरियन ग्रे को और फिर बहुत देर तक चित्र को देखता रहा। 'यह पूर्ण हो गया है'—उसने अन्त में कहा और चित्रपट के बायें कोने में गहरे लाल रंग के अक्षरों में अपना नाम लिख दिया।

लार्ड हेनरी ने आकर चित्र को देखा। निश्चित ही यह ग़ज़ब की कलाकृति थी। और उसमें ग़ज़ब की ही समानता भी थी।

'मेरे प्रिय, मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देता हूँ'—उसने कहा, यह वर्तमान

समय का सर्वोत्कृष्ट चित्र है। मिस्टर ग्रे आओ फिर स्वयं को देखो।'

छोकरा चौंका, मानो किसी स्वप्न से जागा हो। 'क्या यह सचमुच पूरा हो गया'—पीठिका से उतरते हुए वह फुसफुसाया।

'हाँ, बिलकुल पूरा हो गया'—चित्रकार ने कहा, 'और आज तुम्हारा ढंग बहुत अच्छा रहा। मैं तुम्हारा अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।'

'यह सब मेरे ही कारण है'—लार्ड हेनरी बोल पड़ा—'है न मिस्टर ग्रे ?'

डोरियन ने कोई उत्तर न दिया और उदासीन भाव से चित्र के सामने चला गया। देखते ही वह पीछे हटा और एक क्षण के लिए उसके कपोल आनन्द से अरुण हो गये। उसके नेत्रों में प्रसन्नता झलक उठी, मानो उसने स्वयं को पहिली ही बार पहिचाना हो। वह वहाँ स्थिर और आश्चर्य-चकित खड़ा था। हावर्ड उससे बोल रहा है इसका उसे अर्धज्ञान हो रहा था, लेकिन उसके शब्दों को समझ नहीं पा रहा था। अपने सौंदर्य का ज्ञान उसे अभिव्यक्त होता-सा प्रतीत हुआ। यह उसकी प्रथम अनुभूति थी। बेसिल हावर्ड के अभिनन्दन उसे मित्रता की मनोहर अतिशयोक्ति-मात्र प्रतीत होते थे। उसने उन्हें सुना था, हँसकर उड़ा दिया और भुला दिया था। उन अभिनन्दनों ने उसके स्वत्व को प्रभावित न किया था। तब हेनरी वाटन तारुण्य की विचित्र सराहना और उसकी अल्पता के प्रति सावधान करता हुआ आया। उस समय उसने हलचल अनुभव की थी और जब वह अपने सौंदर्य की छाया के सामने खड़ा हुआ था—वर्णन की पूर्ण वास्तविकता उसके मस्तिष्क में कौंध-सी गई। हाँ, एक दिन आयेगा जब उसकी मुखाकृति झुर्रीदार और उदास हो जायगी, उसके नेत्र धुंधले हो जायँगे, और इनकी रंगत बिगड़ जायगी, उसके शरीर का सौंदर्य नष्ट हो जायगा, कुरूप हो जायगा। उसके अधरों की अरुणायी भाग जायगी और बालों का सुनहरापन खिसक जायगा। उसकी आत्मा का विकास करने वाला जीवन उसके शरीर को कुरूप कर देगा। वह भयानक, असुन्दर और असभ्य हो जायगा।

इस विचार ने चाकू जैसी तीव्र पीड़ा उसमें भर दी और उसका रुआँ-रुआँ काँप उठा। उसकी आँखें नीलम पत्थर जैसी हो गईं और उन पर

आँसुओं का कोहरा-सा छा गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो बर्फ का हाथ उसके हृदय पर रख दिया गया हो।

'क्या तुम्हें यह पसन्द नहीं आया ?'—समझ में न आनेवाली निस्तब्धता से आहत होकर हावर्ड ने अन्त में कहा।

'निश्चय ही वह इसे पसन्द करता है'—लार्ड हेनरी ने कहा—'इसे कौन पसन्द न करेगा ? वर्तमान समय की यह महान् कलाकृति है। तुम इसके लिए जो भी माँगो मैं दूँगा। मैं इसे अवश्य लूँगा।'

'यह मेरी सम्पत्ति नहीं है, हेनरी !'

'तब किसकी है ?'

'निश्चय ही, डोरियन की'—चित्रकार ने उत्तर दिया।

'वह अत्यन्त सौभाग्यशाली है।'

'यह कितने दुख की बात है !'—डोरियन ग्रे बड़बड़ाया, उसकी आँखें अब भी अपने चित्र पर केन्द्रित थीं—'यह कितने दुख की बात है ! मैं बूढ़ा और भयानक हो जाऊँगा लेकिन यह चित्र सदैव समान रहेगा। यह इस समय जैसा है उससे अधिक बूढ़ा कभी न होगा।·····काश, इसका विपरीत होता। काश, मैं सदैव तरुण रहता और यह चित्र बूढ़ा हो जाता। इसके लिये·····हाँ, इसके लिये मैं कुछ भी दे सकता हूँ। समस्त संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं न दे सकूँ। उसके लिये मैं अपनी आत्मा तक दे दूंगा।'

'ऐसे प्रबन्ध की चिंता तुम कदाचित् ही कर सको बेसिल—लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—'ऐसा करना तो तुम्हारे चित्र पर क्रूर प्रहार होगा।'

'हेनरी, मैं इसका पूर्ण विरोध करूँगा'—हावर्ड ने कहा।

डोरियन ग्रे ने घूमकर उसकी ओर देखा—'मुझे विश्वास है तुम करोगे, बेसिल ! तुम अपने मित्रों की अपेक्षा अपनी कला में अधिक रुचि रखते हो। मैं तुम्हारे लिए हरी धातु के उस बर्त्तन से अधिक कुछ भी नहीं हूँ, बल्कि उतना भी नहीं हूँ, मैं निस्संकोच कह सकता हूँ।'

चित्रकार आश्चर्यचकित होकर देख रहा था। डोरियन इस प्रकार कभी न बोलता था। यह क्या हो गया था। वह बहुत क्रोधित हो गया

था और उसका चेहरा तमतमाया हुआ तथा गाल जलते हुए-से प्रतीत हो रहे थे।

'हाँ—उसने क्रम बढ़ाते हुए कहा—'तुम्हारे हाथी के दाँत बने हरमिस[1] और चाँदी के फान[2] मेरी अपेक्षा अधिक महत्त्व रखते हैं। तुम उन्हें सदैव चाहोगे। तुम मुझे कब तक चाहोगे ? सम्भवतः जब तक पहिली झुर्री मुझ पर नहीं पड़ती ! अब मैं जान गया हूँ कि सौंदर्य-विहीन होने पर मनुष्य सभी कुछ खो बैठता है। तुम्हारे चित्र ने मुझे यह सिखलाया है। लार्ड हेनरी वाटन का कहना बिलकुल ठीक है। रखने योग्य केवल तारुण्य ही है। जब मैं देखूँगा कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ तो आत्महत्या कर लूँगा।'

हावर्ड पीला पकड़ गया और उसने उसका हाथ पकड़ लिया—'डोरियन ! डोरियन !'—वह चिल्लाया, 'ऐसा मत कहो ! तुम्हारे जैसा मित्र न मैंने कभी पाया है और न पाऊँगा। तुम जड़-पदार्थों से तो ईर्षा नहीं रखते ? तुम तो उन सबसे कहीं अधिक अच्छे हो।'

'मैं ऐसी प्रत्येक वस्तु से ईर्षा करता हूँ जिसका सौंदर्य अक्षुण्ण हो ! तुमने जो मेरा चित्र बनाया है मैं उससे ईर्षा करता हूँ। मैं जिसे खो बैठूँ वह उससे युक्त क्यों रहे ? व्यतीत होनेवाला प्रत्येक क्षण मुझसे कुछ छीनता जाता है। ओह, काश, इसके विपरीत हो सकता—चित्र बदलता रहता और मैं सदैव ही ऐसा रहता जैसा कि इस समय हूँ। तुमने इसे क्यों चित्रित किया ? यह किसी दिन मेरी हँसी उड़ायेगा। बुरी तरह हँसी उड़ायेगा।'

उसके नेत्र गरम-गरम आँसुओं से भर गये। उसने अपने हाथ को झटका और लम्बी गद्दी पर लुढ़कते हुए अपने मुख को गद्दी में ऐसे छिपा लिया मानो प्रार्थना कर रहा हो।'

'हेनरी, यह तुम्हारी करतूत है !'—चित्रकार ने दुखित होकर कहा।

लार्ड हेनरी ने कंधा ऊपर उठाते हुए कहा—'बस, यही वास्तविक डोरियन ग्रे है।'

---

१. देवदूत। २. सींग पूंछ युक्त एक देव।

'ऐसा नहीं है।'

'यदि ऐसा नहीं है तो मुझे इससे क्या करना है ?'

'जब मैंने तुमसे जाने के लिए कहा था तुम्हें चले जाना चाहिए था'—वह बड़बड़ाया।

'मैं तुम्हारे ही कहने पर रुका था'—लार्ड हेनरी का उत्तर था।

'हेनरी, मैं अपने सर्वोत्तम मित्रों से एक ही समय नहीं लड़ सकता, लेकिन तुम दोनों में से तुमने मुझे अपनी इस सर्वोत्तम कृति को घृणा करने पर विवश किया है और मैं इसे नष्ट कर दूँगा। किरमिच और रंग के अतिरिक्त यह है ही क्या ? मैं इसे तीन प्राणियों के बीच आने और उन्हें बरबाद करने नहीं दूँगा।'

डोरियन ग्रे ने अपना सुनहरा सिर तकिये पर से उठाया और अपने कान्तिहीन चेहरे तथा अश्रुसिक्त आँखों से उसे बड़े पर्दों से युक्त खिड़की के नीचे रखी चित्रण की मेज की ओर जाते हुए देखने लगा। वह वहाँ क्या कर रहा था ? उसकी अँगुलियाँ टिन के ट्यूबों और सूखी तूलिकाओं में कुछ खोज रही थीं। हाँ, यह खोज लचीले इस्पात और पतली धार वाले चाकू की थी। अन्त में उसे उसने पा लिया। वह किरमिच को शीघ्रता से फाड़ डालने के लिए जा रहा था।

घुटते-से गले की लम्बी-सी साँस लेकर छोकरा गद्दी से उछल पड़ा और हावर्ड पर झपटकर उसके हाथ से चाकू छीनकर स्टूडियो के किनारे फेंक दिया। 'नहीं बेसिल, नहीं !'—वह चिल्लाया, 'यह हत्या होगी !'

'डोरियन, मुझे प्रसन्नता है कि अन्त में तुमने मेरी कृति को पसन्द किया'—आश्चर्य शान्त हो जाने पर चित्रकार ने गम्भीर होकर कहा, 'मैंने ऐसी आशा नहीं की थी।'

'इसकी पसन्द ? बेसिल, मैं इसके प्रति अनुरक्त हूँ। यह मेरा ही एक भाग है, यह मैं अनुभव करता हूँ।'

'अच्छा, सूख जाने पर वार्निश होगी, चौखटा लगेगा और घर भेज दिया जायगा। तब तुम अपने आप जो चाहो कर सकते हो', कह और कमरे के पार जा उसने चाय के लिए घंटी बजा दी—'तुम निश्चय ही चाय लोगे, डोरियन ? और तुम भी हेनरी ? अथवा ऐसे साधारण

आनन्दों में भी कोई आपत्ति है ?'

'मैं साधारण आनन्दों को प्रतिष्ठा देता हूँ'—लार्ड हेनरी ने कहा—'वहाँ जटिलता को अन्तिम शरण (पनाह) मिलती है, लेकिन मुझे दृश्य केवल रंगमंच पर ही अच्छे मालूम होते हैं। तुम दोनों कितने बेहूदे हो। मुझे आश्चर्य होता है कि मनुष्य की परिभाषा 'चैतन्य प्राणी' किसने की। ऐसी असामयिक परिभाषा कभी नहीं दी गई। मनुष्य बहुत कुछ है, किन्तु चैतन्य नहीं। मुझे प्रसन्नता है कि वह चैतन्य नहीं है फिर भी··· मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों चित्र के ऊपर न झगड़ो। बेसिल, अच्छा होता तुम इसे मुझे दे देते। यह मूर्ख छोकरा इसे वास्तव में नहीं चाहता और मैं चाहता हूँ।

'बेसिल, यदि तुम मेरे अतिरिक्त इसे अन्य किसी को भी दोगे तो मैं तुम्हें कभी क्षमा न कर सकूँगा'—डोरियन ग्रे चिल्लाया—'और मैं मूर्ख कहलाया जाना सहन नहीं कर सकता।'

'तुम जानते हो कि यह चित्र तुम्हारा है, डोरियन ! बनने से पहिले ही मैं तुम्हें इसे दे चुका था।'

'और मिस्टर ग्रे, तुम जानते हो कि तुम कुछ मूर्ख रहे हो ! निश्चय ही यह याद दिलाने में तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि तुम सुकुमार हो।'

'लार्ड हेनरी, आज प्रातःकाल मैंने इसका घोर विरोध किया होता।'

'आह, यह सुबह ! तभी से तो तुमने जीना जाना है।'

द्वार पर खटखटाहट हुई और सेवक ने चाय की भारी ट्रे सहित प्रवेश करके उसे एक छोटी जापानी मेज पर रख दिया। एक सेवक लड़का दो गोलाकार चीनी तश्तरियाँ ले आया। डोरियन ग्रे ने जाकर प्यालों में चाय की। दो मनुष्य शिथिल भाव से व्यर्थ भ्रमण करते हुए मेज पर पहुँचे और देखने लगे कि कपड़े के नीचे क्या है ?'

'आज रात को हमें थियेटर चलना चाहिए'—लार्ड हेनरी ने कहा, 'वहाँ कहीं कुछ-न-कुछ अवश्य होगा। मैंने ह्वाइट के यहाँ खाने का वायदा किया है लेकिन यह केवल एक पुराने मित्र के साथ है इसलिए मैं उसे तार दे सकता हूँ कि मैं बीमार पड़ गया अथवा एक बाद के काम के

कारण नहीं आ सका। मेरे विचार में वह एक अच्छा बहाना रहेगा, उसमें निष्कपटता का समस्त आश्चर्य रहेगा।'

'अपने कपड़े पहिनने में कितनी थकान हो जाती है'—लार्ड हेनरी बड़बड़ाया—'और पहिन लेने पर कितने भयानक लगते हैं।'

'हाँ'—लार्ड हेनरी ने स्वप्नवत् कहा— उन्नीसवीं सदी की वेशभूषा घृण्य है। यह धुँधली और उदासी से भरी हुई है। आधुनिक जीवन में पाप की प्रमुखता ही अवशिष्ट रही है।'

'हेनरी, तुम्हें डोरियन के सामने ऐसी बातें नहीं करनी चाहिएँ।'

'कौनसे डोरियन के सामने? जो हमारे लिए चाय डाल रहा है अथवा जो चित्र में है।'

'किसी के भी सामने नहीं।'

'लार्ड हेनरी, मैं तुम्हारे साथ थियेटर आना चाहूँगा'—छोकरे ने कहा।

'तब तुम आओगे और तुम भी आओगे, बेसिल, आओगे न?'

'सचमुच ही, मैं नहीं आ सकता। मैं जल्दी नहीं आ सकता। मुझे बहुत काम करने को पड़ा है।'

'अच्छा तो केवल हम दोनों ही चलेंगे, मिस्टर ग्रे!'

'मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी।'

चित्रकार ने अपना ओठ काटा और हाथ में प्याला लिये हुए चित्र के पास जा पहुँचा। 'मैं वास्तविक डोरियन के साथ ठहरूँगा।'

'क्या यह वास्तविक डोरियन है?'—चित्र का असली नमूना उसके पास लाता हुआ चिल्लाया—'क्या मैं वास्तव में वैसा ही हूँ?'

'हाँ, तुम बिलकुल वैसे हो।'

'यह कितनी विचित्र बात है, बेसिल!'

'कम से कम देखने में ऐसे ही हो किंतु यह कभी नहीं बदलेगा'—हावर्ड ने साँस भरी—'यही बात है।'

'लोग सचाई का क्या तमाशा बना डालते हैं।' लार्ड हेनरी ने कहा, 'क्यों, प्रेम में भी प्राणी धर्मशास्त्र का ही स्पष्ट प्रश्न लाता है। हमारी अपनी इच्छा से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। तरुण वफ़ादार होना चाहते

हैं और नहीं होते। वृद्ध विश्वासघाती होना चाहते हैं और नहीं हो पाते—केवल यही कहा जा सकता है।'

'डोरियन, आज रात थियेटर न जाओ'—हावर्ड ने कहा, 'रुको, और मेरे साथ भोजन करो।'

'मैं नहीं रुक सकता, बेसिल !'

'क्यों ?'

'क्योंकि मैंने लार्ड हेनरी वाटन के साथ जाने का वायदा किया है।'

'वायदा पूरा करने के कारण वह तुम्हें अधिक पसन्द न करेगा। वह स्वयं अपने वायदे तोड़ता है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम न जाओ।'

डोरियन ग्रे हँसा और अपना सिर हिला दिया।

मैं विनय करता हूँ।'

छोकरा मुस्कराया और लार्ड हेनरी की ओर देखने लगा। उन्हें चाय की मेज से मनोरंजक मुस्कान से देख रहा था।

'मुझे जाना ही चाहिए, बेसिल !'—उसने उत्तर दिया।

'अच्छी बात है'—हावर्ड ने कहा और जाकर प्याले को ट्रे पर रख दिया, 'देर हो रही है और चूँकि तुम्हें कपड़े भी पहिनने हैं, अच्छा हो यदि बिलकुल समय नष्ट न करो। नमस्कार हेनरी, नमस्कार डोरियन। जल्दी ही मुझसे मिलना, कल आना।'

'निश्चय ही।'

'भूलोगे तो नहीं ?'

'नहीं, सचमुच नहीं'—हेनरी चिल्लाया।

'और·····हेनरी।'

'हाँ, बेसिल !'

'आज सुबह वाटिका में मैंने तुमसे जो कहा था उसे याद रखना।'

'मैं भूल गया हूँ।'

'मैं तुम पर विश्वास करता हूँ ?'

'काश, मैं स्वयं पर विश्वास कर सकता'—लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—'आओ मिस्टर ग्रे, मेरी गाड़ी बाहर है और मैं तुम्हें तुम्हारे स्थान

पर छोड़ दूँगा। नमस्कार बेसिल, यह संध्या अत्यन्त मनोरंजक रही।'

उनके पीछे जैसे ही द्वार बन्द हुआ, चित्रकार सोफा पर पसर गया और पीड़ा उसके मुख पर उभर उठी।

३

दूसरे दिन साढ़े बारह बजे लार्ड हेनरी वाटन अपने चाचा लार्ड फरमोर से भेंट करने कर्जन स्ट्रीट से एलबनी तक पैदल गया। वह रूखा अविवाहित वृद्ध दयालु स्वभाव का था। बाह्य संसार उसे स्वार्थी कहकर पुकारता था क्योंकि उससे कोई विशेष लाभ न उठा पाता था, किन्तु समाज उसे उदार समझता था क्योंकि जो उसका मनोरंजन करते थे उन्हें वह खिलाता-पिलाता था। जब आइज़बेला जवान थी और प्रेम-कल्पना से भी परे थी उसका पिता मैट्रिड में राजदूत था, किन्तु पेरिस की एम्बेसी—एक पद जिसके लिए अपने जन्म, आलसी स्वभाव, पत्र-व्यवहार की सुन्दर अंग्रेजी तथा आनन्द-भोग की अनियमित उत्कट इच्छा के कारण अपना पूर्ण अधिकार समझता था, न दी जाने के कारण क्रोधित होकर सनक के क्षण में 'डिप्लोमेटिक सर्विस'[१] से अलग हो गया था। बेटा ने, जो अपने पिता का सेक्रेटरी था, अपने प्रधान के साथ ही अलग हो जाने की तथाकथित मूर्खता की और कुछ महीने बाद उत्तराधिकार में टाइटिल पाने पर वह श्रेष्ठ धनिकों की कुछ भी न करने की महान् कला के अध्ययन में गम्भीरतापूर्वक लग गया। शहर में उसके दो बड़े मकान थे, परन्तु वह कष्टदायी होने के कारण कमरों में ही रहना श्रेयस्कर समझता और अधिकतर अपनी क्लब में ही भोजन करता। मिडलैंड के जिलों की अपनी कोयले की खानों की ओर वह कुछ ही ध्यान देता था और उद्योग के इस दोष के लिए उसका बहाना यह था कि इस प्रकार एक सज्जन अपने घर लकड़ी जलाने की उपयुक्तता प्राप्त कर सकता है। राजनीति में वह टोरी[२] था, किन्तु जब टोरियों के हाथ में शासन था वह उन्हें रेडिकल्स[३] का

१. दो राज्यों का सम्बन्ध परखनेवाली नौकरी।

२. जेम्स द्वितीय के निस्कासन के विरोधी।

३. लोकतन्त्रात्मक शासन के इच्छुक।

झुण्ड कहकर गुप्त रूप से बुरा-भला कहता था। वह अपने झगड़ालू नौकरों का नायक था और बदले में जिन सम्बन्धियों से वह स्वयं झगड़ता था उनके लिए आतंक रूप था। केवल इंगलैण्ड में ही उसका जन्म हो सकता था और वह प्रायः कहा करता था कि देश बलिदान होने जा रहा है। उसके सिद्धान्त समय से पीछे थे, किन्तु उसके पक्षपातों के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता था।

लार्ड हेनरी ने कमरे में प्रवेश किया तो अपने चाचा को खुरदरा शिकारी कोट पहिने, चुरुट पीते और 'दि टाइम्स' (समाचारपत्र) पर बड़बड़ाते हुए बैठा पाया। 'अच्छा हेनरी'—वृद्ध सज्जन ने कहा—'इतने सवेरे कैसे आना हुआ? मेरा विचार था कि तुम छैला लोग दो बजे से पहिले कभी उठते नहीं और पाँच बजे से पहिले कभी दिखलाई नहीं देते।'

'पारिवारिक स्नेह के ही कारण, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, चचा जार्ज! मैं तुमसे कुछ चाहता हूँ।'

'रुपया, मैं सोचता हूँ,' लार्ड फरमोर ने मुख मरोड़ते हुए कहा—'अच्छा, बैठ जाओ और मुझे इसके विषय में सब कुछ बतलाओ। आज के तरुण रुपये को ही सब कुछ समझते हैं।'

'हाँ,' लार्ड हेनरी ने कोट का बटन ठीक करते हुए कहा—'और वृद्ध होने पर वे इसे समझते हैं। लेकिन, मैं रुपया नहीं चाहता। जो अपने बिल चुकाते हैं वही रुपया चाहते हैं चचा जार्ज, और मैं तो कभी नहीं चुकाता। उधार ही छोटे लड़के की पूँजी होती है और उसी से आनन्दपूर्वक जीवन बिताया जाता है। इसके अतिरिक्त मेरा काम सदैव डार्टमूर के व्यापारियों से रहता है और वे मुझे कभी परेशान नहीं करते। मुझे तो सूचनाएँ चाहिएँ, लाभदायक नहीं, व्यर्थ की सूचनाएँ।'

'अच्छा, इंगलिश ब्लू-बुक[1] की कोई भी सूचना मैं तुम्हें बतला सकता हूँ हेनरी, हालाँकि वे आजकल बहुत कुछ मूर्खतापूर्ण (अनर्गल) लिख डालते हैं। जिन दिनों मैं डिप्लोमेटिक में था आज से बहुत कुछ

---

१. पार्लियामेण्ट अथवा प्रिवी कौन्सिल की सूचनाएँ।

अच्छा था। लेकिन मैंने सुना है कि अब वहाँ परीक्षा से प्रवेश होता है। तुम क्या आशा कर सकते हो ? परीक्षा आरम्भ से अन्त तक निरा धोखा है। यदि एक मनुष्य सज्जन है तो पर्याप्त ज्ञानी है और यदि वह सज्जन नहीं है तो जो भी वह जानता है उसके लिए बुरा ही है।'

'मिस्टर डोरियन ग्रे का ब्लू-बुक से कोई सम्बन्ध नहीं है चचा जार्ज !'—लार्ड हेनरी ने उदासीनता से कहा।

'मिस्टर डोरियन ग्रे ! वह कौन है ?' लार्ड फरमोर ने अपनी झाड़ी-सी श्वेत भौंहों को सँभालते हुए पूछा।

'यही जानने तो मैं आया हूँ चचा जार्ज ! बल्कि मैं जानता हूँ कि वह कौन है; वह अन्तिम लार्ड केल्सो का नाती है। उसकी माँ डेवरयुक्स की थी—लेडी मार्गरेट डेवरयुक्स। मैं उसकी माँ के विषय में जानता हूँ। वह कैसी थी ? वह किसकी विवाहिता थी ? तुम अपने समय के सभी व्यक्तियों को जानते रहे हो इसलिए उसे भी जानते होगे। इस समय मुझे मिस्टर डोरियन ग्रे में विशेष दिलचस्पी है। मैं अभी उससे मिला हूँ।'

'केल्सो का नाती !'—वृद्ध का स्वर गूँजा—'केल्सो का नाती ! .....निश्चय ही···मैं उसकी माँ को अच्छी तरह जानता था। मुझे विश्वास है कि मैं उसके बपतिस्मा के अवसर पर उपस्थित था। मार्गरेट डेवरयुक्स असाधारण रूप से सुन्दरी थी और एक निर्धन तरुण के साथ भागकर उसने सभी पुरुषों को उन्मत्त कर दिया था। उसकी कोई हस्ती नहीं थी—पैदल सेना का एक साधारण सबलटर्न[२] अथवा ऐसा ही कुछ था। निश्चय ही मुझे सब कुछ ऐसे याद है मानो कल की ही बात हो। बेचारा, विवाह के कुछ ही महीने बादस्पा में एक द्वंद्वयुद्ध में मारा गया था। इसके विषय में एक भद्दी कहानी भी थी। कहा जाता था कि सबके सामने अपने दामाद का अपमान कराने के लिए केल्सो ने किसी धूर्त साहसी बेल्जियम के बर्बर को रखा, ऐसा करने के लिए उसे पैसा दिया; और उस बर्बर ने उस पर ऐसे थूक दिया मानो वह कबूतर है। बात दबा

---

२. कप्तान के नीचे का एक पद।

दी गयी किन्तु आह ईश्वर, केल्सो उसके कुछ दिन बाद तक क्लब में अकेला ही भोजन करता रहा। मुझे बतलाया गया था कि बाद में वह अपनी बेटी को अपने पास ले आया था लेकिन वह उससे फिर कभी नहीं बोली। हाँ, यह बहुत बुरा हुआ था। वह लड़की भी साल भर में ही मर गयी थी। तो वह एक लड़का छोड़ गयी न! वह लड़का कैसा है? यदि वह अपनी माँ जैसा है तब तो निश्चय ही बहुत सुन्दर होगा।'

'वह बहुत सुन्दर है'—लार्ड हेनरी ने हामी भरी।

'मैं आशा करता हूँ वह उचित संरक्षण में होगा,' वृद्ध ने प्रसंग बढ़ाते हुए कहा—'यदि केल्सो ने उसके प्रति उचित कर्तव्य किया हो तो उसे बर्तन-भर रुपया प्राप्त होना चाहिए। उसकी माँ के पास भी रुपया था। उसको बाबा से सेल्बी की समस्त सम्पत्ति प्राप्त हो गयी थी। उसका बाबा केल्सो से घृणा करता था और उसे एक तुच्छ कुत्ता समझता था। वह था भी! एक बार मैड्रिड आया था, जब मैं वहीं था। आह भगवन्, मैं उसके कारण शर्मिंदा था। किराये के लिए गाड़ीवानों से झगड़ने वाले इस सामन्त के विषय में महारानी मुझसे पूछा करती थीं। उन्होंने इसकी एक कहानी-सी बना डाली थी। एक महीने तक महल में अपना मुँह दिखाने का मेरा साहस न हुआ था। मैं आशा करता हूँ कि गाड़ीवानों की अपेक्षा अपने नाती के प्रति उसका व्यवहार अच्छा था।'

'मुझे ज्ञात नहीं,' लार्ड हेनरी ने कहा—'मेरे विचार में लड़का मजे में रहेगा। वह अभी वयस्क नहीं है। उसके पास सेल्बी है। यह मैं जानता हूँ। उसने मुझे ऐसा बतलाया था। और·····क्या उसकी माँ बहुत सुन्दर थी?'

'मार्गरेट डेवरयुक्स मेरी देखी हुई सुन्दरतम् सुन्दरियों में से एक थी। जैसा उसने किया उसकी प्रेरणा उसे कहाँ से मिली यह मैं कभी नहीं समझ सका। वह पसन्द करके किसी से भी विवाह कर सकती थी। कार्लिंगटन उसके पीछे पागल था। लेकिन वह रोमांटिक थी, उस परिवार की सभी स्त्रियाँ वैसी ही थीं। पुरुष साधारण थे परन्तु आह भगवान्! स्त्रियाँ अनोखी थीं। कार्लिंगटन उसके समक्ष घुटनों के बल बैठ गया था,

उसने मुझे स्वयं बतलाया था। वह उस पर हँसी थी और उस समय लन्दन में ऐसी कोई लड़की न थी जो उस पर दीवानी न हो। और हेनरी, यों ही, मूर्खतापूर्ण विवाहों के विषय में, यह क्या गड़बड़ है जो तुम्हारे पिता बतलाते हैं कि डार्टमूर अमरीकी से विवाह करना चाहता है ? क्या उसके लिए इंगलैण्ड की लड़कियाँ पर्याप्त अच्छी नहीं हैं ?'

'अमरीकियों से विवाह करना आजकल फैशन हो गया है, चचा जार्ज !'

'मैं संसार भर के मुकाबले में इंगलैण्ड की औरतों का पक्ष लूँगा,' लार्ड फरमोर ने मेज पर घूंसा मारते हुए कहा।

'अमरीकी स्त्रियों के लिए होड़ लग रही है।'

'मैंने सुना है कि वे टिकती नहीं हैं।' उसका चाचा बुदबुदाया।

'अधिक दिन के सम्बन्ध से वे उकता जाती हैं किन्तु जोखमी जीवन में श्रेष्ठ हैं। वे उड़ती चिड़िया पकड़ती हैं। मेरे विचार में डार्टमूर के के लिए कोई आशा नहीं है।'

'उसके संरक्षक कौन हैं ? हैं कोई ?'

लार्ड हेनरी ने अपना सिर हिला दिया—'जिस प्रकार इंगलैण्ड की स्त्रियाँ अपना अतीत छिपाने में पटु होती हैं उसी प्रकार लड़कियाँ अपने माता-पिताओं को छिपाने में।' उसने जाने के लिए उठते हुए कहा।

'मेरे विचार में वे सुअर का मांस लादते हैं।'

'डार्टमूर के लिए मैं ऐसी ही आशा करता हूँ चचा जार्ज ! मैंने सुना है कि अमरीका में राजनीति के बाद सुअर के मांस को लादना ही सबसे अधिक लाभदायक पेशा है।'

'क्या वह सुन्दर है ?'

'उसका बर्ताव ऐसा ही है मानो वह सुन्दर हो। अधिकांश अमरीकी स्त्रियाँ ऐसा ही करती हैं। उनके सौंदर्य का यही भेद है।

ये अमरीकी औरतें अपने ही देश में क्यों नहीं रहतीं ? वे हमेशा कहा करती हैं कि अमरीका औरतों के लिए स्वर्ग है।'

'ऐसा ही है और यही कारण है कि ईव[1] के समान ही वे वहाँ से निकल भागने के लिए अत्यन्त उत्सुक रहती हैं,' लार्ड हेनरी ने कहा— 'नमस्ते चचा जार्ज ! अधिक रुकने से मुझे भोजन को देर हो जायगी। इच्छित सूचना देने के लिए धन्यवाद। अपने नये मित्रों के विषय में मैं सदैव ही सब कुछ जानना पसन्द करता हूँ और पुरानों के विषय में कुछ भी नहीं।'

'तुम कहाँ भोजन करोगे, हेनरी !'

'चची अगाथा के यहाँ। मैं और मिस्टर ग्रे वहाँ जायेंगे। वह उसका नवीनतम् प्रतिपालन व्यक्ति है।'

'हम्फ़[2] ! हेनरी अपनी चची अगाथा से कह देना कि दान देने के लिए मुझे अधिक परेशान न करें। मैं उनके कारण ऊब चुका हूँ। वह उदार स्त्री यह क्या सोचती है कि उसकी सनकों के लिए चेक लिखने के अतिरिक्त मुझे और कोई काम ही नहीं है।'

'अच्छा, चचा जार्ज, मैं कह दूँगा, किन्तु उसका कोई प्रभाव न होगा। परोपकारी व्यक्ति मनुष्यत्व को ताक पर धर देते हैं। यही उनकी चारित्रिक विशेषता है।'

वृद्ध प्रत्युत्तर में गुर्राया और नौकर के लिए घण्टी बजा दी। लार्ड हेनरी महराबदार नीची राह को पार करके बर्लिंगटन स्ट्रीट में पहुँचा और बर्क स्क्वायर की ओर मुड़ गया।

तो यह डोरियन ग्रे के माता-पिता की कहानी थी।

यद्यपि अधूरे ढँग से उसे बतलायी गयी थी फिर भी इसके अनोखे और लगभग आधुनिक रोमांस के संकेत ने उसमें हलचल पैदा कर दी थी। एक सुन्दर नारी ने पागल अनुरक्ति के लिए सभी जोखिम उठा लिये थे। कुछ सप्ताहों के प्रचण्ड प्रेम को भयानक विश्वासघाती अपराध ने समाप्त कर दिया था। महीनों की मौन यन्त्रणा और तब पीड़ा में एक पुत्र का जन्म ! मृत्यु द्वारा छीनी गयी माँ और एकाकीपन तथा

---

१. आदि नारी। २. सन्देह की चिल्लाहट।

वृद्ध और प्रेम-विहीन मनुष्य का अत्याचार सहने के लिए बच रहा पुत्र। हाँ, यह एक मनोरंजक पृष्ठभूमि थी। छोकरे को इसी से ढँग मिला और वह मानो अधिक पूर्ण हो गया। संसार की प्रत्येक सुन्दर वस्तु के पीछे कुछ दुख भरा है। साधारण-से-साधारण पुष्प के खिलने के लिए भी मृष्टि को प्रसव-पीड़ा सहनी पड़ी।'' और पिछली रात के भोज के समय वह कितना मनोहर लगता था जब अचम्भित नेत्र और भयातुर आनन्द मे अधखुले अधर लिये क्लब में उसके सामने बैठा था और शमादानों की लाल छाया से रंगकर सुन्दर गुलाब से भी अधिक आश्चर्यजनक सौंदर्य उसके मुख पर जाग्रत हो रहा था। उससे बात करने पर ऐसा प्रतीत होता था मानो सुमधुर वायलिन बज रहा हो। गज का प्रत्येक स्पर्श और कंपन उसमें सही-सही उतरता था। प्रभाव भयानक रूप से मोहक था। और कोई भी कार्यक्रम ऐसा नहीं था जिससे कोई अपनी आत्मा को किसी सुन्दर आकार में ढाल दे, एक क्षण तक उसे वहीं ठहरने दे, अपने ही विचारों की अनुरक्ति और यौवन के संगीत से भरी प्रतिध्वनि सुने; अपना स्वभाव दूसरे को ऐसे दे दे मानो वह सूक्ष्म तरल अथवा अनोखी सुगन्धि हो; उसमें वास्तविक आनन्द था—सम्भवतः हमारे सीमित और साधारण समय के लिए बचा हुआ परम संतोषजनक आनन्द! यह समय जो आनन्द में प्रधानतः विषयी और उद्देश्यों में प्रधानतः साधारण है··· ·····वह छोकरा आश्चर्यजनक आदर्श भी था जिससे अनोखे ढंग से अचानक ही वह बेसिल के स्टूडियो में मिला था—अथवा वह आश्चर्यजनक आदर्श बनाया तो जा ही सकता था! उसमें शोभा थी, बालपन की शुभ्र पवित्रता थी और प्राचीन यूनानी मूर्तियों जैसी सुन्दरता थी। वह बहुत बड़ा मनुष्य भी बनाया जा सकता था और खिलौना भी! कितने दुख की बात थी कि ऐसे सौन्दर्य को भी मुर्झाना था।·····और बेसिल? मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से वह कितना आकर्षक था। कला में नया ढंग और जीवन को नये दृष्टिकोण से देखना ये केवल उसकी दृष्टिगोचर उपस्थिति के कारण प्रेरित था जो स्वयं इस सबसे बेखबर था; धुँधले वनप्रदेश में रहने वाली और मैदानों में अदृष्ट घूमने वाली मूक आत्मा अचानक प्रकट हो जाय और वनदेवी जैसी निडर हो क्योंकि

उसे खोलने वाले की आत्मा में वह अनोखी दृष्टि शक्ति जागृत हो चुकी है जहाँ अनोखी वस्तुएँ प्रकाशित होती हैं; वस्तुओं के साधारण आकार और नमूने मानो उत्कृष्ट हो रहे हों और ऐसा लाक्षणिक महत्त्व प्राप्त कर रहे हों मानो वे स्वयं किसी अन्य पूर्ण आकार के नमूने हों जिसकी छाया को वे वास्तविक रूप दे रहे हों। यह सब कितना विचित्र था! कुछ ऐसा ही उसे इतिहास में से याद आ रहा था। क्या वह विचारक कलाकार प्लेटो नहीं था जिसने सर्वप्रथम इसका विश्लेषण किया था? क्या वह आरोही नहीं था जिसने रंगीन पत्थर पर इसे चौदह पंक्ति के छंद में अनुक्रम से खोदा था? लेकिन हमारी शताब्दी में यह विचित्र था·····हाँ, वह डोरियन ग्रे के प्रति वही होना चाहेगा, जैसा न जानते हुए भी वह छोकरा उस चित्रकार के प्रति था जिसने उसका अनोखा चित्र बनाया था। यह उसे प्रभावित करने का प्रयत्न करेगा—लगभग आधा वह कर भी चुका है।

उस अनोखी आत्मा को वह अपनी बनायेगा। इस प्रेम और मृत्यु के बेटे में कुछ मोहक था!

अचानक वह रुका और ऊपर मकानों को देखने लगा। उसने देखा कि वह अपनी चाची के मकान से कुछ दूर निकल आया है, स्वयं ही मुस्कराता हुआ वह लौट पड़ा। जब उसने धुँधले-से हॉल में प्रवेश किया तो सेवक ने बतलाया कि लोग भीतर भोजन करने गये हुए हैं। उसने एक सेवक को अपना हैट और घड़ी दी और भोजन के कमरे में चला गया।

'सदैव देर में, हेनरी!'—उसकी ओर अपना सिर हिलाते हुए उसकी चाची चिल्लायी।

उसने एक सुगम बहाने का आविष्कार कर लिया और उसके पास वाली खाली जगह पर बैठकर उपस्थितों को देखने के लिए निगाह दौड़ायी। मेज़ के छोर से डोरियन ने शर्माकर उसे नमस्कार किया और आनन्द की छाया उनके कपालों पर झलक उठी। सामने हार्ले की डचेज थी—एक अच्छे स्वभाव की सम्भ्रान्त नारी जिसे उसके परिचित पसन्द करते थे और जिसकी शारीरिक गठन ऐसी सुडौल थी कि साधारण स्त्रियों के

ऐसे शरीर को देखकर समकालीन इतिहासकार हट्टा-कट्टा वर्णित करते थे। उसके पास दाहिनी ओर पार्लियामेंट का रेडिकल सदस्य सर टामस बर्डन बैठा हुआ था जो सार्वजनिक जीवन में अपने नेता का और घरेलू जीवन में अपने बावर्चियों का अनुसरण करता था। सुप्रसिद्ध रीति के अनुसार टोरियों के साथ खाता और लिबरलों के साथ विचार करता था। बायीं ओर ट्रेडले का मिस्टर अर्सकाइन बैठा था। यह वृद्ध अत्यन्त मनोहर और सुसंस्कृत था, किन्तु जैसा कि उसने एक बार लेडी अगाथा से कहा था, जो कुछ उसे कहना था, तीस वर्ष की अवस्था तक वह सब कुछ कह चुका था, उसे चुप्पी की बुरी आदत पड़ गयी थी। उसकी पड़ौसिन मिसेज वन्डेलियुर उसकी चाची की एक पुरानी मित्र, औरतों में सन्त किन्तु इतनी भद्दी वेशभूषा में थी कि उसे देखकर बुरी तरह जिल्द-बंधी एक प्रार्थना पुस्तक की याद आ जाती थी। उसके भाग्य से उसकी दूसरी ओर लार्ड फाडेल था जो अत्यन्त तीव्र बुद्धि का साधारण प्रौढ़ था, जो जन-सभा में मंत्री के भाषण की तरह सारहीन था, जिसके साथ कि वह अत्यन्त उत्साहपूर्वक बातें करने का अक्षम्य अपराध कर रही थी—एक अपराध जिसमें, उसके कथनानुसार, सभी भलेमानुस फँसते हैं और जिससे कभी कोई नहीं बचता।

'हम बेचारे डार्टमूर के बारे में बातें कर रहे हैं, लार्ड हेनरी!'—मेज की छोर से आनन्दपूर्वक सिर हिलाती हुई डचेज़ बोली—'क्या तुम सोचते हो कि वह इस मनोहर तरुणी से सचमुच शादी करेगी?'

'डचेज, मुझे विश्वास है कि उसने उसके समक्ष प्रस्ताव रखने का निश्चय कर लिया है।'

'कितनी भयानक बात है!'—लेडी अगाथा चिल्लायी।

'मुझे विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि उसका पिता एक अमरीकन ड्राई-गुड्स स्टोर[1] रखे हुए है'—सर टामस बर्डन ने घमण्ड दिखाते हुए कहा।

---

१. सुखायी हुई वस्तुओं का भंडार।

'मेरे चचा ने पोर्क-पैकिंग[1] के विषय में पहिले ही कहा है, सर टामस।'

'ड्राईगुड्स ! अमरीका के ड्राईगुड्स क्या हैं ?' आश्चर्यचकित डचेज़ ने अपने बड़े बड़े हाथ उठाते हुए कहा।

'अमरीकी उपन्यास'—लार्ड हेनरी ने कुछ झिझकते हुए उत्तर दिया।

डचेज़ परेशान प्रतीत हुई।

"तुम उसकी ओर ध्यान मत दो, मेरे प्यारे !'—लेडी अगाथा फुसफुसायी—'जो वह कहता है, निरर्थक होता है।'

'जब अमरीका की खोज हुई थी,' रेडिकल सदस्य ने कहा और उकता डालने वाले तथ्य वर्णित करने लगा। एक विषय को समाप्त कर डालने की चेष्टा करने वाले व्यक्तियों के समान ही उसने अपने श्रोताओं को थका डाला। डचेज़ ने निश्वास भरी और टोकने के विशेषाधिकार का उपयोग किया। 'काश, अमरीका की खोज हुई ही न होती !'—उसने कहा—'निश्चय ही आजकल हमारी लड़कियों के लिए कोई अवसर ही नहीं रह गया। यह अत्यन्त अन्यायपूर्ण है।'

'सम्भवतः अमरीका की खोज कभी हुई ही नहीं'—मिस्टर अर्स-काइन ने कहा—'मैं तो कहूँगा कि इसे केवल जान लिया गया है।'

'ओह, किन्तु मैंने निवासियों के नमूने देख लिये हैं'—डचेज़ ने अस्पष्ट स्वर में कहा—'मुझे स्वीकार करना ही होगा कि उनमें से अधिकांश अत्यन्त रूपवती हैं और उनकी वेशभूषा भी बहुत सुन्दर होती है। उनके सब वस्त्र पेरिस में तैयार होते हैं। काश, मेरी भी ऐसी सामर्थ्य होती।'

'कहते हैं कि अच्छे अमरीकन मरकर पेरिस पहुँचते हैं'—सर टामस ने थकी हुई मुस्कान में कहा। उसके पास हास्य के व्यक्त वस्त्रों की एक बड़ी आलमारी थी।

'सचमुच ! और बुरे अमरीकन मरकर कहाँ जाते हैं ?'—डचेज़ ने पूछा।

'वे अमरीका जाते हैं'—लार्ड हेनरी ने धीमे स्वर में कहा।

---

१. सुअर के मांस को सुखाकर भेजना।

सर टामस की भृकुटि वंकिम हो गयी। 'मुझे भय है कि तुम्हारा भतीजा उस महान् देश से द्वेष रखता है।' उसने लेडी अगाथा से कहा—'मैंने इस देश मे डाइरेक्टरों द्वारा दिलायी हुई कारों में भ्रमण किया है, ऐसी बातों में वे अत्यन्त सुशील हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि इसे देखना शिक्षाप्रद है।'

'लेकिन शिक्षा के लिए क्या हमें सचमुच शिकागों देखना होगा।' मिस्टर अर्सकाइन ने दुखी स्वर में पूछा—'मुझे यात्रा करने की इच्छा नहीं होती।'

सर टामस ने अपना सिर हिलाया। ट्रेडले के मिस्टर अर्सकाइन की दुनिया दराज में है। हम व्यावहारिक लोग वस्तुएँ देखना चाहते हैं, उसके विषय में पढ़ना नहीं। अमरीकी बहुत दिलचस्प हैं। वे पूर्णतया तर्कमय है। मेरे विचार में यह उनकी चारित्रिक विशेषता है। हाँ, मिस्टर अर्सकाइन, वे पूर्णतय तर्कमय व्यक्ति हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि अमरीकियों में कोई मूर्खता नहीं है।'

'कितना भयानक!'—लार्ड हेनरी चिल्लाया—'मैं निर्दय शक्ति का सामना कर सकता हूँ पर निर्दय तर्क बिलकुल असह्य है। इसका प्रयोग अन्यायपूर्ण होता है। यह चेतना पर भयंकर अघात है।'

'मैं समझा नही।' सर टामस ने कुछ लाल पड़ते हुए कहा।

'मैं समझ गया लार्ड हेनरी'—मिस्टर अर्सकाइन ने मुस्कराकर धीमे से कहा।

'सत्य किन्तु देखने में झूठ बातें अपने ढंग में ठीक ही हैं.....' वेरोनेट ने उत्तर दिया।

'क्या वह झूठ प्रतीत होने वाला सत्य था!' मिस्टर अर्सकाइन ने पूछा—"मैंने ऐसा नहीं सोचा था, सम्भवतः ऐसा था। अच्छा झूठ प्रतीत होने वाले सत्य के मार्ग से ही सत्य पाया जाता है। कठोर धरातल पर ही वास्तविकता की परख होती है। विभिन्नता का कारण निकल आने पर विचार किया जा सकता है।'

'प्यारो!' लेडी अगाथा ने कहा—'तुम पुरुष कैसा तर्क करते हो! वास्तव में, मैं नहीं समझ सकी कि तुम लोग किस विषय में बातें कर रहे

हो। ओह, हेनरी, मैं तुमसे खीझ उठी हूँ। तुम हमारे अच्छे मिस्टर डोरियन ग्रे को ईस्ट एण्ड छोड़ने के लिए क्यों फुसला रहे हो? मैं विश्वास दिलाती हूँ कि वह अनमोल सिद्ध होगा। वे इसके खेल पसन्द करेंगे।'

'मैं चाहता हूँ कि वह मेरे सामने खेले।' मुस्कराते हुए लार्ड हेनरी चिल्लाया। मेज की उस ओर उसने देखा और पायी एक स्वीकृतिसूचक दृष्टि!

'लेकिन वे ह्वाइट चैपल में इतने दुखी हैं।' लेडी अगाथा ने पुनः कहा।

'सिवाय दुख के मेरी सहानुभूति सबके लिए है' लार्ड हेनरी ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा—'उसे मेरी कोई सहानुभूति नहीं। यह अत्यन्त बेहूदा, भयानक और पीड़क है। पीड़ा के प्रति आधुनिक सहानुभूति अत्यन्त अस्वस्थ है। सहानुभूति होनी चाहिए रंग, सौंदर्य और जीवन के आनन्द के प्रति। जीवन के कष्टों के विषय में जितना ही कम कहा जाय उतना ही अच्छा।'

फिर भी ईस्ट एण्ड एक बहुत बड़ी समस्या है।' सर टामस ने गम्भीरतापूर्वक सिर हिलाते हुए कहा।'

'बिलकुल ठीक!'—तरुण लार्ड ने कहा—'यह समस्या दासत्व की है और हम इसको हल करना चाहते हैं दासों का मनोरंजन करके।'

राजनीति-कुशल ने उसे ध्यान से देखा—'तब तुम क्या परिवर्तन चाहते हो?' उसने पूछा।

लार्ड हेनरी हँसा। 'मैं इंगलैंड में मौसम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं बदलना चाहता' उसने उत्तर दिया।

'मुझे दार्शनिक विचारों से पूर्ण संतोष है। लेकिन, चूँकि सहानुभूति के अपव्यय ने उन्नीसवीं सदी को दिवालिया कर दिया है, मेरा प्रस्ताव है कि हमें उचित मार्ग-निर्देशन के लिए विज्ञान की शरण लेनी चाहिए। मनोभाव हमें गुमराह करते हैं और विज्ञान का लाभ यही है कि यह भावुक नहीं है।'

'किन्तु हम पर इतने गहन उत्तरदायित्व हैं' मिसेज वन्डेलियुर ने डरते हुए कहा।

'अत्यन्त गहन'—लेडी अगाथा ने दुहराया।

लार्ड हेनरी ने मिस्टर अर्सकाइन की ओर देखकर कहा। 'मानवता गम्भीरता अनुभव करती आयी है। संसार का यह आद्य पाप है। यदि गुफाओं में रहने वाली मानवता को हँसाना आता होता तो इतिहास दूसरा ही होता।'

'सचमुच तुम बड़े शान्तिदायक हो।' डचेज़ ने चिड़िया जैसे मधुर स्वर में कहा—'जब भी मैं तुम्हारी चाची को देखने आयी अपने को दोषी-सा अनुभव किया, क्योंकि मुझे ईस्ट एन्ड में कोई दिलचस्पी नहीं है। भविष्य में मैं बिना लजाये उससे आँखें मिला सकूँगी?'

'लज्जारुणिमा अत्यन्त सुन्दर लगती है, डचेज'—लार्ड हेनरी ने कहा—

'तभी जब तक तारुण्य है' उसने उत्तर दिया—'मुझ जैसी वृद्धा का लज्जारुण होना अशुभ है। आह, लार्ड हेनरी, मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे पुनः तरुण होने का उपाय बतलाओ।'

उसने एक क्षण सोचा। "बचपन में की हुई कोई भूल तुम्हें याद है, डचेज़?'—मेज़ के उस पार उसे देखते हुए उसने पूछा।

'मुझे भय है कि बहुत-सी।' वह चिल्लायी।

'तब उन्हें फिर से दुहरा डालो।' उसने गम्भीरतापूर्वक कहा—'अपना तारुण्य पुनः पाने के लिए केवल अपनी मूर्खताओं को दुहरा डालने की आवश्यकता होती है।'

'मज़ेदार नियम!' उसने कहा—'मैं इसे अवश्य व्यवहृत करूंगी।'

'ख़तरनाक नियम।' सर टामस के बन्द अधरों से स्वर फूटा। लेडी अगाथा ने अपना सिर हिलाया, किन्तु आनन्दित हुए बिना न रह सकी। मिस्टर अर्सकाइन सुनता रहा।

'हाँ,' उसने पुनः कहा—'जीवन में महानतम् रहस्यों में से यह एक है। आजकल अधिकांश व्यक्ति रेंगती-सी बुद्धि के शिकार होते हैं और अत्यन्त विलम्ब से जान पाते हैं कि पछतावा न करने वाली केवल भूलें ही होती हैं।'

मेज़ के चारों ओर हास्य गूँज उठा।

वह विचार से क्रीड़ा करने लगा और स्वेच्छाचारी हो गया; उसे

हवा में उछाला और आकार दिया; भागने दिया और पुनः पकड़ लिया; इसे कल्पना के इन्द्र-धनुषी रंगों से रंगकर असत्य-प्रतीति के पर लगा दिये। मूर्खता की प्रशंसा बढ़ते-बढ़ते दार्शनिकता में परिणित हो गयी और स्वयं दार्शनिकता तरुणी हो गयी। आनन्द के पागल संगीत के सहारे शराबसिक्त वस्त्र और आइवी (सदा हरी रहने वाली लता) का हार पहिने व कान्टी (शराब की प्रेमिका) के समान जीवन की पहाड़ियों पर नाचती और शान्त होने के कारण सुस्त साइलीनस (शराब से फूला हुआ बेकार फिरने वाला वृद्ध) का मजाक उड़ाती हुई की कल्पना की जा सकती थी। वन की भयाक्रांत वस्तुओं के समान उसके सामने तथ्य भागते थे। वृद्धिमान उमर जिस विशाल शिकंजे पर बैठता था, उसपर उसके श्वेत पैर तब तक धीरे-से चले जब तक अंगूरों का खौलता-सा रस उसकी नंगी पिंडलियों के चारों ओर सुर्ख बुलबुलों की लहरें बनकर उठने लगा अथवा काले, रिसते हुए ढलुआ किनारों के कुण्डे से लाल झाग रेंगने लगी। यह असाधारण देन थी। उसने अनुभव किया कि डोरियन ग्रे की आँखें उस पर केन्द्रित हैं, उसके दर्शकों में वह है, जिसके स्वभाव को उसे प्रभावित करना है, इसकी अनुभूति ने उसकी बुद्धि को तीक्ष्णता तथा कल्पना को आकार दिया। वह प्रतिभापूर्ण, कल्पनाशील और दायित्वहीन था। वह अपने श्रोताओं पर उन्हीं का जादू-सा कर देता था और वे हँसते हुए उसकी बाँसुरी का अनुसरण करने लगते थे। डोरियन ग्रे अपनी दृष्टि उससे नहीं हटा सका था, बल्कि मोहित-सा वह बैठा रहा, अधरों पर मुस्कान आती-जाती रही और उसकी काली पड़ती हुई आँखों में आश्चर्य गम्भीरता से बढ़ता गया।

अन्त में, नौकर के रूप में सामयिक वर्दी पहिने, डचेज़ को यह बतलाने कि उसकी गाड़ी प्रतीक्षा कर रही है, यथार्थता ने प्रवेश किया। झूठी निराशा में उसने अपने हाथ मरोड़े—'कितना कष्ट है!' वह चिल्लायी 'मुझे जाना होगा। मुझे क्लब में अपने पति से मिलकर उसे विलिस के कमरों में किसी मीटिंग में ले जाना है जहाँ वह अध्यक्ष बनेगा। यदि मुझे विलम्ब हुआ तो वह अवश्य बिगड़ेगा और मैं इस बौनेट (स्त्रियों की टोपी) में वहाँ न जा सकूँगी, यह बहुत नाजुक है और शीघ्र ही टूट

जायगा। नहीं, मुझे जाना ही होगा, प्यारी अगाथा ! नमस्ते लार्ड हेनरी, तुम अत्यन्त मनोरंजक और घोररूप से भ्रष्ट करने वाले हो। निश्चय ही तुम्हारे विचारों के विषय में मुझे कुछ कहते नहीं बनता है। तुम किसी रात अवश्य आओ और हमारे साथ भोजन करो। मंगल, मंगल को तुम्हें फुरसत है ?"

'तुम्हारे लिए मैं किसी को भी त्याग दूँगा, डचेज़ !' लार्ड हेनरी ने अभिवादन करते हुए कहा।

'आह, यह बहुत अच्छा है, और तुम्हारे द्वारा बहुत बुरा' वह चिल्लायी—'तो आने का ध्यान रखना' और शीघ्रता से कमरे के बाहर निकल गयी। लेडी अगाथा तथा अन्य स्त्रियाँ उसके पीछे गयीं।

जब लार्ड हेनरी पुनः बैठ गया, मिस्टर अर्सकाइन चारों ओर घूमा, उसके पास की कुर्सी पर बैठा और अपना हाथ उसकी बाँह पर रख दिया।

'तुम्हारी बातों में किताबें रहती हैं,' उसने कहा—"तुम एक लिखते क्यों नहीं ?'

'लिखने की चिन्ता करने की अपेक्षा मुझे किताबें पढ़ने का बहुत शौक है, मिस्टर अर्सकाइन ! निश्चय ही मैं एक उपन्यास लिखना चाहता हूँ जो पारसीकालीन की तरह सुन्दर और अवास्तविक हो। लेकिन इंगलैंड में समाचारपत्र, प्रारम्भिक पुस्तकें तथा विश्व-कोष पढ़ने वालों के अतिरिक्त साहित्य-प्रेमी जनता नहीं है। संसार के व्यक्तियों में केवल अंग्रेज ही ऐसे हैं जो साहित्य के सौंदर्य को सबसे कम समझ पाते हैं।'

'मुझे भय है कि तुम ठीक कह रहे हो।' मिस्टर अर्सकाइन ने उत्तर दिया—'मेरी भी साहित्यिक महत्त्वाकांक्षाएँ थीं, लेकिन बहुत दिन हुए मैंने उन्हें त्याग दिया है। और अब मेरे प्यारे तरुण मित्र, यदि तुम ऐसे सम्बोधन की अनुमति दो, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि भोजन के समय तुमने जो कुछ कहा तुम्हारे भाव वही हैं ?'

'मैं बिलकुल भूल गया हूँ कि मैंने क्या कहा था।' लार्ड हेनरी मुस्कराया—'क्या वह सब बहुत बुरा था ?'

'वास्तव में बहुत बुरा ! सचमुच मैं तुम्हें बहुत खतरनाक समझता हूँ और यदि हमारी अच्छी डचेज़ को कुछ हो गया तो हमारी दृष्टि में

प्रमुख उत्तरदायित्व तुम पर होगा। लेकिन मैं तुमसे जीवन के विषय में बातें करना चाहूँगा। जिस पीढ़ी में मेरा जन्म हुआ वह उकता डालने वाली थी। किसी दिन, तुम जब लन्दन से उकता जाओ तो ट्रेडले आना और मुझ सौभाग्यशाली की वर्गन्डी में आनन्दविषयक अपने विचार बतलाना।'

'मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। ट्रेडले की यात्रा मेरे लिए विशेषाधिकार के समान होगी जहाँ पटु मेहमानवाज़ और पूर्ण पुस्तकालय होगा।'

'तुम इसे पूर्ण कर दोगे।' वृद्ध ने उत्तर दिया और सम्मानपूर्वक नमस्कार किया—'और अब तुम्हारी अच्छी चाची से विदा ले आऊँ। मुझे एथिनियम पहुँचना है। वहाँ हम इसी समय सोते हैं।'

'तुम सब, मिस्टर अर्सकाइन ?'

'हममें से चालीस, चालीस हत्थेदार कुर्सियों में ! हम अंग्रेजी विद्वद् समाज के लिए तैयार हो रहे हैं।'

लार्ड हेनरी हँसा और उठ खड़ा हुआ। 'मैं पार्क जा रहा हूँ।'—उसने कहा।

जैसे ही वह द्वार से निकल रहा था डोरियन ग्रे ने उसकी बाँह छू दी। 'अपने साथ मुझे भी आने दो' वह बड़बड़ाया।

'लेकिन मेरा विचार था कि तुमने बेसिल हावर्ड के पास जाने और उससे मिलने के लिए वचन दिया था' लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया।

'मैं शीघ्र ही तुम्हारे साथ चलूँगा, हाँ, मेरा मन कहता है कि मुझे तुम्हारे साथ अवश्य चलना चाहिए। मुझे आने दो और वचन दो कि तुम मुझसे बराबर बातें करते रहोगे ? तुम्हारे समान अनोखी बातें कोई भी नहीं कर पाता।'

'आह, आज मैंने पर्याप्त बातें कह डाली हैं।' लार्ड हेनरी ने मुस्कराते हुए कहा—'अब मैं केवल जीवन देखना चाहता हूँ—यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम भी मेरे साथ आकर जीवन देख सकते हो।'

(४)

एक मास के अनन्तर, एक दोपहर को मेफेयर में स्थित लार्ड हेनरी के मकान की छोटी-सी लाइब्रेरी में एक आराम कुर्सी पर डोरियन ग्रे

लेटा हुआ था। यह अपने ढंग का एक अत्यन्त आकर्षक कमरा था जिसकी दीवालों पर जैतून से रंगी बलूत की लकड़ी का उभरा हुआ चौखटा लगा हुआ था, आकाश-वृत्त के समानान्तर चौड़ा नक्काशी का काम हलके पीले रंग का था, छत उभरे हुए प्लास्टर की बनी थी और ईंटों की धूल से युक्त कालीन पर सिम्क की लम्बी गोटवाले पारसी रंग थे। एक छोटी-सी सैटिन[1] की मेज़ पर क्लौडियन की बनायी हुई एक नन्हीं-सी मूर्ति रखी हुई थी और उसी के पास क्लोविसईव द्वारा बेलोइ की मार्गरेट के लिए जिल्द चढ़ायी गयी तथा महारानी द्वारा अपनी योजना के लिए छाँटे हुए डेज़ी के पुष्प-पाउडर से सज्जित किनारोंवाली 'लीस सेन्ट नावलीस' पड़ी हुई थी। थोड़े-से नीले चीनी जार (बर्तन) तथा शुक-शुललाला मेन्टल-सेल्फ़ पर करीने से रखे हुए थे और खिडकी के छोटे शीशेदार चौखटों में से लंदन के ग्रीष्म-दिवस की खुर्बानी के रंग की रोशनी फैल रही थी।

लार्ड हेनरी अभी तक नहीं आया था। वह उसूलन देर करता था, उसके सिद्धान्त के अनुसार मुस्तैदी समय की चोर है। इसीलिए छोकरा उदासीन-सा दिख रहा था और उसकी अनिच्छित अंगुलियाँ 'मनान लीस-काट' के भली प्रकार चित्रित संस्करण के पृष्ठ उलट रही थीं जिसे उसने किताबों की एक आलमारी में पाया था। लुई क्वार टोर्ज घड़ी की नियमित सतत टिक-टिक ने उसे तंग कर डाला। एक-दो बार उसने चले जाने का विचार किया।

अन्त में उसे बाहर पगध्वनि सुनायी दी और द्वार खुला।

'हेनरी, तुमने कितनी देर कर दी !'—वह बड़बड़ाया।

'मुझे भय है कि यह हेनरी नहीं है, मिस्टर ग्रे'—एक तीक्ष्ण स्वर ने उत्तर दिया।

उसने शीघ्र ही चारों ओर दृष्टि दौड़ायी और उठकर खड़ा हो गया।

'मैं क्षमा चाहता हूँ। मैंने सोचा···'

'तुमने सोचा कि मेरा पति है। है केवल उसकी पत्नी ! मुझे स्वयं

---

१. ग्रीष्म मण्डल का एक वृक्ष।

अपना परिचय देने दो। मैं तुम्हें तुम्हारे फोटुओं से बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। मेरे विचार में मेरे पति के पास तुम्हारे सत्रह फोटोग्राफ हैं।'

'सत्रह नहीं, लेडी हेनरी ?'

'तब, अठारह सही। और मैंने तुम्हें उनके साथ पिछली रात्रि को ऑपेरा में देखा था'—बोलने के साथ-साथ वह अधीरता से हँसी और उसे अपनी अस्पष्ट 'भुलाना नहीं' कहती-सी आँखों से निहारती रही। वह विचित्र नारी थी जिसके वस्त्र क्रोधावस्था में तैयार किये तथा तूफान में पहिने गये-से प्रतीत होते थे। वह प्रायः किसी न किसी को प्रेम करती रही थी और प्रतिदान कभी भी न पा सकने के कारण समस्त भ्रम जाल से फँसी हुई थी। वह चित्र-सी दिखने का प्रयत्न करती थी, किन्तु दिखती बेढँगी ही थी। उसका नाम विक्टोरिया था और उसे गिर्जाघर जाने का पूरा खब्त था।

'मेरे विचार में, हम 'लोहेन ग्रिन' गये थे, लेडी हेनरी ?'

"हाँ, वह प्यारा 'लोहेन ग्रिन' ही था। अन्य की अपेक्षा मुझे वैगनर का संगीत अधिक अच्छा लगता है। संगीत का स्वर इतना तीव्र होता है कि किसी के निरन्तर बात करते रहने पर भी अन्य उसकी बात नहीं सुन सकते। यह सुभीते का महान् अवसर होता है। क्या तुम्हारे विचार में ऐसा नहीं है, मिस्टर ग्रे ?"

उसके पतले अधरों से वही तीव्र तथा बेढँगा हास्य अधीरतापूर्वक फूटा और उसकी अंगुलियाँ कछुए के खप्पर से बने एक लम्बे कागज़ काटने-वाले चाकू से खेलने लगीं।

डोरियन मुस्कराया और अपना सिर हिला दिया। 'क्षमा करना, मैं ऐसा नहीं सोचता, लेडी हेनरी। मैं संगीत के समय कम-से-कम अच्छे संगीत के समय कभी बात नहीं करता। यदि बुरा संगीत हो रहा हो तो उसे वार्तालाप में डुबा देना कर्तव्य हो जाता है।'

'आह, यह हेनरी के विचारों में से एक है, है न मिस्टर ग्रे ? हेनरी के विचार मैं सदैव उनके मित्रों से सुनती हूँ। उसके विचारों को जानने का यही एकमात्र उपाय है। लेकिन तुम्हें यह नहीं सोचना चाहिये कि मैं अच्छा संगीत पसन्द नहीं करती। मैं उसका आदर करती हूँ, किन्तु उससे

डरती हूँ, उसके कारण मैं अत्यन्त कल्पनाशील हो जाती हूँ। प्यानो बजाने वालों की मैंने भक्ति-सी की है—कभी-कभी एक ही समय में दो की। हेनरी मुझे बतलाता है। मैं नहीं जानती कि उनमें ऐसा क्या है। सम्भवतः वे विदेशी हैं, इसलिए। वे सब विदेशी हैं, हैं न? यह उनका चातुर्य और कला का सुन्दर अभिनन्दन है। इससे उनका विश्व-प्रेम प्रकट होता है, होता है न? तुम मेरी किसी पार्टी में सम्मिलित नहीं हुए, हुए हो मिस्टर ग्रे? तुम अवश्य आओ। मैं भड़कीले लाल फूल नहीं ले सकती, किन्तु विदेशियों के लिए मैं सभी कुछ खर्च कर सकती हूँ। उनकी उपस्थिति से कमरे चित्र जैसे सुन्दर लगते हैं। लेकिन हेनरी आ गया। हेनरी, मैं तुम्हें देखने आयी थी, तुमसे कुछ पूछने—क्या, यह मैं भूल गयी—और यहाँ मैंने मिस्टर ग्रे को पाया। हमने संगीत के विषय में अत्यन्त मनोरंजक बातें कीं। हमारे विचार बिलकुल एक हैं। नहीं, मैं सोचती हूँ कि हमारे विचार बिलकुल भिन्न हैं। किन्तु वह अत्यन्त मनोहर रहा। इसको देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई।'

'मैं मोहित हो गया हूँ, मेरी प्यारी, पूर्णतया मोहित'—दूज के चाँद के आकार की काली भौंएँ घुमाते हुए और उन दोनों को मुग्ध मुस्कराहट से देखते हुए लार्ड हेनरी ने कहा। "मुझे देर हो गयी इसका मुझे अत्यन्त दुःख है, डोरियन! बारडोर स्ट्रीट में पुराना पट्टू खोजने मैं गया था। आजकल लोग प्रत्येक वस्तु का मूल्य जानते हैं किन्तु उपयोगिता किसी की भी नहीं जानते।'

'क्षमा करना, मुझे जाना है'—लेडी हेनरी ने अपने अचानक मूर्खतापूर्ण हास्य द्वारा अप्रिय शान्ति भंग करते हुए कहा—'मैंने डचेज़ के साथ जाने का वायदा किया है। नमस्ते मिस्टर ग्रे, नमस्ते हेनरी। मैं सोचती हूँ, तुम निमंत्रित हो? मैं भी निमंत्रित हूँ। सम्भवतः मैं तुम्हें लेडी थार्नबरी के यहाँ मिलूँ।'

'प्यारे, मैं कहता हूँ'—लार्ड हेनरी ने उसके पीछे द्वार बन्द करते हुए कहा जो रात भर बाहर वर्षा में भीगती रही, स्वर्ग की चिड़िया के समान दिखलायी देती थी, कमरे से विदा हो गयी और छोड़ गयी फेंगी पन्नी की हलकी सुगन्ध। तब उसने सिगरेट सुलगायी और सोफे पर लुढ़क गया।

'डोरियन, पुआल जैसे रंग के बालोंवाली स्त्री से कभी विवाह न करना'—कुछ कश लगाकर उसने कहा।

'क्यों, हेनरी ?'

'क्योंकि वे अत्यन्त भावुक होती हैं।'

'किन्तु मुझे भावुक व्यक्ति पसन्द हैं।'

'डोरियन, विवाह भूलकर भी न करना। पुरुष क्लान्त होने के कारण विवाह करते हैं और स्त्रियाँ कौतूहल के कारण; दोनों ही निराशा पाते हैं।'

'हेनरी, मैं नहीं सोचता कि मैं विवाह करूँगा। मैं प्रेमासक्त हूँ। यह तुम्हारी ही कहावतों में से एक है। मैं इसे व्यवहृत करता हूँ।'

'तुम किसके प्रेम में हो ?'—कुछ ठहरकर लार्ड हेनरी ने पूछा।

'एक अभिनेत्री से'—डोरियन ग्रे ने लज्जारुण होते हुए कहा।

लार्ड हेनरी ने अपने कंधे उचकाये और कहा—'यह तो साधारण स्थान का प्रथम दर्शन है।'

'यदि तुमने उसे देखा होता तो ऐसा न कहते, हेनरी !'

'वह कौन है ?'

'उसका नाम सिबिल वेन है।'

'कभी सुना नहीं।'

'किसी ने भी नहीं सुना। फिर भी किसी दिन सब उसे जान जायँगे। वह प्रतिभापूर्ण है।'

'मेरे प्यारे, कोई भी स्त्री प्रतिभापूर्ण नहीं होती। स्त्री-जाति श्रृंगारिक है। उसके पास कुछ कहने को नहीं होता पर वे कहतीं मनोहर ढँग से हैं। स्त्रियाँ बुद्धि पर वस्तु की विजय सूचित करती हैं जैसे पुरुष नैतिकताओं पर बुद्धि की विजय सूचित करते हैं।'

'हेनरी, यह तुम कैसे कह सकते हो ?'

'मेरे प्यारे डोरियन, यह बिलकुल सच है। आजकल मैं स्त्रियों का ही विश्लेषण कर रहा हूँ इसलिए मुझे ज्ञात होना चाहिए। यह विषय इतना गूढ़ नहीं है जितना मैंने सोचा था। मैं देखता हूँ कि वस्तुतः नारियों के केवल दो ही प्रकार हैं—सीधी-सादी और तड़क-भड़कवाली। सीधी-

सादी स्त्रियाँ बहुत काम की होती हैं। यदि तुम आदरप्रिय होने की प्रसिद्धि चाहते हो तो उन्हें केवल खिलाना होगा। अन्य स्त्रियाँ अत्यन्त मनोहर होती हैं। हाँ, वे एक गलती करती हैं। तरुणी दिखने की चेष्टा में वे पेंट करती हैं। हमारी दादियाँ प्रभावोत्पादक बातें करने की चेष्टा में पेंट किया करती थीं। उत्साहपूर्ण ठिठोली तथा राउज का साथ था। अब वैसा नहीं होता। जब तक स्त्री अपनी ही पुत्री से दस वर्ष कमसिन (अल्पायु) दिख सकती है वह पूर्णतया संतुष्ट रहती है। वार्तालाप की दृष्टि से लन्दन में केवल पाँच स्त्रियाँ वार्तालाप के योग्य हैं इनमें से दो अच्छे समाज में स्थान नहीं पा सकतीं। फिर भी, अपनी प्रतिभापूर्ण के विषय में मुझे बतलाओ। तुम उसे कबसे जानते हो ?'

'आह ! हेनरी, तुम्हारे विचार मुझे डरा देते हैं।'

'उसकी चिन्ता न करो। तुम उसे कब से जानते हो ?'

'लगभग तीन सप्ताह से।'

'और तुम्हारी उनसे भेंट कहाँ हुई ?'

'मैं तुम्हें बतलाऊँगा, हेनरी ! किन्तु उसके प्रति तुम्हारी सहानुभूति नहीं होनी चाहिए। आखिर ऐसा कभी भी न हुआ होता यदि मैं तुमसे न मिला होता। तुमने जीवन-विषयक सब कुछ जानने की उत्कट अभिलाषा मुझ में जाग्रत कर दी। तुमसे मिलने के बाद कई दिन तक मैं अपनी नसों में स्पन्दन अनुभव करता रहा। जब मैं पार्क में वृथा घूमता अथवा पिक्केडिली के नीचे चहलक़दमी करता तो जो भी मेरे पास से निकलता मैं उसे देखता और पागल कौतूहलवश उनके जीवन-यापन पर आश्चर्य करता। कुछ ने मुझे आकर्षित किया। अन्य ने भयभीत किया। वातावरण में सूक्ष्म विष व्याप्त था। इन्द्रिय द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा बलवती हो उठी थी···तो, एक सध्या को लगभग सात बजे किसी साहसिक कार्य की खोज में निकल पड़ा। मैंने अनुभव किया कि तुम्हारे कथनानुसार इस भूरे, विशाल, असख्य जनता वाले, कमीने, पापियों और भड़कीले पापोंवाले अपने इस लंदन में मेरे लिए भी कुछ अवश्य होगा। मैंने हजारों कल्पनाएँ कर डालीं। केवल जोखिम ने ही मुझ में प्रसन्नता की भावना भर दी। उस अनोखी संध्या को जब हमने पहिले-पहिल एक

साथ भोजन किया था, तुमने जो मुझे बतलाया था कि जीवन का वास्तविक रहस्य सौंदर्य की खोज है, मुझे याद था। मैं नहीं जानता कि मैंने क्या आशा की थी, किन्तु मैं निकल पड़ा और घूमता हुआ पूर्व की ओर चल दिया। शीघ्र ही भयावनी गलियों की भूल-भुलइयों और काले घास-विहीन चौरस स्थानों में मैं भटक गया। लगभग साढ़े आठ बजे मैं एक रद्दी छोटे-से थियेटर के पास से निकला जहाँ दमकते हुए गैस और खेल के भड़कीले इश्तहार लगे थे। एक डरावना यहूदी जैसा मैंने जीवन में कभी नहीं देखा ऐसा विचित्र वेस्टकोट पहिने प्रवेश-द्वार पर खड़ा अस्वच्छ सिगार पी रहा था। चिकने छल्ले पहिने था और पसीने से मैली कमीज़ के बीच में एक बड़ा हीरा चमक रहा था। 'बॉक्स में बैठियें, माई लार्ड' —मुझे देखते ही उसने कहा और सेवक के दिखावटपूर्ण ढँग से अपना हैट उतार लिया। हेनरी, उसमें कुछ ऐसा था जिसने मुझे मुग्ध कर लिया। वह पूरा देव था। मैं जानता हूँ, तुम मुझ पर हँसोगे लेकिन मैं सचमुच अन्दर गया और स्टेज-बॉक्स की पूरी एक गिन्नी दी। आज तक मैं यह नहीं सोच पाया कि मैंने ऐसा क्यों किया; और फिर भी यदि मैंने ऐसा न किया होता, मेरे प्यारे हेनरी, यदि मैंने न किया होता तो अपने जीवन के सबसे महान् रोमांस से वंचित रह जाता। मैं देखता हूँ कि तुम हँस रहे हो। तुम्हारी ओर से यह बहुत बुरा है।'

'मैं हँस नहीं रहा हूँ, डोरियन! कम-से-कम तुम पर नहीं हँस रहा। लेकिन तुम्हें इसे जीवन का सबसे महान् रोमांस नहीं कहना चाहिए, जीवन का प्रथम रोमांस कहो। तुम्हें सदैव प्यार किया जायगा और तुम प्रेम में सदैव अनुरक्त रहोगे। जिन्हें कोई काम करने को न हो ऐसे उच्च स्थिति-वाले व्यक्तियों का प्रेम उनका अधिकार है। एक देश के निकम्मे वर्ग का एकमात्र उपयोग यही है। डरो नहीं। भविष्य के गर्भ में तुम्हारे लिये बहुत सी उम्दा चीजें हैं। अभी तो आरम्भ ही है।'

'क्या तुम मेरे स्वभाव को इतना छिछला समझते हो?'—डोरियन ग्रे क्रोध में चिल्लाया।

'नहीं, मैं तुम्हारे स्वभाव को इतना गम्भीर समझता हूँ।'

'तुम्हारा तात्पर्य क्या है?'

'मेरे प्यारे, जो जीवन में केवल एक बार प्रेम करते हैं—छिछले व्यक्ति वे ही हैं। जिसे वे अपनी ईमानदारी और वफ़ादारी कहते हैं मैं उसे रीति-रिवाजों की निष्क्रियता अथवा कल्पना का अभाव कहता हूँ। चंचल जीवन में वफ़ादारी की जो स्थिति है वही बुद्धिपरक जीवन में दृढ़ता की—विफलता की केवल स्वीकारोक्ति ! वफ़ादारी ! किसी दिन मैं इसका विश्लेषण करूँगा। इसमें सम्पत्ति की अभिलाषा सम्मिलित है। बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी हैं जिन्हें हम त्याग देते यदि हमें यह भय न होता कि उनपर कोई स्वत्व स्थापित कर लेगा। लेकिन मैं तुम्हारा क्रम नहीं तोड़ना चाहता। अपनी कहानी कहो !"

"तो, मैं भद्दे-से छोटे एकान्त बॉक्स में बैठ गया जहाँ मेरे ठीक सामने एक अनाकर्षक ड्रॉप-सीन घूरता-सा लटका था। पर्दे के पीछे-से मैंने बाहर देखा और हॉल भर में दृष्टि दौड़ायी। यह भड़कीला मामला था. सब कामदेव अथवा फल और फूलों से भरे कंटियो जैसे थे, मानो विवाहोपलक्ष की निकृष्ट रोटी हो। गैलरी और पिट खूब भरे हुए थे किन्तु गन्दे स्टालों की दो पंक्तियाँ रिक्त पड़ी थीं और मेरे विचार में ड्रेस-सर्किल कहे जाने-वाले स्थान में कठिनता से एक व्यक्ति होगा। स्त्रियाँ नारंगियाँ और जिंजर-बियर[1] लिये आ-जा रही थीं, अखरोट की खपत बहुतायत से हो रही थी।"

'ब्रिटिश ड्रामा के उन्नतावस्था जैसा ही होगा।'

'मेरे विचार में बिलकुल वैसा ही और अत्यन्त निराशाजनक। जब मैंने इश्तहार देखा तो किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। हेनरी, जानते हो कौन-सा खेल था ?'

'मैं सोचता हूँ, 'मूर्ख लड़का अथवा गूँगा किन्तु निर्दोष'। मुझे विश्वास है कि हमारे बाप-दादा उस प्रकार के खेल पसन्द किया करते थे। अवस्था के साथ-साथ मेरी यह अनुभूति तीव्र होती जाती है कि हमारे पूर्वजों के लिये जो पर्याप्त अच्छा था हमारे लिये वैसा नहीं है। राजनीति के समान ही कला में भी हमारे बापदादाओं ने हमेशा भूलें की हैं।'

'यह खेल हमारे लिये पर्याप्त अच्छा था, हेनरी। इसका नाम था

---

१. अदरख की शराब।

"रोमियो और जूलियट"। मैं स्वीकर करता हूँ कि शेक्सपियर के ड्रामा के इतनी रद्दी जगह खेले जाने के विचार ने मुझे अत्यन्य क्रोधित कर दिया था। फिर भी एक तरह से मेरी तबीयत लगी ही। हर हालत में प्रथम अंक तक प्रतीक्षा करने का मैंने निश्चय कर लिया। आर्चेस्ट्रा, जिसका नायक एक तरुण यहूदी था, अत्यन्त भयानक था। वह ऐसे दरारदार प्यानो को बजा रहा था कि मैं तो भाग खड़ा हुआ होता किन्तु ड्राप-सीन अन्त में उठ ही गया और खेल आरम्भ हुआ। रोमियो एक गठीला प्रौढ़ व्यक्ति था जिसकी जली-सी भौंएँ, रूखी, शोकाकुल आवाज़ और शराब के पीपे जैसी शक्ल थी। मरक्यूटिओ भी ऐसा ही भद्दा था। उसका अभिनय एक निम्न विदूषक ने किया था जिसने अपने विशेष शब्द बना रखे थे और जो साधारण दर्जे के दर्शकों का परिचित हो गया था। वे दोनों दृश्य-पट के समान ही बेमेल थे और ऐसा लगता था मानो वह दृश्य-पट देहाती बाजार से आया हो। किन्तु जूलियट! हेनरी, एक सत्रह वर्षीय लड़की की कल्पना करो, जिसका फूल जैसा नन्हा-सा मुख और गहरे भूरे बालों की गुंथी हुई लच्छियों से युक्त छोटा-सा यूनानी सिर हो। अनुरक्ति के बनफशी कूपों जैसी आँखें और गुलाब की पंखुरियों जैसे अधर। अपने जीवन में देखी हुई सबसे प्यारी वस्तु! तुमने मुझसे एक बार कहा था कि करुणा तुम्हारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं डालती, किन्तु सौंदर्य, केवल सौंदर्य तुम्हारी आँखें डबडबा देने में समर्थ हो जाता है। मैं तुम्हें बतलाता हूँ हेनरी कि अश्रु की वाष्प के कारण मैं इस लड़की को कठिनता से देख पाया था। और उसका स्वर—मैंने ऐसा स्वर कभी नहीं सुना। पहिले यह अत्यन्त धीमा, गहरे मधुर संगीत-सा सुनायी दिया। उसके बाद कुछ तीव्र हुआ और बाँसुरी अथवा दूर से सुनायी देते हाटग्राह[1] के स्वर जैसा प्रतीत हुआ। वाटिका-दृश्य में आनन्द का वही कंपन था जो सूर्योदय से ठीक पहिले बुलबुलों के गाने में सुनायी देता है। बाद को ऐसे भी क्षण आये जब वायलिन का तीव्र अनुरक्तिपूर्ण स्वर सुनायी दिया। तुम जानते हो कि स्वर उसकाने की कितनी शक्ति रखता है। तुम्हारा स्वर और सिबिल वेन का स्वर ये ही

---

१. सारंगी जैसा लकड़ी का वाद्य।

ऐसे हैं जिन्हें मैं कभी न भूलूँगा। जब मैं अपनी आँखें बन्द करता हूँ तो उन्हें सुनता हूँ और दोनों ही स्वर अपनी-अपनी बात कहते हैं। मैं नहीं जानता कि किसे मानूँ। मैं उसे प्यार क्यों न करूँ? हेनरी, मैं उसे प्यार करता हूँ। वह मेरे लिए जीवन में सब कुछ है। मैं उसका प्रत्येक रात्रि को अभिनय देखने जाता हूँ। एक संध्या को वह रोज़लिंड बनती है तो दूसरी संध्या को इमोजिन। इटली के अन्धकारपूर्ण मकबरे में अपने प्रेमी के अधरों से विष चूसकर मरते देखा है। लम्बे मोजे, डबलेट[1] तथा मनोहर टोपी लगाये एक आकर्षक लड़के की वेशभूषा में आर्डेन के जंगलों में घूमते देखा है। वह पागल बनी, दोषी नृपति के सामने पहुँची और उसे पहिनने के लिये तथा चाखने के लिये कड़ुवी जड़ी-बूटियाँ दी गयीं। वह निर्दोष बनी है और उसकी मुरली जैसी गरदन को ईर्षा के काले हाथों ने मरोड़ डाला है। मैंने उसे प्रत्येक अवस्था में और प्रत्येक वेश-भूषा में देखा है। साधारण स्त्रियाँ किसी की कल्पना को कभी आकर्षित नहीं कर पातीं। वे समय की सीमा नहीं लाँघ पातीं। उनके रूप का जादू प्रभावहीन होता है। बोनेट के समान ही उनकी बुद्धि सरलता से आँकी जा सकती है। वे सरलता से मिल जाती हैं। उनमें से किसी में भी कोई रहस्य नहीं होता (उनमें से किसी में भी कोई रहस्यमयी नहीं होती)। वे प्रातः पार्क में घुड़सवारी करती हैं और दोपहर के समय टी-पार्टियों में गप्पें लड़ाती हैं। उनकी मुस्कराहट साँचे में ढली-सी होती है और ढँग भी फैशन के अनुसार होते हैं। वे बिल्कुल स्पष्ट होती हैं। किन्तु एक एक्ट्रेस! एक एक्ट्रेस (अभिनेत्री) कितनी भिन्न होती है। हेनरी, तुमने मुझे क्यों नहीं बतलाया कि प्यार करने योग्य केवल एक्ट्रेस ही है?'

'क्योंकि मैंने बहुत-सी एक्ट्रेसों से प्यार किया है, डोरियन!'

'हाँ, उन भयानक एक्ट्रेसों से जिनके बाल रंगे हुए और चेहरों पर पेंट होगा।'

'रंगे हुए बालों और पेंट किये चेहरों को तुच्छ न समझो। कभी-कभी उनमें अनोखा आकर्षण होता है'—लार्ड हेनरी ने कहा।

---

१. पूरी बाँह अथवा आधी बाँह की मरदानी वेशभूषा

'अब मेरी इच्छा होती है कि काश तुम्हें सिविल वेन के विषय में न बतलाया होता।'

'तुम बिना मुझे बतलाये रह नहीं सकते थे, डोरियन! तुम जो कुछ भी करोगे मुझे जीवन पर्यन्त बतलाते रहोगे।'

'हाँ, हेनरी, मैं मानता हूँ कि यह सच है। तुम्हें बताये बिना नहीं रह सकता। मुझपर तुम्हारा विचित्र प्रभाव है। यदि मैंने कभी कोई पाप किया तो तुम्हारे समक्ष आकर स्वीकार कर लूँगा। मुझे तुम्हीं समझोगे।'

'तुम जैसे, जीवन में सूर्य-किरण जैसे, दृढ़ व्यक्ति अपराधी नहीं होते, डोरियन! फिर भी इस सम्मान के लिए मैं उतना ही कृतज्ञ हूँ। और अब बताओ—अच्छे लड़के की तरह मुझे दियासलाई तो देना; धन्यवाद, सिविल वेन से तुम्हारे वास्तविक सम्बन्ध क्या है।'

डोरियन ग्रे घुटनों के बल खड़ा हो गया, आवेश में उसके कपोल अरुण हो गये और आँखें जलने-सी लगीं—हेनरी! सिविल वेन पवित्र है?'

'केवल पवित्र वस्तुएँ ही स्पर्श के योग्य होती हैं, डोरियन!'—अपने स्वर में विचित्र करुण भाव भरकर लार्ड हेनरी ने कहा—'किन्तु तुम अप्रसन्न क्यों होते हो। मेरे विचार में वह किसी दिन तुम्हारी हो जायगी। प्रेम का आरम्भ स्वयं को धोखा देकर और अन्त दूसरों को धोखा देकर ही होता है। संसार इसे ही रोमांस कहता है। मेरे विचार में, तुम उसे जानते तो हो ही?'

'निश्चय ही उसे मैं जानता हूँ। पहिली रात्रि को जब मैं थियेटर गया तो वह भयानक बूढ़ा यहूदी बॉक्स के पास आया और मुझे पर्दों के पीछे ले जाकर उससे परिचित करा देने का भाव प्रकट किया। मैं उस पर बिगड़ पड़ा और उसे बतलाया कि जूलियट तो कई सौ वर्ष पहिले मर चुकी है और उसका शरीर वेरोना की एक संगमरमर की कब्र में दबा है। उसकी आश्चर्यचकित शून्य दृष्टि ने प्रकट किया कि उसके निष्कर्ष के अनुसार मैं चैम्पेन जैसी कोई वस्तु बहुत अधिक पी गया हूँ।'

'मुझे आश्चर्य नहीं है।'

'फिर उसने पूछा कि क्या मैं किसी समाचारपत्र के लिए लिखता हूँ। मैंने उसे बतला दिया कि मैं पढ़ता तक नहीं हूँ। वह अत्यन्त निराश

प्रतीत हुआ और मुझे अपना भेद बतलाया कि नाटकों के सभी आलोचकों ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र कर रखा है और उन सभी को खरीदना होगा।"

'वह ठीक कह रहा था इसमें मुझे कोई आश्चर्य नहीं है। किन्तु दूसरी ओर, देखने में तो उनमें से अधिकाँश महँगे प्रतीत नहीं होते।'

'उसके विचार में तो वे उसकी पहुँच के बाहर थे,'—डोरियन हँसा—'उस समय तक थियेटर का प्रकाश बुझता जा रहा था और मुझे जाना ही पड़ा। कुछ सिगार, जिनकी वह बहुत प्रशंसा कर रहा था, चाहता था कि मैं आजमाने के लिए पिऊँ। मैंने इन्कार कर दिया। निश्चय ही, दूसरी रात मैं उस स्थान पर फिर पहुँचा। मुझे देखते ही उसने झुककर अभिवादन किया और मुझे विश्वास दिलाया कि मैं कला का एक उदार पोषक हूँ। शेक्सपियर के लिए असाधारण प्रेम-भाव होने पर भी वह घृणित पशु-तुल्य था। एक बार उसने मुझे सगर्व बतलाया कि वह उस गायक—शेक्सपियर को वह गायक ही कहता था—के कारण तीन बार दिवालिया हो चुका था। वह उसे श्रेष्ठता मानता था।'

'वह श्रेष्ठता ही थी, मेरे प्यारे डोरियन—एक महान् श्रेष्ठता। बहुत से व्यक्ति जीवन के गद्य के लिए ही अधिक व्यय कर डालने के कारण दिवालिये हो जाते हैं। कविता के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देना आदरणीय है। लेकिन सिबिल वेन से तुम्हारी पहिली बातचीत कब हुई ?'

'तीसरी रात्रि को। वह रोज़लिंड बनी थी। मैं जाये बिना न रह सका था। मैंने उसके लिए कुछ फूल फेंके थे और उसने मुझे देखा था—कम-से कम मुझे ऐसा प्रतीत हुआ था कि उसने देखा था। बूढ़ा यहूदी हठ कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसने मुझे पीछे ले जाने का निश्चय कर लिया था इसलिए मैं सहमत हो गया। उसका परिचय पाने की मेरी इच्छा न होना विचित्र बात थी, थी न ?'

'नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचता।'

'क्यों, मेरे प्यारे हेनरी ?'

'फिर कभी तुम्हें बतलाऊँगा। इस समय मैं लड़की के विषय में जानना चाहता हूँ।'

'सिबिल ? ओह वह अत्यन्त सलज्ज, अत्यन्त सीधी थी। उसमें बच्चे

जैसी सरलता है। जब मैंने उसे उसके अभिनय के विषय में अपने विचार बतलाये, उसकी आँखें आकर्षक आश्चर्य में खुलकर चौड़ी हो गयीं। वह अपनी शक्ति से सर्वथा अज्ञात प्रतीत होती थी। मैं सोचता हूँ कि हम दोनों का ही चित्त कुछ अस्थिर सा था। बूढ़ा यहूदी धूलभरे ग्रीन-रूम के द्वार पर खड़ा खीसें निकालता रहा तथा हम दोनों के विषय में बहुत सी सुन्दर बातें कहता रहा और हम बच्चों की तरह एक-दूसरे को खड़े देखते रहे। वह मुझे हठपूर्वक 'माई लार्ड' कहता रहा इसलिए मुझे सिबिल वेन को विश्वास दिलाना पड़ा कि मैं लार्ड इत्यादि कुछ भी नहीं हूँ। उसने मुझसे सरलता से कहा—'तुम राजकुमार-से लगते हो। मैं तो तुम्हें "प्रिंस चार्मिंग" (मनोहर राजकुमार) कहूँगी।'

'मैं कहता हूँ, डोरियन, मिस सिबिल अभिनन्दन करने में दक्ष हैं।'

'हेनरी, तुम उसे नहीं समझे। खेल के एक पात्र के समान ही उसने मुझे माना। वह जीवन से अपरिचित है। वह अपनी माँ के साथ रहती है जो मुर्झायी हुई और श्रान्त स्त्री है। जिसने पहिली रात्रि को ओढ़ने के लाल वस्त्रों में लेडी केपुलेट का अभिनय किया था। वह ऐसे देखती है जैसे उसने भी कभी अच्छे दिन देखे हों।'

'मैं उस दृष्टि से परिचित हूँ। उससे मुझे वेदना होती है'—लार्ड हेनरी अपनी अँगूठियों को देखते हुए बड़बड़ाया।

'यहूदी मुझे उसका इतिहास बतलाना चाहता था किन्तु मैंने कह दिया कि उसमें मेरी रुचि नहीं है।'

'तुमने ठीक किया। दूसरे व्यक्तियों के दुखान्तों में निश्चित रूप से कोई न कोई नीचतापूर्ण बात सदैव रहती है।'

'मुझे केवल सिबिल वेन से मतलब है। वह कहाँ से आयी इससे मुझे क्या प्रयोजन? नन्हें से नख से लेकर शिख तक वह पूर्णतया दिव्य है। जीवन की प्रत्येक रात मैं उसका अभिनय देखने जाता हूँ और प्रत्येक रात वह अधिक सुन्दर लगती है।'

'मैं सोचता हूँ कि इसी कारण तुम अब मेरे साथ भोजन नहीं करते हो। मैंने सोचा था कि तुम किसी विचित्र रोमांस में अवश्य संलग्न होगे। तुम हो, किन्तु जैसी मैंने आशा की थी बिलकुल वैसा ही नहीं है।'

'मेरे प्यारे हेनरी, हम लोग प्रतिदिन दोपहर को अथवा शाम को साथ-साथ भोजन करते हैं और मैं तुम्हारे साथ कई बार ऑपेरा गया हूँ'—आश्चर्य-युक्त सुनील नेत्र खोलते हुए डोरियन ने कहा।

'तुम सदैव बहुत देर से आते हो।'

'तो, सिविल वेन का अभिनय देखे बिना तो मैं रह नहीं सकता'—वह चिल्लाया—'चाहे एक ही अंक देखने को क्यों न मिले। मैं उसकी उपस्थिति का भूखा हो उठता हूँ और जब उस छोटे हाथी-दाँत जैसे शरीर में छिपी हुई उस अनोखी आत्मा के विषय में सोचता हूँ तो भक्तिपूर्ण भय से भर जाता हूँ।'

'डोरियन, आज रात तुम मेरे साथ भोजन कर सकते हो, कर सकते हो न ?'

उसने अपना सिर हिलाया। आज रात वह इमोजिन बनेगी'—उसने उत्तर दिया—'और कल रात वह जूलियट होगी।'

'वह सिविल वेन कब रहती है ?'

'कभी नहीं।'

'मैं तुम्हें बधाई देता हूँ।'

'तुम कितने भयानक हो ! संसार की समस्त श्रेष्ठ नायिकाओं की वह अकेली सम्मिश्रण है। वह एक व्यक्ति से अधिक है। तुम हँसते हो, किन्तु मैं तुम्हें बताये देता हूँ कि वह प्रतिभासम्पन्न है। मैं उसे प्यार करता हूँ और मेरा प्रयत्न होगा कि वह मुझे प्यार करे। तुम, जो जीवन के सभी रहस्यों के ज्ञाता हो, मुझे बतलाओ कि स्वयं से प्रेम करने के लिए सिविल वेन को कैसे मोहित करूँ। मैं रोमियो को ईर्षालु बनाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि संसार के दिवंगत प्रेमी हमारा हास्य सुनें और दुखी हों। मैं चाहता हूँ कि हमारे उत्कट प्रेम की एक श्वाँस उनकी मिट्टी में प्राण डाल दे और पीड़ा जागृत कर दे। मेरे भगवान्, हेनरी, मैं उसकी कितनी पूजा करता हूँ !'—वह बोलने के साथ कमरे में ऊपर और नीचे चलता था। बेसब्री की लालिमा उसके कपोलों पर चमक रही थी। वह अत्यन्त उत्तेजित था।

लार्ड हेनरी उसे आनन्द के सूक्ष्म भाव से देख रहा था। बेसिल हावर्ड

के स्टूडियो में मिले शर्मीले और भयभीत छोकरे से अब वह कितना परिवर्तित था। उसका स्वभाव फूल की तरह विकसित हुआ और लाल ज्वाला-शिखा लेकर मुकुलित हुआ था। छिपने के गुप्त स्थान से उसकी आत्मा धीरे-से चली थी और उससे राह पर मिलने के लिए कामना चली आयी थी।

'और तुम्हारा प्रस्ताव क्या करने के लिए है ?'—लार्ड हेनरी ने अन्त में कहा।

'मैं चाहता हूँ कि तुम और बेसिल किसी रात मेरे साथ चलकर उसका अभिनय देखो। परिणाम का मुझे तनिक भी भय नहीं है। तुम उसकी प्रतिभा को निश्चय ही मान्यता दोगे। फिर हमें उसे यहूदी के चंगुल से निकालना होगा। वह उससे तीन वर्ष से बँधी हुई है—आज से कम से कम दो वर्ष आठ महीने पूर्व से। निश्चय ही मुझे उसे कुछ देना पड़ेगा। जब वह सब तै हो जाएगा मैं एक 'वेस्ट एण्ड थियेटर' लूँगा और उसे उचित ढंग से प्रकाश में लाऊँगा। वह दुनिया को वैसे ही पागल बना देगी जैसे उसने मुझे बनाया है।'

'वैसा होना असम्भव है, मेरे प्यारे।'

'हाँ, वह बना देगी। उसमें केवल कला, पूर्णकला की प्रवृत्ति ही नहीं है बल्कि व्यक्तित्व भी है और तुमने मुझे प्रायः बतलाया है कि युग को व्यक्तित्व ही गतिवान् बनाते हैं, सिद्धान्त नहीं।'

'तो हम किस रात्रि को चलेंगे ?'

'देखता हूँ। आज मंगलवार है। कल का निश्चय रखो। कल वह जूलियट बनेगी।'

'अच्छी बात है ! बूस्टल पर आठ बजे; और मैं बेसिल को ले आऊँगा।'

'हेनरी, कृपया आठ बजे नहीं, साढ़े छह बजे। पर्दा उठने से पहिले हमें अवश्य पहुँच जाना चाहिए, जब वह रोमियो से मिलती है। उसे पहिले अंक में अवश्य देखो।'

'साढ़े छह बजे ! क्या समय है ! यह तो मांस और चाय लेना अथवा अंगरेजी उपन्यास पढ़ने जैसा रहेगा। सात होगा ! सात से पहिले कोई भला आदमी भोजन नहीं करता। इस बीच में क्या तुम बेसिल से मिलोगे ?

अथवा मैं ही उसे लिखूँ ?'

'प्यारा बेसिल ! मैंने उसे एक सप्ताह से नहीं देखा। मेरी ओर से यह बहुत बुरा है क्योंकि उसने स्वयं ही विशेष रूप से बनाये हुए अत्यन्त अनोखे चौखटे में जड़कर मेरा चित्र भेजा है और यद्यपि मुझसे पूरे एक महीने उम्र में कम होने के कारण इस चित्र से मुझे जलन है फिर भी मुझे मानना ही होगा कि उससे आनन्दित होता हूँ। सम्भवतः तुम्हारा उसे लिखना अच्छा रहेगा। मैं उससे अकेले नहीं मिलना चाहता। वह ऐसी बातें कहता है जो मुझे बुरी लग जाती हैं। वह मुझे अच्छी रुलाई देता है।'

लार्ड हेनरी मुस्कराया—'व्यक्तियों को जिसकी स्वयं परमावश्यकता है उसे ही वे बड़े शौक से दूसरों को देते हैं। मेरे कथनानुसार उदारता की सीमा यही है।'

'ओह, बेसिल साथियों में सर्वश्रेष्ठ है, किन्तु मुझे वह कुछ फिलिसटाइन[1] जैसा लगता है। जबसे मेरा तुमसे परिचय हुआ है, हेनरी, तभी से मैंने यह जाना है।'

'मेरे प्यारे, बेसिल अपनी समस्त मनोहरता को अपनी कृति में समाविष्ट कर देता है। परिणाम यह हुआ है कि उसके अपने पक्षपात, अपने सिद्धान्त और अपनी सहज बुद्धि ही शेष रह गयी है। मेरे जाने हुए जो कलाकार स्वयं प्रसन्नचित्त हैं, निकृष्ट कलाकार हैं। अच्छे कलाकारों का अस्तित्व केवल उनकी कृति में है, परिणामतः वे स्वयं अनाकर्षक हैं। एक महान् कवि, वास्तव में महान् कवि अन्य सभी प्राणियों की अपेक्षा कवित्वहीन होता है। किन्तु नीचे स्तर के कवि पूर्णतया आकर्षक होते हैं। उनकी तुक जितनी ही निकृष्ट है वे उतने ही अधिक आकर्षक दिखलायी देते हैं। द्वितीय कोटि की गीत-पुस्तक का प्रकाशनमात्र ही मनुष्य को बेसब्र बना देता है। वह कविता को ऐसी जानदार बनाता है जैसी लिख सकने में वह असमर्थ है। अन्य ऐसी कविता लिखते हैं

---

१. सेंट पैलेन्टाइन का एक लड़ाकू व्यक्ति जिसने इज़राइल वालों को तंग किया।

जिसके महत्त्व को वे स्वयं समझ नहीं पाते।'

'मुझे आश्चर्य है, क्या वास्तव में ऐसा ही होना है, हेनरी ?'— मेज पर रखी हुई सोने की टोपीदार एक बड़ी शीशी में से अपने रूमाल पर सुगंधि लगाते हुए डोरियन ग्रे ने कहा—'तुम कहते हो इसलिए ऐसा ही होगा। और अब मैं चला। इमोजिन मेरी प्रतीक्षा कर रही है। कल का कार्यक्रम न भूलना। नमस्कार।'

कमरे से उसके जाते ही, लार्ड हेनरी की भारी पलकें मुंद गयीं और वह विचारमग्न हो गया। निश्चय ही जितनी दिलचस्पी उसे डोरियन ग्रे में हुई थी उतनी और किसी में नहीं, फिर भी छोकरे के किसी अन्य के प्रेम में पागल होने से उसे क्रोध तथा ईर्षा ने तनिक भी पीड़ित नहीं किया। वह इससे प्रसन्न ही हुआ। ऐसा होने से उसके अध्ययन की दिलचस्पी और अधिक बढ़ गयी। प्राकृतिक विज्ञान की विधियों ने उसे सदैव मुग्ध किया था किन्तु उस विज्ञान का साधारण विषय उसे नगण्य और महत्त्वहीन प्रतीत हुआ था। और इसीलिए उसने आरम्भ अपने सूक्ष्म अध्ययन द्वारा किया था और अन्त दूसरों पर। इसके समक्ष और सभी कुछ मूल्यहीन था। यह ठीक थ। कि पीड़ा और आनन्द की विचित्र परीक्षा की पुनरावृत्ति में जीवन को देखते समय शीशे का पर्दा पहिन सकता था, तथा गंधक के तीव्र महकदार धुएँ से अपने मस्तिष्क को परेशान होने से और कल्पना को भयानक विचारों तथा अनहोने स्वप्नों के बेतरतीब होने से बचा सकता था। विष इतने सूक्ष्म थे कि उनके गुण जानने के लिए बीमार पड़ जाना पड़ता था। बीमारियाँ इतनी विचित्र थीं कि उनका प्रकार जानने के लिए बीमार हो जाना होता था। फिर भी कितना आश्चर्यजनक हो जाता था। सारा संसार का विचित्र कठिन तर्क और मस्तिष्क का भावात्मक रंगीन जीवन समझना; वे कहाँ मिलते हैं, कहाँ अलग होते हैं, कहाँ उनका मेल है, कहाँ भेद है उस सबको देखने में आनन्द था। क्या कीमत चुकानी पड़ती थी इससे क्या ? इन्द्रिय द्वारा कोई भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए कोई भी कीमत अधिक नहीं थी।

वह चेतनावस्था में था और इस विचार ने उसकी भूरी रत्न जैसी आँखों में आनन्द झलका दिया कि यह उसी के शब्दों के द्वारा, संगीत

जैसे स्वर में कहे गये संगीतात्मक शब्दों द्वारा ही डोरियन ग्रे की आत्मा इस श्वेत लड़की की ओर उन्मुख हुई और उसके सम्मुख पूजा के भाव में झुक गयी। छोकरे का बहुत कुछ निर्माता वही था। उम्र के हिसाब से उसका निर्माण पहिले हो गया था। यह एक महत्त्वपूर्ण बात थी। जब तक जीवन अपने भेद प्रकट नहीं करता साधारण व्यक्ति प्रतीक्षा करते रहते हैं, किन्तु पर्दे के हटने के पूर्व जीवन के रहस्य कुछ ही व्यक्तियों को कुछ चुने हुए व्यक्तियों को ज्ञात हो पाते हैं। उत्कट प्रेम और बुद्धि का तुरंत व्यापार कला से, मुख्यतया साहित्य की कला से है। किन्तु कभी-कभी एक मिश्रित व्यक्तित्व कला का स्थान ग्रहण कर लेता, अपने ढँग की वास्तविक कलाकृति, काव्य, मूर्ति-कला अथवा चित्र-कला के समान जीवन की सुन्दर कारीगरी के नमूने !

हाँ, वह छोकरा समय से पहिले का था। वसन्त में ही वह अपनी फसल एकत्रित कर रहा था। जवानी की रवानी और उत्कट प्रेम तो उसमें था, किन्तु उसे आत्म-चेतना हो रही थी। उसे देखने में प्रसन्नता होती थी। सुन्दर मुखाकृति और सुन्दर आत्मा से युक्त वह आश्चर्य-जनक था। यह सब कैसे हो गया या भविष्य में क्या होगा इससे कोई प्रयोजन नहीं। वह स्वाँग अथवा खेल के उन आकर्षक पात्रों में से एक था जिसकी प्रसन्नता तो दूर की प्रतीत होती, किन्तु जिसके दुख की हलचल सौन्दर्य-भावना की सृष्टि करती और जिसके घाव लाल गुलाब जैसे दिखायी देते।

आत्मा और शरीर, शरीर और आत्मा—वे कितने रहस्यपूर्ण थे। आत्मा में पशुत्व था और शरीर में आध्यात्मिकता के क्षण थे। इन्द्रियाँ उन्नत हो सकती थीं और मस्तिष्क की अधोगति हो सकती थी। यह कह सकना कठिन था कि कहाँ मांसल शक्ति का अन्त होता था, भौतिक शक्ति का कहाँ आरम्भ ? साधारण मनोवैज्ञानिकों की स्वतंत्र परि-भाषाएँ कितनी छिछली थीं। और अनेक स्कूलों की विभिन्न मत-पुष्टियों के बीच निश्चयात्मक निर्णय करना कितना कठिन था। आत्मा क्या पाप के घर में बैठी हुई छाया थी ? अथवा जैसा जिओरडैनो ब्रूनो ने विचारा, शरीर ही वस्तुतः आत्मा में था ? चेतन का जड़ से अलग होना रहस्य-

मय था और चेतन का जड़ से सम्मिलन भी रहस्यपूर्ण था।

वह आश्चर्य करने लगा कि क्या मनोविज्ञान को ऐसा स्वतंत्र विज्ञान बनाया जा सकता था जिसमें जीवन का प्रत्येक स्रोत स्पष्ट हो सकता। ऐसी वर्तमान अवस्था में हमने स्वयं को सदैव गलत समझा और दूसरों को तो कदाचित् ही समझा। अनुभव का कोई नैतिक महत्त्व नहीं था। अपनी गलतियों को मनुष्यों द्वारा दिया हुआ यह केवल नाम था। रीति के अनुसार नीति-विशारदों ने इसे सावधान करने की एक विधि माना, चरित्र-निर्माण के लिए कुछ अंश तक नैतिक फल का प्रतिपादन किया, क्या करें--क्या न करें इसकी शिक्षा देने के कारण प्रशंसित किया। किन्तु अनुभव में कोई लक्ष्य-शक्ति न थी। आत्मा के समान ही इसकी कारण-शक्ति नगण्य थी। इससे केवल यही प्रदर्शित होता था कि अतीत के समान ही हमारा भविष्य होगा और जो पाप हमने एक बार घृणा से किया उसे अनेक बार आनन्दपूर्वक करेंगे।

उसकी समझ में आ गया था कि प्रयोग की विधि ही ऐसी एकमात्र विधि थी जिसके द्वारा उत्कट प्रेम का वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सकता था; और निश्चय ही उसके हाथ में डोरियन ग्रे एक विषय था जिससे महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों की आशा थी। सिविल वेन के लिए अचानक हुआ उसका पागल प्रेम मनोविज्ञान का साधारण नमूना नहीं था। निस्सन्देह उत्सुकता का इसमें बहुत बड़ा हाथ था, उत्सुकता और नये अनुभवों की इच्छा उसमें थी; फिर भी वह साधारण नहीं बल्कि अत्यन्त जटिल उत्कट प्रेम था। बचपन की विलासी प्रवृत्ति कल्पना के द्वारा परिवर्तित होकर ऐसी हो गयी थी जो स्वयं होकर को इन्द्रिय से तटस्थ प्रतीत होती थी और इसी कारण और भी अधिक संकटमय थी। जिस उत्कट प्रेम के मूल के विषय में हम स्वयं को प्रवंचित करते हैं वही हम पर घोर अत्याचार करता है। जिनके स्वभाव से हम परिचित हैं वे ही हमारे अशक्त अभिप्राय थे। ऐसा प्रायः हुआ है कि जब हमने यह सोचा कि हम दूसरों पर प्रयोग कर रहे हैं हम वास्तव में स्वयं पर प्रयोग करते होते हैं।

स्वप्नवत् जिस समय लार्ड हेनरी इन बातों पर बैठा हुआ विचार

कर रहा था द्वार खटका, नौकर ने प्रवेश किया और उसे स्मरण दिलाया कि भोजन के वस्त्र पहिनने का समय हो गया है। वह उठकर खडा हो गया और बाहर सड़क पर देखने लगा। सूर्यास्त के कारण सामने के मकान की ऊपर की खिड़कियाँ अरुण स्वर्ण से रंग गयी थीं। शीशे तपायी हुई धातु के पर्त जैसे दमक रहे थे। ऊपर का आकाश मुरझाये हुए गुलाब के समान था। उसे अपने मित्र के तरुण अग्नि-वर्ण से जीवन की याद आयी और वह सोचने लगा कि इस सबका अन्त क्या होगा।

जब वह साढ़े बारह बजे के लगभग घर आया तो उसने हॉल की मेज पर एक तार पड़ा देखा। उसने खोला और डोरियन ग्रे के पास से आया हुआ पाया। उसमें सूचना थी कि सिबिल वेन से उसका विवाह तै हो गया है।

५

'माँ, माँ, मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ!'—मैली बैठक में रखी एकमात्र कुर्सी पर, अनिमंत्रित तीव्र प्रकाश की ओर पीठ करके बैठी हुई मुर्झायी, थकी-सी दिखनेवाली स्त्री की गोद में अपना मुख छिपाते हुए लड़की ने धीमे स्वर में कहा। 'मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।'—उसने पुनः कहा—"और तुम भी तो प्रसन्न होगी।"

मिसेज वेन ने पीछे हटते हुए पीड़ितावस्था प्रदर्शित की और सफेद हो गये श्वेतारुण क्षीण हाथ को अपनी पुत्री के सिर पर रख दिया। 'प्रसन्न!'—उसका स्वर गूँजा—'सिबिल, मैं तभी प्रसन्न होती हूँ जब तुझे अभिनय करते देखती हूँ। अभिनय के अतिरिक्त तुम्हें और कुछ भी नहीं सोचना चाहिए। मिस्टर ईसक्स हम पर कृपालु हैं और उन्होंने हमें रुपया दिया है।"

लड़की ने दृष्टि ऊपर उठायी और मुंह फुला लिया। 'रुपया, अम्माँ?'—वह चिल्लायी—'रुपये से क्या होता है? रुपये की अपेक्षा प्रेम का महत्त्व अधिक है।'

'मिस्टर ईसक्स ने हमें ऋण चुकाने और जेम्स की उचित पोशाक के लिए पचास पौण्ड पेशगी दिये हैं। तुम्हें यह भूलना नहीं चाहिए सिबिल! पचास पौण्ड बहुत बड़ी रकम है। मिस्टर ईसक्स अत्यन्त उदार हैं।'

'वह सज्जन नहीं हैं, माँ, और जिस ढँग से वह मुझसे बात करता है मुझे घृणा होती है'—लड़की ने उठकर खड़े होते और खिड़की की ओर जाते हुए कहा।

'मैं नहीं समझती कि उसके बिना हमारा काम कैसे चलता'—प्रौढ़ा ने शिकायत करते हुए कहा।

सिबिल वेन ने अपना सिर नचाया और हँस पड़ी—'माँ, हमें उसकी आवश्यकता नहीं रही। अब हमारे जीवन का सूत्रधार "प्रिंस चार्मिंग" है।' तब वह रुकी। गुलाब उसके रक्त में डोल उठा और कपोलों पर झलक उठा। तीव्र श्वाँस ने उसके अधर-पल्लवों को खोल दिया। उनमें कंपन हुआ। उत्कट अभिलाषा की पछुवैया उसे झकझोर उठी और उसके वस्त्रों के सुन्दर पर्तों में हलचल मच गयी।

'मैं उसे चाहती हूँ'—उसने सरलता से कह दिया।

'मूर्ख लड़की ! मूर्ख लड़की !'—रटटू-तोते जैसे वाक्यांश उत्तर में फूट पड़े। टेढ़ी और मसनुई (नकली) हीरों से सजी अँगुली की भंगिमा शब्दों को विलक्षणता प्रदान कर रही थी।

लड़की पुनः हँसी। उसके स्वर में पालतू चिड़िया जैसा आनन्द था। उसके नेत्रों ने संगीत पाया और आनन्द-दीप्ति में मुखरित कर दिया, फिर मानो रहस्य गुप्त रखने के लिए नेत्र कुछ क्षण के लिए बन्द कर लिये। जब नेत्र खुले तो स्वप्न-जाल नष्ट हो चुका था। जर्जर कुर्सी पर बैठी क्षीणकाय साकार बुद्धि का संकेत सहज बुद्धि की नकल करनेवाले लेखक की कायरतापूर्ण पुस्तक के उद्धरण के समान था। उसने सुना नहीं। उत्कट अभिलाषा की सीमा में वह स्वतंत्र थी। उसका राजकुमार 'प्रिंस चार्मिंग' उसके पास था। स्मृति को उसका आकार निर्मित करने के लिए उसने बुला भेजा था। अपनी आत्मा को उसे खोज लाने के लिए भेज दिया था और वह उसे पुनः ले आयी थी। अपने मुख पर उसके चुम्बन की उष्णता वह पुनः अनुभव कर रही थी। उसकी पलकें उसकी श्वाँस से उत्तप्त थीं।

बुद्धि ने तब अपना ढँग बदला और जासूसी तथा खोज की बात कही। हो सकता है कि यह तरुण धनवान् हो। यदि ऐसा हो तो विवाह के विषय

में विचार किया जाय। उसके (सिबिल के) कान के पर्दे से सांसारिक चातुर्य की लहरें और उसके (मिसेज वेन के) द्वारा छोड़े हुए धूर्तता के तीर टकराते रहे। उसने पतले अधरों को मुखरित होते देखा और मुस्करा पड़ी।

अचानक उसे बोलने की आवश्यकता अनुभव हुई। शाब्दिक मौन से वह परेशान हो उठी। 'माँ, माँ'—वह चिल्लायी—'वह मुझे इतना प्रेम क्यों करता है? मैं जानती हूँ कि मैं उसे क्यों चाहती हूँ? स्वयं प्रेम जैसा होना चाहिए वह वैसा ही है, मैं उसे इसीलिए प्यार करती हूँ। किन्तु मुझमें उसे क्या मिलता है? मैं उसके योग्य नहीं हूँ। और फिर भी—क्यों, मैं कह नहीं सकती—उसके समक्ष मैं इतनी निम्न हूँ और तुच्छता अनुभव नहीं करती। मैं गर्व अनुभव करती हूँ, अत्यन्त गर्व! माँ, क्या तुम भी मेरे पिता को इतना ही प्रेम करती थीं जितना मैं "प्रिंस चार्मिंग" को करती हूँ?'

प्रौढा के घटिया पाउडर से पुते कपोल पीले पड़ गये और रूखे ओठ पीड़ा की ऐंठन से अचानक खिंच गये। सिबिल उसकी ओर दौड़ी, हाथों को उसकी गर्दन पर डाला और चुम्बन ले लिया। 'मुझे क्षमा करो माँ, मैं जानती हूँ कि पिता के विषय में बातें करने से तुम्हें दुख होता है। किन्तु यह दुख इसी कारण है कि तुम पिता को अत्यन्त प्रेम करती थीं। इतनी दुखी मत होओ। मैं आज उतनी ही प्रसन्न हूँ जितनी तुम बीस वर्ष पूर्व थीं। आह, मुझे सदा के लिए सुखी हो जाने दो।'

'मेरी बच्ची! अभी तुम्हारी उम्र प्रेम करने की नहीं है। और तुम इस तरुण के विषय में जानती ही क्या हो? तुम्हें इसका नाम भी ज्ञात नहीं। यह सब बहुत गड़बड़ है और ऐसे समय में जब जेम्स आस्ट्रेलिया जा रहा है और मैं इतनी चिन्तित हूँ, मुझे कहना ही पड़ता है कि तुम्हें अधिक विचारशील होना चाहिए था। फिर भी जैसा कि मैंने पहिले कहा, यदि वह धनवान् हो···।'

'आह माँ, मुझे सुखी होने दो!'

मिसेज वेन ने उसे घूरा और अभिनेत्री के अभ्यस्त तथा अवास्तविक ढँग से उसे अपनी बाँहों में समेट लिया। इसी समय द्वार खुला और रूखे भूरे बालोंवाले छोकरे ने कमरे में प्रवेश किया। उसका बदन दुहरा, हाथ

तथा पैर बड़े और उनका चलन कुछ भद्दा था। उसकी बनावट अपनी बहिन के समान सुन्दर नहीं थी। उनका सम्बन्ध जितना निकट का था उसे समझना अत्यन्त कठिन था। मिसेज वेन ने अपनी दृष्टि उस पर जमायी और अधिक मुस्करा पड़ी। अपने पुत्र को उसने दर्शक की महत्त्वपूर्ण स्थिति में माना। उसे विश्वास था कि मूक तथा गतिहीन व्यक्तियों से संयुक्त वह दृश्य मनोरंजक था।

'मैं सोचता हूँ सिबिल, कि तुम मेरे लिए भी कुछ चुंबन रखोगी'—एक मधुर उलाहने के साथ छोकरे ने कहा।

'आह, किन्तु चुंबन कराना तुम्हें पसन्द नहीं है जिम !'—वह चिल्लायी—'तुम एक भयानक बूढ़े रीछ हो' और कमरे के उस पार दौड़कर वह उससे लिपटकर मिली।

जेम्स वेन ने अपनी बहिन के मुख को स्निग्ध दृष्टि से देखा—'मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ टहलने चलो, सिबिल। मै नहीं सोचता कि इस भयानक लन्दन को पुनः देखूँगा। मुझे विश्वास है कि मैं पुनः देखना नहीं चाहता।'

'मेरे बेटे, ऐसी बुरी बातें मत कहो'—एक निश्वास लेकर थियेटर की एक भूषा उठाते और पैबन्द लगाते हुए बड़बड़ाकर मिसेज वेन ने कहा। मूक दृश्य में उसके सम्मिलित न होने से उसे कुछ निराशा हुई। वैसा होने से परिस्थिति का थियेटर जैसा दृश्य होता।'

'क्यों नहीं, माँ ? मेरा तात्पर्य यही है।'

'तुम मुझे दुखित करते हो, मेरे बेटे ! मुझे विश्वास है कि तुम आस्ट्रेलिया से धनी बनकर लौटोगे। मुझे विश्वास है कि उस उपनिवेश में कोई सोसाइटी नहीं है, कुछ भी ऐसा नहीं है जिसे मैं सोसाइटी कह सकूँ, इसलिए जब तुम धनी हो जाओ तुम्हें अवश्य लौटना चाहिए और लन्दन में दृढ़तापूर्वक जमना चाहिए।'

'सोसाइटी !'—छोकरा बड़बड़ाया—'मैं उस विषय में कुछ नहीं जानना चाहता। तुम्हें तथा सिबिल को स्टेज से दूर ले जाना चाहूँगा। मैं इससे घृणा करता हूँ।'

'ओह, जिम !' सिबिल ने हँसते हुए कहा—'तुम कितने क्रूर हो !

किन्तु, क्या तुम वास्तव में मेरे साथ घूमने चल रहे हो ? यह अच्छा रहेगा। मुझे भय था कि तुम अपने कुछ मित्रों से विदा लेने जा रहे हो—टाम हार्डी से जिसने तुम्हें विकराल 'पाइप' दी या नेडलेंगटन से जो इस पाइप को पीने के कारण तुम्हारा मजाक उड़ाता है। यह तुम्हारी महृदयता है कि अपनी अंतिम संध्या मुझे दे रहे हो। हम कहाँ चलेंगे ? पार्क चला जाय।'

'मैं अत्यन्त गन्दा हूँ'—उसने त्यौरी चढ़ाते हुए उत्तर दिया—'केवल फैशनवाले ही पार्क जाते हैं।'

'मूर्ख, जिम !'—उसके कोट की बाँह पर आघात करते हुए उसने कहा।

क्षण भर वह झिझका। 'बहुत अच्छा'—उसने अन्त में कहा—'लेकिन कपड़े पहिनने में देर न करना।' द्वार से वह नाचती हुई निकली। ऊपर जाते हुए उसके गाने का स्वर सुनायी दे रहा था। सिर ऊपर छत पर उसके नन्हें पैर गतिवान् थे। ऊपर और नीचे कमरे में दो-तीन बार उसने चहल-कदमी की। तब वह कुर्सी पर शान्त आकृति की ओर मुड़ा—'माँ, मेरा सामान तैयार है ?'—उसने पूछा।

'बिलकुल तैयार, जेम्स !'—अपने काम पर दृष्टि जमाये हुए उसने उत्तर दिया। अपने इस उजड्ड और कठोर लड़के के साथ पिछले कुछ महीनों अकेली रह जाने पर वह अनमनी हो गयी थी। आँखें मिलने पर उसका अपना उथला रहस्यमय स्वभाव संकट में पड़ जाता था। वह सोचा करती थी कि उसे कहीं सन्देह तो नहीं हुआ। मौन, चूँकि वह कुछ कहता न था, उसे असह्य हो जाता था। वह खीझ उठती थी। स्त्रियाँ आक्रमण द्वारा आत्म-रक्षा करती हैं जिस प्रकार अचानक और विचित्र समर्पण द्वारा वे आक्रमण करती हैं। 'मैं आशा करती हूँ जेम्स कि अपने समुद्र-यात्रा के जीवन से तुम संतुष्ट रहोगे'—उसने कहा—'स्मरण रहे कि यह तुम्हारी अपनी पसन्द है। तुम्हें वकील के कार्यालय में स्थान मिल सकता था। वकील अत्यन्त आदरणीय होते हैं और प्रायः सर्वोत्तम परिवारों में भोजन करते हैं।'

'कार्यालयों और क्लर्कों से मुझे घृणा है'—उसने उत्तर दिया।

लेकिन तुमने बिलकुल ठीक कहा। मैंने स्वयं अपना जीवन चुन लिया है। मुझे केवल यह कहना है कि सिविल की निगरानी रखो। उसे कोई हानि न होने पाये। माँ, उसकी निगरानी अवश्य रखना।'

'जेम्स, तुम्हारी बातें वास्तव में विचित्र होती हैं। मैं सचमुच सिविल की निगरानी रखती हूँ।'

'मैंने सुना है कि एक सज्जन प्रतिदिन थियेटर आते हैं और उससे बातें करने पीछे जाते हैं। क्या यह सच है? उसके विषय में क्या कहती हो?'

'जेम्स, जो तुम समझते नहीं उसके विषय में बातें कर रहे हो। इस पेशे में हम अनेक आकर्षितों का स्वागत करने में अभ्यस्त हो जाती हैं। किसी समय मैं स्वयं अनेक गुलदस्ते स्वीकार किया करती थी। तब अभिनय की वास्तविक परख होती थी। सिविल के विषय में मुझे यह ज्ञात नहीं कि उसका संपर्क गंभीर है अथवा नहीं। किन्तु उक्त तरुण के पूर्ण सज्जन होने में कोई सन्देह नहीं। मेरे प्रति उसका व्यवहार सदैव ही अत्यन्त शिष्टाचारपूर्ण रहा है। इसके अतिरिक्त वह देखने में धनी प्रतीत होता है और उसके भेजे हुए फूल प्यारे होते हैं।

'यद्यपि तुम उसका नाम नहीं जानती हो'—छोकरे ने कठोर होकर कहा।

'नहीं'—धीरता का भाव प्रकट करते हुए उसकी माँ ने उत्तर दिया—'उसने अपना वास्तविक नाम अब तक प्रकट नहीं किया। मेरे विचार में यह उसकी विचित्रता है। वह सम्भवतः सर्वोत्तम नागरिकों में से एक है।'

जेम्स वेन ने अपना ओठ काट लिया—'सिविल पर निगरानी रखो, माँ!'—वह चिल्लाया—'निगरानी रखो!'

'मेरे बेटे, तुम मुझे अत्यन्त दुखी करते हो। सिविल पर मैंने सदैव विशेष निगरानी रखी है। निश्चय ही, यदि यह सज्जन धनी है तो कोई कारण नहीं है कि वह उससे सम्बन्ध स्थापित न करे। मुझे विश्वास है कि वह सर्वोत्तम नागरिकों में से एक है। मुझे कहना ही पड़ता है कि उसकी आकृति ही ऐसी है। सिविल की शादी अत्यन्त शानदार होने की

सम्भावना है। इनका जोड़ा मनोहर रहेगा। उसकी दृष्टि विशेषता रखती है और प्रत्येक का ध्यान आकर्षित करती है।'

छोकरा अपने आप ही कुछ बड़बड़ाया और अपनी भद्दी अँगुलियों से खिड़की का शीशा बजाने लगा। वह कुछ कहने को घूमा ही था कि द्वार खुला और सिविल अन्दर दौड़ आयी।

'तुम दोनों कितने गंभीर हो!'—वह चिल्लायी—'क्या बात है?'

'कुछ नहीं'—उसने उत्तर दिया—'मैं सोचता हूँ कि कभी-कभी गंभीर अवश्य रहना चाहिए। प्रणाम माँ, मैं पाँच बजे खाना खाऊँगा। कमीजों के अतिरिक्त सभी कुछ बँध चुका है इसलिए तुम्हें परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।'

'खुश रहो, मेरे बेटे!'—बलात् झुककर उसने उत्तर दिया। वह उससे जिस ढँग से बोला था वह ढँग उसे अत्यन्त अप्रिय था और उसकी दृष्टि में कुछ ऐसा था जिससे वह भयभीत थी।

'मेरा चुंबन लो, माँ'—लड़की ने कहा। उसके अधर-पुष्पों ने मुर्झाये से कपोल का स्पर्श किया और उसे उष्ण कर दिया।

'मेरी बच्ची! मेरी बच्ची!'—काल्पनिक गैलरी को खोजती-सी उसकी दृष्टि छत की ओर उठ गयी। 'आओ सिविल'—उसके भाई ने अधीरतापूर्वक कहा। अपनी माँ के स्नेह से उसे घृणा थी। वायु-प्रकम्पित झिलमिलाते सूर्य-प्रकाश में वे निकल पड़े और सुनसान 'इयुस्टन रोड' पर चलने लगे। राहगीर इस उदास और भारी-भरकम तरुण को आश्चर्य से देखते थे जो भद्दे और बेनाप के कपड़े पहिने हुए इतनी सुन्दर और सुसंस्कृत दिखनेवाली लड़की के साथ जा रहा था। साधारण माली मानो एक गुलाब के साथ जा रहा हो।

अपरिचित की उत्सुक दृष्टि देखते ही जिम बारंबार अपनी त्यौरी चढ़ा लेता था। घूरे जाने से उसे इतनी ही चिढ़ थी जितनी असाधारण व्यक्तियों को जीवन के अन्तिम भाग में हो जाती है और फिर जाती नहीं। सिविल फिर भी अपने प्रभाव से अनजान थी। उसका प्रेम उसके अधरों पर हास्य के रूप में थिरक रहा था। वह 'प्रिंस चार्मिंग' के विषय में सोच रही थी और उसी के विषय में सोचती रहे इसलिए उसके

विषय में बातें नहीं कीं, बल्कि बच्चों की तरह उस जहाज की बातें करती रही जिसमें जिम जायगा, सोना जो उसे अवश्य मिलेगा, अनोखी उत्तराधिकारिणी जिसकी कैद से भागे हुए और झाड़ी में छिपे रहनेवाले लाल कमीज के दुष्ट से रक्षा करेगा। क्योंकि वह नाविक, नायक अथवा और कुछ तो बना न रहेगा। नहीं, नाविक का जीवन भयानक है। कल्पना ऐसे भयानक जहाज के विषय को लिए हुए विकराल लहरें जिसमें प्रवेश करने की चेष्टा कर रही थीं, काली आँधी मस्तूलों को उखाड़े डाल रही थी और पालों को चीरकर चीखते हुए लम्बे फीतों में परिवर्तित कर रही थी। मेलबोर्न पर उसे नाव छोड़नी थी, कप्तान को शिष्टतापूर्वक नमस्कार करना था और शीघ्र ही सोने की खानों में जाना था। सप्ताह पूरा होने से पूर्व ही उसे शुद्ध स्वर्ण का एक ऐसा ढेला मिलना था जैसा पहिले कभी नहीं खोजा जा सका और जिसे एक ठेले में रखकर पुलिस के छः घुड़सवारों के पहरे में समुद्र के किनारे लाना होगा। भागे हुए कैदी तीन वार आक्रमण करेंगे और बंधित होकर पराजित होंगे या नहीं! वह सोने की खानों में बिलकुल न जायगा। वे भयानक स्थान हैं जहाँ मनुष्य नशा करते हैं और मधुशालाओं में एक दूसरे को गोली मार देते हैं तथा अपशब्द बकते हैं। वह भेड़ों का एक भला स्वामी होगा और एक शाम जब वह घोड़े पर बैठकर घर आ रहा होगा एक काले घोड़े पर सुन्दर उत्तराधिकारिणी का एक डाकू द्वारा अपहरण देखेगा, पीछा करेगा और उसकी रक्षा कर लेगा। निश्चय ही वह इसे प्रेम करने लगेगी, यह उसे; दोनों की शादी हो जायगी, घर आयेंगे और लन्दन के एक विशाल भवन में निवास करेंगे। हाँ, भविष्य के गर्भ में इसके लिए बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें हैं किन्तु इसे सज्जन होना चाहिए, क्रोधित नहीं होना चाहिए और न अपव्ययी ही होना चाहिए। वह इससे केवल एक ही वर्ष बड़ी है, किंतु उसे जीवन का अनुभव बहुत अधिक है। इसे यह भी निश्चय कर लेना चाहिए कि उसे प्रत्येक डाक से पत्र लिखेगा और सोने से पहिले प्रत्येक रात ईश-प्रार्थना करेगा। ईश्वर बहुत अच्छा है और उस पर कृपा-दृष्टि रखेगा। वह भी इसके लिए प्रार्थनाएँ करेगी और कुछ ही वर्षों में यह बहुत ही धनी और सुखी लौटेगा।

छोकरे ने उदासीनतापूर्वक उसकी बातें सुनीं और कोई उत्तर न दिया। घर छोड़ने का उसे हार्दिक दुख हो रहा था।

फिर भी वह केवल इसी कारण उदास और दुखी न था। अनुभवी न होने पर भी सिबिल की संकटमय स्थिति को वह पूर्णतया समझता था। यह तरुण छैला जो इसे प्रेम कर रहा है इसका शुभचिन्तक नहीं हो सकता। यह सज्जन है और इसीलिए वह इसे घृणा करता है, घृणा करता है किसी ऐसी वंश-प्रवृत्ति के कारण जिसे वह बताने में असमर्थ है और इसी कारण तो उसमें और भी प्रमुख है। उसे अपनी गांभीर्य-विहीन और गर्वीला स्वभाव भी ज्ञात था, इसी में उसे सिबिल तथा सिबिल के सुख के लिए महान् संकट दृष्टिगोचर होता था। आरम्भ में बच्चे माता-पिता को प्रेम करते हैं, वयस्क होने पर उन्हें परखते हैं, कभी उन्हें क्षमा कर देते हैं।

उसकी माँ! वह उससे कुछ पूछने का विचार कर रहा था, कुछ जिसका उसने कई महीने मौन रहकर चिन्तन किया था। अचानक का एक वाक्यांश जो उसने थियेटर में सुना, मंच-द्वार पर प्रतीक्षा करते समय एक रात फुसफुसाहट-पूर्ण ठिठोली जो उसके कानों तक पहुँची—इनसे भयानक भावों की एक लड़ी-सी छूट पड़ी। उसका स्मरण उसे ऐसा ही था मानो उसके चेहरे पर कीड़े की मार की उपड़न हो। उसकी भ्रकुटियाँ मिलकर खूँटीदार क्यारी-सी बन गयीं और पीड़ा के आघात से उसने अपना अधर काट लिया।

'मेरे कथन का तुम एक शब्द भी नहीं सुन रहे हो, जिम'—सिबिल चिल्लायी—'और मैं तुम्हारे भविष्य के अत्यन्त सुन्दर चित्र बना रही हूँ। कुछ तो कहो।'

'तुम मुझसे क्या कहलाना चाहती हो?'

'ओह, यही कि तुम एक भले लड़के बनोगे और हमें भुलाओगे नहीं'—उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

उसने अपने कंधे उचकाये। 'तुम मुझे भुला दो इसकी संभावना अधिक है, न कि मेरे तुम्हें भुलाने की, सिबिल!'

उसके कपोल आरक्त हो गये। 'तुम क्या कहना चाहते हो, जिम?'

—उसने पूछा।

'मैंने सुना है कि तुमने नई मित्रता की है। वह कौन है? उसके विषय में तुमने मुझे क्यों नहीं बतलाया? वह तुम्हारा शुभचिन्तक नहीं है।'

'रुको, जिम!'—वह चिल्लायी—'तुम्हें उसके विरुद्ध कुछ नहीं कहना चाहिए। मैं उसे प्रेम करती हूँ।'

'क्यों, तुम तो उसका नाम तक नहीं जानतीं' छोकरे ने उत्तर दिया—'वह कौन है? जानने का मुझे अधिकार है।'

'उसे 'प्रिंस चार्मिंग' कहते हैं। क्या तुम्हें नाम पसन्द नहीं? ओह, मूर्ख लड़के! इसे कभी न भूलना। तुम यदि उसे देख भी लो तो उसे संसार का अनोखा व्यक्ति समझो। आस्ट्रेलिया से लौटने पर कभी तुम उससे मिलोगे। तुम उसे बहुत पसन्द करोगे। उसे सब पसन्द करते हैं और मैं·····उसे प्रेम करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि आज रात तुम थियेटर आओ। वह वहाँ आयेगा और मैं जूलियट बनूंगी। ओह, मैं कैसा अभिनय करूँगी! सोचो जिम, प्रेम करना और जूलियट का अभिनय करना! उसकी वहाँ उपस्थिति! उसकी प्रसन्नता के लिए अभिनय! मुझे भय है कि कंपनी को डरा न दूँ, उन्हें डरा दूँ अथवा मुग्ध कर लूँ। प्रेम-विभोर होना अपनी सीमा पार कर जाना है। मिस्टर ईसक्स मधुशाला में अपने आवारों से उसे असाधारण बतलायेगा। नीति के समान उसने मुझे बतलाया है और आज रात वह मुझे एक खोज के रूप में घोषित करेगा। मैं यह अनुभव करती हूँ। और यह सब उसका है, केवल उसका, प्रिंस चार्मिंग मेरा अनोखा प्रेमी, सौंदर्य का मेरा देवता! किन्तु उसके पास मैं दीन हूँ। दीन? इससे क्या होता है? दीनता जब द्वार पर रेंगती है, प्रेम खिड़की से उड़कर प्रवेश पा जाता है। हमारी कहावतें पुनः लिखी जानी चाहिए। वे जाड़े में बनी थीं और अब ग्रीष्म है, मेरा वसन्त, मेरे विचार में नीले नभ में फूलों का नर्तन!

'वह सज्जन है'—छोकरे ने उदासीनता से कहा।

'एक राजकुमार!'—संगीतमय स्वर में वह चिल्लायी—'इससे अधिक और क्या चाहिए?'

'वह तुम्हें दासी बनाना चाहता है।'

'स्वतंत्रता का विचार मुझे थर्रा देता है।'

'मैं चाहता हूँ कि तुम उससे सावधान रहो।'

'उसे देखना उसकी पूजा करना है, उसे जानना उस पर विश्वास करना है।'

'सिबिल, तुम उसके पीछे पागल हो।'

वह हँसी और उसका हाथ थाम लिया। 'प्यारे बूढ़े जिम, तुम ऐसी बातें करते हो मानो सौ वर्ष के हो। किसी दिन तुम स्वयं प्रेम में पड़ोगे तब तुम जानोगे कि यह क्या है। ऐसे उदास मत दिखो। निश्चय ही तुम्हें यह सोचकर प्रसन्न होना चाहिए कि 'यद्यपि तुम जा रहे हो, मुझे हमेशा से सुखी छोड़ रहे हो। हम दोनों का जीवन कठोर रहा है, अत्यन्त कठोर और कठिन! किन्तु अब परिवर्तन होगा। तुम एक नये संसार में जा रहे हो और वह मैंने भी पा लिया है। यहाँ दो कुर्सियाँ हैं; हमें बैठ जाना चाहिए और चुस्त व्यक्तियों को जाते देखना चाहिए।'

दर्शकों के झुण्ड में उन्होंने स्थान ग्रहण किया। सड़क के पास गुल-लाला की क्यारियाँ अग्नि-चक्र जैसी लहरा रही थीं। श्वेत धूल, ऐसा प्रतीत होता था मानो ओरिस[1] की जड़ का भय विकंपित बादल धुक-धुकी की हवा में लटका हो। चमकीले रंगों की स्त्रियों की छतरियाँ विकराल तितलियों के समान नाचती और डुबकी-सी लगाती थीं।

उसने अपने भाई से स्वयं अपने, अपनी आशाओं और सम्भावनाओं के विषय में कहला लिया। वह और प्रयत्नपूर्वक बोल रहा था। उनकी बातें ऐसे हो रही थीं मानो खेल में नकली सिक्के चलाये जा रहे हों। सिबिल दुखी रही। वह अपनी प्रसन्नता प्रकट न कर सकी। उस उदास मुख पर वह केवल एक क्षीण मुस्कान-रेखा पा सकी। कुछ देर बाद वह चुप हो गई। अचानक उसे सुनहरे बाल और हँसते ओठ और एक खुली गाड़ी में दो स्त्रियों के साथ डोरियन ग्रे तीव्र गति से जाता हुआ दिख-लाई दिया।

---

१. एक प्रकार का पुष्प-पौधा जिसकी जड़ इत्र तथा औषधि के काम आती है।

वह अपने पैरों पर खड़ी हो गई। 'वह वहाँ है'—वह चिल्लाई।

'कौन ?'—जिम वेन ने पूछा।

'प्रिंस चार्मिंग'—विक्टोरिया की ओर देखते हुए उसने उत्तर दिया।

वह उछलकर खड़ा हो गया और अभद्रतापूर्वक उसका हाथ पकड़ लिया। 'उसे मुझे दिखाओ: वह कौनसा है ? संकेत करो, मैं उसे अवश्य देखूगा।'—वह चिल्लाया, किन्तु उसी समय वरविक के ड्यूक की गाड़ी बीच में आ गई और जब वह रास्ते से हटी विक्टोरिया पार्क से जा चुकी थी।

'वह चला गया'—सिविल उदासीनतापूर्वक बड़बड़ाई—'मैं चाहती थी तुम देख लेते।'

'मैं चाहता था कि मैं देख लेता क्योंकि स्वर्ग में ईश्वर की स्थिति के समान निश्चय ही मैं उसे मार डालूँगा, यदि उसने कभी भी तुम्हारा कोई अहित किया।'

उसने भयभीत होकर उसे देखा। उसने अपने शब्द दुहरा दिये। वातावरण जैसे छुरी से छिन्न-भिन्न हो गया। आसपास के व्यक्तियों के मुख खुलकर रह गये। निकट खड़ी एक स्त्री मुँह दबाकर हँस दी।

'चले आओ, जिम, चले आओ'—वह फुसफुसायी। भीड़ में वह उसका अनुसरण करता हुआ पीछे चलने लगा। अपने कथन से वह प्रसन्न था।

एचिलीज स्टेचू पहुँचकर वह मुड़ी। उसकी आँखों की करुणा अधरों का हास्य बन गई। उसने उसके प्रति अपना सिर हिलाया। 'तुम मूर्ख हो जिम, पूरे मूर्ख; बस एक बुरे स्वभाव के लड़के। तुम ऐसी भयानक बातें कैसे कहते हो ? तुम नहीं जानते कि तुम किसके विषय में कह रहे हो। तुम केवल द्वेषी और क्रूर हो। आह, मैं चाहती हूँ कि तुम प्रेम में पड़ जाओ। प्रेम व्यक्तियों को अच्छा बना देता है और तुमने जो कुछ कहा वह दुष्टतापूर्ण था।' 'मैं सोलह वर्ष का हूँ'—उसने उत्तर दिया—'और जानता हूँ कि मैं किस योग्य हूँ, माँ तुम्हारे लिए व्यर्थ है। वह नहीं जानती कि तुम्हारी निगरानी कैसे की जाय। अब मैं चाहता हूँ कि काश मैं आस्ट्रेलिया बिलकुल न जाता। यह सब समाप्त कर डालने की

मेरी बहुत इच्छा है, मेरे पत्रों पर यदि हुक्म न हो गया होता तो मैं ऐसा ही करता।'

'ओह, जिम, इतनी दृढ़ता न धारण करो। तुम तो उन सनसनीखेज नाटकों के नायक जैसे हो जिनमें अभिनय करने का माँ को बहुत शौक था। मैं तुमसे झगड़ती नहीं। मैंने उसे देखा है, और ओह! उसे देखने में पूर्ण सुख है। हम लड़ेंगे नहीं। मै जानती हूँ कि तुम मेरे प्रेमी का कभी अहित न करोगे, करोगे?'

'मैं सोचता हूँ, जब तक तुम उसे प्रेम करोगी तब तक नहीं।'—उदासीन उत्तर था।

'मैं उसे सदा प्रेम करूँगी।'—वह बोली।

'और वह?'

'वह भी हमेशा!'

'अच्छा हो वह करे।'

वह उससे अलग हो गई। तब वह हँसी और अपना हाथ उसकी बाँह पर रख दिया। वह लड़का ही था।

'मार्बल आर्च' पर उन्होंने एक बस पकड़ ली जिसने उन्हें 'इयुस्टन रोड' पर उनके पुराने और गंदे मकान के निकट छोड़ दिया। पाँच बज चुका था और अभिनय से पूर्व सिबिल को कुछ घंटे आराम करना था। जिम अनुरोध कर रहा था कि वह आराम करे। उसने बताया कि माँ की अनुपस्थिति में वह शीघ्र ही उससे विदा लेगा। वह (माँ) दृश्य अवश्य उपस्थित करेगी और उसे प्रत्येक प्रकार के दृश्यों से घृणा थी।

सिबिल के ही कमरे में वे विदा हुए। छोकरे के हृदय में उस अपरिचित के लिए ईर्ष्या और भयंकर हत्यापूर्ण घृणा थी जो उसके अनुसार दोनों के बीच में उपस्थित हो गया था। फिर भी जब उसने गले में बाँहें डाल दीं और उसकी अँगुलियाँ उसके बालों से खेलने लगीं वह नम्र हो गया और उसने वास्तविक स्नेहपूर्ण चुम्बन किया। ज़ीने से उतरते समय उसके नेत्र सजल थे।

उसकी माँ नीचे उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। उसके प्रवेश करते ही वह उसकी गैरमुस्तैदी पर बड़बड़ाई। उसने कोई उत्तर न दिया और

थोड़ा-सा भोजन करने बैठ गया। मक्खियाँ मेज़ के चारों ओर भनभना रही थीं और गन्दे मेज़पोश पर रेंगती थीं। ओमनीबसों की लगातार धीमी गड़गड़ाहट और दो पहियों की छतदार गाड़ियों की खनखनाहट में भी उसे भनभनाहट सुनाई दे रही थी और तीव्रता से बीतते थोड़े से समय को मानो निगलता चला जा रहा था।

कुछ देर बाद उसने प्लेट (तश्तरी) एक ओर हटा दी और अपना सिर हाथों में ले लिया। वह अनुभव कर रहा था कि जानने का अधिकार उसे है। यदि सब उसके सन्देह के अनुसार ही है तो उसे पहिले बता दिया जाना चाहिए था। भयभीत माँ उसे देख रही थी। शब्द उसके अधरों से यन्त्रवत् मुखरित हो रहे थे। अंगुलियाँ किनारे का फटा हुआ रूमाल खींच रही थीं। छः का घंटा बजते ही वह उठ बैठा और द्वार की ओर गया। फिर वह मुड़ा और उसे घूरने लगा। उनकी आँखें मिलीं। आँखों में उसे दया के लिए अनुनय मिली। वह क्रोधित हो गया।

'माँ, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ'—उसने कहा। उसकी (मिसेज़ वेन की) आँखें कमरे में निरुद्देश्य देखने लगीं। उसने कोई उत्तर न दिया। 'सच-सच बतलाओ। जानने का मुझे अधिकार है। क्या मेरे पिता से तुम्हारा विवाह हुआ था?'

उसने गहरा निःश्वास लिया। यह निःश्वास छुटकारे का था। वह भयानक क्षण जो रात और दिन, सप्ताह और महीनों उसे भयभीत किये हुए था आखिर उपस्थित हो गया था। वास्तव में, कुछ हद तक यह उसके लिए निराशपूर्ण था। प्रश्न का भद्दा और सीधा ढँग सीधा ही उत्तर चाहता था। परिस्थिति क्रम से उपस्थित नहीं हुई थी। यह भद्दी थी। बुरे रिहर्सल का स्मरण दिलाती थी।

'नहीं,'—जीवन की कठोर सादगी पर आश्चर्य करते हुए उसने कहा।

'तब क्या मेरा पिता पाजी था?'—मुट्ठी बाँधते हुए छोकरा चिल्लाया।

उसने सिर हिलाया। 'मैं जानती थी कि वह आज़ाद नहीं है। हम

एक-दूसरे को अत्यन्त प्रेम करते थे। जीवित रहने पर वह हमारे भविष्य के लिए प्रबंध करता। उसके विरुद्ध मत बोलो, मेरे बेटे। वह तुम्हारा पिता था और सज्जन व्यक्ति था। वास्तव में वह उच्चस्तर के व्यक्तियों से सम्बन्धित था।'

उसके अधरों से सौगन्द निस्सृत हुई। 'मुझे अपनी चिन्ता नहीं है'—वह चिल्लाया—'किन्तु सिबिल को मत···। इसका प्रेमी भी एक सज्जन है, है न, अथवा वह ऐसा कहता है ? मैं सोचता हूँ कि इसके सम्बन्ध भी ऊँचे हैं।'

क्षण भर के लिए उस नारी में भयानक दीनता का भाव आया। उसका सिर झुक गया। काँपते हाथों से उसने अपनी आँखें पोंछीं। 'सिबिल की माँ है'—वह बड़बड़ाई—'मेरी नहीं थी।'

छोकरा द्रवित हुआ। वह उसकी ओर गया और निहुरकर उसका चुम्बन ले लिया। 'पिता के विषय में पूछकर यदि मैंने पीड़ित किया तो उसका मुझे दुःख है'—उसने कहा—'किन्तु मैं लाचार था। अब मुझे जाना ही चाहिए। नमस्कार ! भूलना नहीं कि अब तुम्हें केवल एक बच्ची की निगरानी करनी है और सच मानो यदि उसने मेरी बहिन का अहित किया तो मैं पता लगा लूंगा कि वह कौन है, उसे खोज लूंगा और कुत्ते की मौत मारूँगा। मैं सौगन्द खाता हूँ।'

धमकी की अतिशयोक्तिपूर्ण मूर्खता, उसका भावावेश पूर्ण ढँग, सनसनीखेज़ नाटक जैसे प्रलापी शब्दों ने उसके समक्ष जीवन को अधिक स्पष्ट कर दिया। वातावरण से वह परिचित थी। वह मुक्त श्वास ले रही थी और कई महीनों में पहली बार वह अपने पुत्र को वास्तविक प्रशंसा के योग्य पा रही थी। वह उस भावावेशपूर्ण दृश्य का वही क्रम बनाये रखना चाहती थी किन्तु उसने शीघ्र समाप्ति कर दी। ट्रंक नीचे ले जाये जाने थे और गुलूबन्द तथा मोटे दस्तानों का ध्यान रखा जाना था। 'लॉजिंग हाउस' का नौकर कभी अन्दर कभी बाहर हड़बड़ी मचाये हुए था। गाड़ीवाले से सौदा हुआ। वह क्षण व्यर्थ की बातों में बीत गया। जब उसका बेटा चल दिया और उसने खिड़की में से फटा पुराना किनारे का रूमाल हिलाया नैराश्य भावना पुनः जाग्रत हो चुकी थी। वह समझ

रही थी कि एक महान् अवसर व्यर्थ चला गया। सिबिल को यह बतला कर कि केवल एक बच्ची की देख-रेख अवशेष रह जाने के कारण उसका जीवन कितना सूना हो जाएगा, उसने स्वयं को सांत्वना दी। वाक्याँश उसे याद था। वह इससे प्रसन्न हो उठी थी। धमकी के विषय में उसने कुछ नहीं कहा। यह स्पष्ट और नाटकीय ढँग से कही गयी थी। उसे लगता था कि इस विषय मे किसी दिन सब हसेंगे।

६

'मैं सोचता हूँ कि तुम्हें समाचार मिल गया है, बेसिल ?'—लार्ड हेनरी ने उस संध्या को कहा जब ब्रिस्टल के एक छोटे से निजी कमरे में हावर्ड को ले जाया गया जहाँ तीन व्यक्तियों के भोजन का प्रबंध था।

'नहीं, हेनरी !'—चित्रकार ने झुककर खड़े हुए सेवक को हैट और कोट देते हुए उत्तर दिया। 'क्या है ? मैं आशा करता हूँ कि इसका सम्बन्ध राजनीति से नहीं है। उनमें मेरी रुचि नहीं है। हाउस आफ कॉमन्स (जन-सभा) में चित्रण करने योग्य एक भी व्यक्ति नहीं है, यद्यपि उनमें से बहुत से सफेदी कर डालने योग्य हैं।'

'डोरियन ग्रे की शादी होने जा रही है।' लार्ड हेनरी ने कहा और कहने के साथ-साथ उसपर दृष्टि जमाये रहा।

हावर्ड चौंका और तब उसने त्यौरी बदली 'डोरियन की शादी होने जा रही है !'—वह चिल्लाया।

'असम्भव !'

'यह बिलकुल सच है।'

'किससे ?'

'किसी साधारण अभिनेत्री या अन्य किसी से।'

'मैं नहीं मान सकता। डोरियन पर्याप्त समझदार है।'

'मेरे प्यारे बेसिल, जब-तब मूर्खतापूर्ण कृत्य न करने की पर्याप्त बुद्धि डोरियन में है।'

'शादी ऐसी नहीं होती जो जब-तब की जा सके हेनरी !'

'सिवाय अमरीका के'—लार्ड हेनरी ने शान्तभाव से पुनः कहा—'किन्तु मैने यह नहीं कहा कि उसकी शादी होगयी। मैंने कहा कि उसकी

शादी होने जा रही है। दोनों में बहुत अन्तर है। शादी की मुझे स्पष्ट स्मृति है, किन्तु शादी तै होने की स्मृति बिलकुल नहीं है। मैं सोचता हूँ कि मेरी सगाई कभी हुई ही नहीं।'

'किन्तु डोरियन के जन्म, उसकी स्थिति तथा उसकी संपत्ति का तो विचार करो। अपने से इतनी निम्न शादी करना उसके लिए मूर्खता-पूर्ण होगा।'

'बेसिल, यदि तुम चाहो कि वह इस लड़की से शादी करले तो उससे वैसा कहो। तब वह अवश्य कर लेगा। जब कभी मनुष्य पूर्णतया मूर्खतापूर्ण कार्य करता है तो उसका उद्देश्य सदैव श्रेष्ठतम् होता।'

'मैं आशा करता हूँ कि लड़की अच्छी है, हेनरी! मैं नहीं चाहता कि डोरियन ऐसे दुष्ट जीव के बंधन में बँधे जो इसके स्वभाव को बिगाड़ दे और बुद्धि को भ्रष्ट कर दे।'

'ओह, वह अच्छी से बेहतर है—वह सुन्दर है।'—नारंगी के रस तथा वरमाउथ[1] के एक गिलास की चुस्की लेते हुए लार्ड हेनरी ने धीमे स्वर में कहा—'डोरियन कहता है—वह सुन्दर है, और उसकी इस प्रकार की बातें प्रायः गलत नहीं होतीं। तुम्हारे बनाये उसके चित्र ने अन्य व्यक्तियों के सौंदर्य को परखने की शक्ति बढ़ा दी है। यह उसी का सुन्दर प्रभाव है। यदि वह छोकरा अपना कार्यक्रम भूलता नहीं है, आज रात हम उसे देखेंगे।'

'क्या तुम गंभीरतापूर्वक कह रहे हो?'

'पूर्ण गांभीर्य के साथ, बेसिल। मुझे दुख होगा यदि मैं यह सोचूं कि इस समय की अपेक्षा और कभी मैं अधिक गंभीर हो सकता हूँ।'

'लेकिन, क्या तुम इससे सहमत हो हेनरी?'—चित्रकार ने कमरे में इधर-उधर टहलते तथा अधर काटते ए पूछा—'सम्भवतः तुम सहमत नहीं हो सकते। किसी ने बेवकूफ बनाया है।'

'अब मेरी किसी विषय में सम्मति या असम्मति नहीं होती। जीवन के प्रति यह रुख मूर्खतापूर्ण है। हम इस संसार में नैतिक पक्षपात को बढ़ावा देने नहीं आये हैं। साधारण जनता के विचारों की ओर मैं कभी

१. एक जड़ी बूटी का चर्परा शक्तिवर्द्धक रस।

ध्यान नहीं देता और मनोहर व्यक्तियों के कार्यों में मैं कभी बाधक नहीं होता। यदि कोई व्यक्तित्व मुझे आकर्षित कर लेता है, उसका प्रत्येक प्रकाशन का ढंग मेरे लिए पूर्णतया आनन्दप्रद है। डोरियन ग्रे एक ऐसी सुन्दर लड़की से प्रेम करता है जो जूलियट का अभिनय करती है और उससे शादी करना चाहता है। क्यों नहीं ? मैसेलिना से शादी कर लेने पर भी उसका आकर्षण कम नहीं होता। तुम जानते हो, मैं शादी का हामी नहीं हूँ। शादी का वास्तविक गुण यह है कि व्यक्ति निस्स्वार्थ हो जाता है। और निस्वार्थ व्यक्ति प्रभावहीन होते हैं। उनमें व्यक्तित्व नहीं होता। फिर भी कुछ स्वभाव ऐसे हैं जो शादी द्वारा और भी जटिल हो जाते हैं। उनका अपना अहं तो रहता ही है और भी अनेक अहं सम्मिलित हो जाते हैं। उनका जीवन बलात् बहुरूपक हो जाता है। वे अधिक रचनाशील हो जाते हैं और मेरे विचार में अधिक रचनाशील होना मनुष्य की स्थिति का ध्येय है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक अनुभव मूल्यवान् है और शादी के विरुद्ध कुछ भी कहा जाय यह निश्चय ही एक अनुभव है। मैं आशा करता हूँ कि डोरियन ग्रे इस लड़की को अपनी पत्नी बना लेगा, छः महीने तक उसमें बेहद अनुरक्त रहेगा और तब अचानक ही किसी दूसरी के प्रति आसक्त हो जायगा। उसका अध्ययन अनोखा होगा।'

'जो भी तुम कह रहे हो, तुम उसमें से कुछ भी नहीं चाहते, तुम जानते हो कि तुम नहीं चाहते। यदि डोरियन ग्रे का जीवन नष्ट हो गया तो तुमसे अधिक दुःख किसी को न होगा। तुम जैसे बनते हो उससे कहीं अधिक अच्छे हो।'

लार्ड हेनरी हँस पड़ा—'हम दूसरे के विषय में अच्छे विचार रखना चाहते हैं इसका कारण यह है कि हम अपने लिए भयभीत रहते है। निराभय ही आशावाद का आधार है। अपने लाभ के गुण अपने पड़ौसी में देखकर ही हम स्वयं को उदार समझते हैं। हम बैंकवाले की प्रशंसा इसलिए करते हैं कि रुपया निकाल सकें और लुटेरे में सद्गुण इसलिए देखते हैं कि वह हमारी जेबों को हाथ न लगाये। मैंने जो कुछ कहा वही मेरा तात्पर्य है। आशावाद के प्रति मैं घोर रूप से श्रद्धापूर्ण हूँ। जहाँ

तक जीवन के नष्ट होने का प्रश्न है कोई जीवन नष्ट नहीं होता सिवाय उसके जिसका विकास रुक गया हो। यदि तुम स्वभाव नष्ट करना चाहो तो तुम्हें केवल सुधार करना होगा। जहाँ शादी का प्रश्न है, निश्चय ही वह मूर्खतापूर्ण होगा, किन्तु नर और नारी में और भी अनेक तथा आकर्षक सम्बन्ध हैं। मैं निश्चय ही उन्हें प्रोत्साहित करूँगा। उनमें फैशनेबिल होने का आकर्षण है। किन्तु डोरियन स्वयं उपस्थित है। वह तुम्हें मेरी अपेक्षा अधिक बता सकेगा।'

'मेरे प्यारे बेसिल, मेरे प्यारे बेसिल, मुझे तुम दोनों बधाई दो!'—सेटिन की किनारी में लगे हुए पंखोंवाली संध्या कालीन टोपी को उतारते हुए और क्रमशः दोनों मित्रों से हाथ मिलाते हुए छोकरे ने कहा--"मैं कभी इतना प्रसन्न नहीं हुआ। ऐसा निश्चय ही अचानक हुआ, वास्तविक प्रसन्नता की बातें ऐसे ही होती हैं। और फिर भी मुझे ऐसा लगता है कि मैं जीवन भर इसकी प्रतीक्षा में था।' भावावेश तथा प्रसन्नता के कारण उसके कपोल आरक्त थे और वह अत्यन्त सुन्दर दिखलायी देता था।

'मैं आशा करता हूँ कि तुम सदैव ही अति प्रसन्न रहोगे'—हावर्ड ने कहा—"लेकिन तुमने अपनी सगाई के विषय में नहीं बतलाया इसलिए मैं तुम्हें बिलकुल क्षमा नहीं कर सकता। तुमने हेनरी को बतलाया।'

'और भोजन पर देर से आने के कारण मैं तुम्हें क्षमा नहीं कर सकता'—लार्ड हेनरी ने छोकरे के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा और कहने के साथ-साथ मुस्कराया—'आओ, बैठें और नये सदर खानसामा को आजमायें और तब तुम हमें बतलाना कि यह सब कैसे हुआ।'

'वास्तव में बताने को कुछ अधिक नहीं है,' छोटी गोलमेज के सामने बैठते हुए डोरियन ने कहा—'जो हुआ केवल इतना है। कल शाम जब मैं तुम्हारे पास से गया हेनरी, कपड़े बदले, रूपर्ट स्ट्रीट में स्थित तुम्हारे दिखाये हुए छोटे-से इटालियन रेस्ट्राँ में कुछ खाया और आठ बजे थियेटर चला गया। सिबिल रोजलिन्ड का अभिनय कर रही थी। वास्तव में दृश्य अनुपयुक्त और ओर्लेन्डो बेकार का था। किन्तु सिबिल! काश, तुमने उसे देखा होता। जब वह लड़के की वेश-भूषा में आया तो अत्यन्त अनोखी थी। वह कोई के रंग की मखमल की चुस्त मिरजई पहिने थी

जिसकी बाँहें दालचीनी के रंग की थीं और पतला बादामी रंग का गेंद्रिम-दार पूरा मोजा, हीरे में बाज़ का पंख लगी हुई एक खूबसूरत छोटी-सी हरी टोपी और हलकी लाल धारीदार हुडयुक्त लबादा पहिने थी। इससे सुन्दर वह मुझे पहिले कभी नहीं लगी। बेसिल, तुम्हारे स्टूडियो में लगी तनागरा की मूर्ति जैसा समस्त कोमल सौंदर्य उसमें था। उसके चेहरे के चारों ओर बालों के गुच्छे ऐसे लगते थे मानो पीले गुलाब के चारों ओर काले पत्ते हों। रहा उसका अभिनय, सो तुम लोग आज रात देखोहीगे। वह जन्मजात् कलाकार है। मैं बॉक्स में पूर्णतया मोहित बैठा हुआ था। मैं भूल गया कि मैं लन्दन में हूँ और उन्नीसवीं सदी में। मैं अपनी प्रेमिका के साथ ऐसे सुदूर वन में था जिसे किसी मनुष्य ने नहीं देखा। नाटक समाप्त होने के बाद मैं पीछे गया और उससे बातचीत की। हम जब बैठे हुए बातें कर रहे थे, अचानक ही उसकी आँखों में अभूतपूर्व दृष्टि दिखलायी दी। मेरे अधर उसके अधरों के ओर बढ़े। हमने एक दूसरे का चुम्बन किया। मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि उस क्षण मुझे कैसी अनुभूति ई। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा समस्त जीवन सिमटकर मानो गुलाब के रंग का एक पूर्ण आनन्द बिन्दु बन गया हो। उसका सम्पूर्ण शरीर काँप रहा था और वह श्वेत नरगिस के समान हिल रही थी। फिर वह घुटनों के बल बैठ गयी और मेरे हाथों को चूम लिया। मैं अनुभव करता हूँ कि यह सब तुम्हें नहीं बतलाना चाहिए लेकिन मुझसे रहा नहीं जाता। वास्तव में हमारी सगाई पूर्णतया गुप्त है। उसने अपनी माँ तक से नहीं बतलाया। मैं नहीं जानता कि मेरे संरक्षक क्या कहेंगे। लार्ड रेडले निश्चय ही क्रुद्ध होगा। मैं चिन्ता नहीं करता। वर्ष से पहिले ही मैं बालिग़ हो जाऊँगा और तब जो चाहूँगा कर सकूंगा। काव्य में से प्रेम पाया और शेक्सपियर के नाटकों में अपनी पत्नी, मैंने ठीक किया बेसिल, ठीक किया न? शेक्सपियर ने जिन अधरों को बोलना सिखलाया उन्होंने मेरे कानों में अपना भेद कह दिया। रोज़लिन्ड की गलबाँहीं मैंने पायी और जूलियट के मुख का मैंने चुम्बन किया।"

'हाँ डोरियन, मैं सोचता हूँ तुमने ठीक किया'—हावर्ड ने धीमे स्वर में कहा।

'आज तुम उससे मिले ?'—लार्ड हेनरी ने पूछा।

डोरियन ग्रे ने अपना सिर हिला दिया—'मैंने उसे आर्डेन के वन में छोड़ा और वेरोना के कुंज में पा जाऊँगा।'

लार्ड हेनरी ने चिन्तन-मुद्रा में चैम्पेन की चुस्की ली—'किस विशेष स्थिति में तुमने 'शादी' शब्द उच्चारित किया, डोरियन ? और उसने उत्तर में क्या कहा ? सम्भवतः तुम इस विषय में बिलकुल भूल ही गये।'

'मेरे प्यारे हेनरी, मैंने इसे व्यापारिक वार्ता के रूप में नहीं लिया और कोई नियमानुसार प्रस्ताव नहीं रखा। मैंने उसे बताया कि मैं उसे प्यार करता हूँ और उसने कहा कि वह मेरी पत्नी बनने योग्य नहीं है। योग्य नहीं ! मेरे लिए उसके समक्ष समस्त संसार कुछ नहीं है।'

'स्त्रियाँ अत्यन्त व्यावहारिक होती हैं'—लार्ड हेनरी ने धीमे स्वर में कहा—'हमारी अपेक्षा कहीं अधिक व्यावहारिक। वैसी परिस्थितियों में हम शादी के विषय में कुछ भी कहना प्रायः भूल जाते हैं और वे हमें सदैव याद दिलाती हैं।'

हावर्ड ने अपना हाथ उसकी बाँह पर रख दिया—'नहीं, हेनरी ! तुमने डोरियन को अप्रसन्न कर दिया। वह अन्य पुरुषों के समान नहीं है। वह कभी किसी को दुखी न करेगा। इस विषय में इसका स्वभाव बहुत अच्छा है।'

लार्ड हेनरी ने मेज़ के उस पार देखा। 'डोरियन मुझसे कभी अप्रसन्न नहीं होता'—उसने उत्तर दिया—'मैंने सर्वोत्तम सम्भव कारण से ही वह प्रश्न पूछा था, जिस कारण कोई भी प्रश्न पूछने की क्षमा मिल जाती है—केवल उत्सुकता ! मेरी धारणा है कि प्रस्ताव सदैव स्त्रियों का ही होता है न कि हमारा जो स्त्रियों से प्रस्ताव करते हैं। सिवाय, निश्चय ही मध्यमवर्गीय जीवन में। पर मध्यमवर्गीय आधुनिक भी नहीं हैं।'

डोरियन ग्रे हँसा और अपना सिर उछाला—'तुम्हारा सुधार नहीं किया जा सकता हेनरी, किन्तु मैं परवाह नहीं करता। तुमसे अप्रसन्न होना असम्भव है। जब तुम सिबिलवेन को देखोगे तब समझोगे कि जो मनुष्य उसका अहित कर सकता है—पशु है, हृदयहीन पशु ! मैं नहीं समझता कि प्रेमपात्र को शर्मिन्दा करने की इच्छा कोई कैसे कर सकता

है। मैं सिबिलवेन को प्यार करता हूँ। मैं उसे स्वर्ण-सिंहासन पर बिठाना चाहता हूँ और अपनी प्रेमिका को संसार द्वारा पूजित देखना चाहता हूँ। शादी क्या है ? एकवचन तो भंग न किया जा सके। तुम इसलिए इस पर हँसते हो। आह, हँसी मत उड़ाओ। मैं ऐसे ही वचन में बद्ध होना चाहता हूँ जो तोड़ा न जा सके। उसका विश्वास मुझे विश्वासपात्र बताता है और उसकी प्रतीति मुझे अच्छा बनाती है। जब मैं उसके पास होता हूँ तो तुम्हारी शिक्षाओं पर दुख होता है। तुम मुझे जिस रूप में जानते हो मैं वह नहीं रहता। मैं परिवर्तित हो जाता हूँ और सिबिल वेन का स्पर्शमात्र तुम्हें और तुम्हारी ग़लत, मनोहर, विषैली, आनन्ददायक धारणाओं को विस्मृत करा देता है।'

'और वे हैं.....?'—लार्ड हेनरी ने कच्चे साग का सलाद खाते हुए पूछा।

'ओह, तुम्हारी जीवन-विषयक धारणाएँ, प्रेम-विषयक धारणाएँ, आनन्द-विषयक धारणाएँ ! वास्तव में तुम्हारी सभी धारणाएँ हेनरी !'

'धारणा-योग्य केवल आनन्द ही है'—उसने धीमे संगीतमय स्वर में उत्तर दिया—'किन्तु मुझे भय है अपनी धारणा को मैं अपनी ही नहीं कह सकता। यह प्राकृतिक है, मेरी नहीं। आनन्द की प्रकृति की परीक्षा है, उसकी सम्मति का संकेत। जब हम प्रसन्न होते हैं तो सदैव भले होते हैं, किन्तु जब हम भले होते हैं तो सदैव प्रसन्न नहीं होते।'

'आह, किन्तु भले से तुम्हारा तात्पर्य क्या है ?'—बेसिल हावर्ड चिल्लाया।

'हाँ'—पीछे कुरसी का सहारा लेते हुए और मेज़ के मध्य में रखे हुए अरुणाधर इरिसी के भारी पुष्प-गुच्छाओं के पार लार्ड हेनरी को देखते हुए डोरियन का स्वर गूंजा—'भले से तुम्हारा क्या तात्पर्य है हेनरी ?'

'भला होना स्वयं से एकात्म होना है'—उसने अपनी पीली सुनुकीली अँगुलियों से गिलास की तली का स्पर्श करते हुए उत्तर दिया—'विषमता को अन्य के साम्य में परिवर्तित करना है। स्वयं अपना जीवन —यह महत्त्वपूर्ण है। जहाँ पड़ोसियों के जीवन का प्रश्न है यदि कोई अहंकारी अथवा आचारी होना चाहता है तो नैतिक विचारों की शान

दिखा सकता है, किन्तु व्यक्ति से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। इसके अतिरिक्त व्यक्तिवाद का लक्ष्य वास्तव में ऊँचा है। आधुनिक नैतिकता सामयिक कसौटी को स्वीकार कर लेने में निहित है। मेरे विचार में किसी भी संस्कृत पुरुष का सामयिक कसौटी को मान लेना घोर अनैतिकता है।'

'किन्तु, निश्चय ही यदि कोई केवल अपने ही लिए जीता है तो उसे इसका बहुत बड़ा मूल्य चुकाना होता है'—चित्रकार ने सुझाया।

'हाँ, आजकल हमें प्रत्येक वस्तु महँगी पड़ती है। मैं सोचता हूँ कि निर्धनों का सबसे बड़ा दुख यह है कि आत्मत्याग के अतिरिक्त और कोई सामर्थ्य नहीं होती। सुन्दर वस्तुओं के समान ही सुन्दर पाप धनिकों के विशेषाधिकार हैं।'

'रूपयों का स्थान अन्य रूपों में भुगतना पड़ता है।'

'कैसे रूप, बेसिल ?'

'ओह, मेरे विचार में पश्चात्ताप में, कष्ट में.....पतन की अनुभूति में।'

लार्ड हेनरी ने अपने कंधे उचकाये—'मेरे प्यारे मित्र, मध्यकालीन कला मनोहर है, किन्तु मध्यकालीन भावावेश असामयिक हैं। हाँ, उनका उपयोग कथा-साहित्य में हो सकता है। किन्तु कथा-साहित्य में उन्हीं वस्तुओं का प्रयोग हो सकता है जिनका वास्तविक उपयोग नहीं होता। विश्वास कीजिये कि कोई भी सभ्य मनुष्य आनन्द में दुःख नहीं मानता। और कोई भी असभ्य मनुष्य नहीं जानता कि आनन्द क्या है।'

'मैं जानता हूँ आनन्द क्या है'—डोरियन ग्रे चिल्लाया—'किसी के प्रति अनुरक्त हो जाना ही आनन्द है।'

'प्रेम-पात्र होने से यह निश्चय ही अच्छा है'—फलों से खेलते हुए उसने उत्तर दिया—'प्रेम-पात्र होना आफत है। स्त्रियों का हमारे प्रति वही व्यवहार होता है जो मानव समाज का देवताओं के प्रति। वे हमारी पूजा करती हैं और कुछ अपना हित कराने के लिए हमें हमेशा परेशान करती हैं।'

'मेरा कथन है कि जो कुछ वे माँगती हैं हमें पहिले दे चुकी हैं'—छोकरा गंभीरतापूर्वक फुसफुसाया—'वे हमारे स्वभावों में प्रेम का सृजन

करती हैं। वापिस लेने का उनका अधिकार है।'

'यह बिलकुल सच है डोरियन'—हावर्ड चिल्लाया।

'सदैव कुछ भी सत्य नहीं है'—लार्ड हेनरी ने कहा।

'यह है'—डोरियन ने बाधा दी 'हेनरी, तुम्हें मानना ही होगा कि स्त्रियाँ अपना सर्वस्व पुरुषों को दे डालती हैं।'

'सम्भव है'—उसने निश्वाँस लिया—'किन्तु थोड़े-से परिवर्तन में ही वे निश्चय ही इसकी वापिसी चाहती हैं। यही चिन्ता की बात है। स्त्रियाँ, जैसा कि किसी ठिठोलिया फ्रांसीसी ने एक बार कहा—महान् कर्म करने की इच्छा जाग्रत करती हैं और उन्हें व्यवहृत करने में सदैव रुकावटें डालती हैं।'

'हेनरी, तुम भयंकर हो। मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हें इतना पसन्द क्यों करता हूँ।'

'तुम मुझे सदैव पसन्द करोगे, डोरियन'—उसने उत्तर दिया—'क्या तुम लोग थोड़ी-सी कॉफी लोगे ? वेटर (सेवक) कॉफी और चैम्पेन लाओ और कुछ सिगरेटें। नहीं; सिगरेटों की चिन्ता न करो, मेरे पास थोड़ी-सी हैं। बेसिल, मैं तुम्हें सिगार नहीं पीने दूंगा। तुम सिगरेट अवश्य लो। सिगरेट पूर्ण आनन्द का पूर्णतम नमूना है। यह बढ़िया है और अतृप्ति शेष रखती है। इससे अधिक और क्या चाहिए ? हाँ, डोरियन, तुम मुझमें सदैव दिलचस्पी लोगे। मैं उन समस्त पापों का प्रतिनिधित्व करता हूँ जिन्हें करने का तुम्हें कभी साहस नहीं हुआ।'

'क्या व्यर्थ की बातें करते हो, हेनरी ?'—सेवक द्वारा मेज़ पर रखे हुए आग उबलनेवाले चाँदी के अजगर से सिगरेट सुलगाते हुए छोकरा चिल्लाया—'हमें थियेटर चलना चाहिए। जब सिबिल रंगमंच पर आयेगी तुम्हें जीवन का नया आदर्श मिलेगा। जो तुमने कभी नहीं जाना उसका वह प्रतिनिधित्व करेगी।'

'मैं सब कुछ जानता हूँ'—श्रान्त दृष्टि से देखते हुए लार्ड हेनरी ने कहा—'किन्तु नयी भावना के लिए मैं सदैव प्रस्तुत हूँ। मुझे भय है कि मेरे लिए ऐसा कुछ भी नहीं है। फिर भी, तुम्हारी अनोखी लड़की मुझमें सनसनी पैदा कर सकती है। अभिनय से मुझे प्रेम है। यह जीवन से कहीं

अधिक वास्तविक है। हमें चलना चाहिए। डोरियन, तुम मेरे साथ आओगे। मुझे अत्यन्त खेद है बेसिल, किन्तु ब्राघमगाड़ी में केवल दो के लिए स्थान है। तुम हैनसम गाड़ी में जाओ।'

वे उठ बैठे और खड़े होकर कॉफी की चुस्की लेते हुए अपने कोट पहिन लिये। चित्रकार मौन और विचार-मग्न था। उसपर छाया-सी छायी हुई थी। यह शादी उसे असह्य थी फिर भी बहुत-सी घटित हो सकनेवाली बातों की अपेक्षा यह उसे अच्छी प्रतीत हुई। कुछ मिनटों में वे सब जीने से नीचे उतर गए। जैसा तै हुआ था वह अकेला चला और छोटी-सी ब्राघमगाड़ी की चमकती हुई रोशनी के सामने देखता रहा। अभाव का एक विचित्र भाव उसपर छा गया। उसने अनुभव किया कि डोरियन ग्रे जो कुछ उसके लिए पहिले था अब कदापि न हो सकेगा। जीवन उनके बीच में आ गया था...उसकी आँखों में अँधेरा छा गया और भीड़ से पूर्ण, चमकती हुई सड़कें उसे अस्पष्ट दिखलायी देने लगीं। गाड़ी-वान जब थियेटर पर रुका तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह वर्षों बूढ़ा हो गया है।

७

किसी न किसी कारण से थियेटर उस रात भरा हुआ था और मोटा यहूदी जो उन्हें द्वार पर मिला आकर्षक स्निग्ध, विकम्पित मुस्कान से युक्त था। उनके बॉक्स तक वह उन्हें एक प्रकार की आडंबरपूर्ण आजिज़ी के साथ अपने चर्बीपूर्ण हाथ हिलाता और उच्च स्वर में बातें करता हुआ ले गया। डोरियन ग्रे ने उसे पहिले की अपेक्षा अधिक घृणास्पद समझा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह मिरान्डा को खोजता हुआ आया हो और भेंट हो गई हो कालिबन से[1]। इसके विपरीत लार्ड हेनरी ने उसे पसन्द किया। कम-से-कम उसने घोषित ऐसा ही किया, उससे हाथ मिलाने का हठ किया और उसे विश्वास दिलाया कि एक वास्तविक प्रतिभा की खोज करने वाले तथा एक कवि पर दिवालिया हो जाने वाले व्यक्ति से मिलकर उसे गर्व हुआ। हावर्ड पिट में बैठी हुई आकृतियों को

१. शेक्सपियर कृत नाटक टेम्पेस्ट का एक घृणित पात्र।

देखने में मग्न रहा। विशाल और बहुरंगे पौधे की सूर्य-प्रकाश की लपटों जैसी पीताग्नि पँखुरियाँ मानो भयानक रूप से कष्टकारक गर्मी उत्पन्न कर रही हों। गैलरी में बैठे तरुणों ने अपने कोट और वेस्टकोट उतार कर एक ओर लटका दिये थे तथा थियेटर में इधर-उधर बैठे हुओं से बातें और पास बैठी हुई भड़कीली लड़कियों से नारंगियों का हिस्सा बाँट कर रहे थे। पिट में बैठी हुई कुछ स्त्रियाँ हँस रही थीं। उनके स्वर भयानक रूप से तीखे और तकरारपूर्ण थे। बार से काँटों की तड़क का स्वर आ रहा था।

'अपनी देवी को पाने का भी क्या स्थान है!'—लार्ड हेनरी ने कहा।

'हाँ'—डोरियन ग्रे ने उत्तर दिया—'यहीं मैंने उसे पाया था और वह समस्त प्राणियों में देवी है। जब वह अभिनय करेगी तुम सबकुछ भूल जाओगे। यह रूखे मुख और क्रूर आकृतियों वाले साधारण तथा उजड्ड व्यक्ति उसके रंगमंच पर आते ही बिलकुल बदल जाते हैं। वे शांत बैठे रहते हैं और उसे देखते हैं। जैसा वह उनसे चाहती है—वे रोते हैं और हँसते हैं। वह उन्हें एक वायलिन के समान अनुकूल बना लेती है। वह उन्हें वश में कर लेती है और वे यहीं एक समानता अनुभव करते हैं।'

'वही समानता! ओह, मुझे ऐसी आशा नहीं है!'—लार्ड हेनरी ने ऑपेरा-ग्लास से गैलरी में बैठे व्यक्तियों की जाँच करते हुए कहा।

'तुम उसकी ओर तनिक भी ध्यान न दो, डोरियन!' चित्रकार ने कहा—'मैं तुम्हारा अभिप्राय समझता हूँ और मुझे इस लड़की पर विश्वास है। तुम जिसे प्रेम करो वह अवश्य श्रेष्ठ होगी और जिस लड़की में तुम्हारा वर्णित प्रभाव होगा वह निश्चय ही अच्छी और महान् होगी। युग को अपने वश में करना—यह करने योग्य है। यदि यह लड़की आत्माविहीनों को आत्मा दे सके, नीच और दुष्टों में सौंदर्य-भावना उत्पन्न कर सके, यदि वह उन्हें स्वार्थभावना से मुक्त करके पर-दुखकातर कर सके तो तुम्हारी समस्त प्रशंसा के योग्य है, संसार की प्रशंसा के योग्य है। यह विवाह ठीक है। पहिले मैं ऐसा नहीं सोचता था, किंतु अब मानता हूँ। देवताओं ने सिबिलवेन को तुम्हारे लिए

बनाया। उसके बिना तुम अपूर्ण रहते।'

'धन्यवाद, बेसिल'—उसके हाथ को दबाते हुए डोरियन ग्रे ने कहा—'मैं जानता था कि मुझे समझोगे। हेनरी इतना कुटिल है, वह मुझे डराता है। लेकिन यह आर्केप्ट्रा आरम्भ हुआ। यह बहुत बुरा है, किन्तु केवल पाँच मिनिट लेगा। तब पर्दा उठेगा और तुम उस लड़की को देखोगे जिसे मैं अपना समस्त जीवन देने जा रहा हूँ, जिसे मैंने निज की समस्त अच्छाइयाँ दे दी हैं।"

पन्द्रह मिनट बाद तालियों के असाधारण उत्पात में सिबिलवेन ने रंगमंच पर प्रवेश किया। हाँ, वह निश्चय ही आकर्षक थी—देखे हुए आकर्षकतम प्राणियों में से एक, लार्ड हेनरी ने सोचा। उसके लजीले सौंदर्य और चहुँके हुए नेत्रों में कुछ मृगछौने जैसा भाव था। भरे हुए उन्मुक हाउस पर दृष्टि डालते ही रजत-दर्पण पर गुलाब की छाया जैसी हल्की लज्जारुणिमा उसके कपोलों पर खेल गई। वह कुछ कदम पीछे हट गई और उसके अधरों में कम्पन-सा हुआ। बेसिल हावर्ड उछलकर खड़ा हो गया और ताली बजाकर प्रशंसा करने लगा। जड़वत्, मानो स्वप्न में, उसे घूरता हुआ डोरियन ग्रे बैठा था। 'सुन्दर! सुन्दर!' फुसफुसाता हुआ लार्ड हेनरी चश्मे में से झाँक रहा था।

दृश्य केथुलेट के मकान के हॉल का था और रोमियो ने मरकूशियो तथा अपने अन्य मित्रों सहित, यात्री की वेशभूषा में प्रवेश किया था। बैंड, जैसा भी था, संगीत की कुछ गतियाँ निकलीं और नृत्य आरम्भ हो गया। कुरूप मैले वस्त्र पहिने अभिनेताओं के समूह से एक सुन्दरतम संसार के प्राणी के समान सिबिलवेन चलती थी। नृत्य करते समय जल में पौधे के समान उसका शरीर झूमता था। श्वेत कमल के झुकाव जैसा उसकी गरदन का झुकाव था। उसके हाथ शीतल हस्ति-दंत के बने प्रतीत होते थे।

फिर भी उसमें विचित्र उदासीनता थी। रोमियो को देखकर उसने आनन्द का कोई भाव प्रदर्शित नहीं किया। थोड़े से शब्द—

'सुपथिक, शिष्टतापूर्ण व्यवहार से तुम अपने हाथों को अत्यन्त कष्ट देते हो।'

क्योंकि पथिकों के हाथों को संतों के हाथों का स्पर्श प्राप्त होता है और हथेली का हथेली से स्पर्श ही पवित्र हाथों का चुम्बन है—'

जो उसे बोलने पड़े और इनके बाद का संक्षिप्त संलाप एकदम बनावटी ढँग में हुआ। स्वर सुन्दर था, किन्तु बोलने का लहजा एकदम असंगत था। प्रदर्शन ग़लत था। पद्य जैसे प्राण विहीन कर दिया गया था। उत्कट प्रेम अवास्तविक हो गया था।

उसे देखकर डोरियन ग्रे पीला पड़ गया। वह परेशान और उत्कंठित हो गया। उसके किसी भी मित्र को उससे कुछ भी कहने का साहस न हुआ। वह उन्हें पूर्णतया अपटु प्रतीत हुई। उन्हें घोर निराशा हुई।

फिर भी उन्होंने सोचा कि किसी भी जूलियट का वास्तविक परीक्षा-स्थल द्वितीय अंक का बालकोनी (छज्जा) वाला दृश्य है। उसके लिए उन्होंने प्रतीक्षा की। यदि वह वहाँ असफल रही तो उसमें कुछ भी नहीं है।

चाँदनी में जब वह बाहर निकली तो मनोहर थी। इससे इनकार नहीं किया जा सकता था। किन्तु उसके अभिनय का नाटकीय ढँग असह्य था और आगे बिगड़ता ही चला गया। उसकी भाव-भंगिमाएँ बुरी तरह से बनावटी हो गयी थीं। जो कुछ भी उसे कहना होता था उसपर आवश्यकता से अधिक ज़ोर डालती थी। सुन्दर पंक्तियाँ—

तुम जानते हो कि रात्रि का पर्दा मेरे मुख पर पड़ा हुआ है अन्यथा इस रात्रि को जो कुछ तुमने मुझे कहते हुए सुना है उससे मेरे कपोल पर कौमार्य की लज्जारुणिमा रंग गयी होती—

दूसरी श्रेणी के वाकपटुता के अध्यापक द्वारा सिखाये हुए सम्भाषण को स्कूली लड़की के समान अप्रिय वाणी से संक्षेप में उसने बक दिया। जब वह बालकोनी पर झुकी और उन अनोखी पंक्तियों पर आयी—

यद्यपि तुमसे मेरी प्रसन्नता है, आज रात की बातों से मुझे कोई प्रसन्नता न हो सकी, यह इतनी शीघ्रता में अनुचित और अचानक रहीं। 'यह चमकी' इतना कह सकने के पूर्व ही छिन जाने वाली विद्युत के समान! प्रिय, शुभ रात्रि ग्रीष्म की मुकुलित कर देने वाली श्वास से प्रेम की यह कलिका हमारे पुनर्मिलन के समय एक सुन्दर फूल बन जाय—

उसने शब्द इस प्रकार बोले जैसे उसके लिए कोई अर्थ न रखते हों। यह चित्त की अस्थिरता नहीं थी। वास्तव में अस्थिरता से कहीं अधिक उसमें संयम था। कला की यह निरी भद्द थी। वह पूर्णतया असफल थी। पिट और गैलरी के साधारण और अशिक्षित दर्शक भी खेल की दिलचस्पी खो बैठे। वे बेचैन हो गये और ज़ोर से बोलने तथा सीटी बजाने लगे। ड्रेस-सर्किल के पीछे खड़ा हुआ यहूदी मैनेजर क्रोध में पैर पटकने और सौगन्दें खाने लगा। केवल लड़की ही प्रभावमुक्त थी।

दूसरा अंक समाप्त होने पर हिश-हिश का तूफान-सा आ गया। लार्ड हेनरी कुर्सी से उठ बैठा और अपना कोट पहिन लिया। 'वह अत्यन्त सुन्दर है, डोरियन'—उसने कहा—'किन्तु वह अभिनय नहीं कर सकती। हमें चलना चाहिए।'

'मैं पूरा खेल देखूंगा'—छोकरे ने कठोर, तीव्र स्वर में कहा—'मुझे अत्यन्त खेद है हेनरी कि मैंने तुम्हारी एक शाम ख़राब करा दी। मैं तुम दोनों से क्षमा चाहता हूँ।'

'मेरे प्यारे डोरियन, मैं सोचता हूँ कि मिस वेन बीमार थीं'—ह्वार्ड ने बात काटी—'हम अन्य किसी रात को आयेंगे।'

'काश, वह बीमार होती'—उसने कहा—'किन्तु मुझे वह केवल अचैतन्य और गंभीर प्रतीत होती है। वह एकदम बदल गयी है। पिछली रात वह महान् कलाकार थी। आज वह प्रायः दिखलायी दे जानेवाली साधारण अभिनेत्री है।'

'जिसे तुम प्यार करते हो उसके विषय में ऐसा मत कहो, डोरियन! प्रेम कला की अपेक्षा अधिक अनोखा होता है।'

'वे दोनों ही नकल करने के केवल ढॅग हैं'—लार्ड हेनरी ने कहा—'किन्तु हमें जाने ही दो। डोरियन, तुम्हें और नहीं रुकना चाहिए। भद्दा अभिनय देखना नैतिक दृष्टि से अच्छा नहीं है। इसके अतिरिक्त, मैं नहीं सोचता कि तुम अपनी पत्नी से अभिनय कराना चाहोगे। इसलिए वह जूलियट का अभिनय कठपुतली की तरह करती है तो क्या हुआ? वह अत्यन्त सुन्दर है और यदि अभिनय के समान ही उसे जीवन का भी ज्ञान नहीं है तो उसका अध्ययन मनोरंजक होगा। वास्तव में आकर्षित करने-

वाले व्यक्ति केवल दो प्रकार के होते हैं—एक वे व्यक्ति जो सभी कुछ जानते हैं और दूसरे वे व्यक्ति जो कुछ भी नहीं जानते। हे भगवान्, मेरे प्यारे छोकरे, ऐसे शोक-संतप्त न दिखो। सदैव तरुण रहने का भेद यही है कि अशोभन भावावेग न आने दो। बेसिल और मेरे साथ क्लब चलो। हम लोग सिगरेट पियेंगे और सिबिलवेन के सौंदर्य पर मदिरा-सेवन करेंगे। वह सुन्दर है। तुम्हें और चाहिए ही क्या ?'

'चले जाओ हेनरी'—छोकरा चिल्लाया—'मैं एकान्त चाहता हूँ। बेसिल, तुम जाओ। आह, क्या तुम मेरा हृदय मग्न होते नहीं देख रहे हो ?' गर्म आँसू उसके नेत्रों में छलछला आये। उसके ओठ काँपे और वॉक्स के पीछे की ओर झपटकर वह दीवाल पर झुक आया और अपना मुख हाथों से ढक लिया।

'हमें चलना चाहिए बेसिल'—विचित्र कोमल स्वर में लार्ड हेनरी ने कहा और दोनों तरुण एक साथ निकल गए।

थोड़ी देर में फुट लाइन जल उठीं और तीसरे अंक का पर्दा उठा। डोरियन ग्रे अपनी जगह लौट आया। वह पीला, गर्वीला और बेरुखा दिखता था। नाटक घिसटा और अनन्त प्रतीत हुआ। भारी जूते रगड़ते और हँसते हुए आधे दर्शक चले गये। सब निष्फल रहा। अंतिम अंक शून्यप्राय हॉल में अभिनीत हुआ। पर्दा दबी हँसी और कुछ कराहों पर गिरा।

जैसे ही यह सब समाप्त हुआ डोरियन ग्रे दृश्य पटों के पीछे झपटकर ग्रीनरूम में चला गया। लड़की वहाँ अकेली खड़ी थी, मुख विजय-दृष्टि से शोभित था। उसके नेत्र अनोखी दीप्ति से प्रकाशित थे। प्रकाश-किरण उससे छूट रही थीं। उसके खुले अधर अपने ही किसी रहस्य पर मुस्करा रहे थे। जब उसने प्रवेश किया, उसने उसे देखा और अनन्त आनन्द का भाव उसपर छा गया—'आज रात मैंने कितना बुरा अभिनय किया, डोरियन !'—वह चिल्लायी।

'बहुत बुरा,' आश्चर्य में उसे देखते हुए उसने कहा—'बहुत बुरा ! यह बहुत अप्रिय था। क्या तुम नहीं जानतीं कि वह क्या था ! तुम नहीं जानतीं कि मुझे क्या सहना पड़ा।'

लड़की मुस्करायी। 'डोरियन,' उसने उसके नाम को स्थायी संगीत के स्वर में भरकर इस प्रकार उत्तर दिया मानो उसके अरुण अधर-पल्लवों को वह शहद से भी अधिक मीठा था—डोरियन, तुम्हें समझ लेना चाहिए था किन्तु अब समझे, समझे न ?'

'क्या समझा ?'—उसने क्रुद्ध होकर पूछा।

'आज रात मैं इतना असफल क्यों रही ? सदैव ही क्यों रहूँगी ? पुनः कभी भी अच्छा अभिनय क्यों नहीं करूँगी।'

उसने कंधे उचकाये—'मैं सोचता हूँ कि तुम बीमार हो। रुग्णावस्था में तुम्हें अभिनय नहीं करना चाहिए। तुम स्वयं को हास्यास्पद बना लेती हो। मेरे मित्र ऊब गये थे मैं भी अब गया था।'

वह उसे सुनती नहीं प्रतीत होती थी। आनन्द ने उसे बदल दिया था। परमानन्द से वह पराभूत थी।

'डोरियन ! डोरियन !'—वह चिल्लायी—'तुम्हें जानने से पूर्व अभिनय मेरे जीवन का एकमात्र यथार्थ था। थियेटर ही मेरा जीवन था। मैं सोचती थी कि वह सब कुछ सत्य है। मैं एक रात रोज़लिन्ड थी और दूसरी रात पोर्शिया। बियेट्रीस का आनन्द मेरा आनन्द था और कौरडीलिया के दुःख भी मेरे दुःख। मैं सबमें विश्वास करती थी। साथ अभिनय करने वाले साधारण व्यक्ति मुझे देवता जैसे लगते थे। चित्रित दृश्य मेरे संसार थे। मेरा परिचय केवल छायाओं से था और मैं उन्हें वास्तविक समझती थी। तुम आये—ओह, मेरे सुन्दर प्रेम !—और तुमने मेरी आत्मा को बंधन मुक्त कर दिया। तुमने मुझे सिखा दिया कि वस्तुतः वास्तविकता क्या है। आज रात, अपने जीवन में प्रथम बार इस सारहीन स्वाँग के खोखलेपन में बनावटीपन और मूर्खता देखी, जिसमें मैंने सदैव अभिनय किया था। आज रात, पहली ही बार मैंने अनुभव किया कि रोमियो भद्दा, बुड्ढा और पेन्ट किये हुए था, फलों के बागीचे की चाँदनी झूठी थी, दृश्य निम्न स्तर के थे, मेरे शब्द नहीं थे, जो मैं कहाना चाहती थी वे नहीं थे। तुमने मुझे कुछ ऊँचा उठा दिया, इतना ऊँचा कि कला जिसकी छायामात्र है। तुमने मुझे समझा दिया कि प्रेम वास्तव में क्या है। मेरे प्रेम ! मेरे प्रेम ! प्रिंस चार्मिंग ! जीवन के शाहज़ादे ! छायाओं से

मैं ऊब चुकी हूँ। समस्त कला जो कुछ भी हो सकती है तुम मेरे लिए उससे अधिक हो। नाटक के पात्रों से मुझे क्या प्रयोजन? आज रात जब मैं आयी तो मेरी समझ में नहीं आया कि मैं सब कुछ से कैसे हाथ धो बैठी। मैंने सोचा था कि मैं अनोखी होने जा रही हूँ। मैंने देखा कि मैं कुछ भी करने योग्य नहीं रही। अचानक मेरी आत्मा में इसका ज्ञानोदय हुआ। यह ज्ञान मेरे लिए अनुपम था मैंने उन्हें हिस-हिस करके घृणा दिखाते सुना और मैं मुस्करायी। हमारे जैसे प्रेम को वे क्या जानें? मुझे ले चलो, डोरियन, मुझे अपने साथ ऐसी जगह ले चलो जहाँ हम एकान्त पा सकें। रंगमंच से मुझे घृणा है। अनुभूतिहीन भावावेग की मैं नकल उतार सकती हूँ, जो मुझे अग्नि के समान जलाये उसकी नकल मैं नहीं उतार सकती। ओह डोरियन, डोरियन, अब तुम इसका तात्पर्य समझे? यदि मैं कर भी सकी तो प्रेमिका होते हुए अभिनय मेरे लिए पापात्मक होगा। यह तुमने मुझे दिखलाया है।'

वह सोफे पर लुढ़क गया और अपना मुँह फेर लिया। 'तुमने मेरे प्रेम की हत्या कर डाली'—वह बड़बड़ाया।

आश्चर्यचकित होकर उसने उसे देखा और हँस पड़ी। उसने कोई उत्तर न दिया। वह उसके निकट आयी और अपनी नन्हीं अँगुलियाँ उसके बालों में फेरीं। वह झुककर बैठ गयी और उसके हाथों को अपने अधरों से सटा लिया। उसने हाथ खींच लिए और एक सिहरन उनके शरीर में दौड़ गयी।

तब वह उछलकर खड़ा हो गया और द्वार की ओर गया। 'हाँ'—वह चिल्लाया—'तुमने मेरे प्रेम की हत्या की है। तुम मेरी कल्पना में हलचल उत्पन्न कर देती थीं। अब मेरी उत्सुकता भी जाग्रत नहीं होती। तुम्हारा कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। मैंने तुम्हें प्रेम किया था क्योंकि तुम उत्कृष्ट थीं, क्योंकि तुममें प्रतिभा थी, बुद्धि थी, क्योंकि तुमने महान् कवियों के स्वप्नों को साकार कर दिया था और कला की छायाओं को रूप तथा सार प्रदान किया था। तुमने यह सब कुछ छोड़ दिया। तुम स्वच्छ और मूर्ख हो। मेरे ईश्वर! मैं कितना पागल था कि तुमसे प्रेम किया! मैं कैसा मूढ़ था। तुम अब मेरे लिए कुछ भी नहीं हो। मैं तुम्हें

आगे कभी न देखूँगा। तुम्हारे विषय में कभी न सोचूँगा। कभी तुम्हारा नाम न लूँगा। तुम नहीं जानतीं कि कभी तुम मेरे लिए क्या थीं। कभी क्यों...ओह, यह सोचना मुझे असह्य है। काश, मैंने तुम्हें देखा ही न होता। तुमने मेरे जीवन का रोमांस नष्ट कर दिया। प्रेम के विषय में तुम कितनी अल्पज्ञ हो जो तुम कहती हो कि इससे कला नष्ट होती है। कलाविहीन तुम कुछ भी नहीं हो। मैंने तुम्हें प्रसिद्ध, श्रेष्ठ और महान् बना दिया होता। संसार ने तुम्हारी पूजा की होती और तुम्हें मेरा नाम मिला होता! अब तुम क्या हो? सुन्दर चेहरेवाली एक तीसरी श्रेणी की अभिनेत्री।'

लड़की श्वेत पड़ गयी और काँपने लगी। उसने दोनों हाथों की मुट्ठी बना ली और उसका कंठ अवरुद्ध होने लगा। 'तुम गंभीर नहीं हो, डोरियन!'—वह बड़बड़ायी—'तुम अभिनय कर रहे हो।'

'अभिनय! वह मैं तुम्हारे लिए छोड़ता हूँ। यह तुम खूब करती हो।'—उसने व्यंगपूर्वक कहा।

वह उठकर खड़ी हो गयी और मुखपर करुणार्द्र भाव लिये कमरा पार करके उसके पास आयी। उसके हाथ पर अपनी हथेली रख दी और उसकी आँखों में देखा। उसने उसे पीछे धकेल दिया। 'मुझे मत छुओ!'—वह चिल्लाया।

उसकी सिसकी फूट निकली, वह उनके पैरों पर गिर पड़ी और कुचले हुए फूल के समान वहाँ पड़ी रही।

'डोरियन, डोरियन, मुझे मत त्यागो!'—वह फुसफुसायी—'मुझे अत्यन्त खेद है कि मैंने अच्छा अभिनय नहीं किया। मैं निरन्तर तुम्हारे ही ध्यान में रही। किन्तु मैं प्रयत्न करूँगी—सचमुच, मैं प्रयत्न करूँगी। तुम्हारे लिए मेरा प्रेम अनायास ही हो गया। मैं सोचती हूँ कि यदि तुमने मेरा चुम्बन न लिया होता—यदि हमने एक दूसरे का चुम्बन न लिया होता तो मैंने इसे न जान पाया होता। मेरा पुनः चुम्बन लो मेरे प्रिय! मुझसे विलग मत होओ। यह मुझे सह्य नहीं है। ओह, मुझसे दूर मत जाओ। मेरा भाई...'नहीं; चिन्ता न करो। उसका अभिप्राय यह नहीं था। वह मज़ाक कर रहा था...किन्तु तुम, ओह, क्या तुम आज की रात के लिए मुझे

क्षमा नहीं कर सकते ? मैं अत्यन्त परिश्रम करूँगी और सुधार का प्रयत्न करूँगी। संसार में मैं सबसे अधिक तुम्हें प्रेम करती हूँ इसलिए क्रूर न बनो आखिर, केवल एक ही बार तो मैं तुम्हें प्रसन्न नहीं कर सकी। किन्तु, तुम ठीक कहते हो डोरियन ! मुझे कलाकार के रूप में विशेष प्रदर्शन करना था। यह मेरी मूर्खता थी, फिर भी मैं असमर्थ रही। ओह, मुझे मत छोड़ो, मत छोड़ो।'

एक भावावेग पूर्ण रुदन ने उसे रुद्ध कर दिया। घायल के समान वह फर्श पर घिसटी और डोरियन ग्रे की सुन्दर आँखों ने उसे तुच्छ दृष्टि से देखा और उसके सुन्दर आकार के ओठ अनुपम घृणा से सिकुड़ गये। त्यक्त प्रिय के लिए सदैव ही हास्यास्पद भावों का प्रदर्शन होता है। उसे सिबिलवेन बुरी तरह से संगीत-नाट्य जैसी प्रतीत हुई। उसके अश्रु और रुदन ने उसे अप्रसन्न कर दिया।

'मैं जा रहा हूँ'—अन्त में उसने शान्त, स्पष्टस्वर में कहा—'मैं क्रूर नहीं होना चाहता, किन्तु मैं तुम्हें पुनः नहीं देख सकता। तुमने मुझे निराश कर दिया।'

वह चुपचाप रोयी और कोई उत्तर नहीं दिया, किन्तु निकट सरकी। उसके नन्हें हाथ पूर्ण रूप से फैले हुए थे और उसे खोजते प्रतीत होते थे। वह मुड़ा और कमरे से चला गया। कुछ ही क्षणों में वह थियेटर से जा चुका था। वह कहाँ आ गया वह नहीं जानता था। उसे धीमी रोशनी से युक्त सड़कों, काली छायाओं वाले क्षीण वृत्ताकार रास्तों और बुरे दिखनेवाले मकानों से घूमना याद था। भारी आवाज़ और तीखी हँसीवाली औरतों ने उसे बुलाया था। भयानक बन्दरों जैसे शराबी आपस में गाली देते और बातें करते लड़खड़ाते जाते थे। उसने द्वार की सीढ़ियों पर विलक्षण बच्चों की भीड़ देखी और अंधेरे आँगनों से चीखें तथा सौगन्दें सुनी थीं।

पौ फटते ही उसने स्वयं को 'कोवेन्ट गार्डन' के निकट पाया। अंधकार उठ गया और क्षीण अग्निसमूहों से प्रकाशित आकाश खोखला होकर पूर्ण मोती बन गया। झुके हुए कमलों से भरी हुई विशाल गाड़ियाँ पॉलिश की हुई सूनी सड़क पर लगातार धीमी गड़गड़ाहट करती चली जा रही थीं। पवन पुष्पों के सौरभ से बोझिल था और उनका सौंदर्य

उससे दर्द के लिए 'एनोडीन' औषधि लाता प्रतीत होता था। पीछा करता हुआ वह बाजार में पहुँच गया और मनुष्यों को अपने ठेलों को उलटवाते देखने लगा। श्वेत, हल्की कमीज पहिने एक गाड़ीवान् ने उसे विलायती मकोय दीं। उसने धन्यवाद दिया, आश्चर्य-चकित वह हुआ कि दाम क्यों नहीं लेता और उदासीनतापूर्वक खाने लगा। आधीरात में उन्हें तोड़ा गया था और चाँद की शीतलता उनमें प्रवेश कर गयी थी। धारीदार गुलनारा पुष्प, पीले और लाल गुलाब खांचों में ले जाते हुए लड़कों की एक लम्बी कतार सब्जियों के विशाल गहरे हरे ढेरों में से अपना रास्ता बनाते और उन्हें नष्ट करते जाती थी। भूरे सूर्य-तप्त स्तम्भों के पोर्टिको (ड्योढ़ी) के नीचे मैले वस्त्रों तथा नंगे सिरोंवाली लड़कियों का झुंड घूमता था और नीलाम के समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहा था। अन्य ने प्लाजा में स्थित कॉफी-हाउस के घूमनेवाले दरवाजों के के चारों ओर भीड़ लगा रखी थी। भारी घोड़ा-गाडियाँ असम पत्थरों पर फिसलतीं, ठोकर खातीं और घंटियों तथा लटकनों को हिलाती थी। कुछ ड्राइवर बोरों के ढेर पर पड़े सोते थे। आयरिश गरदन और लाल पंजोंवाले कबूतर बीज उठाते दौड़ते फिरते थे।

कुछ देर बाद उसने हैनसम गाड़ी मंगायी और घर चल दिया। कुछ देर उसने द्वार की सीढ़ियों पर चहलकदमी की। शून्य, सटाकर बन्द की हुई खिड़कियों और इसकी घूरती हुई झिलमिलियों से युक्त शान्त स्क्वायर की चारों ओर दृष्टि-निक्षेप करते हुए देखा। अब आकाश दूधिया पत्थर जैसा स्वच्छ था और उससे मकानों की छतें चाँदी जैसी चमकती थीं। सामने की एक चिमनी से एक पतला धूम्र-हार उठ रहा था। सीपिया रंग की हवा में एक बनफ़शी रेशमी फीता लहरा उठा।

बलूत जड़ित विशाल प्रवेश-कक्ष की छत पर, डोजे की किसी नाव से लूटी हुई वेनिस की बड़ी लालटेन में तीन झिलमिलाती हुई बत्तियों से प्रकाश अब भी आ रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानों नीली दीप-शिखा की पंखुरियों पर श्वेताग्नि की गोट लगी हो। उसने उन्हें बुझा दिया और अपनी टोपी तथा केप[1] को मेज पर फेंककर, पुस्तकालय में

१. गर्दन तथा कन्धों को ढकने का वस्त्र।

हो अपने शयन-कक्ष के द्वार की ओर बढ़ा जो निचली मंजिल में अष्ट-कोणकमरा था, जिसे उसने विलास-भावना की अपनी नयी रुचि उत्पन्न होने पर अपने लिए सजाया था और उसमें सेल्बी रॉयल की दुछत्ती में अप्रयुक्त रखी पायी हुई 'रिनासेंस टेप्सट्रीज'[1] लटकायी थी। द्वार का हैंडिल घुमाते समय बेसिल हावर्ड द्वारा चित्रित अपने चित्र पर उसकी दृष्टि पड़ी। आश्चर्य चकित-सा होकर वह पीछे हट गया। तब परेशान-सा वह अपने कमरे में गया। कोट का बटन खोल लेने पर वह भिझ-कता प्रतीत हुआ। अन्त में वह पुनः लौटा, तसवीर के पास गया और उसका निरीक्षण किया। बादामी रंग की मिल्क की झिलमिलियों से संघर्ष करके आते-से धुंधले प्रकाश में उसे मुखाकृति कुछ परिवर्तित-सी प्रतीत हुई। भाव दूसरा ही लक्षित होता था। यह कहा जा सकता था कि मुख में निर्दयता का आभास था। यह निश्चय ही विचित्र था।

वह घूमा और खिड़की तक जाकर झिलमिली खींच दी। प्रातः-कालीन प्रकाश कमरे में घुस पड़ा और कल्पित छायाओं को धुंधले कोनों में ढकेल दिया जहाँ वे थरथराकर पड़ रहीं। किन्तु चित्र की आकृति में उसने जो विचित्र भाव देखा था वह वहीं स्थिर होता बल्कि विवर्धित रूप में दिखलायी दिया। बाण सरीखी उत्सुक सूर्य की किरणें उस मुख के चारों ओर निर्दयता की रेखाएँ इतनी स्पष्ट दिखला रही थीं मानो कोई भयानक कृत्य करने के पश्चात् वह अपना मुख दर्पण में देख रहा हो।

वह पीछे हटा और लार्ड हेनरी की अनेक भेंटों में से एक हाथी-दाँत जड़ित चौखटे के अंडाकार दर्पण को मेज़ पर से उठाकर उसकी पॉलिश की हुई गहराई में शीघ्रता से झाँका। उसके अरुण अधरों पर वैसी रेखा की कोई मरोड़ न थी। यह क्या था ?

उसने आँखें मलीं, चित्र के समीप आया और इसका फिर से निरी-क्षण किया। चित्र को देखने पर उसे चित्रण में कोई परिवर्तन नहीं

---

१. कला और साहित्य के पुनरावरण के चित्रों से युक्त दीवालों पर टाँगने के पर्दे।

मिला फिर इसमें कोई सन्देह नहीं था कि भावाभिव्यक्ति पूर्णतया बदल गयी थी। यह उसकी केवल कल्पना ही नहीं थी। तथ्य घोर रूप से स्पष्ट था।

वह कुर्सी पर जा बैठा और सोचने लगा। अचानक उसे याद आया कि चित्र समाप्त होनेवाले दिन उसने बेसिल हावर्ड के स्टूडियो में क्या कहा था। हाँ, उसे पूर्णतया याद है। उसने एक पागल-इच्छा प्रकट की थी कि चित्र बूढ़ा हो जाय और वह स्वयं तरुण बना रहे जिससे कि उसका सौंदर्य अकलुषित रहे और कैनवास (चित्रपट) पर बनी मुखाकृति में उसके भावावेग और पाप अंकित हों, जिससे कि चित्रित मूर्ति पीड़ा और चिन्ता की रेखाओं से झुलस जाए और वह किशोरावस्था की अनुभूतिपूर्ण कोमल प्रफुल्लता और आकर्षण को बनाये रखे। निश्चय ही उसकी इच्छा तो पूर्ण नहीं हुई थी, ऐसा होना असम्भव है। उनके विषय में सोचना भी भयानक लगता था। और, फिर भी, निर्दयता के आभास से युक्त मुखवाला चित्र उसके समक्ष था।

निर्दयता! क्या वह निर्दय रहा? इसमें लड़की का दोष था, उसका नहीं। महान् कलाविद् के रूप में उसने उसकी कल्पना की थी, उसे महान् सोचकर ही अपनी प्रेमपात्री बनाया था। फिर उसने उसे निराश किया था। वह छिछली और अयोग्य थी। और, फिर भी, बच्चों के समान उसके पैरों पर पड़कर रोने की बात याद आते ही, उसे अतुलनीय पश्चाताप् की भावना ने घेर लिया। उसे याद आया कि कितनी कठोरतापूर्वक उसने उसे देखा था। वह इस प्रकार का क्यों बना था? उसे ऐसी आत्मा क्यों मिली? किन्तु उसे भी सहना पड़ा। खेल के उन तीन घंटों में शताब्दियों की पीड़ा सही, वेदना के युग युगान्तर! उसका जीवन भी उसी के समान मूल्यवान् था। उसने उसे जीवन भर के लिए घायल किया तो उसने भी उसे क्षणभर के लिए बरबाद किया था। इसके अतिरिक्त, पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ दुःख सहने की अधिक सामर्थ्य रखती हैं। वे भावनाओं पर जीती हैं। उन्हें केवल अपनी भावनाओं का ही विचार रहता है। केवल दृश्यानुभवों के लिए ही वे प्रेमपात्र रखती हैं। लार्ड हेनरी ने उसे बताया था और लार्ड हेनरी जानता है कि नारियाँ क्या हैं। वह सिबिलवेन के विषय में चिंतित क्यों हो? अब वह

उसके लिए कुछ भी नहीं है।

किन्तु चित्र ? उसके विषय में वह क्या कहे ? उसमें उसके जीवन का रहस्य है, उसकी कहानी है। इसी ने उसे अपने सौंदर्य को प्यार करना सिखलाया। क्या यही उसे अपनी ही आत्मा से घृणा करना भी सिखलायेगी ? क्या वह इसे पुनः देखेगा ?

नहीं, यह उसकी चिन्तित भावनाओं का भ्रमजाल मात्र था। व्यतीत की हुई भयानक रात्रि ने अपनी छाया पीछे छोड़ दी थी। अचानक ही उसका मस्तिष्क उस नन्हें लाल कलंक से आक्रान्त हो गया था जो मनुष्य को पागल कर देता है। चित्र नहीं बदला था। ऐसा सोचना मूर्खतापूर्ण था।

तो भी, चित्र अपनी सुन्दर, बरबाद मुखाकृति और क्रूर मुस्कान से उसे देख रहा था। इसके आभापूर्ण बाल प्रातःकालीन सूर्यप्रकाश में चमक रहे थे। इसकी नीली आँखें उससे मिल रही थीं। अतुलनीय करुणा का भाव, अपने लिए नहीं, बल्कि, अपनी चित्रित मूर्ति के लिए, उसपर छा गया। यह बदल ही चुका था और अभी बदलेगा। इसका सुनहरापन भूरा पड़ जायगा। इसके लाल और श्वेत गुलाब नष्ट हो जाएँगे। जो भी पाप वह करेगा उसका धब्बा इसपर पड़ जायगा और इसके सौंदर्य को नष्ट कर देगा। किन्तु वह पाप नहीं करेगा। चित्र का बदलना अथवा न बदलना उसके लिए उसकी आत्मा का प्रतिरूप निदर्शन रहेगा। वह लोभ से बचेगा। लार्ड हेनरी से अब वह न मिलेगा, उन आकर्षक विषैले सिद्धान्तों को हर्गिज़ न सुनेगा जिन्होंने बेसिल हावर्ड के बगीचे में असम्भव कृत्यों की उत्कट अभिलाषा से उसे सर्वप्रथम आंदोलित किया था। वह सिबिल-वेन के पास लौट जायगा, सुधार करेगा, उससे विवाह करेगा और उसे प्यार करने की पुनः चेष्टा करेगा। हाँ, ऐसा करना उसका कर्तव्य है। उसकी अपेक्षा उसने अवश्य ही अधिक सहा होगा। बेचारी ! वह स्वार्थी और उसके प्रति निर्दय रहा। जो प्रभाव उसने उसपर डाला था वह पुन-र्जाग्रत होगा। साथ में, वे दोनों सुखी होंगे। उसके साथ उसका जीवन सुन्दर और पवित्र होगा।

वह कुर्सी से उठ बैठा और चित्र को देखकर काँपते हुए एक बड़ा पर्दा उसके सामने खींच दिया। 'कितना भयानक !'—वह बड़बड़ाया और

खिड़की तक जाकर उसे खोल दिया। बाहर लॉन पर आने पर उसने गहरा निःश्वास लिया। प्रातःकाल की ताज़ी हवा ने उसकी समस्त उदास भावनाओं को मानों भगा दिया। उसने केवल सिबिल के विषय में सोचा। उसके प्रेम की क्षीण पुनरावृत्ति हुई। उसका नाम उसने बारंबार लिया। तुहिन-सिक्त वाटिका में गाती हुई चिड़ियाँ फूलों को उसी के विषय में बनातीं प्रतीत हुई।

८

जब वह जागा दोपहर बहुत बीत चुकी थी। उसका सेवक कमरे में कई बार पंजों के बल यह देखने आया कि वह हिला अथवा नहीं, उसे आश्चर्य हुआ था कि उसका स्वामी इतनी देर तक किस कारण से सो रहा है। अन्त में उसकी घंटी बजी और विक्टर एक प्याला चाय तथा पत्रों के एक ढेर को सेवरीज की चीनी की बनी छोटी-सी ट्रे पर रखकर धीरे-से आया और तीन लम्बी खिड़कियों पर टंगे हुए चमकदार नीली कन्निस वाले ऑलिव-सैटिन के पर्दों को पीछे खींच दिया।

'महाशय आज खूब सोये!'—उसने मुस्कराते हुए कहा।

'क्या बजा है, विक्टर?'—डोरियन ग्रे ने उनींदे स्वर में पूछा।

'सवा, महाशय।'

कितनी देर हो गई थी। वह बैठ गया और चाय की चुस्की लेकर पत्रों को देखने लगा। उनमें से एक लार्ड हेनरी का भेजा हुआ था और उसी सुबह पत्रवाहक द्वारा लाया गया था। क्षण भर को वह झिझका और फिर उसे एक ओर रख दिया। अन्य पत्र उसने उदासीनतापूर्वक खोले। उनमें हमेशा जैसे कार्ड, दावतों के निमन्त्रण, व्यक्तिगत दृश्यावलोकन के टिकट, दानार्थ, गाने-बजाने के कार्यक्रम इत्यादि थे जैसे कि फैशनेबल तरुणों पर प्रत्येक दिन, समयानुसार बरसाये जाते हैं। चाँदी के लुई-कुविन्ज टुआयनेट सेट का एक भारी बिल था जिसे अपने अभिभावकों के पास भेजने का वह साहस न कर सका था। वे अत्यन्त पुराने फैशन के व्यक्ति थे जो यह नहीं समझते थे कि हम ऐसे युग में रह रहे हैं जब अनावश्यक वस्तुएं ही हमारी आवश्यकताएँ हैं। और जर्मिन-स्ट्रीट के साहूकारों के अत्यन्त शिष्टतापूर्वक लिखे हुए पत्र थे जिनमें

कितना भी रुपया, क्षणभर में और अत्यन्त उचित दर पर देने की बात थी।

लगभग दस मिनट के अनन्तर वह उठ खड़ा हुआ और काश्मीरी ऊन के सिल्क के कसीदेदार एक सुन्दर गाउन को डालकर गोमेद के फर्श-वाले स्नानागार में चला गया। लम्बी निद्रा के बाद ठंडे पानी ने उसे ताजा कर दिया। बीता हुआ वह सब कुछ भूल-सा गया था। एक-दो बार, किसी विचित्र ट्रेजेडी में पार्ट करने का उसे विचार आया, किन्तु उसमें स्वप्न की अवास्तविकता थी।

वस्त्र पहिनते ही वह लाइब्रेरी गया और हल्का फ्रांसीसी जलपान करने बैठ गया, जो खुली खिड़की के समीप एक छोटी गोलमेज पर उसके लिए रखा गया था। अत्यन्त, सुहावना दिन था। गर्म हवा मानो मसालों से दबी-सी थी। एक मक्खी अन्दर उड़ आई और गन्धक-जैसे पीले गुलाबों से भरे ब्लू-ड्रेगन के सामने रखे प्याले के चारों ओर भन-भनाने लगी। वह सम्पूर्ण सुख अनुभव कर रहा था।

अचानक ही उसकी दृष्टि उस पर्दे पर पड़ी जो उसने चित्र के सामने डाल दिया था, और वह काँप गया।

'महाशय' को ठंड लगती है ?'—उसके सेवक ने पूछा—'खिड़की बन्द कर दूँ ?'

डोरियन ने सिर हिला दिया। 'ठंड नहीं'—वह बड़बड़ाया।

क्या यह सब सच था ? क्या चित्र वास्तव में परिवर्तित हो गया था ? अथवा यह सब केवल उसकी कल्पना के कारण था जिससे कि प्रसन्नता की दृष्टि के स्थान पर उसे शैतानियत भरी दृष्टि दिखाई दी ? निश्चय ही चित्रित चित्रपट परिवर्तित नहीं हो सकता। बेढंगी बात थी। किसी दिन बेसिल से कहने के लिए एक कहानी हो गई। वह मुस्करायेगा।

और, फिर भी, सब कुछ कितना स्पष्ट याद था ! पहिले धुंधले प्रकाश में और तब चमकीले प्रभात में उसने ऐंठे हुए ओठों के चारों ओर निर्दय भाव की रेखाएँ देखी थीं। सेवक का कमरा छोड़कर जाना उसे भयप्रद-सा प्रतीत होने लगा। वह जानता था कि एकाकी होने पर वह

चित्र को देखेगा ही । वास्तविकता से वह डरता था । जब कॉफी और सिगरेट आ गईं और सेवक जाने के लिए मुड़ा, उसे रोक लेने की तीव्र इच्छा हुई । द्वार उसके पीछे जैसे ही बन्द हो रहा था, उसने उसे लौटाया । सेवक आज्ञा की प्रतीक्षा न खड़ा रहा । डोरियन ने उसे क्षण भर ताका । 'मेरी किसी से मिलने की इच्छा नहीं है, विक्टर !'—एक निःश्वास लेकर उसने कहा । सेवक ने अभिवादन किया और चला गया ।

तब वह मेज़ से उठा, सिगरेट सुलगाई और पर्दे के सामने रखे सुन्दर गद्दोंदार मसनद पर लुढ़क गया । पर्दा पुराना, चमकदार स्पेनिश चमड़े का, लुइ कार्टोर्ज नमूने जैसा मुद्रित और अलंकारिक बना था । उसका उत्सुक दृष्टि से सूक्ष्म निरीक्षण किया, वह आश्चर्यान्वित था कि क्या मानवीय जीवन का रहस्य उसमें पहिले भी कभी छिपा रहा ।

क्या वह इसे एक ओर हटाये ? वहीं क्यों न रहने दे ? जानने से लाभ ही क्या ? यदि यह सत्य था, तो भयानक था । यदि यह सत्य नहीं था तो इसकी चिन्ता ही क्यों की जाय ? किन्तु यदि कहीं भाग्य से अथवा कुअवसर से किसी अन्य की अन्वेषक दृष्टि पीछे पड़ी और भयानक परिवर्तन देखा ? यदि बेसिल हावर्ड आए और अपना चित्र देखना चाहे तो उसे क्या करना चाहिए ? बेसिल ऐसा निश्चय ही करेगा । नहीं; इसे देखना ही होगा और अभी । इस सन्देहात्मक दशा की अपेक्षा सभी कुछ अच्छा होगा ।

वह उठ बैठा और दोनों द्वारों में ताले लगा दिए। कम-से-कम अपनी लज्जा के परिवर्तित वेश को वह एकाकी ही देख सकेगा । तब उसने पर्दे को एक ओर हटाया और स्वयं को ठीक सामने देखा। यह पूर्ण सत्य था। चित्र परिवर्तित हो गया था ।

जैसा कि उसे बाद को प्रायः याद आया और सदैव आश्चर्य ही हुआ, चित्र को पहिले उसने वैज्ञानिक रुचि का भाव लेकर ही देखा । ऐसा परिवर्तन हो सकता है यह उसके लिए अविश्वासनीय था । फिर भी यह सत्य था । चित्रपट पर आकार और रंग पाने वाले इन रासायनिक अणुओं और उसकी अन्तरात्मा में क्या कोई भव्य आकर्षण था ? जो उसकी

आत्मा सोचे उसे ही वे आकार दें, क्या ऐसा सम्भव था कि जो यह सोचे वे सत्य बना दें ? अथवा इसका कोई अन्य, अधिक भयानक कारण हो सकता था ? वह काँपा, भयभीत हुआ और मसनद पर वापिस जाकर भय-दुर्बल हो चित्र को देखता हुआ लेटा रहा।

तो भी, इस कारण उसने एक बात अनुभव की। वह सिबिलबेन के प्रति कितना अन्यायपूर्ण, कितना निर्दय रहा था, यह उसे अनुभव होने लगा। क्षतिपूर्ति के लिए बहुत विलम्ब नहीं हुआ था। वह अब भी उसकी पत्नी हो सकती थी। उसका अवास्तविक और स्वार्थपूर्ण प्रेम किसी उच्चतर प्रभाव में आ जाएगा, अथवा श्रेष्ठतर उत्कटाभिलाषा में परिवर्तित हो जाएगा और बेसिल हावर्ड द्वारा चित्रित किया हुआ चित्र उसके जीवन भर पथ-प्रदर्शक रहेगा—कुछ के लिए पवित्रता, अन्य के लिए अन्तरात्मा और हम सबके लिए ईश्वर के भय के समान ! प्रायश्चित्त के लिए निद्राजनक दवाएँ हैं, दवाएँ जो नैतिक अनुभूति को सुला दें। किन्तु यहाँ पाप के ह्रास का स्पष्ट चिह्न था। यहाँ मनुष्यों द्वारा अपनी आत्माओं पर लाया जाने वाला एक सदैव-प्रस्तुत लक्षण था।

तीन बजा, चार और साढ़े चार ने दुहरी ध्वनि की, किन्तु डोरियन ग्रे न हिला। वह जीवन के लाल डोरों को एकत्रित करने, उन्हें बुनकर एक नमूना प्रस्तुत करने और जिन आशापूर्ण भूल-भुलइयों में वह भटक रहा था उनमें से राह निकालने का प्रयत्न कर रहा था। वह नहीं जानता कि क्या करे और क्या सोचे। अन्त में वह मेज़ पर पहुँचा और प्रेयसि से क्षमा माँगते तथा स्वयं को पागलपन का दोषी ठहराते हुए एक भावनापूर्ण पत्र लिख डाला। दुःख और पीड़ा के आवेगपूर्ण शब्दों से उसने पृष्ठ-पर-पृष्ठ लिख डाले। आत्म-धिक्कार में एक योग्य भावना है। जब हम स्वयं को दोषी ठहराते हैं तो यह अनुभव करते हैं कि हमें दोषी ठहराने का अधिकार अन्य किसी को नहीं है। यह स्वीकारोक्ति है, पादरी द्वारा दी गई पाप की क्षमा नहीं। डोरियन ग्रे ने जब पत्र समाप्त कर डाला तो उसने स्वयं को क्षमा किया हुआ अनुभव किया।

अचानक द्वार पर खट-खट हुई और उसे लार्ड हेनरी का स्वर सुनाई दिया—'मेरे प्यारे बच्चे, मैं तुमसे अवश्य मिलूँगा। मुझे शीघ्र अन्दर

आने दो। तुम्हारा स्वयं को इस प्रकार बन्द रखना असह्य है।'

पहिले तो उसने कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि एकदम शान्त रहा। खटखटाहट अब भी हो रही थी और तीव्र होती जाती थी। हाँ, लार्ड हेनरी को भीतर आने देना, अपनी नई जीवन-विधि बताना, आवश्यक हो तो उससे झगड़ना और अनिवार्य हो तो उससे अलग हो जाना बेहतर होगा। वह कूदकर खड़ा हो गया, चित्र के सामने शीघ्रता से पर्दा खींच दिया और द्वार खोल दिया।

'इस सबका मुझे अत्यन्त दुःख है, डोरियन'—प्रवेश करते हुए लार्ड हेनरी ने कहा—'किन्तु तुम्हें इस विषय में अधिक सोच नहीं करना चाहिए।'

'क्या तुम्हारा अभिप्राय सिबिलबेन से है ?'—छोकरे ने पूछा।

'हाँ, निश्चय ही'—कुर्सी पर बैठते हुए और धीरे-से पीले दस्ताने उतारते हुए लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—'एक दृष्टि से यह भयानक है, किन्तु इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। मुझे बताओ, क्या तुम पीछे गये और खेल समाप्त होने पर उससे मिले ?'

'हाँ',

'मुझे निश्चय था कि तुम मिले होगे। क्या तुमने कोई दृश्य उपस्थित किया ?'

'मैं क्रूर था, हेनरी—घोर क्रूर ! किन्तु अब सब ठीक है। जो कुछ भी हुआ उसका मुझे कोई दुःख नहीं। इससे मैंने स्वयं को भली प्रकार जानना सीखा।'

'आह, डोरियन, मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि तुमने इसे इस प्रकार ग्रहण किया। मुझे भय था कि मैं तुम्हें पश्चाताप्-निमग्न और अपने सुन्दर घुंघराले बालों को नोचता हुआ पाऊँगा।'

'उस सबके मैं पार हो गया हूँ'—डोरियन ने सिर हिलाते और मुस्कराते हुए कहा—'अब मैं पूर्णतया सुखी हूँ। आरम्भ करने के लिए मैं जानता हूँ आत्मा क्या है ? जो तुमने बताया यह वह नहीं है। हममें दिव्य वस्तु यही है। इसपर अब अधिक नाक न चढ़ाओ हेनरी—कम से कम मेरे सामने नहीं। मैं भला होना चाहता हूँ। अपनी आत्मा के भया-

नक होने का विचार मुझे असह्य है।'

'नीति-विज्ञान का एक अत्यन्त सुन्दर कलात्मक आधार, डोरियन! इसके लिए मेरी बधाई। किन्तु आरम्भ कैसे कर रहे हो?'

'सिबिलवेन से शादी करके।'

'सिबिलवेन से शादी!'—खड़े होते हुए और घबराहटपूर्ण आश्चर्य से उसे देखते हुए लार्ड हेनरी चिल्लाया—'किन्तु मेरे प्यारे डोरियन—'

'हाँ, हेनरी, मैं जानता हूँ तुम क्या कहने जा रहे हो। शादी के विषय में कुछ भयानक। यह मत कहो। उस प्रकार की बातें मुझसे भविष्य में न कहना। दो दिन पहिले मैंने सिबिल से शादी के लिए कहा था। उसे दिया हुआ अपना बचन मैं नहीं तोड़ूंगा। वह मेरी पत्नी होगी!'

'तुम्हारी पत्नी! डोरियन!...क्या तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला? मैंने आज ही सुबह लिखा था और अपने ही आदमी से भिजवाया था।'

'तुम्हारा पत्र? ओह, हाँ, याद आया। मैंने अभी तक नहीं पढ़ा, हेनरी। मुझे भय था कि उसमें कुछ ऐसा होगा जो मुझे अच्छा नहीं लगेगा। तुम्हारे चुटकुले जीवन के टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं।'

'तब, तुम्हें कुछ भी ज्ञात नहीं?'

'तुम क्या कहना चाहते हो?'

लार्ड हेनरी कमरे में इधर से उधर चला और डोरियन ग्रे के पास बैठते हुए उसके दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए और उन्हें मजबूती से पकड़ लिया।

'डोरियन'—उसने कहा—'मेरा पत्र—डरो नहीं—तुम्हें यह बतलाने के लिए था कि सिबिलवेन की मृत्यु हो गई है।'

छोकरे के अधरों से एक पीड़ाभरा स्वर फूटा और लार्ड हेनरी के हाथों से अपने हाथ छुड़ाकर वह घुटनों के बल उछलकर खड़ा हो गया।

'मर गई, सिबिल मर गई! यह सत्य नहीं है! यह भयानक झूठ है! यह कहने का तुमने साहस कैसे किया?'

'यह बिलकुल सच है डोरियन,'—लार्ड हेनरी ने गम्भीरतापूर्वक कहा—'प्रातःकाल के सभी समाचारपत्रों में है। मैंने तुम्हें लिखा था कि

मेरे आने तक तुम किसी से न मिलना। निश्चय ही इसका अन्वेषण होगा और तुम्हें उसमें नहीं फँसना चाहिए। इस प्रकार की बातें मनुष्य को पेरिस में फैशनेबल बना देती हैं, किन्तु लन्दन के व्यक्ति अत्यन्त ईर्षालु हैं। यहाँ प्रथम सामाजिक प्रवेश बदनामी के साथ कभी न होना चाहिए। बुढ़ापे के आनन्द के लिए इसे सुरक्षित रखना चाहिए। मेरे विचार में थियेटर वाले तुम्हारा नाम नहीं जानते ? यदि नहीं जानते तो ठीक है। उसके कमरे की ओर तुम्हें जाते किसी ने देखा ? यह एक महत्त्वपूर्ण बात है।'

कुछ क्षण तक डोरियन ने कोई उत्तर न दिया। वह भयाक्रान्त था। अन्त में उसने अटकते स्वर में कहा—'हेनरी, क्या तुमने 'अन्वेषण' कहा ? उससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है ? क्या सिबिल ने...? ओह, हेनरी, मैं यह सहन नहीं कर सकता ! किन्तु शीघ्रता करो। तुरन्त मुझे सब कुछ बता डालो।'

'यह दुर्घटना नहीं थी, इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं है डोरियन, फिर भी जनता के समक्ष इसे इसी प्रकार रखना होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि वह साढ़े बारह बजे के लगभग अपनी माँ के साथ थियेटर से जा रही थी, उसने बताया कि वह ऊपर कुछ भूल आई है। कुछ समय तक उसकी प्रतीक्षा की गई, परन्तु वह पुनः लौटकर नहीं आई। अन्त में वह अपने ड्रेसिंग-रूम के फर्श पर मरी पड़ी पाई गई। भूल से उसने कुछ खा लिया, कोई भयानक वस्तु जिसे वे थियेटर में प्रयोग करते हैं। मैं नहीं जानता कि वह क्या थी, किन्तु उसमें प्रसिक एसिड अथवा सफेद शीशा मिला हुआ था। मैं सोचता हूँ कि प्रसिक एसिड ही रहा होगा, क्योंकि वह तभी मर गई।'

'हेनरी, हेनरी, यह भयानक है !'—छोकरा चिल्लाया।

'हाँ, यह निश्चय ही अत्यन्त दुखद है, किन्तु तुम्हें इसमें न फँसना चाहिए। 'दि स्टेंडर्ड' में मैंने देखा कि वह सत्रह वर्ष की थी। मेरा विचार था कि वह उससे भी कम है। वह बच्ची जैसी लगती थी और अभिनय भी न कर पाती थी। डोरियन, तुम्हारी स्फूर्ति पर इसका प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। दोपहर का भोजन तुम मेरे साथ आकर अवश्य करो

और उसके बाद हम ऑपेरा चलेंगे। आज की रात वहाँ सब लोग रहेंगे। तुम मेरी बहिन के बॉक्स में आ जाना। उसके साथ कुछ फुर्तीली स्त्रियाँ हैं।'

'तो मैंने सिबिलवेन की हत्या कर डाली है'--डोरियन ग्रे ने कुछ स्वयं से कहा--'निश्चय ही ऐसी हत्या की मानो उसका नन्हा-सा गला चाकू से काट डाला हो। फिर भी इस कारण गुलाबों का सौंदर्य कम नहीं दीखता। मेरे बगीचे की चिड़ियाँ उतनी ही प्रसन्नतापूर्वक गा रही हैं। और आज रात तुम्हारे साथ भोजन करने के पश्चात् मैं ऑपेरा जाऊँगा और लगता है कि उसके बाद फिर कहीं ब्यालू करूँगा। जीवन कितने असाधारण रूप से नाटकीय है। हेनरी, मैं सोचता हूँ कि यदि यह सब मैंने किताब में पढ़ा होता तो मैं रोता। किसी भी प्रकार अब जब यह वास्तव में हो गया है और मेरे ही साथ, आँसुओं के लिए यह अत्यन्त अनोखा प्रतीत होता है। यह मेरे जीवन का प्रथम भावनापूर्ण पत्र है। विचित्रता यह है कि मेरा प्रथम भावनापूर्ण पत्र एक मृत लड़की के लिए लिखा गया है। क्या वे अनुभव कर सकते हैं, मैं सोचता हूँ, वे श्वेत शान्त व्यक्ति जिन्हें हम मृत कहते हैं ? सिबिल ! क्या वह अनुभव कर सकती है, जान सकती है अथवा सुन सकती है ? ओह, हेनरी, कभी मैं उसे कितना प्यार करता था ! मानो वर्ष बीत गये हों, मुझे अब ऐसा लगता है। वह मेरी सर्वस्व थी। तब वह भयानक रात आई—क्या यह वास्तव में कल की ही रात थी जब उसने इतना बुरा अभिनय किया और मेरा दिल जैसे तोड़ ही डाला ? उसने मुझे यह सब बतलाया। यह अत्यन्त करुणाजनक था, किन्तु मैं तनिक भी द्रवित न हुआ। मैंने उसे मूर्ख समझा। अचानक कुछ ऐसा हुआ कि मैं डर गया। मैं नहीं बता सकता कि वह क्या था, पर भयानक था। मैंने कहा कि मैं उसके पास पुनः जाऊँगा। मुझे लगा कि मैंने ग़लती की थी। और अब वह मर चुकी है। मेरे भगवान् ! मैं क्या करूँ ? तुम नहीं जानते कि मैं किस संकट में हूँ और सीधा खड़ा (निष्कपटभाव से) नहीं हो सकता। वह मेरे लिए इतना कर सकती थी ! आत्महत्या करने का उसे कोई अधिकार न था। यह उसकी स्वार्थपरता थी।'

'मेरे प्यारे डोरियन'—लार्ड हेनरी ने केस (डब्बा) से सिगरेट निकालकर सुनहरा मैचबॉक्स निकालते हुए उत्तर दिया—'नारी यदि पुरुष का सुधार कर सकती है तो केवल उसे इतना उबा देने पर कि जीवन में उसे कोई रुचि न रह जाए। यदि तुमने इस लड़की से शादी की होती तो अभागे होते। निश्चय ही तुमने उसके प्रति सदय व्यवहार किया होता। मनुष्य जिसकी कोई परवाह नहीं करता ऐसे व्यक्तियों के प्रति सदैव सदय हो सकता है। किन्तु वह शीघ्र जान जाती कि तुम उसके प्रति पूर्णतया उदासीन हो। और जब स्त्री अपने पति के विषय में यह जान जाती है तो या तो वह अत्यन्त मैली-कुचैली रहने लगती है अथवा किसी अन्य के पति द्वारा क्रय की हुई बढ़िया बौनेट[1] धारण करने लगती है। मैं सामाजिक त्रुटि के विषय में कुछ नहीं कहता, जो कमीनी होती और जिसे मैं निश्चय ही न होने देता, किन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि प्रत्येक दशा में पूर्ण असफलता ही प्राप्त होती।'

'मैं सोचता हूँ ऐसा होता'—कमरे में ऊपर-नीचे टहलते और घोर रूप से पीले दिखते छोकरे ने धीमे स्वर में कहा—'किन्तु मैंने इसे अपना कर्तव्य समझा। इस भयानक दुखान्त ने मुझे वह नहीं करने दिया जो ठीक था; इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। तुम्हारा कहा हुआ मुझे याद है कि अच्छे इरादों में एक दैवाधीनता रहती है और वे अत्यन्त विलम्ब से किये जाते हैं। मेरे इरादे निश्चय ही ऐसे थे।'

'अच्छे इरादे वैज्ञानिक नियमों में बाधा पहुँचाने की विफल चेष्टाएँ हैं। उनकी उत्पत्ति निरे अहंभाव से होती है। उनका परिणाम पूर्ण शून्य होता है। उनसे जब-तब वे विलासपूर्ण फलहीन भावनाएँ उत्पन्न होती हैं जिनमें दुर्बलों के लिए निश्चय ही एक आकर्षण रहता है। उनके विषय में केवल इतना ही कहा जा सकता है। वे केवल उन चेक (हुन्डी) के समान हैं जो मनुष्यों द्वारा उसे बैंक के लिए काटे जायँ, उनका कोई खाता न खुला हो।'

'हेनरी'—आकार और उसके पास बैठकर डोरियन ग्रे ने कहा—

---

१. स्त्रियों की टोपी।

'ऐसा क्यों है कि इस दुःख को मैं उतना अनुभव नहीं कर पाता जितना करना चाहता हूँ। मैं नहीं सोचता कि मैं हृदयहीन हूँ। क्या तुम सोचते हो?'

'तुमने उस नाम के योग्य अनेक मूर्खतापूर्ण कृत्य पिछली पन्द्रहिया में किये हैं।'—लार्ड हेनरी ने अपनी मधुर, उदासीन मुस्कान सहित उत्तर दिया।

छोकरे ने भृकुटी चढ़ायी—'मुझे यह उत्तर पसन्द नहीं आया, हेनरी, किन्तु मैं प्रसन्न हूँ कि तुम मुझे हृदयहीन नहीं समझते। मैं ऐसा नहीं हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं नहीं हूँ। और फिर भी, मुझे यह स्वीकार करना ही होगा कि इस घटना का मुझपर वैसा प्रभाव नहीं पड़ा जैसा पड़ना चाहिए। यह मुझे केवल एक अनोखे खेल के अनोखे अन्त के समान प्रतीत हुई। यूनानी दुखान्त-नाटिका का समस्त भयानक सौंदर्य इसमें है—नाटिका जिसमें मैंने भाग तो लिया, किन्तु घायल नहीं हुआ।'

'यह एक चित्ताकर्षक बात है'—लार्ड हेनरी, जो छोकरे के साथ खिलवाड़ करने में अत्यन्त आनन्द पाता था, बोला—'एक अत्यन्त चित्ताकर्षक बात! मैं सोचता हूँ कि इसका वास्तविक उत्तर यह है। ऐसा प्रायः होता है कि जीवन की वास्तविक दुर्घटनाएँ कुछ ऐसे कलात्मक ढँग से घटित होती हैं कि अपनी असुन्दर उग्रता, पूर्ण असमानता, भद्दी अर्थहीनता तथा कुढंग के कारण हम पर आघात पहुँचाती हैं। उनका प्रभाव भद्देपन जैसा होता है। उनमें हमें निरी बर्बर शक्ति का आभास मिलता है और हम उनके प्रति विद्रोह कर उठते हैं। कभी, यदि दुर्घटना में कलात्मक सौंदर्य के तत्त्व होते हैं तो हमारे जीवन के पार जा पहुँचती है। यदि सौंदर्य के ये तत्त्व वास्तविक होते हैं तो सामूहिक रूप से हमपर नाटकीय प्रभाव पड़ता है। अचानक हम देखते हैं कि अभिनेता के स्थान पर हम खेल के दर्शक हो गये हैं अथवा दोनों ही स्थितियों में हैं। हम स्वयं को देखते हैं और उनके दर्शन का आश्चर्य मात्र हमें कंपित कर देता है। इस घटना में क्या हुआ? तुम्हारे प्रेम में किसी ने आत्महत्या कर ली। मैं चाहता हूँ कि ऐसा अनुभव कभी मुझे होता। ऐसा होने पर मैं अपनी प्रेयसि का जीवन भर के लिए प्रेमी बन जाता। जिन व्यक्तियों ने मुझे प्रेम किया यद्यपि वे बहुत नहीं रहे, किन्तु थोड़े अवश्य रहे। मुझे उनकी

परवाह और उन्हें मेरी परवाह न रहने के बहुत बाद तक भी वे बने रहने की जिद्द-सी करते रहे। वे दृढ़ और उकता डालनेवाले हो गये और जब भी मैं उनसे मिला वे अतीत को याद करने लगे। नारी की विकट स्मरणशक्ति! यह कितनी भयानक होती है! और इससे कितनी दिमागी सड़न उत्पन्न होती है। जीवन की रंगीनी को ग्रहण करना चाहिए, किन्तु उसके विवरण स्मरण नहीं रखने चाहिए। विवरण सदैव अनाकर्षक होते हैं।'

'अपने बगीचे में मैं पौपीज[1] अवश्य बोलूंगा'—डोरियन ने निश्वास लिया।

'कोई आवश्यकता नहीं है'—उसके साथी ने पुनः कहा—'जीवन के हाथों में सदैव पौपीज रहते हैं। हाँ, कभी-कभी विलम्ब हो जाता है। एक बार एक रोमांस की अनन्तता के लिए कलात्मक-शोक-स्वरूप मैंने मौसमभर वायलेट[2] धारण किया, किन्तु अन्त में इसका अन्त हो ही गया। मुझे याद नहीं कि इसका अन्त कैसे हुआ। मैं सोचता हूँ कि मेरे लिए समस्त संसार को त्याग देने के उसके प्रस्ताव के कारण हुआ। ऐसा क्षण सदैव विकट होता है। इससे अमरत्व का भय प्राप्त हो जाता है। अच्छा—क्या तुम विश्वास करोगे? एक सप्ताह हुआ मैं लेडी हैम्पशायर के यहाँ उसी स्त्री के बाद बैठा हुआ था और उसने उस सबकी पुरावृत्ति, गड़े मुर्दों को उखाड़ने और भविष्य को समेटने की जिद्द की। मैं अपने रोमांस को नरगिस की क्यारी में दफना चुका था। उसने पुनः बाहर खींच लिया और मुझे विश्वास दिलाया कि मैंने उसका जीवन नष्ट कर दिया। मुझे कहना ही पड़ता है कि उसने बहुत अधिक भोजन किया इसलिए मुझे कोई चिन्ता नहीं हुई। किन्तु उसने अभिरुचि का कैसा अज्ञान प्रकट किया! अतीत का एक आकर्षण यही है कि वह बीता हुआ है। किन्तु स्त्रियाँ कभी नहीं जानतीं कि पर्दा कब गिरा। वे सदैव छटवाँ अंक चाहती हैं

---

१. एक प्रकार के आकर्षक फूल (लाल, पीत और श्वेत) का रूएँदार डंठल का पौधा।

२. बनफ़शा का बेंगनी रंग का पुष्प।

और खेल का आनन्द जैसे ही पूर्णतया समाप्त होता है, वे उसका क्रम बनाये रखने की प्रस्तावना करती हैं। यदि उन्हें मनमानी करने दी जाए तो प्रत्येक सुखान्त-दुखान्त हो जाए और प्रत्येक दुखान्त एक स्वाँग की सीमा प्राप्त कर ले। वे अत्यन्त दिखावटी होती हैं, किन्तु कला का उन्हें कोई ज्ञान नहीं होता। मेरी अपेक्षा तुम अधिक सौभाग्यशाली हो। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, डोरियन, कि मेरी परिचित स्त्रियों में से एक ने भी मेरे लिए वह न किया होता जो सिबिलवेन ने तुम्हारे लिए किया। साधारण स्त्रियाँ अपने को सदैव सांत्वना दे लेती हैं। उनमें से कुछ भावुकता प्रदर्शित करके ऐसा करती हैं। किसी भी आयु की बनफशी रंग धारण करनेवाली अथवा लालफीता धारण करनेवाली पैंतीस वर्ष की आयु से बड़ी स्त्री पर कभी विश्वास न करना। इसका अर्थ सदैव यह है कि उनका एक इतिहास होता है। अन्य अचानक ही अपने पतियों के महान् गुण खोजकर अत्यन्त सांत्वना पाती हैं। वे सम्मुख विवाह-सम्बन्धी आनन्द की शान दिखाती हैं, मानो पापों में आकर्षकतम यही हो। कुछ को धर्म से सांत्वना मिलती है। इसके रहस्यों में प्यार के बहाने का पूर्ण आनन्द है, एक स्त्री ने मुझे एक बार बतलाया; और मैं इसे पूर्णतया जानता हूँ। इसके अतिरिक्त, कोई भी इतना अहंवादी नहीं होता जितना पापी बतलाया जानेवाला। आत्मा हम सबको अहंवादी बना देती है। हाँ, आधुनिक जीवन में स्त्रियों के लिए सांत्वनाओं का कोई अन्त नहीं है। वास्तव में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण को तो मैंने बतलाया ही नहीं।'

'वह क्या है, हेनरी ?'—छोकरे ने उदासीन भाव से कहा।

'ओह, स्पष्ट ही सांत्वना। अपने प्रशंसक से वंचित होने पर दूसरे के प्रशंसक पर अधिकार करना। अच्छे समाज की नारी इससे सदैव निष्कलंक रहती है। किन्तु सचमुच, डोरियन, मिलने वाली स्त्रियों से सिबिलवेन कितनी भिन्न रही होगी। उसकी मृत्यु में मुझे कुछ अत्यन्त अच्छा लगा। मुझे प्रसन्नता है कि मैं ऐसी शताब्दी में रह रहा हूँ जिसमें इस प्रकार की अनोखी बातें होती हैं। इनसे रोमांस, उत्कट अभिलाषा और प्रेम जैसी हमारे मन बहलाव की बातों की वास्तविकता में विश्वास हो जाता है।'

'मैं उसके प्रति अत्यन्त क्रूर था। तुम यह भूलते हो।'

'मुझे लगता है कि स्त्री को क्रूरता पसन्द है, सबसे अधिक सीधी-सादी क्रूरता। उनकी प्रवृत्तियाँ विचित्र रूप से प्राचीन होती हैं। हमने उन्हें मुक्त किया फिर भी वे अपने स्वामियों के मुँह तकने वाली दासियाँ ही रहीं। वे शासित रहना चाहती हैं। मुझे विश्वास है कि तुम बहुत अच्छे रहे। मैंने तुम्हें वास्तव में और पूर्णतया क्रोधित कभी नहीं देखा, किन्तु तुम कितने बढ़िया दीखते होगे, मैं कल्पना कर सकता हूँ। और तुमने तो मुझे जो परसों बतलाया था मैं काल्पनिक ही समझा था, किन्तु अब मैं देखता हूँ कि वह पूर्ण सत्य था और इसी में सबका मूल रहस्य है।'

'वह क्या था, हेनरी ?'

'तुमने मुझे बतलाया था कि सिबिलवेन तुम्हारे लिए रोमांस की तमाम नायिकाओं की प्रतिनिधि थी—वह एक रात डेस्डीमोना थी और दूसरी को ओफेलिया; यदि वह जूलियट के रूप में मरी तो इमोजन के रूप में जीवन पाया।'

'अब वह कभी जीवन नहीं पायेगी'—हाथों में मुँह को छिपाते हुए छोकरा बड़बड़ाया।

'नहीं, वह अब कभी जीवन नहीं पायेगी। उसने अन्तिम पार्ट अदा कर दिया। किन्तु तुम भड़कीले ड्रेसिंग-रूम की एकान्त मृत्यु को जैकब के किसी दुखान्त नाटक का एक अनोखा अस्पष्ट अंश, वेबस्टर, या फोर्ड या सीरिल टरन्युर का एक विचित्र दृश्य समझो। लड़की वास्तव में कभी जीवित नहीं थी और इसीलिए उसकी वास्तविक मृत्यु भी कभी नहीं हुई। कम-से-कम तुम्हारे लिए वह सदैव एक स्वप्न थी, एक कल्पित मूर्ति थी जो शेक्सपियर के नाटकों में से धीरे से विदा हो जाती थी और अपनी उपस्थिति के कारण उन्हें अधिक सुन्दर छोड़ती थी, एक मुरली थी जिसमें शेक्सपियर का संगीत श्रेष्ठतर तथा अधिक आनन्दपूर्ण ध्वनित होता था। वास्तविक जीवन को स्पर्श करते ही वह बिगाड़ देती थी, उससे वह बरबाद हुई और इसीलिए वह सिधार गई। चाहो तो ओफेलिया का शोक मनाओ। कौरडेलिया को घोंटकर मार डाला गया इस-

लिए जल मरो। स्वर्ग के विरुद्ध पुकार मचाओ क्योंकि बारबेनिटो की लड़की मर गई। किन्तु सिबिलवेन के लिए अश्रु नष्ट न करो। उनकी अपेक्षा वह कम वास्तविक थी।

निस्तब्धता छा गई। संध्या कमरे में घनी हो गई। निस्वर और रजतपद छायाएँ वाटिका से चली आती थीं। वस्तुओं के रंग थकित से होकर लोप हो रहे थे।'

कुछ समय के बाद डोरियन ग्रे ने ऊपर देखा। 'तुमने मुझसे मेरी व्याख्या कर दी, हेनरी'—निष्कृति की साँस-सी लेते हुए उसने धीमे स्वर में कहा—'तुमने जो कुछ कहा वह सब मैंने अनुभव किया किन्तु किसी कारण मैं इससे डरता था और स्वयं को नहीं समझा पाता था। तुम मुझे कितना जानते हो! किन्तु जो कुछ हो चुका उसके विषय में अब पुनः बातें न करेंगे। यह महान् अनुभव था। बस, मुझे आश्चर्य होगा यदि जीवन में मेरे लिए अब भी कुछ महान् हो।'

'जीवन में तुम्हारे लिए सभी कुछ है, डोरियन। कुछ भी ऐसा नहीं है जो तुम अपनी अद्भुत मुखाकृति के सहारे न कर सको।'

'किन्तु सोचो हेनरी, मैं बनैला, बूढ़ा और झुर्रीदार हो जाऊँगा? तब क्या होगा?'

'आह, तब!'—लार्ड हेनरी ने जाने के लिए उठते हुए कहा—'तब, मेरे प्यारे डोरियन, अपनी विजय के लिए तुम्हें संघर्ष करना होगा। जैसा कि है, विजय तुम्हारे समीप लाई जाती है। नहीं, तुम्हारी आकृति सुन्दर ही रहेगी। हम ऐसे युग में रहते हैं जहाँ बुद्धिमान होने के लिए बहुत पढ़ा जाता है और सुन्दर होने के लिए बहुत सोचा जाता है। तुम्हें हम नहीं छोड़ सकते। और अब अच्छा हो कि तुम कपड़े पहिन लो और क्लब चलो। हमें कुछ देर हो गई है।'

'मैं सोचता हूँ कि मैं ऑपेरा में तुम्हारा साथ दे सकूँगा, हेनरी! बहुत थकावट अनुभव करने के कारण मैं कुछ भी नहीं खाना चाहता। तुम्हारी बहिन के बॉक्स का क्या नम्बर है?'

'सत्ताईस, मुझे विश्वास है। बड़ी श्रेणी में है। द्वार पर उसका नाम दिखलाई देगा। किन्तु मुझे दुःख है कि तुम भोजन करने नहीं आओगे।'

'मुझे इच्छा नहीं है'—डोरियन ने उदासीनतापूर्वक कहा—'किन्तु जो कुछ तुमने कहा उस सबके लिए मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। निश्चय ही तुम मेरे सर्वोत्तम मित्र हो। तुम्हारे समान मुझे कोई भी नहीं समझ सका।'

'हमारी मित्रता का आरम्भ ही है, डोरियन'—लार्ड हेनरी ने हाथ मिलाते हुए उत्तर दिया—"नमस्ते। मैं आशा करता हूँ कि तुम साढ़े नौ से पहिले आ जाओगे। याद रहे, पट्टी गायेगी।'

उसके पीछे जैसे ही द्वार बन्द हुआ, डोरियन ग्रे ने घंटी बजाई और कुछ ही मिनट में विक्टर लैम्प लेकर उपस्थित हो गया और झिलमिलियों को नीचे खींच दिया। वह बेसब्री से उसके जाने की प्रतीक्षा करने लगा। सेवक प्रत्येक कार्य में अत्यन्त अधिक समय लेता हुआ प्रतीत हुआ।'

जैसे ही वह गया, वह पर्दे की ओर झपटा और उसे पीछे खींच दिया। नहीं, तसवीर में और कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उसके जानने से पहिले ही इसे सिबिलवेन की मृत्यु की सूचना मिल चुकी थी। जीवन की घटनाओं के घटित होने के साथ ही इसे ज्ञात हो जाता था। मुख की रेखाओं को बिगाड़ देने वाली अशुभ क्रूरता निस्सन्देह उसी समय प्रकट हो गई थी जब लड़की ने विष अथवा जो कुछ भी हो, पिया था। अथवा परिणामों से इसे कोई मतलब न था? क्या यह केवल यही देखती थी कि आत्मा में क्या हो रहा है? उसे आश्चर्य होता था और आशा करता था कि किसी दिन अपनी आँखों के सामने ही परिवर्तन होता वह देखेगा, इस आशा के साथ ही वह काँप रहा था।

बेचारी सिबिल! यह क्या रोमांस रहा! रंगमंच पर उसने मृत्यु की प्रायः नकल की थी। उसके बाद काल ने स्वयं उसे स्पर्श किया और अपने साथ ले गया। वह भयानक अंतिम दृश्य उसने कैसे खेला? मरते समय क्या उसने श्राप दिया? नहीं, वह उसके प्रेम के लिए मरी और अब प्रेम उसके लिए सदैव एक धार्मिक रीति रहेगा। जीवन का त्याग करके उसने सब किया हुआ सुधार लिया। थियेटर की उस भयानक रात को उसके कारण उस पर कैसी बीती इस पर अब वह विचार न करेगा। उसके विषय में वह सोचेगा—संसार के रंगमंच पर प्रेम की महान्

वास्तविकता दिखला लाने के लिए भेजी हुई एक अनोखी करुण-मूर्ति के रूप में। एक अनोखी करुण-मूर्ति ? उसकी बच्ची जैसी आकृति, भावपूर्ण मोहक ढँग और लजीले भय-विकंपित सौंदर्य की स्मृति आते ही उसके नेत्र अश्रुपूर्ण हो गये। शीघ्र ही उसने उन्हें पोंछ डाला और चित्र की ओर पुनः देखा।

उसने अनुभव किया कि अपनी पसन्द निश्चित करने का समय सच-मुच ही आ पहुँचा था। अथवा पसन्द निश्चित हो चुकी थी। हाँ, जीवन ने उसके लिए यह निश्चय कर लिया था—जीवन और जीवन के विषय में उसकी असीम उत्सुकता। अमर तारुण्य, असीम भावाभिभूति, सुन्दर और गप्त आनन्द, असभ्य प्रसन्नता और बर्बर पाप—उसे इन सबको पाना था। बस, उसकी लज्जा का भार चित्र पर रहेगा।

चित्रपट की मुखाकृति के पापात्मक होने का विचार आते ही पीड़ा का एक भाव उस पर छा गया। एक बार बाल-स्वभावानुसार नर्गिस के मज़ाक में उसने उन चित्रित अधरों का चुम्बन किया था अथवा करने का बहाना किया था, जो अब इतनी क्रूरता से उस पर मुस्करा रहे थे। दिन-प्रतिदिन वह चित्र के सामने बैठा था, प्रायः उसने अनुभव किया कि इसके सौंदर्य पर आश्चर्य करते, लगभग आसक्त होते ! वह जिस भावना के समक्ष भी समर्पण करेगा क्या उसी के अनुसार इसमें अब परिवर्तन होता जायगा ? क्या यह भयानक और घृणास्पद हो जाएगी, एक बन्द कमरे में छिपाने के लिए, उसके हिलते हुए अनोखे बालों को प्रायः चमकीले सोने जैसे करने वाले सूर्य प्रकाश से वंचित करने के लिए ? दुखद है ! दुखद है !

क्षण भर के लिए उसे प्रार्थना करने का विचार आया कि चित्र और उसकी घोर सहानुभूति का अन्त हो जाय। एक प्रार्थना के उत्तर में यह परिवर्तित हुआ था; सम्भवतः एक प्रार्थना के उत्तर में यह अपरिवर्तित रहे। और, फिर भी, कौन ऐसा होगा जो जीवन के विषय में जानकारी रखते हुए सदैव तरुण रहने के अवसर को त्याग देगा, चाहे वह अवसर कितना भी कल्पित और किसी भी परिणाम की ओर ले जाने वाला क्यों न हो ? फिर, क्या यह उसके वश की बात थी ? क्या

यह परिवर्तन प्रार्थना के ही कारण था ? क्या इसका कोई विचित्र वैज्ञानिक कारण नहीं हो सकता ? एक प्राणपूर्ण इन्द्रिय पर प्रभाव डालने वाला विचार क्या निष्प्राण और इन्द्रिय विहीन वस्तुओं पर प्रभाव नहीं डाल सकता ? और भी बल्कि, बिना विचार अथवा अनुभूत इच्छा के हमसे बाह्य वस्तुएँ क्या हमारे मन के भावों और अभिलाषाओं से हिल-मिलकर एकत्व स्थापित नहीं कर सकतीं, अणु-अणु के गुप्त प्रेम में अनोखे आकर्षण की पुकार नहीं हो सकती ? किन्तु कारण किसी महत्त्व का नहीं था। किसी भी भयंकर शक्ति को वह अब कभी भी प्रार्थना द्वारा नहीं लुभायेगा। चित्र में यदि परिवर्तन होना है तो होगा। बस, इसकी इतनी सूक्ष्म जाँच क्यों की जाय ?

क्योंकि इसका निरीक्षण करने में वास्तविक आनन्द होगा। विचार के गुप्त स्थानों का वह अनुसरण कर सकेगा। चित्र उसके लिए जादुई दर्पणों से भी अधिक होगा। जिस प्रकार इसने उसके शरीर को दर्शाया है उसी प्रकार उसकी आत्मा के भी दर्शन करायेगा। पाला पड़ने पर भी वह वहीं स्थिर रहेगा जहाँ ग्रीष्म के आरम्भ पर बसन्त काँपता है। जब इसके चेहरे पर रक्ताभा न रहेगी और शीशे-सी आँखों सहित खड़िया का फीका आवरणमात्र रह जायगा, उसमें बचपन जैसा सौंदर्य बना रहेगा। उसके सौंदर्य का एक भी पुष्प कभी न कुम्हलायगा। उसके जीवन की एक भी नाड़ी कभी दुर्बल न होगी। यूनानियों के देवताओं के समान वह हृष्टपुष्ट, स्फूर्तिपूर्ण और आनन्दपूर्ण होगा। चित्रपट की रंगीन मूर्ति को कुछ भी हो, इससे क्या ? वह सुरक्षित रहेगा। यही सब कुछ है।

चित्र के सामने उसने पूर्ववत् पर्दा खींच दिया, ऐसा करने के साथ ही मुस्कराया और अपने शयनकक्ष में चला गया जहाँ उसका वेलेट उसकी प्रतिक्षा ही कर रहा था। एक घंटे के अनन्तर वह ऑपेरा में था और लार्ड हेनरी उसकी कुर्सी पर झुका हुआ था।

९

दूसरे दिन प्रातःकाल जब वह नाश्ता करने बैठा था बेसिल हावर्ड को कमरे में पहुँचाया गया।

'मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ कि मैंने तुम्हें पा लिया, डोरियन !'—उसने गम्भीरतापूर्वक कहा—'कल रात मैं आया था और मुझे बताया गया कि तुम ऑपेरा गये थे। निश्चय ही वैसा होना असम्भव था। किन्तु मैं चाहता था कि तुम वास्तव में जहाँ गये थे बताकर जाते। मेरी शाम बहुत बुरी कटी, भय हो रहा था कि कहीं एक के बाद दूसरी दुर्घटना न हो जाय। मैं सोचता हूँ कि ज्ञात होते ही तुमने मुझे तार दिया होगा। अचानक ही क्लब में उठाये हुए 'दि ग्लोब' के सांध्य सस्करण में मैंने इसे पढ़ा। मैं शीघ्र ही यहाँ आया और तुम्हें यहाँ न पाकर दुखित हुआ। मैं कह नहीं सकता कि इन सबने मेरा दिल कैसा तोड़ा है। मैं जानता हूँ तुम पर कैसी बीती। किन्तु तुम थे कहाँ ? क्या तुम जाकर लड़की की माँ से मिले ? एक बार मैंने तुम्हारे पीछे वहीं जाने का विचार किया। पत्र में पता दिया गया था कहीं ह्युस्टन रोड में, है न ? किन्तु जिस शोक को मैं हल्का न कर सकता था उसके बीच में पड़ने का मुझे साहस न हुआ। बेचारी स्त्री ! उसकी क्या दशा हुई होगी ! और तिस पर उसकी इकलौती लड़की ! उसने इस विषय में क्या कहा ?'

'मेरे प्यारे बेसिल, मैं कैसे जान सकता था ?'—बेनिस के हल्के स्वर्ण-बुलबुलों वाले पात्र से कुछ पीली शराब की चुस्कियाँ लेते हुए और घोररूप से ऊबा-सा दिखते हुए डोरियन ग्रे ने धीरे-से कहा—'मैं ऑपेरा में था। तुम वहीं आ जाते। हेनरी की बहिन लेडी ग्वेनडोलेन से मैं प्रथम बार मिला। हम उसी के बॉक्स में थे। वह पूर्ण सुन्दर है और पट्टी का गान दिव्य था। भयानक बातों के विषय में बातें मत करो। जिस विषय की बात न की जाय वह कदापि घटित नहीं होती। यह भाव-प्रकाशन ही है, जैसा कि हेनरी कहता है, जो वस्तुओं को वास्तविक रूप प्रदान करता है। मैं कह दूँ कि वह उस स्त्री की इकलौती सन्तान नहीं थी। एक लड़का है, मेरे विचार में एक आकर्षक व्यक्ति। किन्तु वह रंगमंच पर काम नहीं करता। वह नाविक अथवा कुछ ऐसा ही है। और अब तुम अपने विषय में बतलाओ, तुम क्या चित्रित कर रहे हो ?'

'तुम ऑपेरा गये ?'—हावर्ड ने अत्यन्त धीमे और पीड़ा-मिश्रित स्वर में कहा—'तुम ऑपेरा गये जबकि सिबिलवेन किसी निम्न स्थान में मरी पड़ी थी ? जिस लड़की को तुम प्यार करते थे उसके कब्र की शान्तिपूर्ण निद्रा प्राप्त करने से भी पहिले तुम अन्य स्त्रियों के सौंदर्य और पट्टी के दिव्य गान के विषय में मुझसे चर्चा कर सकते हो ? क्यों, छोटे से उसके श्वेत शरीर को खतरे हैं !'

'रुको, बेसिल ! मैं यह नहीं सुनूँगा'—उछलते हुए डोरियन चिल्लाया—'तुम मुझे बातें न बताओ। जो हो गया सो हो गया। जो बीत गया सो बीत गया।'

'तुम 'कल' को बीता हुआ कहते हो ?'

'बीते हुए समय की वास्तविक अवधि से क्या होना है ? भावुकता से मुक्ति पाने के लिए वर्षों का आवश्यकता केवल छिछले व्यक्तियों को ही होती है। आत्मनिग्रही व्यक्ति शोक का अन्त उतनी ही शीघ्रता से कर सकता है जितनी शीघ्रता से आनन्द का आविष्कार। अपनी भावुकता के वश होकर मै नहीं रहना चाहता। मैं उसका प्रयोग करना चाहता हूं, आनन्द उठाना चाहता हूँ और उस पर शासन करना चाहता हूँ।'

'डोरियन यह भयानक है। किसी कारण तुम पूर्णतया बदल गये हो। तुमे बिलकुल वही अनोखे लड़के दीखते हो जो प्रतिदिन मेरे स्टूडियो में आकर अपने चित्र के लिए बैठा करते थे। किन्तु तब तुम सरल, स्वाभाविक और स्नेही थे, तुम समस्त संसार के एकदम अभ्रष्ट प्राणी थे। अब, मैं नहीं जानता, तुम्हें क्या हो गया। तुम ऐसे बातें करते हो जैसे तुममें हृदय न हो, दया न हो। यह सब हेनरी का प्रभाव है। मैं समझता हूँ।'

छोकरा तमतमा गया और खिड़की तक जाकर कुछ क्षण तक बाहर हरी, झिलमिलाती, सूर्य प्रकाशित वाटिका देखता रहा। 'तुम्हारी अपेक्षा मैं हेनरी का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, बेसिल ! तुमने मुझे केवल अहंकारी बनाया।' उसने कहा—

'अच्छा, मुझे उसका दण्ड मिल गया, डोरियन—अथवा किसी दिन

मिल जायगा।'

'मैं नहीं जानता तुम्हारा क्या अभिप्राय है, बेसिल!'—मुड़ते हुए उसने कहा—'मैं नहीं जानता कि तुम क्या चाहते हो। तुम क्या चाहते हो?'

'मैं उसी डोरियन ग्रे को चाहता हूँ जिसका मैं चित्र बनाया करता था'—चित्रकार ने उदास भाव से कहा।

'बेसिल,'—छोकरे ने उसकी ओर जाते और उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—'तुम बहुत देर से आये। कल जब मैंने सुना कि सिविल-वेन ने आत्महत्या कर ली—'

'आत्महत्या कर ली! हे ईश्वर। क्या इसमें कोई सन्देह नहीं रहा?'—उस पर भयातुर दृष्टि डालते हुए हावर्ड चिल्लाया।

'मेरे प्यारे बेसिल! निश्चय ही, तुम इसे एक भद्दी दुर्घटना नहीं समझते? निस्सन्देह उसने आत्महत्या की।'

प्रौढ़ ने हाथों में मुँह छिपा लिया। 'कितना भयानक'—वह बड़बड़ाया और एक कँपकँपी उसके शरीर में दौड़ गयी।

'नहीं,'—डोरियन ग्रे ने कहा—'इसमें भयानक कुछ भी नहीं है। युग की यह महान् रोमांटिक ट्रेजेडी है। अधिकाँश अभिनेताओं का जीवन अत्यन्त साधारण होता है। वे अच्छे पति अथवा स्वामिभक्त स्त्रियाँ, या कुछ उकता डालनेवाले होते हैं। तुम मेरा अभिप्राय समझे—मध्यवर्ग का गुण, और वैसी ही अन्य बातें। सिविल कितनी भिन्न थी! वह अपनी सर्वश्रेष्ठ ट्रेजेडी को अमर कर गयी। वह सदैव एक नायिका थी। पिछली रात उसका पार्ट—जिस रात मैं कि उसे देखा—उसने बुरा अभिनय किया क्योंकि प्रेम की वास्तविकता का उसे ज्ञान हो गया था। जब उसे इसकी अवास्तविकता ज्ञात हो गयी, वह मर गयी, जैसे जूलियट भी मर सकती थी। कला के क्षेत्र में उसका पुनः प्रवेश हो गया। वह जैसे शहीद हो गयी। उसकी मृत्यु में शहीद की समस्त संवेदनात्मक व्यर्थता, सौन्दर्य का समस्त नाश था। लेकिन, जैसा मैं कह रहा था, तुम कल न सोचना कि मैंने कुछ नहीं भुगता। यदि कल तुम ठीक समय पर आते—लगभग साढ़े पाँच बजे अथवा पौने छै बजे तो तुम मुझे अश्रु-

पूर्ण पाते। हेनरी भी जो यहाँ आया, जो वास्तव में यह ख़बर लाया, नहीं जानता था कि मुझपर क्या बीत रही थी। मुझे बहुत दुख हुआ। फिर यह भावना दूर हो गयी। भावावेग की पुनरावृत्ति मुझसे नहीं हो सकती। भावुकों के अतिरिक्त और कोई कर भी नहीं सकता। और तुम घोर रूप से अन्यायी हो, बेसिल ! तुम यहाँ मुझे सांत्वना देने आये हो। यह तुम्हारी श्रेष्ठता है। तुम मुझे शान्त पाते हो और बिगड़ते हो ! यह कैसी सहानुभूति ! हेनरी की सुनायी हुई परोपकारी की एक कहानी की तुमने मुझे याद दिला दी जिसने अपने जीवन के बीस वर्ष दुःख दूर करने के प्रयत्न में अथवा किसी अन्यायपूर्ण कानून को परिवर्तित कराने में—मुझे ठीक से याद नहीं वह क्या था, व्यतीत किये। अन्त में वह सफल हुआ और उसे सर्वाधिक निराशा हुई। उसे कुछ भी करने को शेष नहीं रह गया, ऊबकर मरने लगा और पक्का-मनुष्य द्रोही बन गया और इसके अतिरिक्त, मेरे प्यारे बेसिल, यदि तुम वास्तव में मुझे सांत्वना प्रदान करना चाहते हो तो जो कुछ बीत चुका है उसे भूलना सिखलाओ अथवा उचित कलात्मक दृष्टिकोण उपस्थित करो। क्या गाटियर ने कला[1] द्वारा सांत्वना के विषय में नहीं लिखा ? मुझे तुम्हारे स्टूडियो में एक दिन बढ़िया कमाये हुए चमड़े के आवरण से युक्त एक छोटी-सी पुस्तक का उठाना और उस सुन्दर वाक्यांश का अचानक देखना याद है। मैं उस तरुण के समान नहीं हूँ जिसके विषय में जब हम लोग साथ-साथ मार्लो गये थे तुमने बताया था, जो तरुण यह कहा करता था कि जीवन के समस्त दुःखों में पीली साटन सान्त्वना प्रदान कर सकती है। मैं स्पर्श करने और प्रयोग करने योग्य सुन्दर वस्तुएँ चाहता हूँ। जरी के पुराने काम, ताँबा और टीन मिश्रित हरी धातुएँ, सुनहरी पालिश का काम, हाथी-दाँत का नक्काशीदार काम, आसपास की मनोहर वस्तुएँ, विलास-सामग्री, शान-शौकत, इन सबमें बहुत कुछ मिल सकता है। किन्तु इनसे जो कलात्मक दृश्य प्रस्तुत होता है अथवा प्रकट होता है, मेरे लिए और अधिक महत्व-पूर्ण है। हेनरी के अनुसार, स्वयं अपने जीवन का दर्शक बनना जीवन

---

१. संगीत, चित्रकला और साहित्य द्वारा सौंदर्य।

के दुखों से मुक्त होना है। मैं जानता हूँ कि मेरी इस प्रकार की बातें तुम्हें आश्चर्यान्वित कर रही हैं। इस विकास को मैं कैसे पहुंचा यह तुमने नहीं समझा। जब तुम मुझे जानते थे मैं स्कूली बच्चा था। अब मैं वयस्क हूँ। मेरी नयी अभिलाषाएँ हैं, नये विचार हैं, नयी भावनाएँ हैं। मैं बदल गया हूँ, किन्तु तुम्हारी चाह में कमी नहीं होनी चाहिए। मैं परिवर्तित हो गया हूँ किन्तु तुम्हें सदैव मेरा मित्र रहना चाहिए। निश्चय ही मैं हेनरी को बहुत पसन्द करता हूँ। किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम उससे अच्छे हो। तुम साहसी नहीं हो—तुम जीवन से बहुत डरते हो—किन्तु तुम अधिक अच्छे हो। और हम साथ-साथ कितने प्रसन्न रहते थे! मुझे छोड़ो मत, बेसिल, और मुझमें दोष मत निकालो। मैं जो हूँ सो हूँ। इससे अधिक और कुछ नहीं कहना है।'

चित्रकार विचित्र रूप से प्रभावित हुआ। छोकरा उसे अत्यन्त प्रिय था और उसकी कला में उसके व्यक्तित्व ने महान् दिशा-परिवर्तन किया था। उसे और अधिक झिड़कने का भाव असह्य हो उठा। आख़िर उसकी बेरुख़ी सम्भवतः एक मनोस्थिति ही थी जो बदल जायगी। उसमें बहुत कुछ अच्छा और बहुत कुछ श्रेष्ठ था। 'अच्छा, डोरियन!'—एक उदास मुस्कराहट के साथ उसने अन्त में कहा—'आज के बाद इस भयानक विषय में मैं तुमसे चर्चा नहीं करूँगा। मुझे विश्वास है कि इस सम्बन्ध में तुम्हारा नाम नहीं लिया जायगा। आज दोपहर बाद जाँच होगी। क्या उन्होंने तुम्हें बुलाया है?'

डोरियन ने सिर हिलाया और 'जाँच' शब्द सुनकर उसके चेहरे पर अप्रसन्नता का भाव झलक गया। इस प्रकार की बातों में कुछ ऐसी ही अपूर्णता और भद्दापन रहता है। 'वे मेरा नाम नहीं जानते'—उसने उत्तर दिया। किन्तु निश्चय ही वह जानती थी?'

'केवल मेरा बपतिस्मावाला नाम, और उसके विषय में मुझे पूरा विश्वास है कि उसने किसी को नहीं बतलाया। उसने एक बार मुझसे कहा था कि उन सबको मेरा परिचय जानने की उत्सुकता थी और उसने स्थिरता पूर्वक मेरा नाम 'प्रिंस चार्मिंग' बतला दिया था। यह उसकी श्रेष्ठता थी। तुम मेरे लिए सिबिल का एक चित्र अवश्य बनाओ, बेसिल।

कुछ चुंबनों और थोड़े से उखड़े हुए संवेदनशील शब्दों की स्मृति के अतिरिक्त उसका कुछ और मैं रखना चाहता हूँ।'

'यदि तुम्हारी प्रसन्नता इसी में है तो मैं प्रयत्न करूँगा और कुछ करूँगा, डोरियन ! किन्तु तुम्हें आना होगा और मेरे सामने स्वयं बैठना होगा। तुम्हारे बिना मैं कुछ न कर सकूँगा।'

'तुम्हारे सामने अब मैं कदापि नहीं बैठ सकता, बेसिल ! यह असम्भव है'—पीछे हटते हुए उसने कहा।

चित्रकार ने उसे घूरा—'मेरे प्यारे, यह क्या मूर्खता !'—वह चिल्लाया—'क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मैंने जो किया वह तुम्हें पसन्द नहीं ? वह कहाँ है ? इसके सामने तुमने पर्दा क्यों खींच दिया ! मुझे देखने दो। यह मेरी सर्वोत्तम कृति है। पर्दे को हटा दो, डोरियन। तुम्हारे नौकर के द्वारा मेरी कृति को इस प्रकार ढाँकना स्पष्टतया अपमानजनक है। कमरे में आते समय मुझे कमरा बदला हुआ-सा प्रतीत हुआ था।'

'मेरे सेवक का इससे कोई प्रयोजन नहीं, बेसिल ! क्या तुम सोचते हो कि मेरे कमरे की व्यवस्था वह करता है ? वह कभी-कभी मेरे फूल ठीक कर देता है—बस ! नहीं, यह स्वयं मैंने किया। चित्र पर बहुत तीव्र प्रकाश पड़ता था।'

'अत्यन्त तीव्र ! निश्चय ही नहीं, मेरे-प्यारे साथी ? इसके लिए यह स्थान ही उचित है। देखूं !'—और हावर्ड कमरे के कोने की ओर चला।

डोरियन ग्रे के अधरों से एक भयातुर चीख निःसृत हुई और वह चित्रकार तथा पर्दे के बीच झपटा। 'बेसिल,'—अत्यन्त पीतवर्ण दिखते हुए उसने कहा—'इसे मत देखना। मैं नहीं चाहता कि तुम देखो।'

'मैं अपनी ही कृति न देखूं ! तुम गम्भीर नहीं हो। मैं क्यों न देखूं ?'—हावर्ड ने हँसते हुए कहा।

'यदि तुमने इसे देखने का प्रयत्न किया, बेसिल तो मैं कहे देता हूँ कि मैं आजीवन तुमसे कभी न बोलूंगा। मैं पूर्णतया गम्भीर हूँ। मैं कोई सफाई नहीं देना चाहता और तुम माँगो भी नहीं। किन्तु, स्मरण रखो

कि यदि तुमने यह पर्दा छुआ तो हमारा पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद हो जायगा।'

हावर्ड पर वज्रपात हो गया। पूर्णतया आश्चर्यचकित होकर वह डोरियन ग्रे को देखता रह गया। उसने उसे इस प्रकार पहिले कभी न देखा था छोकरा क्रोध के कारण वास्तव में कान्तिहीन था। उसकी मुट्ठियाँ बँधी हुई थीं और उसके नेत्रों की पुतलियाँ नीली अग्नि के गोलों के समान प्रतीत होती थीं। उसका पूरा शरीर काँप रहा था।

'डोरियन !'

'बोलो मत !'

'लेकिन बात क्या है ? निश्चय ही तुम नहीं चाहते तो मैं इसे न देखूँगा'—उसने कुछ रूक्ष भाव से मुड़ते हुए और खिड़की की ओर जाते हुए कहा—'किन्तु वास्तव में, यह अत्यन्त भद्दी बात मालूम होती है कि मैं स्वयं अपनी ही कृति न देखूँ, विशेषकर जब मैं इसे शरदऋतु में पेरिस में प्रदर्शित करने जा रहा हूँ। सम्भवतः उसने पूर्व मुझे एक बार वार्निश लगानी पड़े इसलिए मैं इसे किसी दिन अवश्य देखूँगा, किन्तु आज क्यों नहीं ?'

'प्रदर्शित करने के लिए ! तुम इसे प्रदर्शित करना चाहते हो ?'—डोरियन ग्रे ने पूछा, भय का एक विचित्र भाव उस पर आ रहा था। क्या उसका भेद संसार को दिखलाया जायगा ? क्या सब उसके जीवन-रहस्य को देखेंगे ? यह असम्भव है। कुछ—वह नहीं जानता था क्या—शीघ्र करना होगा।

'हाँ, मैं नहीं सोचता कि तुम्हें इसमें आपत्ति होगी। अक्तूबर के पहिले सप्ताह से ग्रचू डिसेज में आरम्भ होने वाली विशेष प्रदर्शनी के लिए जार्ज पेटिट मेरे समस्त श्रेष्ठ चित्रों का संग्रह करेगा। चित्र केवल एक महीने के लिए जायगा। मैं आशा करता हूँ कि इतने समय के लिए इसे सरलतापूर्वक दे सकते हो। वास्तव में तुम शहर से बाहर गये हुए होगे। और यदि तुम इसे सदैव एक पर्दे के पीछे रखोगे तो इसकी ओर विशेष ध्यान भी नहीं दे सकते।'

डोरियन ग्रे ने अपने माथे पर हाथ फेरा। वहाँ पसीने की बूंदें थीं। उसने अनुभव किया कि वह भयानक संकट के निकट है। 'एक महीना

हुआ तुमने मुझसे कहा था कि तुम इसे कभी प्रदर्शित नहीं करोगे'—वह चिल्लाया—'तुमने अपना विचार क्यों बदल दिया ? तुम लोग जो स्थिर कहलाते हो, अन्य व्यक्तियों के समान ही अनेक मनःस्थितियाँ रखते हो। अन्तर केवल इतना ही है कि तुम्हारी मनःस्थितियाँ अर्थहीन ही होती हैं : तुम भूले नहीं होगे कि तुमने पूर्ण आश्वासन के साथ मुझसे कहा था कि संसार में कुछ भी तुम्हें इस चित्र को किसी भी प्रदर्शनी में भेजने की प्रेरणा नहीं दे सकेगा। तुमने हेनरी से भी बिलकुल यही कहा था।' वह अचानक रुका और उसकी आँखें चमक उठीं। उसे याद आया कि एक बार लार्ड हेनरी ने उससे अर्ध-गाम्भीर्य और अर्ध हास्य के साथ कहा था—'यदि तुम चौथाई घंटे को विचित्र ढँग से बिताना चाहो तो बेसिल से पूछो कि तुम्हारे चित्र को वह प्रदर्शित क्यों नहीं करेगा। उसने मुझे बतलाया कि वह क्यों नहीं करेगा, और मेरे लिए यह रहस्योद्‌घाटन था, हाँ, सम्भवतः बेसिल का भी अपना भेद है। वह उससे पूछेगा और आजमायेगा।'

'बेसिल,'—उसने बिलकुल निकट आते हुए और आँख मिलाते हुए कहा—'हम दोनों का अपना-अपना भेद है। तुम अपना बतलाओ और मैं अपना बतला दूंगा। मेरे चित्र को प्रदर्शित करने से इन्कार करने का तुम्हारा क्या कारण था ?'

चित्रकार अपना कंपन न रोक सका—'डोरियन, यदि मैंने बतला दिया तो जितना तुम मुझे चाहते हो उतना न चाहोगे और मुझपर निश्चय ही हँसोगे। तुम्हारा, इनमें से एक भी व्यवहार मुझे असह्य होगा। यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारा चित्र अब कभी न देखूं तो मैं सन्तुष्ट हूँ। उसे सदैव देखने के लिए तुम हो। यदि चाहते हो कि मेरी सर्वोत्तम कृति संसार न देखे, मैं सन्तुष्ट हूँ। किसी भी यश और कीर्ति की अपेक्षा तुम्हारी मित्रता मुझे अधिक प्रिय है।'

'नहीं, बेसिल, तुम मुझे अवश्य बतलाओ'—डोरियन ग्रे ने हठ किया—'मैं सोचता हूँ कि मुझे जानने का अधिकार है।' उसकी भय की भावना दूर हो चली थी और उसका स्थान जिज्ञासा ने ले लिया था। बेसिल हावर्ड के रहस्य को जानने के लिए वह दृढ़ था।

'हम बैठें, डोरियन'—परेशान दीखते चित्रकार ने कहा—'हम बैठें। और मेरे एक प्रश्न का जवाब दो, तुमने चित्र में कोई विचित्र बात पायी ? -- कुछ, जिसकी ओर तुमने पहिले ध्यान न दिया हो, किन्तु जो अचानक ही तुम पर प्रकट हो गयी हो ?'

'बेसिल'—काँपते हाथों से कुर्सी के हाथों को पकड़ते हुए बर्बर तथा चकित दृष्टि से उसे घूरते हुए छोकरा चिल्लाया।

'मैं देखता हूँ कि तुमने पायी। बोलो मत। मैं जो कहूँ उसे सुनने तक रुको। डोरियन, जिस क्षण से मैं तुमसे मिला, तुम्हारे व्यक्तित्व ने मुझे अत्यन्त अनोखे ढँग से प्रभावित किया। मेरी आत्मा, मस्तिष्क और शक्ति सब पर तुम्हारा प्रभाव छा गया। तुम मेरे लिए उस अलक्ष्य आदर्श के दृष्टिगोचर मूर्त हो गये जिसकी स्मृति हम कलाकारों पर सुन्दरतम् स्वप्न की तरह छायी रहती है। मैंने तुम्हारी पूजा की। तुम जिससे भी बोले उससे मैंने ईर्षा की। मैं तुम्हें सम्पूर्ण रूप से केवल अपने ही लिए रखना चाहता था। मैं तभी सुखी होता था जब तुम्हारे साथ होता था। मुझ से दूर होने पर भी तुम मेरी कला में वर्तमान थे···। निश्चय ही मैंने तुम्हें इसका कोई ज्ञान नहीं होने दिया। ऐसा होना असम्भव था। तुम इसे समझ न पाते। मैं स्वयं नहीं समझा था। मैं केवल यही जानता था कि मैंने पूर्णत्व को सम्मुख देख लिया है और संसार मुझे अनोखा दीखने लगा है—सम्भवतः अत्यन्त अनोखा, क्योंकि ऐसी पागलपन की पूजाओं में ख़तरा होता है, कर पाने के ख़तरे की अपेक्षा खो डालने का ख़तरा···सप्ताह पर सप्ताह बीतते चले गये और मैं तुममें समाता चला गया। तब एक नया विकास आरम्भ हुआ। सुन्दर कवच पहिने हुए पेरिस के रूप में और शिकारी का लबादा पहिने और पॉलिशदार बोर-स्पियर[1] लिये एडोनिस के रूप में तुम्हारा चित्रण किया। भारी कमल के फूलों का ताज पहिने तुम एड्रियन का विशाल नाव के अग्रभाग पर बैठे हरी गँदली नाइल के पार देख रहे थे। यूनानी वन के किसी शान्त सरोवर पर तुम झुके थे और तुमने पानी की शान्त

---

१. सुअर के शिकार में प्रयुक्त होनेवाला भाला।

रजत में स्वयं अपने मुख-सौंदर्य को देखा। और यह सब वही था जो कला को होना चाहिए, अज्ञात, आदर्श और दूर। एक दिन, एक घातक दिन, मैं सोचा करता हूँ, जैसे तुम वास्तव में हो वैसा तुम्हारा एक अनोखा चित्र बनाने का मैंने दृढ़ विचार किया, भूतकालीन वेश-भूषा में नहीं, बल्कि तुम्हारी अपनी और तुम्हारे ही समय की वेश-भूषा में। मैं नहीं कह सकता कि यह शैली की यथार्थता थी अथवा अपने सीधे और छद्म-हीन रूप में प्रकट तुम्हारे ही व्यक्तित्व का अनोखापन था। किन्तु मैं जानता हूँ कि मैंने जैसे ही इसे बनाना प्रारम्भ किया रंग का प्रत्येक पर्त और झिल्ली मुझे अपना भेद प्रकट करती ई प्रतीत हुई। मुझे भय हुआ कि मेरी मूर्ति-पूजा को और लोग जान जायँगे। मैंने अनुभव किया, डोरियन, कि मैंने बहुत कुछ प्रकट कर दिया था. कि इसमें मैंने बहुत आत्माभिव्यक्ति कर दी थी। तब यह हुआ कि मैंने चित्र को प्रदर्शित न होने देने का निश्चय किया। तुम कुछ अप्रसन्न हुए थे; किन्तु तब तुम यह नहीं जानते थे कि यह मेरे लिए क्या अर्थ रखता था। हेनरी, जिससे मैंने इस विषय में बातचीत की, मुझपर हँसा। किन्तु मैंने इसकी परवाह न की। जब चित्र समाप्त हो गया और मैं उसे लेकर एकाकी बैठा, मैंने अनुभव किया कि मैं ठीक था...तो, कुछ दिन बाद चित्र मेरे स्टूडियो से चला गया और जैसे ही इसकी उपस्थिति के असह्य आकर्षण से मैंने छुटकारा पाया, मैंने अनुभव किया कि उसमें इससे अधिक और कुछ देखने का मेरा विचार मूर्खतापूर्ण था कि तुम अत्यन्त रूपवान् हो और मैं चित्रण करने में समर्थ हूँ। अब भी मैं यह अनुभव किये बिना नहीं रह सकता कि यह सोचना एक भूल है कि चित्रण करने के समय की भावानुभूति चित्र में वस्तुतः प्रकट हो सकती है। हमारी कल्पना की अपेक्षा कला अधिक गूढ़ है। आकार और रंग हमारे लिए आकार और रंग ही हैं—बस। मैं प्रायः अनुभव करता हूँ कि कला कलाकार की अभि-व्यक्ति करने की अपेक्षा उसे पूर्णतया छिपा ही देती है। और इसीलिए जब मुझे पेरिस से यह प्रस्ताव प्राप्त हुआ तो मैंने तुम्हारे चित्र को अपनी प्रदर्शनी की मुख्य-वस्तु के रूप में रखने का दृढ़ विचार कर लिया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम अस्वीकार करोगे। अब मैं देखता हूँ कि

तुम ठीक हो। चित्र प्रदर्शित नहीं हो सकता। जो कुछ मैंने तुम्हें बतला दिया है तुम उसके लिए मुझसे रुष्ट न होना। जैसा कि मैंने एक बार हेनरी को बताया था, तुम्हारा निर्माण पूजित होने के लिए ही हुआ है।

डोरियन ग्रे ने एक दीर्घ निश्वास खींचा। कपोलों पर लालिमा पुनः झलक उठी और अधरों पर एक मुस्कान खेल गयी। संकट दूर हो चुका था। इस समय वह निर्भय था। फिर भी वह चित्रकार के लिए अपार सहानुभूति अनुभव किये बिना न रह सका जिसकी विचित्र स्वीकारोक्ति अभी उस पर प्रकट हुई थी और वह चकित था कि क्या वह कभी भी अपने मित्र के व्यक्तित्व से इतना प्रभावित हो सकेगा। लार्ड हेनरी में अत्यन्त खतरनाक होने का आकर्षण था। बस इतना ही। आमंत्रित के लिए वह अत्यन्त चतुर और कुटिल है। क्या कभी ऐसा कोई होगा जो विचित्र मूर्ति-पूजा के भावों से उसे भर देगा? जीवन के गर्भ में निहित वस्तुओं में से क्या यह भी है?

'मुझे यह अनोखी बात लगती है, डोरियन'—हावर्ड ने कहा—'कि तुमने चित्र में यह देखा हो। क्या तुमने वास्तव में देखा?'

'मैंने इसमें कुछ देखा'—उसने उत्तर दिया—'कुछ जो मुझे अत्यन्त विचित्र प्रतीत हुआ।'

'अच्छा, मेरे इसे देखने में अब तो कोई आपत्ति नहीं?'

डोरियन ने सिर हिलाया—'इसके लिए तुम मुझसे मत कहो, बेसिल। उस चित्र के सम्मुख तुम्हें खड़े होने देने मेरे लिए सम्भव नहीं है।'

'किसी दिन तुम देखने दोगे, अवश्य?'

'कभी नहीं।'

'अच्छा, सम्भव है कि तुम ठीक होओ। और अब नमस्कार, डोरियन। मेरे जीवन में तुम्हीं ऐसे एक व्यक्ति हो जिसने मेरी कला को वास्तव में प्रभावित किया है। मैंने जो कुछ भी उत्कृष्ट किया है, मैं आभारी हूँ!' आह! तुम नहीं जानते कि जो कुछ मैंने तुम्हें बतलाया है उसे बताने में मुझे कितना सहना पड़ा।'

'मेरे प्यारे बेसिल', डोरियन ने कहा—'तुमने मुझे क्या बतलाया?

यही कि तुमने यह अनुभव किया कि तुम मेरी व त प्रशंसा करते हो। यह तो अभिनन्दन भी नहीं है।'

'अभिनन्दन का उद्देश्य नहीं था। यह एक स्वीकारोक्ति थी। अब जब मैंने कह दिया, लगता है कि मुझमें कुछ चला गया। सम्भवतः अपनी पूजा को शब्दों में कभी व्यक्त नहीं करना चाहिए।'

'यह अत्यन्त निराशाजनक स्वीकारोक्ति थी।'

'क्यों, तुमने क्या आशा की थी, डोरियन ? चित्र में तुम्हें कुछ और दिखायी नहीं दिया, दिया ? देखने को और कुछ भी नहीं था ?'

'नहीं; देखने को और कुछ भी नहीं था—तुम क्यों पूछते हो ? किन्तु तुम्हें पूजा की चर्चा नहीं करनी चाहिए। यह मूर्खतापूर्ण है। तुम और मैं मित्र हैं बेसिल, और हमें सदैव मित्र ही रहना चाहिए।'

'तुम्हें हेनरी प्राप्त है'—चित्रकार ने उदासीनता से कहा।

'ओह, हेनरी !'—हास्य की लहर-सा छोड़ता हुआ छोकरा बोला—'हेनरी अपने दिन अविश्वसनीय बातें कहने में और संध्या अप्रत्याशित करने में। वैसा ही जैसा जीवन में बिताना चाहता हूँ। किन्तु फिर भी संकट के समय में हेनरी के पास जाने का विचार नहीं रखता। मैं शीघ्र ही तुम्हारे पास आऊँगा, बेसिल।'

'तुम मेरे लिए पुनः बैठोगे ?'

'असम्भव !'

'इन्कार करके चित्रकार के रूप में मेरे जीवन को तुम बर्बाद कर रहे हो, डोरियन ! दो आदर्श बातें किसी को नहीं मिलीं। कदाचित ही कोई एक पाता है।'

'मैं तुम्हें समझा नहीं सकता, बेसिल, किन्तु मुझे अब तुम्हारे लिए कभी न बैठना चाहिए। चित्र में एक प्रकार की घातकता होती है। इसका स्वयं का अपना एक जीवन है। मैं आऊँगा और तुम्हारे साथ चाय पिऊँगा। वह भी इतना ही अच्छा रहेगा।'

'मेरे विचार में तुम्हारे लिए अधिक अच्छा'—दुखित होकर हावर्ड बड़बड़ाया—'और अब नमस्कार। मुझे दुःख है कि तुम मुझे एक बार पुनः चित्र न देखने दोगे। किन्तु इसमें कुछ नहीं हो सकता। मैं पूर्णतया

समझता हूँ कि इस विषय में तुम्हारी भावनाएँ क्या हैं।'

जैसे ही वह कमरे से गया डोरियन ग्रे आप ही आप हँसा। बेचारा बेसिल ! वास्तविक कारण से वह कितना अनभिज्ञ था। और यह कितना विचित्र है कि स्वयं अपना भेद प्रकट करने के लिए विवश होने के बजाय, अचानक ही, अपने मित्र का भेद निकाल लेने में उसे सफलता मिली। उस विचित्र स्वीकारोक्ति ने उस पर कितना प्रकट कर दिया। चित्रकार की बेहूदी ईर्षा, उसकी आवेगपूर्ण अनुरक्ति, उसकी अत्यधिक प्रशंसात्मक उक्तियाँ, उसके कौतूहलप्रद मौन—अब वह सब समझता था और दुखित होता था। रोमांस के रंग में रंगी ऐसी मित्रता में उसे कुछ दुःख ज्ञात होता था।

उसने निश्श्वास लिया और घन्टी को स्पर्श किया। कैसे भी हो चित्र को अवश्य छिपा देना चाहिए। खोज का ऐसा ख़तरा वह पुनः नहीं उठा सकता। जिस कमरे में उसका कोई भी चित्र जा सकता था, एक घंटे के लिए भी उसमें एस वस्तु को रहने देना उसका पागलपन था।

१०

सेवक के प्रवेश करने पर उसने उसे स्थिर दृष्टि से देखा और सोचने लगा कि क्या उसने पर्दे के पीछे झांकने का विचार किया होगा। सेवक पूर्णतया उदासीन था और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा था। डोरियन ने एक सिगरेट सुलगायी, दर्पण की ओर गया और उसमें देखा। विक्टर के मुख का प्रतिबिंब उसे पूर्णतया दिखलायी देता था। दासत्य के शान्त आवरण जैसा उसका चेहरा था। वहाँ भय का कोई कारण न था। फिर भी सतर्क रहना ही उसे सर्वोत्तम प्रतीत हुआ।

अत्यन्त धीमे स्वर में उसने कहा कि वह गृहिणी को बता दे कि वह उससे मिलना चाहता है और तब फ्रेम बनानेवाले से जाकर कह दे कि वह अपने दो आदमी शीघ्र ही इधर भेज दे। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जाते समय सेवक की दृष्टि पर्दे की दिशा में घूमी थी। अथवा यह उसकी कोरी कल्पना ही थी ?

कुछ क्षण बाद, काले सिल्क के वस्त्र और झुर्रीदार हाथों पर पुराने

फैशन के डोरों से निर्मित दस्ताने पहिने मिसेज़ लीफ ने लायब्रेरी में शीघ्रता से प्रवेश किया। उसने उससे स्कूल-रूम की कुँजी माँगी।

'पुराना स्कूल-रूम, मि० डोरियन ?'—उसने कहा—'क्यों, यह तो धूल से भरा है। आपके जाने से पहिले मैं उसे व्यवस्थित करा दूं। यह आपके देखने योग्य नहीं है। वास्तव में नहीं है।'

'मैं उसे व्यवस्थित नहीं कराना चाहता, लीफ ! मुझे केवल कुंजी चाहिए।'

'अच्छा, यदि आप कमरे में जायँगे तो मकड़ी के जालों से ढँक जायँगे। पाँच साल से—जब सरकार मरे थे तबसे, यह खोला नहीं गया।'

अपने दादा के नाम पर उसे पीड़ा हुई। उसके घृणापूर्ण संस्मरण उसे याद थे। 'कोई बात नहीं'—उसने उत्तर दिया—'मैं केवल उस स्थान को देखना चाहता हूँ—बस। कुंजी मुझे दो।'

'और कुंजी यह है सरकार'—वृद्धा ने काँपते हुए अस्थिर हाथों से गुच्छा देखते हुए कहा—'कुंजी यह है। एक क्षण में इसे गुच्छे से निकाल दूंगी। किन्तु आप वहाँ रहने का विचार न कीजिये, यहाँ आपको बहुत आराम होगा ?'

'नहीं, नहीं,'—वह चिड़चिड़े स्वर में चिल्लाया—'धन्यवाद, लीफ! इतना पर्याप्त है।'

वह कुछ क्षण रुक गयी और गृहस्थी के विवरण बकती रही। उसने विश्वास खींचा और कह दिया कि वह जैसा सर्वोत्तम समझे व्यवस्था करे। मुस्कराती हुई वह कमरे से चली गयी।

द्वार के बन्द होते ही डोरियन ने कुंजी अपनी जेब में रखी और कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। उसकी दृष्टि घने सुनहरे कामदार सुर्ख साटन के चादरे पर पड़ी, सत्रहवीं शताब्दी की इस सुन्दर कलाकृति को उसके दादा ने बोलोग्ना के निकट एक मठ में पाया था। हाँ, यह उस भयानक वस्तु को लपेटने के काम आयेगी। सम्भवतः इसे कफन ढकने में प्रायः प्रयुक्त किया गया था। अब इसे कुछ अपने ही कलंक से पूर्ण-वस्तु को ढँकना था, जो मृत्यु की अपवित्रता से भी अधिक बुरा था—कुछ, जो भयानकताओं का पोषण करेगा और फिर भी नाश को कभी

प्राप्त न होगा। लाश के लिए कीड़े के समान ही कैनवास पर चित्रित मूर्ति के लिए उसके पाप होंगे। वे इसके सौंदर्य को नष्ट कर देंगे, इसकी भव्यता को चाट जायेंगे। वे इसे अपवित्र कर देंगे, लज्जास्पद बना देंगे। और फिर भी वस्तु जीवित रहेगी। यह सदैव बनी रहेगी।

वह काँपा और एक क्षण वह पछताया कि उसने बेसिल को वास्तविक कारण क्यों न बतला दिया कि वह चित्र को क्यों छिपा देना चाहता है। लार्ड हेनरी के प्रभाव और उससे भी अधिक विषैले अपने स्वभाव के प्रभातों को रोकने में बेसिल उसकी सहायता करता। उसके लिए उसका प्रेम—क्योंकि यह वास्तव में प्रेम ही था—उसमें ऐसा कुछ भी न था जो महान् और बुद्धिपूर्ण न हो। यह केवल शारीरिक सौन्दर्य की वह प्रशंसा नहीं थी जो इन्द्रिय-जनित होती है और इन्द्रियशैथिल्य के साथ ही समाप्त हो जाती है। यह वैसा ही प्रेम था जैसा माइकेल एंजिलो ने अनुभव किया था और मोन्टेन, विंकलमैन तथा स्वयं शेक्सपियर ने भी! हाँ, बेसिल उसे बचा लेता, किन्तु जब बहुत देर हो चुकी थी। अतीत को मिटाया जा सकता है। प्रायश्चित, अस्वीकृति अथवा विस्मरण द्वारा ऐसा सम्भव है। किन्तु भविष्य अवश्यम्भावी है। उसके मन में ऐसे प्रबल भाव हैं जो भयानक रूप में बाहर निकलेंगे, स्वप्न जो अपने पाप की छाया को वास्तविकता प्रदान करेंगे।

पलंग पर ढँके सुर्ख और सुनहरे बुने हुए विशाल वस्त्र को उसने उठा लिया और उसे हाथ में लिये हुए पर्दे के पीछे चला गया। क्या कैनवास पर चित्रित मुखाकृति पहिले की अपेक्षा अधिक दुष्ट थी? उसे लगा कि उसमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ, और फिर भी इसके लिए उसकी घृणा बढ़ गयी। सुनहरे बाल, नीली आँखें और गुलाब जैसे लाल ओष्ठ—ये सभी वहाँ थे। केवल प्रकाशित भाव में अन्तर आ गया था। यह अपनी दुष्टता में भयानक था। इसके तिरष्कार और झिड़की की अपेक्षा बेसिल द्वारा की गयी सिबिलवेन की निन्दा कितनी छिछली थी!—कितनी छिछली और नगण्य! कैनवास से स्वयं उसकी आत्मा उसे देख रही थी और उसका फैसला कर रही थी। पीड़ा का एक भाव उसमें व्याप्त हो गया और उसने बहुमूल्य चादर चित्र पर डाल दी। इतने ही

में द्वार खटका। सेवक के आते ही वह बाहर निकला।

'आदमी आ गये हैं, महाशय !'

उसने अनुभव किया कि सेवक को शीघ्र ही दूर कर देना चाहिए। उसे यह ज्ञात नहीं होना चाहिए कि चित्र कहाँ ले जाया जा रहा है। उसमें कुछ धूर्तता है और उसकी आँखों में विचार है, छल है। मेज़ पर बैठते हुए उसने लार्ड हेनरी को एक पुर्जा घसीट दिया कि पढ़ने के लिए कुछ भेज दें। और याद रखें कि सायंकाल सवा आठ बजे उन्हें मिलना है।

'उत्तर के लिए प्रतीक्षा करना'—पुर्जा देते हुए उसने कहा—'और आदमियों को यहाँ ले आओ।'

दो अथवा तीन मिनिट में द्वार पुनः खटका और साउथ माडले स्ट्रीट का प्रसिद्ध फ्रेम-मेकर मि० हावर्ड अपने एक उजड्ड-से सहकारी के साथ अन्दर आया। मि० हावर्ड एक दिखावटी, लाल दाढ़ीवाला छोटा-सा आदमी था जिसकी कला-विषयक प्रशंसा अपने अधिकाँश व्यवहारी कलाकारों की मूलस्थ निर्धनता के कारण बहुत कुछ नरम पड़ गयी थी। दूकान कभी न छोड़ने का उसका वह सदैव विशेष ध्यान रखता था। डोरियन में कुछ ऐसा था जो सबको मोह लेता था। वह दीखता भी आनन्ददायक था।

'मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ, मि० ग्रे ?'—उसने अपने मोटे चित्तीदार हाथों को रगड़ते हुए पूछा—'मैंने सोचा कि मैं स्वयं ही जाकर अपने आपको कृतार्थ करूँ। हाल ही में एक अत्यन्त सुन्दर फ्रेम आया है, जनाब। एक स्थान पर बिक्री में मिल गया। प्राचीन फ्लारेंस का है। मेरे विचार में फान्थिल से आया है। धार्मिक चित्र के लिए अत्यन्त उपयुक्त है, मि० ग्रे।'

'मुझे खेद है मि० हावर्ड, आपको स्वयं आने का कष्ट उठाना पड़ा। मैं अवश्य आऊँगा और फ्रेम देखूंगा—यद्यपि अभी मुझे धार्मिक कला में रुचि नहीं है—लेकिन आज मैं केवल एक चित्र मकान की छत पर पहुँचवाना चाहता हूँ। यह कुछ भारी है इसीलिए मैंने तुमसे कुछ आदमी माँगने का विचार किया।'

'कोई कष्ट की बात नहीं है, मि० ग्रे। किसी भी काम आने में मुझे

अत्यन्त प्रसन्नता है। कला-कृति कहाँ है ?'

'यह',—पर्दे को पीछे हटाते हुए डोरियन ने उत्तर दिया—'क्या आप उसे ले जा सकेंगे, आवरण सहित, जिस रूप में भी यह है ? मैं नहीं चाहता कि ऊपर ले जाने में इसमें खरोंच आ जाय।'

'कोई कठिनाई नहीं होगी, जनाब !'—अपने सहायक की सहायता से लम्बी पीतल की जंजीरों से बँधे चित्र को अलग करते हुए उस आनन्ददायक फ्रेम-मेकर ने कहा—'और अब हम इसे कहाँ ले जायँगे मि० ग्रे ?'

'यदि आप कृपया मेरे पीछे आयें मि० हावर्ड, मैं राह दिखाता हूँ। लेकिन अच्छा हो कि आप सामने जायँ। छत के ठीक ऊपर जाना होगा। हम लोग सामने के जीने से जायँगे क्योंकि वह अधिक चौड़ा है।'

उसने उनके लिए द्वार खोल लिया और वे हॉल में निकल गये तथा ऊपर चढ़ना आरम्भ किया। फ्रेम की आलंकारिकता ने चित्र को अत्यन्त भारी कर दिया था और जब-तब, मि० हावर्ट के चापलूसी-भरे इनकार पर भी (क्योंकि सच्चे व्यापारी के समान ही किसी भलेमानस को कोई काम करते देखना उसे एकदम नापसन्द था) उनकी सहायता के लिए डोरियन ने अपना हाथ लगाया।

'बोझ को ढोने जैसा है, जनाब'—सिरे पर पहुँचकर छोटे आदमी ने हाँफते हुए कहा। और उसने चमकते माथे को पोंछ लिया।

'यह कुछ भारी है'—डोरियन ने धीमे स्वर में कहा, जैसे ही उसने उस कमरे का ताला खोला जो उसके जीवन के विचित्र रहस्य को और उसकी आत्मा को मनुष्यों की निगाहों से छिपाकर रखने को था।

चार वर्ष से अधिक हो गये थे—वह यहाँ नहीं आया था—वास्तव में, उसने बचपन में जब इसे खेलने के काम में लिया था और फिर कुछ बड़ा होने पर पढ़ने के लिए, तभी से। यह एक बड़ा और सुन्दर आकार का कमरा था जिसे दिवंगत लार्ड केल्सो ने अपने छोटे-से नाती के लिए बनवाया था, जिसे अपनी माँ की विचित्र समानता तथा अन्य कारणों से उसने सदैव घृणा की ओर दूर रखना चाहा। डोरियन को उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखलायी दिया। अत्यधिक भेंट किये हुए चौखटे चमकदार साँचे में इटली की विशाल केसोना थी जिसमें बचपन

में वह अनेक बार छिपा था। वहाँ सैटिन-वुड[1] के बुक-केस में कुत्ते के कान के समान मुड़े हुए कोनों वाली स्कूली पुस्तकें भरी थीं। उसके पीछे दीवाल पर वही फटी-पुरानी फ्लैमिश-टेप्स्ट्री[2] लटक रही थी जिसमें वाटिका में एक अस्पष्ट राजा और रानी शतरंज खेल रहे थे और लम्बे दस्तानों से ढँकी कलाइयों पर कनटोपेदार चिड़ियों को बिठाये सौदागर चढ़े चले जा रहे थे। उसे वह सब कितनी अच्छी तरह याद था। चारों ओर देखते ही उसके एकाकी बचपन का प्रत्येक क्षण पुनः लौट आया था। उसे अपने बाल-जीवन की निष्कलंक पवित्रता याद आयी और उसे यह अत्यन्त बुरा लगा कि यह घातक चित्र भी यहीं छिपाया जाने को था। उन विगत दिनों में उसने यह सब कहाँ सोचा था जो उसके भविष्य के गर्भ में था।

किन्तु ध्यान से देखने वाली दृष्टियों से दूर इतना सुरक्षित स्थान और कोई न था। कुंजी उसके पास थी और दूसरा कोई भी यहाँ प्रवेश नहीं कर सकता। अपनी सुर्ख़ चादर के नीचे कैनवास पर चित्रित मुख पाशविक, घास से ढका जैसा और गन्दा हो सकता था। इससे क्या? कोई भी इसे देख नहीं सकता। वह स्वयं इसे न देखेगा। अपनी आत्मा की भयानक घृष्टता वह क्यों देखे? वह युवा बना रहे—यही पर्याप्त है। और, इसके अतिरिक्त, क्या उसका स्वभाव सुन्दर नहीं हो सकता? ऐसा कोई कारण नहीं है कि उसका भविष्य इतना लज्जापूर्ण रहे। उसके जीवन में प्रेम प्रवेश कर सकता है, उसे पवित्र कर सकता है और उन पापों से उसकी रक्षा कर सकता है जो उसमें समाये प्रतीत होते हैं—वे विचित्र अचिन्तित पाप जिनका रहस्य ही उन्हें आकर्षण प्रदान करता है। सम्भवतः किसी दिन उसके लाल मुख से क्रूर आकृति मिट जाय और वह संसार को बेसिल हालवर्ड की महान् कृति दिखला सके।

नहीं, यह असम्भव है। प्रति घण्टे और प्रति सप्ताह कैनवास पर चित्रित चित्र पुराना हो रहा है। पाप की भयानकता से यह मुक्त हो

---

१. ईस्ट और वेस्ट इण्डीज़ की कामदार और चिकनी लकड़ी।

२. फ्लैण्डर्स के फ्लैमिश स्कूल की कपड़े पर चित्रित चित्रकला।

सकता है, किन्तु आयु (समय) की भयानकता इसे प्राप्त होगी। गाल पोपले और ढीले हो जायँगे। धुंधली आँखों के चारों ओर पीले मुर्गे के पंजे-से आ जायँगे और उन्हें भयानक बना देंगे। बालों की चमक जाती रहेगी, मुख फट जाएगा अथवा मुर्झा जाएगा, वृद्धों जैसा मूर्खतापूर्ण अथवा भद्दा हो जाएगा। गले पर झुर्रियाँ पड़ जाएँगी, हाथ नीले और नीली नसोंवाले हो जाएँगे, शरीर मुड़ जाएगा, जैसे उसे अपने दादा का याद था जो बचपन में उसके प्रति कठोर रहे थे। चित्र को छिपाना ही होगा। अन्य कोई उपाय नहीं है।

'इसे अन्दर ले आइये, मि० टावर्ड'—थककर घूमते हुए उसने कहा—'मुझे खेद है कि मैंने आपको इतनी देर ठहराया। मैं कुछ और सोच रहा था।'

'विश्राम पाने में सदैव प्रसन्न हूँ, मि० ग्रे'—अब भी साँस के लिए हांफते हुए फ्रेम-मेकर ने उत्तर दिया—'इसे कहाँ रखा जाय, श्रीमान्?'

'ओह, कहीं भी। यहाँ, बस। मैं इसे टँगाना नहीं चाहता। बस दीवाल से टिकाकर रख दीजिये। धन्यवाद!'

'कला-कृति को देखा जा सकता है, श्रीमान्?'

डोरियन चौंका। 'यह तुम्हें पसन्द न आयेगी, मि० हावर्ड'—उसे ध्यान से देखते हुए उसने कहा। उसने स्वयं को उसपर झपटने और पृथ्वी पर गिरा देने के लिए प्रस्तुत अनुभव किया, यदि कहीं उसने उसके जीवन के रहस्य को छिपाने वाले उस अलंकृत कपड़े को उठाने का साहस किया। 'अब मैं आपको और अधिक कष्ट न दूंगा। यहाँ आने की कृपा करने के लिए मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।'

'कतई नहीं, कतई नहीं, मि० ग्रे। आपके लिए कुछ भी करने के लिए मैं सदैव तैयार हूँ, श्रीमान्!'—और मि० हावर्ड नीचे उतर गया, उसका सहायक जिसने अपना उजड्ड बदसूरत मुख घुमाकर लज्जा-मिश्रित आश्चर्य सहित डोरियन को देखा, उसके पीछे उतरा। उसने इतना सुन्दर कोई न देखा था।

उनकी पग-ध्वनि शान्त होने पर डोरियन ने द्वार में ताला लगा दिया और कुँजी अपनी जेब में रख ली। अब उसने सुरक्षा अनुभव की।

भयानक वस्तु को अब कोई न देख सकेगा। उसके अतिरिक्त और किसी की दृष्टि उसकी लज्जा को न देख सकेगी।

लायब्रेरी में पहुँचकर उसने देखा कि पाँच बज चुका है और चाय लायी जा चुकी है। सीप से जड़ी काली सुगन्धित लकड़ी की छोटी-सी मेज़ (जो सतत रोगिणी और पिछली सर्दी केयरों में बिताने वाली उसके संरक्षक की पत्नी लेडी रैंडले ने भेंट की थी।) पर लार्ड हेनरी का एक पुर्जा पड़ा हुआ था और उसी के पास पीली जिल्द की एक किताब थी जिसका आवरण कुछ फटा हुआ था और कोने मैले हो गये थे। 'दि सेंट जेम्स'स गज़ट' के तृतीय-संस्करण की एक प्रति चाय की ट्रे में रखी हुई थी। यह स्पष्ट था कि विक्टर लौट आया है। वह विचार करने लगा कि क्या वह घर से जाने वाले उन आदमियों से मिला था और उनसे जान लिया था कि वे क्या करते रहे थे। चित्र को वह अवश्य भूल जायगा—चाय का सामान रखते समय भूल ही चुका था। पर्दा पुनः ठीक नहीं किया गया था और दीवाल पर रिक्त स्थनन दिखलायी दे रहा था। सम्भव है कि वह उसे किसी दिन ऊपर की ओर रेंगता हुआ और कमरे का द्वार ढकेलने का प्रयत्न करता हुआ पाये। अपने घर में जासूस का होना एक भयानक बात है। उसने ऐसे धनिकों के विषय में सुना था जो अपने जीवन भर किसी सेवक द्वारा ठगे गये, जिसने एक पत्र पढ़ लिया था, अथवा कोई वार्ता सुन ली, अथवा पते सहित कोई कार्ड पा लिया अथवा तकिये के नीचे कोई मुर्झाया हुआ फूल या सिकुड़नदार फीते की कोई धज्जी पायी थी।

उसने निःश्वास खींचा और अपने लिए कुछ चाय डालकर लार्ड हेनरी का पुर्जा (संक्षिप्त पत्र) खोला। उसमें केवल यही था कि उसने सायंकालीन समाचार-पत्र भेजा है और एक पुस्तक जो सम्भवतः उसे पसन्द आये, वह सवा आठ बजे क्लब पहुँच जायगा। 'दि सेंट जेम्स'स' को उसने शैथिल्य भाव से खोला और उस पर दृष्टि दौड़ाई। पाँचवे पृष्ठ पर लाल पेंसिल के एक चिह्न ने उसकी दृष्टि आकर्षित की। निम्न अंश की ओर इसने आकृष्ट किया था—

'एक अभिनेत्री की तहकीकात—आज प्रातःकाल बैलटैवर्न, हॉक्स्टन

रोड पर डिस्ट्रिक्ट कोरोनर मि० डन्बी ने रॉयल थियेटर, हॉलबोर्न में हाल ही में नियुक्त एक तरुणी अभिनेत्री के शरीर की तहकीकात की। मृत्यु का कारण दुस्साहस निश्चित किया गया। मृतक की माँ जो स्वयं अपना बयान देते समय तथा मृतक का पोस्ट-मार्टम-परीक्षा करने वाले डा० वीरेल के बयान के समय अत्यन्त उत्तेजित थी, साहानुभूति प्रदर्शित की गयी।'

उसकी भृकुटि चढ़ गई और पुर्जे के दो टुकड़े करके कमरे की दूसरी ओर जाकर उनको फेंक दिया। यह सब कितनी बेहूदगी है और वास्तविक बेहूदगी कितना भयानक रूप धारण कर लेती है। लार्ड हेनरी के रिपोर्ट (सूचना) भेजने से वह कुछ अप्रसन्न हुआ। और लाल पेंसिल से उसका निशान लगाना निश्चय ही मूर्खतापूर्ण था। विक्टर ने इसे पढ़ा होगा। इतनी अंग्रजी वह जानता है।

सम्भवतः उसने पढ़ लिया था और कुछ सन्देह करना आरम्भ कर दिया था। और, फिर भी, इससे क्या? सिबिल वेन की मृत्यु से डोरियन ग्रे का क्या सम्बन्ध? भय का कोई कारण नहीं है। डोरियन ग्रे ने उसकी हत्या नहीं की थी।

लार्ड हेनरी की भेजी हुई पीली पुस्तक पर उसकी दृष्टि पड़ी। इसमें क्या है, वह विचारने लगा। वह मोतिया रंग के अष्टकोण स्टैंड के समीप गया जो उसे सदैव ही मिश्र देश की विचित्र रजतवर्ण मधुमक्खियों की कृति प्रतीत होती थी, पुस्तक निकालकर वह आरामकुर्सी पर लुढ़क गया और पृष्ठ पलटने लगा। कुछ ही क्षण में वह उसमें मग्न हो गया। इतनी विचित्र पुस्तक उसने कभी नहीं पढ़ी थी। उसे प्रतीत हुआ कि भव्य पोशाक में और वाद्यों के धीमे स्वर में संसार के पाप मूक बने हुए उसके सामने जा रहे थे। उसके धुंधले स्वप्न की वस्तुएँ अचानक ही साकार हो उठी थीं। जिन्हें उसने स्वप्न में भी न देखा था क्रमशः प्रकट होती गयीं।

यह एक कथाविहीन उपन्यास था और केवल एक पात्र से युक्त, वास्तव में एक ऐसे तरुण पेरिस निवासी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन जिसने उन्नीसवीं सदी में अपना समस्त जीवन अपनी सदी के सिवाय प्रत्येक सदी

के भावावेगों तथा विचारों को समझने में और मानो संसार की विभिन्न अनुभूत मनोदशाओं को स्वयं में एकत्रित करके मनुष्यों द्वारा मूर्खतावश गुण कहे जानेवाले उन त्यागों को तथा बुद्धिमानों द्वारा अब भी पाप कहे जानेवाले स्वाभाविक विरोधों को उनके बनावटीपन के कारण ही पसन्द करने में व्यतीत कर दिया। जिस शैली में लिखा गया था वह कौतूहल-पूर्ण आलंकारिक शैली थी जो स्पष्ट और साथ ही अस्पष्ट थी, गँवारू और शठतापूर्ण, सिम्बलिस्टीस के फ्रांसीसी स्कूल के कुछ सर्वश्रेष्ठ कलाकारों की कृतियों की विशेषता जैसे कलापूर्ण भाव प्रकाशनों और भव्य टीकाओं से पूर्ण थी। ऑर्चिड पुष्प के समान विशाल और रंग में भव्य उपमाएँ प्रयुक्त थीं। एन्द्रिक जीवन रहस्यवाद के रूप में वर्णित था। प्रायः इसका ज्ञान रहना भी कठिन हो जाता था कि जो कुछ पढ़ा जा रहा है वह मध्यकालीन संत का आध्यात्मिक परमानन्द है अथवा आधुनिक पापी की अस्वस्थ स्वीकारोक्तियाँ, यह एक विषैली पुस्तक थी। धूप की गहरी सुगन्धि इसके पृष्ठों में व्याप्त तथा मस्तिष्क को परेशान करती-सी प्रतीत होती थी। वाक्यों का उतार-चढ़ाव, उनके संगीत की भव्य एकरसता, जटिल स्थिरता और गतिशीलता की पुनरावृत्ति अध्याय के बाद अध्याय पढ़नेवाले छोकरे के मस्तिष्क पर एक खयाली पुलाव (बुद्धि-विलास) एक स्वप्न-रोग के समान प्रभावोत्पादक था जिससे वह व्यतीत होते हुए दिन और रेंगती हुई छायाओं का ज्ञान न रख सका।

मेघहीन और एकमात्र तारे से बिछा-सा ताम्र-हरित आकाश खिड़कियों में से दिखलाई दे रहा था। उसके पीले प्रकाश में वह तब तक पढ़ता रहा जब तक पढ़ना असम्भव न हो गया। तब, जब उसके सेवक ने कई बार याद दिलाई कि समय बहुत हो चुका है, वह उठा और दूसरे कमरे में जाते हुए शैया के समीप सदैव लगी रहने वाली फ्लारेंस की मेज़ पर पुस्तक रख दी और डिनर (भोज) के लिए वस्त्र पहिनने लगा।

जब वह क्लब पहुँचा लगभग नौ बजा था। लार्ड हेनरी प्रातःकालीन कमरे में एकाकी बैठा था और अत्यन्त ऊबा हुआ-सा दिखलायी दे रहा था।

'मुझे अत्यन्त खेद है, हेनरी !'—वह चिल्लाया—'किन्तु इसका

सम्पूर्ण दोष तुम पर है। जो पुस्तक तुमने भेजी थी उसने कुछ ऐसा जादू-सा कर दिया कि समय का व्यतीत होना मैं जान ही न पाया।'

'हाँ, मैंने सोचा था कि तुम उसे पसन्द करोगे।'—कुर्सी से उठते हुए उसके मेज़बान ने उत्तर दिया।

'हेनरी, मैंने यह नहीं कहा कि मैंने इसे पसन्द किया। मैंने कहा था कि इसने मुझ पर जादू किया। इसमें बहुत अन्तर है।'

'आह, तुमने उसे पा लिया ?'—लार्ड हेनरी ने धीमे स्वर में कहा। और वे डाइनिंग-रूम (भोज-कक्ष) में चले गये।

११

कई वर्ष तक डोरियन ग्रे स्वयं को इस पुस्तक के प्रभाव से मुक्त न कर सका अथवा उसने इससे कभी मुक्त न होना चाहा। प्रथम संस्करण की बड़े पृष्ठवाली कम-से-कम नौ प्रतियाँ उसने पेरिस से मँगायीं और विभिन्न मनोदशाओं तथा परिवर्तनशील स्वाभाविक कल्पनाओं से मेल रखने के लिए, जो प्रायः उसके वश के बाहर होतीं, उसने विभिन्न रंगों की उनकी जिल्दें बँधवायीं। नायक, पेरिस का अनोखा युवक, जिसमें काल्पनिक और वैज्ञानिक प्रकृतियों का विचित्र सम्मिश्रण था, उसके लिए उसके पूर्व-रूप के समान हो गया। और वास्तव में, पूरी पुस्तक में उसके जीवन से भी पूर्व उसी के जीवन की कहानी लिखी प्रतीत होती थी।

उपन्यास के कल्पनाशील नायक की अपेक्षा वह एक बात में निश्चय ही अधिक भाग्यशाली था। उसने कभी न जाना—वास्तव में जानने का कारण कभी उपस्थित न हुआ, दर्पणों का पालिशदार धातु की सतहों का और शान्त जल का वह विलक्षण भय जिसने पेरिस के तरुण को उसके जीवन के आरम्भ में ही आच्छादित कर लिया और कभी के अनोखे सौंदर्य का अचानक ही ह्रास कर दिया—क्रूर प्रसन्नता के साथ। और लगभग प्रत्येक प्रसन्नता में, क्योंकि निश्चय ही प्रत्येक आनन्द में क्रूरता का अपना एक स्थान होता है, वह पुस्तक के उत्तरार्ध को पढ़ा करता था जिसमें यद्यपि अतिशयोक्तिपूर्ण किन्तु वास्तव में दुखद, एक ऐसे व्यक्ति के संताप और निराशा का वर्णन था जिसने स्वयं में उसे खो दिया, जिसे दूसरों में और

संसार में वह अत्यन्त मूल्यवान् समझता था।

बेसिल हावर्ड तथा अन्य अनेकों को इतना अधिक मोहित करनेवाला उनका अनोखा सौंदर्य शाश्वत-सा हो गया था। जिन्होंने उसके विरुद्ध बहुत बुरी बातें सुनी थीं, जब-जब उसके चाल-चलन के विषय में लन्दन में फैलकर क्लबों की चर्चा बननेवाली अनोखी अफवाहों के होते हुए भी उसे सम्मुख देखने पर विरोधी बातों का विश्वास नहीं कर पाते थे। संसार में स्वयं को अछूता रखनेवाले के समान वह दिखलायी देता था। अशिष्ट बातें करनेवाले उसके प्रवेश करने पर शान्त हो जाते थे। उसकी मुखाकृति में कुछ ऐसी पवित्रता थी जो उन्हें घुड़क देती थी। उसकी उपस्थितिमात्र ही उन्हें मानो उस निर्दोष की याद दिला देती थी जिसे उन्होंने कलंकित किया था। उन्हें आश्चर्य था कि वह इतना मनोहर और सुन्दर कैसे था और इतनी नीच तथा विलासी अवस्था के चिह्नों से कैसे बचा।

प्रायः अपने मित्रों में अनोखे अनुमान को उत्पन्न करनेवाली उन लम्बी और रहस्यपूर्ण अनुपस्थितियों से घर लौटने पर वह चुपचाप ऊपर के बन्द कमरे तक पहुँचता, अब सदैव साथ रहनेवाली कुंजी से द्वार खोलता, बेसिल हावर्ड द्वारा बनाये हुए अपने चित्र के सामने दर्पण लेकर खड़ा होता और कभी कैनवास के भद्दे तथा पुराने पड़ते हुए चेहरे को देखता और कभी पालिश किये हुए शीशे में उस पर हँसनेवाले सुन्दर युवा मुख को देखता। अन्तर की तीव्रता उसके आनन्द को बढ़ा देती। वह अपने सौंदर्य के प्रति अधिकाधिक आसक्त हुआ और स्वयं अपनी आत्मा के पतन में अधिकाधिक रुचि लेने लगा। वह अत्यन्त ध्यान से, कभी-कभी विकट प्रसन्नता से माथे पर झुर्रियाँ बनानेवाली अथवा विलासी मुख के चारों ओर रेंगनेवाली भयानक रेखाओं को देखता और सोचता कि पाप के चिह्न अधिक भयानक हैं अथवा अवस्था के। वह अपने श्वेत हाथों को चित्र के रूखे-सूखे हाथों के समीप रखता और मुस्कराता। वह दुर्दशाग्रस्त शरीर और जर्जर पिंडलियों का मजाक उड़ाता था।

वास्तव में ऐसे क्षण भी आते थे जब वह रात्रि में, अपने सुवासित कक्ष में जागता लेटा होता अथवा जहाज ठहरने के स्थान के निकट स्थित बदनाम शराबख़ाने के तुच्छ कमरे में होता जहाँ नाम तथा वेश बदलकर

प्राय: जाने की उसकी आदत थी, वह उस विनाश के विषय में सोचता जो उसने अपनी आत्मा पर ढाया था। पूर्णतया स्वार्थपूर्ण होने के कारण उसकी दीनता और भी अधिक तीव्र होती, किन्तु ऐसे क्षण कदाचित ही आते थे। जीवन के विषय में वह कौतूहल जो लार्ड हेनरी ने मित्र की वाटिका में बैठने पर उत्पन्न कर दिया था प्रसन्नता का बल पाकर बढ़ता प्रतीत होता था। उसकी जानकारी जितनी अधिक बढ़ती, जानने की इच्छा भी उतनी ही अधिक बढ़ती जाती। उसकी क्षुधा उन्मत्त थी जिसे तृप्त करने की जितनी ही चेष्टा की जाती अतृप्ति में उतनी ही वृद्धि हो जाती।

फिर भी उसके सामाजिक सम्बन्धों में तनिक भी असावधानी न थी। शरद ऋतु के प्रत्येक महीने में एक अथवा दो बार ऋतु पर्यन्त प्रत्येक बुधवार की शाम को वह अपना सुन्दर भवन सबके लिए खोल देता और अभ्यागतों को अपनी कला के अनोखेपन से मुग्ध करने के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञों को बुलवाता। उसके भोज जिनके प्रबन्ध में लार्ड हेनरी का सदैव सहयोग रहता, आमन्त्रितों के चयन, उन्हें बिठाने, सेज को विदेशी फूलों, कामदार मेजपोशों और स्वर्ण तथा रजत चित्रित पत्रों द्वारा सजाने के कलापूर्ण ढँग के लिए प्रसिद्ध थे। वास्तव में बहुत से तरुण देखते अथवा अनुभव करते कि वे ईडान या आक्सफोर्ड के स्वप्नों को डोरियन ग्रे में साकार होते हुए देख रहे हैं—एक ऐसा नमूना जिसमें संसार के नागरिक की समस्त भव्यता और श्रेष्ठता के साथ-साथ शिक्षा की वास्तविक संस्कृति का समन्वय हो। उन्हें वह दाँतों द्वारा वर्णित उन व्यक्तियों में से एक प्रतीत होता जो सौन्दर्योपासना द्वारा पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। वह गॉटियर के समान ही था जिसके लिए इस-जगत् की स्थिति थी।

और, वस्तुत: उसके लिए स्वयं जीवन समस्त कलाओं में प्रथम और सर्वश्रेष्ठ था क्योंकि अन्य सभी कलाएँ तो प्रयत्न-मात्र प्रतीत होती हैं। फैशन वास्तव में जो काल्पनिक है उसे भी जो क्षणभर के लिए सांसारिक बना देता है, और छैलापन, जो सौंदर्य की सम्पूर्ण आधुनिकता को बल देने का एक प्रयत्न ही है, उसे वास्तव में पसन्द था। वस्त्र धारण करने का उसका ढँग और समय-समय पर प्रयुक्त उसके तरीके मेफेयर की नृत्यशालाओं और पालमाल क्लब के सुन्दर तरुणों पर विशेष प्रभाव डालते

थे जो प्रत्येक बात में उसकी नकल करते थे और उसके भव्य अलबेलेपन के आकस्मिक आकर्षण को यथावत् प्रदर्शित करने का प्रयत्न करते थे।

वय प्राप्त करते ही जो स्थान उसे प्राप्त हो गया उसे स्वीकार करने के लिए यद्यपि वह तैयार था और यह विचार उसे वास्तविक प्रसन्नता प्रदान कर रहा था कि लन्दन में उसकी वही स्थिति हो सकती है जो राजतंत्रीय निरोनियम रोम के लिए 'सैटीरिकन' के लेखक की थी, तब भी उसकी आन्तरिक इच्छा शिष्ट व्यवहार का आदर्श मात्र बनने, जवाहरात धारण करते समय परामर्श देने, नेकटाई की गाँठ लगाने अथवा छड़ी लेने का ढँग बतलाने की योग्यता से अधिक ऊँचा उठने की थी। जीवन के लिए वह कोई नवीन योजना बनाना चाहता था जिसका दर्शन तर्कपूर्ण हो, नियम कायदे के हों और एन्द्रिक सुधार में ही चरमता हो।

एन्द्रिक उपासना को प्रायः, और बहुत हद तक ठीक ही, दोषी ठहराया गया है। उत्कट प्रेम और एन्द्रिक भावनाओं को स्वयं से अधिक शक्ति-संपन्न अनुभव करनेवाले मनुष्यों को उनसे एक स्वभाविक भय रहता है। किन्तु डोरियन ग्रे को ऐसा प्रतीत हुआ कि इन्द्रियों के वास्तविक स्वभाव को कभी नहीं समझा गया और वे असभ्य तथा पाशविक इसी कारण रहीं कि संसार ने उन्हें अतृप्त रखकर दबाया अथवा पीड़ा द्वारा दमन किया। आत्मिक पवित्रता के तत्त्व बनाने के लिए जिस प्रभावपूर्ण विशेषता की आवश्यकता होती है उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। मानव के इतिहास की ओर दृष्टि दौड़ाते ही वह क्षति की भावना से भर उठा। इतना अधिक छोड़ा जा चुका था, और व्यर्थ में ही! जानबूझकर मूर्खतापूर्ण त्याग किये गये थे, भयंकर आत्मघात और आत्मप्रवंचना, जिनका मूल कारण भय था और जिनका परिणाम उस काल्पनिक पतन से कहीं अधिक भयंकर था जिससे अज्ञानवश उन्होंने बचना चाहा था। विरक्त को रेगिस्तान (निर्जन) के जंगली पशुओं के साथ भोजन करने और खेती के पालतू पशुओं को साथी बनाकर निकाल देने में प्रकृति का कितना अनोखा व्यंग था।

हाँ, जैसी कि लार्ड हेनरी ने भविष्यवाणी की थी कि एक नये आनंदवाद का आविर्भाव होगा जो जीवन का निर्माण करेगा और वर्तमान

समय के क्रूर तथा पुनर्जाग्रत अप्रिय आचारवाद से उसकी रक्षा करेगा। निश्चय ही उसमें बुद्धि का उपयोग होगा, किन्तु किसी भी ऐसे नियम अथवा प्रणाली को स्वीकार न किया जायगा जिसमें किसी भी भावात्मक अनुभव को बलि देनी पड़े। वास्तव में इसका उद्देश्य स्वयं अनुभव होगा, मधुर अथवा कटु जैसा भी वह हो; पूर्वप्राप्त अनुभव के फल नहीं। तप जो इन्द्रियों को निष्प्राण कर देता है तथा अभद्र दुराचार जो इन्हें कुन्द कर देता है—इनका ज्ञान उसे नहीं चाहिए। लेकिन वह मानव-जीवन के क्षणों के प्रति एकाग्रता सिखलायेगा—जीवन जो स्वयं एक क्षणमात्र ही है।

हम में से बहुत से ऐसे हैं जो या तो मृत्यु का मोह उत्पन्न करनेवाली स्वप्न-शून्य रात्रि के पश्चात्, अथवा जब मस्तिष्क के कक्षों में वास्तविकता से भी अधिक भयंकर छायाएँ और समस्त विलक्षणताओं में भ्रमण करनेवाली तथा गाथिक कला को स्थायित्व देनेवाली (यह सहज ही कल्पना की जा सकती है कि यह कला उन्हीं की है जिनके मस्तिष्क बुद्धि-विलास के रोग से ग्रस्त रहते हैं) प्रत्यक्ष जीवन से पूर्ण बुद्धि की उन भयानक रातों में से एक के पश्चात्, सूर्योदय से पूर्व प्रायः नहीं उठ पाते धीरे-धीरे श्वेत अँगुलियाँ पर्दों में झाँकती हैं और काँपती हुई प्रतीत होती हैं। काली काल्पनिक शक्लों में मूक छायाएँ धीरे-धीरे चलकर कमरे के कोनों में, झुक जाती हैं। बाहर, पत्तों में चिड़ियों की हलचल, अथवा काम पर जानेवाले मनुष्यों के स्वर, या पहाड़ियों पर से आनेवाली वायु का निश्वास और रोदन है। निस्तब्ध घरों के चारों ओर वायु इस प्रकार चक्कर काटती है मानो सोये हुओं को जगाने में भय खाती हो, फिर भी निद्रा को उसकी अरुण गुफा से उठाना ही है।

काले गाज़ का एक के बाद दूसरा पर्दा उठता जाता है और क्रमशः पदार्थों को अपने आकार तथा रंग प्राप्त होते जाते हैं। सूर्योदय द्वारा संसार के पुरातन नमूने का पुनर्निर्माण हो जाता है। मूर्च्छित-से दर्पणों को नकल करने की अपनी शक्ति प्राप्त हो जाती है। शिखाविहीन मोमबत्तियाँ वहीं खड़ी होती हैं जहाँ हमने उन्हें छोड़ा था, उन्हीं के पास वह अध-खुली पुस्तक पड़ी होती है जिसे हम पढ़ते रहे थे, अथवा बॉल (नृत्य)

के समय धारण किया हुआ पुष्प, अथवा वह पत्र जिसे पढ़ने में भय लगता था या अनेक बार पढ़ा गया था, वहीं पड़ा होता है। कुछ भी परिवर्तित प्रतीत नहीं होता। रात्रि की अवास्तविक छायाओं के पार हमारा परिचित वास्तविक जीवन लौट आता है। हमें वहीं से फिर आरम्भ करना होता है जहाँ हमने उसे छोड़ा था और तब थका डालने-वाली अटल आदतों अथवा उत्कट अभिलाषाओं के समय अक्षय शक्ति की आवश्यकता की बलवती भावना हम पर छा जाती है। हो सकता है कि हमारी आँखें किसी प्रातः खुलें जब कि अन्धकार में, हमको आनन्दित करनेवाला संसार का नवीन रूप निर्मित हो चुका हो। एक संसार जिसमें वस्तुओं के नये आकार और रंग हों, परिवर्तित हों अथवा अन्य रहस्यों से पूर्व हों। एक संसार जिसमें अतीत का स्थान नगण्य अथवा कुछ भी न हो, और यदि अवशेष ही रहे तो कृतज्ञता अथवा प्रायश्चित की चेतन भावना न रहे, कटुता से पूर्ण प्रसन्नता और कष्ट से पूर्ण आनन्द की स्मृतियाँ न रहें।

डोरियन ग्रे को लगता था कि वास्तविक लक्ष्य अथवा जीवन के वास्तविक लक्ष्यों में से एक लक्ष्य ऐसी ही सृष्टियों का निर्माण है और इन्द्रियों द्वारा एकदम नवीन, आनन्दपूर्ण तथा रोमांस के लिए आव-श्यक अनोखेपन के तत्त्व से पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की खोज में वह प्रायः ऐसे विचार अपनाता जिन्हें अपने स्वभाव के अनुकूल जानता, उनके भव्य प्रभावों के लिए स्वयं को समर्पित कर देता और तब, मानो उनका रंग पाकर और अपने बौद्धिक कौतूहल को शान्त करके उस विचित्र लापर-वाही के साथ छोड़ देता जो स्वभाव के वास्तविक उत्साह के लिए असंगत नहीं है बल्कि वास्तव में, कुछ आधुनिक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इसकी एक सम्भाव्य शर्त है।

उसके विषय में एक बार यह अफवाह फैलायी गयी थी कि वह रोमन कैथालिक संगति से सम्बन्ध स्थापित करने जा रहा है; और निश्चय ही रोमन रीतियाँ उसके लिए सदैव ही एक महान् आकर्षण का विषय रहीं।

भूतकालीन समस्त बलियों की अपेक्षा दैनिक बलि और तत्त्वों की

प्राचीन सादगी तथा मानवीय दुःख को रूप देनेवाली अन्तर्हित संवेदना की अपेक्षा इन्द्रियों की साक्षी का त्याग उसे आन्दोलित कर देता था। संग-मर्मर के शीतल चबूतरे पर घुटनों के बल बैठना और पुरोहित को कढ़े फूलोंदार जामे को पहिने हुए पूजा के स्थान के पर्दे को धीरे-धीरे श्वेत हाथों से एक ओर हटाते देखना या पीली पतली रोटी से युक्त लालटेन के आकार के हीरेदार पात्र को ऊपर उठाते देखना, जिसे देखकर प्रायः यह प्रसन्नतापूर्ण विचार आता है कि यह देवताओं की रोटी है, अथवा ईसा के वस्त्र पहिनकर, रोटी को प्याले में तोड़ते हुए और अपने पापों के लिए छाती कूटते हुए देखना उसे अच्छा लगता था। मुर्ख डोरी धारण किये हुए गंभीर लड़कों का बड़े चमकदार फूलों के समान धूम्रयुक्त धूपदानियों का हवा में उछालना उसे विशेष प्रिय था। बाहर निकलते समय अपराध स्वीकार करनेवालों को आश्चर्य से देखता और उनकी धुँधली छाया में बैठकर जर्जरित जंगले में से अपने जीवन की वास्तविक कथाओं को फुसफुसाते नर-नारियों को सुनने की उसकी इच्छा होती।

किन्तु किसी भी मत अथवा नियम को स्वीकार करके अपने बौद्धिक विकास को अवरुद्ध करने की गलती उसने नहीं की और न रहने के लिए मकान निश्चित करने की ही, क्योंकि रात्रि बिताने अथवा रात्रि के कुछ ऐसे घंटे बिताने के लिए जिनमें तारे दिखायी न देते हों और चाँद प्रकट होने का घोर परिश्रम कर रहा हो, एक सराय पर्याप्त है। अपनी अद्भुत शक्ति द्वारा साधारण वस्तुओं को भी हमारे लिए अनोखा बनानेवाला रहस्य और उससे संलग्न प्रतीत होनेवाली एन्टीनोमियन[1] की विरोधी भाव-नाओं ने उसे एक समय में प्रभावित किया और एक समय जर्मनी के अनात्म-वादी डार्विन के मत को मानने वालों के आन्दोलन के प्रति वह झुका और मस्तिष्क में मोती-से कोष्ठ तथा शरीर में श्वेत स्नायु से सम्बन्धित मानवी विचारों और भावनाओं का पता लगाने में उसे अनोखा आनन्द प्राप्त हुआ। इस विचार ने उसे अत्यन्त प्रसन्न किया कि शरीर की

---

१. जर्मनी का एक सम्प्रदाय जो ईसाइयों के लिए नैतिक नियमों की आवश्यकता नहीं समझता।

स्वस्थ अथवा अस्वस्थ और साधारण अथवा रुग्ण अवस्थाओं पर ही आत्मा पूर्णतया निर्भर है। फिर भी, जैसा कि उसके विषय में कहा जा चुका है, जीवन के समक्ष जीवन-विषयक कोई भी मत उसे महत्त्वपूर्ण प्रतीत नहीं हुआ। उसने भली प्रकार अनुभव किया कि गति और प्रयोग से हीन होने पर बौद्धिक अटकलबाज़ियाँ कितनी निरर्थक हैं। वह जानता था कि आत्मा के समान इन्द्रियों के रहस्य भी प्रकाशनीय हैं।

और इसीलिए अब उसने इत्रों का अध्ययन तथा उनके उत्पादन-रहस्य का ज्ञानार्जन, गहरी सुगन्ध वाले तेलों का सत निकालना और खुशबूदार पूर्वीय गोंद का जलाना आरम्भ कर दिया था। उसने देखा कि मस्तिष्क की कोई भी ऐसी स्थिति न थी जिसका अंश ऐन्द्रिक जीवन में न हो और वह उनका वास्तविक सम्बन्ध खोजने में जुट गया। उसे आश्चर्य था कि धूप में ऐसा क्या है जो मनुष्य को रहस्यवादी बना देता है, अम्बरग्रिस[1] में ऐसा क्या है जो भावनाओं को उत्तेजित करता है, मुश्क (कस्तूरी) में मस्तिष्क को परेशान कर डालने वाला क्या है, चम्पक में ऐसा क्या है जो कल्पना को कलंकित करता है; और प्रायः, सुगन्धियों का वास्तविक मनोविज्ञान तैयार करने का प्रयत्न करता और महकने वाली जड़ों के विभिन्न प्रभावों को आँकने की चेष्टा करता। सुगन्धित पराग से पूर्ण पुष्पों या सुगन्धपूर्ण इत्रों, काली और सुगन्धित लकड़ियों, रोगी कर डालने वाले जटामांसी के तेल, मनुष्यों को पागल कर डालने वाले होवेनिया और आत्मा को दुखमुक्त करने की शक्ति रखनेवाले घृत कुमारी (एलुआ) के प्रभावों का अनुमान लगाता।

फिर दूसरे समय उसने अपना सम्पूर्ण ध्यान संगीत की ओर लगाया और लाल तथा सुनहरी छत, जैतून जैसे हरे रंग से वार्निश की गयी दीवारों के एक लम्बे झँझरीदार कमरे में वह विचित्र संगीत-आयोजन किया करता जिसमें पागल कंजर छोटे से जिथर[2] से घोर रव उत्पन्न

---

१. इत्र बनाने में प्रयुक्त होनेवाला मोम जैसा एक समुद्री द्रव्य।

२. तीस-चालीस डोरी का हाथीदाँत के टुकड़े से बजाया जाने वाला एक वाद्य-यन्त्र।

करते अथवा पीले शाल लपेटे ट्यूनीशियन विशालाकार वाद्यों की तनी हुई डोरियों को झंकृत करते, दाँत किटकिटाते हुए नीग्रो तांबे के बेसुरे ढोल पीटते, लाल चटाई पर झुके क्षीण साफे (पगड़ी) बाँधे हुए हिन्दुस्तानी सरकंडे अथवा पीतल की लम्बी बीनें फूंकते और बड़े फनवाले तथा भयानक विषधर सर्पों को मुग्ध करते अथवा मुग्ध करने का दिखावा करते। जब स्कूबर्ट की कला, चापिन का सुन्दर करुण-स्वर और स्वयं बीथोविन का लयपूर्ण संगीत उसके कानों को प्रभावित करने में असमर्थ सिद्ध होता तो अतिहीन, तीखा, भेद भरा असभ्य संगीत उसे प्रायः उत्तेजित कर देता। संसार के प्रत्येक भाग से, मृत राष्ट्रों की समाधियों से या पश्चिमी सभ्यताओं से सम्पर्क स्थापित हो जाने पर भी असभ्य रह गयी जातियों से उसने अत्यन्त विचित्र वाद्य एकत्रित किये और उनके प्रयोग में रुचि रखी। उसके पास नदीवाले नीग्रो हिन्दुस्तानियों का रहस्यपूर्ण 'फूरू—पेरिस' वाद्य भी था जिसका देखना स्त्रियों के लिए वर्जित था और तरुण भी बिना व्रत रखे तथा कोड़े खाये जिसे न देख सकते थे, रुवियनों के तीखे स्वरों वाले मिट्टी के बर्तन थे और मानवी हड्डियों के वैसे वाद्य थे जैसे एलफोन्सो डि ओवेल ने चिली में सुने थे तथा ऊँची ध्वनि देने वाले हरे जेस्पर जो कुजको के निकट पाये जाते हैं और जिनके स्वर की मधुरता अद्वितीय होती है। कंकड़ों से भरी हुई तथा पेंट की हुई तुम्बियाँ जो हिलाने पर खड़-खड़ स्वर करती थीं, मेक्सीवानों की लम्बी क्लैरिन जिसे फूंका नहीं जाता, बल्कि साँस खींची जाती है, अमेज़न की जातियों का तीखा ट्योर जो दिनभर ऊँचे पेड़ों में बैठे रहने वाले सन्तरियों द्वारा बजाया जाता है और जिसके विषय में कहा जाता है कि नौ मील तक सुनाई देता है, लकड़ी की दो जिह्वाओं वाली टिपान-जिली जो पौदों के दूध जैसे रस से बने गोंद से पुती हुई लकड़ियों के प्रहार ध्वनित होती है अँगूर के गुच्छों के समान लटके हुए अजटैकों के 'चौट्ल बैल्स' और अजगरों की खालों से मढ़े हुए एक विशालाकार बेलन जैसा ढोल जैसा बर्नालडियाज ने कोर्टिस के साथ जाने पर मेक्सिको के मन्दिर में देखा था और जिसके करुण स्वर का अत्यन्त विशद वर्णन उसने किया है, भी उसके पास थे। इन वाद्यों की कल्पनाशील विशेषताएँ

उसे मोहित किये थीं और उसे इस विचार में एक विचित्र आनन्द मिलता था कि प्रकृति के समान ही कला के पास भी अपने विकराल आकार हैं, पशुओं-सी शक्लें हैं और भयानक स्वर हैं। फिर भी, कुछ समय बाद वह उनसे ऊब गया और या तो एकाकी अथवा लार्ड हेनरी के हाथ ऑपेरा के पास अपने बॉक्स में बैठकर 'तन्हासर' को आनन्दित होकर सुनने और उस महान् कलाकृति के आरम्भ में अपनी ही आत्मा के दुखान्त को देखने लगा।

एक बार उसने रत्नों का अध्ययन आरम्भ किया और पाँच सौ साठ मोतियों से कलंकृत वस्त्र धारण कर फ्रांस के जल सेनाध्यक्ष एनी डि जोइस के रूप में एक नृत्य में प्रकट हुआ। यह शौक उसपर वर्षों छाया रहा, और यदि सत्य कहा जाय तो वह इससे कभी मुक्त न हो सका। प्रायः वह अपने संगृहीत रत्नों को बारंबार डिबियों में रखने में ही संपूर्ण दिन बिता देता—जैसे पीत-हरित क्राइसोबैरल जो लैम्प के प्रकाश में लाल हो जाता है, रजत जैसी रेखाओं से युक्त साइमोफोन, पिस्ता जैसे रंग का पेरिडोट, गुलाब जैसे गुलाबी अथवा शराब जैसे पीले, पुखराज, कम्पित-से चतुर्किरण सितारों से युक्त ज्वाला जैसी सुर्ख पद्मराग मणियाँ, लौ जैसे लाल दालचीनी के रत्न, नारंगी तथा बैंगनी स्पाइनल और लालमणि तथा नीलम जटित चतुर्कोण एमिथैस्ट। सूर्यकान्त मणि की सुनहरी लालिमा और चन्द्रकान्त मणि की मोती जैसी निर्मलता तथा दूधिया पत्थर का भग्न इन्द्रधनुष उसे प्रिय था। उसने एम्स्टर्डम से अनोखे आकार तथा रंग के तीन पन्ने प्राप्त किये थे और उसके पास एक ऐसा हरित-नील बहुमूल्य रत्न था जो तमाम समालोचकों की डाह का कारण था।

रत्नों के विषय में उसने अनोखी कहानियाँ भी खोज निकालीं। एल्फोन्सो के क्लैरिकैटिस डिस्सिपिना में वास्तविक जैसिन्थ (गुलाबी-नारंगी मणि) की आँखों वाले नाग का वर्णन था और सिकन्दर के रोमांटिक इतिहास में इमेथियो के विजेता द्वारा जोर्डन सर्पों की पीठों पर वास्तविक पन्नों की पट्टियाँ पाने का उल्लेख था। फिलोस्ट्रेटस के कनथानुसार अजगर के मस्तिष्क में एक मणि थी और सुनहरे अक्षर तथा

लाल वस्त्र दिखाकर दानव को जादुई निद्रा के वशीभूत किया जा सकता तथा मारा जा सकता था। मध्यकालीन रासायनी पियर दि बोनीफेस के अनुसार हीरे द्वारा एक मनुष्य अदृश्य हो गया और भारतीय अगेट (बादल जैसी श्वेत मणि) द्वारा उसका स्वर मुखरित हो गया। कार्नीलियन (धूमिल लाल) क्रोध शान्त करता था, ह्यासिन्थ से नींद आती थी और एमिथिस्ट से शराब की उत्तेजना का अन्त होता था। याकूत द्वारा भूत भगाये जा सकते थे और हाइड्रोपिक्ट्स द्वारा चाँद वर्णहीन किया जा सकता था। सेलिनाइट चाँद के साथ-साथ क्षीण होती थी और चोर खोजने वाली मिलोसियस केवल मेमने के रक्त से प्रभावित हो सकती थी। लियोनार्ड्स केमिल्स ने हाल ही मारे गये मेढ़क के मस्तिष्क से निकाले गये एक ऐसे श्वेत पत्थर को देखा था जो विष के नाश में अचूक था। अरबी हिरन के हृदय से निकालने वाला बेजोर प्लेग से मुक्त कर सकता था। डिमोक्रिट्स के अनुसार अरबी चिड़ियों के घोंसलों में पाये जाने वाले एस्पिलेट को धारण करने वाला अग्नि-संकट से मुक्त रहता था।

राजतिलक के अवसर पर सीलन का सम्राट् हाथ में एक बड़ी लाल-मणि लिये हुए अपने नगर में घोड़े पर घूमा। जॉन पादरी के महल के फाटक सर्द (बहुमूल्य रत्न) के बने हुए थे और उनमें सर्प के सींग इसलिए जड़े थे कि कोई भी व्यक्ति विष अन्दर न ले जा सके। महल के त्रिकोण भाग पर दो सुनहरे सेव थे जिनमें दो पद्मराग मणियाँ जड़ी हुई थीं, जिससे सेव दिन में चमकें और मणियाँ रात को। लॉज के विचित्र रोकांस 'ए मार्गेराइट आफ अमेरिका' में यह लिखा था कि रानी के कक्ष में क्राइसोसाइट (जैतून के रंग जैसा हरा रत्न), कार्बकल (पद्मराग मणि) सैफायर (नीलम) और हरे एमरल्ड (पन्ने) के आश्चर्यपूर्ण दर्पणों में संसार की समस्त लज्जाशील नारियों को देखा जा सकता था। मार्कोपोलो ने जिपांगू के निवासियों को मृत व्यक्तियों के मुखों में गुलाबी मोती रखते हुए देखा था। सम्राट् पीरोजेज के पास एक गोताखोर था जो मोती ले गया था। उस पर एक जल-दैत्य आसक्त था, उसने चोर को मार डाला था और मोती खो बैठने के कारण सात रात रोया था।

मोयोपियस के कथनानुसार जब हूणों ने सम्राट् को एक बड़े गड्ढे में फँसा दिया, उसने उसे फेंक दिया और फिर वह कभी न मिल सका, यद्यपि सम्राट् अनास्टैसियस ने उसके लिए स्वर्ण के पाँच सौ तौल देने का प्रस्ताव किया। मालाबार के राजा ने अपने प्रत्येक उपास्य देव की तीन सौ चार मोतियों की एक माला वेनिस के किसी निवासी को दिखलायी थी।

ब्रन्टोम के कथनानुसार, छटे अलेक्जेंडर का पुत्र वेलेन्टिनोआइस का डच्क जब फ्रांस के बारहवें लुई से मिलने गया उसका घोड़ा स्वर्ण-पत्रों से लदा था और उसकी टोपी पर तीव्र प्रकाश फेंकनेवाली मणियों की दो पंक्तियाँ थीं। इंगलैड का चार्ल्स चार सौ इक्कीस हीरों से जड़ी रकाबों पर चढ़ा था। रिचर्ड द्वितीय का तीस हजार मार्क्स (शिलिंग के बराबर एक सिक्का) के मूल्य का एक कोट था जो बदक्शाँ में प्राप्त होने वाली लाल मणियों से सज्जित था। राजतिलक से पूर्व बुर्ज की ओर जाते हुए हेनरी अष्टम का वर्णन हॉल ने उभरे स्वर्ण का जाकेट पहिने, हीरों तथा अन्य बहुमूल्य रत्नों के कशीदे किये हुए विज्ञापन-पत्र तथा ग्रीवा पर बदक्शाँ की लालमणियों का एक बड़ा कंठा धारण किये हुए किया है। जेम्स प्रथम के कृपापात्र तारकशी में जड़े पत्रों के इयरिंग (कनफुल्ली) पहिनते थे। एडवर्ड द्वितीय ने पियर्स गैवेस्टन को जैसिन्थ से जड़ा हुआ लाल स्वर्ण का जरे बख्तर, टरक्वाइज़-रत्नों से जड़े स्वर्ण गुलाबों की एक पट्टी और मोतियों से जड़ी एक टोपी दी थी। हेनरी द्वितीय कुहनी तक पहुँचने वाले रत्नजटित ग्लोब (दस्ताने) पहिनता था और उसके पास बारह लालमणियों तथा बावन बड़े ओरिएन्ट (मोती-सी प्रभावाले रत्न) से जड़ा एक बाज की खाल का दस्ताना भी था; अपने वंश के वर्गण्डी के अन्तिम डच्क चार्ल्स रैश की युवराजीय टोपी में नाशपाती के आकार के मोती लटके थे और नीलम जड़े हुए थे।

किसी समय जीवन कितना सुन्दर था! शान-शौकत तथा सजधज में कितना भड़कीला! मृत व्यक्तियों के ऐश का वर्णन पढ़ना भी कितना मुग्धकारी है!

तब उसने अपना ध्यान कशीदे तथा कपड़े के चित्रों की ओर लगाया

जिनसे यूरोप के उत्तरी राष्ट्रों के ठंडे कमरों की दीवारों तथा छतों पर चित्र बनते थे। जब उसने विषय का अनुसंधान किया—किसी भी कार्य में किसी भी समय एकाग्र होने की उसमें अनोखी क्षमता थी—सुन्दर और अनोखी वस्तुओं का नाश काल द्वारा होता है इसका विचार करके वह उदास हो गया। इस नाश से वह किसी प्रकार बच गया था! ग्रीष्म के बाद ग्रीष्म आता रहा, नर्गिस परिवार के पीले पुष्प अनेक बार खिले और मुर्झाये तथा कयामत की रातों ने उनकी लज्जास्पद कहानी दोहरायी, किन्तु वह अपरिवर्तित रहा। किसी भी शीत में न तो उसके चेहरे का सौन्दर्य नष्ट हुआ और न उसकी फूल जैसी खिलन में कोई दाग ही लगा। सांसारिक वस्तुओं से वह कितना भिन्न था। वे वस्तुएँ कहाँ चली गयीं? बसन्त के चमकीले पुष्प के रंग का वह वस्त्र कहाँ चला गया जिसके लिए देवता राक्षसों से लड़े थे और जिसे भूरी लड़कियों ने गथिना को प्रसन्न करने के लिए तैयार किया था। रोम में कोलोसियम पर जो गद्दा नीरो ने बिछाया था, लाल पाल जो तारों भरे आकाश का प्रतिनिधित्व करता था और चमकदार लगाम पड़े श्वेत घोड़ों से चलने वाला सूर्य का रथ कहाँ गया? सूर्य के पुजारी के लिए तैयार किये गये उन मजपोशों को देखने की बहुत इच्छा थी जिन पर दावत में आवश्यक प्रतीत होने वाली सभी भोजन की सामग्रियों के चित्र थे। सम्राट किल पेरिक का तीन सौ सुनहरी मक्खियों से चित्रित कफन, पादरी पोन्टस को क्रोधित करनेवाले वे विचित्र वस्त्र जिन पर शेर, तेंदुए, भालू, कुत्ते, जंगल, चट्टानें, शिकारी आदि प्राकृतिक चित्र चित्रित थे और आर्लियन्स के चार्ल्स का पहिना हुआ वह कोट जिसकी बाँहों पर 'मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, प्रिय' से आरम्भ होनेवाली पंक्तियाँ कढ़ी हुई थीं और स्वर्ण के डोरों से चार-चार मोतियों द्वारा चतुर्कोण बनाते हुए संगीत-संकेत बने थे—उन सभी को देखने की उसकी तीव्र इच्छा थी। बर्गन्डी की महारानी जोन के लिए रीम्स के महल में जो कमरा बना था और जो स्वर्ण के कामदार तीन सौ इक्कीस तोतों तथा कामदार पंखों वाली पाँच सौ इकसठ तितलियों से युक्त वर्णित था उसके विषय में उसने पढ़ा था। मेडिसिस की कैथराइन ने अपने कोप-भवन का बिछौना चन्द्र और सूर्य के प्रकाश वाले

चूर्ण से युक्त काली मखमल का बनवाया था। इसके पर्दे डेमास्क्स की मलमल के थे, स्वर्ण तथा रजत पृष्ठभूमि पर हार थे, किनारों पर मोती टँके हुए थे और रानी द्वारा रजत वस्त्र पर काले मखमल से की गयी कृतियों की कतारों से युक्त कमरे में वह पलंग रखा था। चौदहवें लुई के कमरे में स्वर्ण-तारक शीशे से युक्त नारीमूर्ति के पन्द्रह फीट ऊँचे स्तम्भ थे। पोलैंड के सम्राट् सोबेस्की का शाहंशाही पलँग स्मीरना के स्वर्ण का बना था और कुरान की आयतें रत्नों से कढ़ी हुई थीं। इसके पाये चमकदार खुदाई से युक्त और बहुसंख्यक रत्नों से जड़ी चाँदी के बने थे। इसे तुर्की डेरे से वियना ले जाया गया था और इसके चमकदार झिलमिले चँदोवे के नीचे मुहम्मद का झंडा लगा हुआ था।

और इस प्रकार वह सालभर तक बुने हुए कपड़े, चिकनदोजी, देहली की सुन्दर मलमल (जिस पर सोने के तार का हाथ से किया हुआ काम और भौंरे के इन्द्रधनुषी पंखों की टँकाई), पारदर्शी होने के कारण पूर्व में 'चिलमन' 'बहता पानी' और 'शबनम' आदि नामों से प्रसिद्ध ढाका की गाज, जावा के विचित्र चित्रों से युक्त कपड़े, चीन की भव्य दीवाल-गीरियाँ, बादामी साटन अथवा भली नीली सिल्क की जिल्द, खिले हुए कमल (फ्रांसीसी सम्राट् का ध्वज-चिह्न), चिड़ियों और मूर्तियों वाली किताबें, हंगरी के बुर्के, सिसली की जरी, स्पेन की गफ मखमल, जार्जिया का चमकदार सिक्कों का काम, जापानी फाउकाउसा (जिसमें हरी झलक के स्वर्ण और सुन्दर ढँग से लगे पक्षी के पंख का काम होता है) आदि के अत्यन्त सुन्दर नमूने एकत्र करता रहा।

उसे धार्मिक अवसरों पर पहिने जाने वाले वस्त्रों का भी विशेष शौक था और वास्तव में उसके पास प्रत्येक धार्मिक कृत्य से सम्बन्धित वस्त्र थे। अपने घर की पश्चिमी गैलरी में पंक्तिबद्ध रखे सनोवर के बड़े वक्सों में ऐसे दुर्लभ नमूने एकत्रित कर रखे थे जो वास्तव में ईसा की दुलहिन के आवरण बनने योग्य थे क्योंकि लाल, रत्नों और सुन्दर मलमल से दुखपूर्ण और आत्मप्राप्त पीड़ा के कारण निराहार द्वारा पीले पड़े अपने शरीर को वह ढक सके। उसके पास गहरे लाल रंग का एक भव्य चोगा (पादरी का वस्त्र) था जिसमें डेमास्क्स के सोने के तार

बुने थे और छह पंखड़ी वाले फूलों में रखे सुनहरे अनारों का काम था और मोतियों से दोनों ओर अनन्नास बने हुए थे। पादरी के बहुमूल्य वस्त्र उभरे हुए बूंटों से विभक्त थे और उनमें कुमारी मरियम के जीवन के दृश्य, तथा तिलक के समय का कनटोपा रंगीन सिल्कों में चित्रित था। यह पन्द्रहवीं शताब्दी की इटली का काम था। दूसरा चोगा हरी मखमल का था, यूनानी वास्तुकला में प्रयुक्त होने वाले एकैन्थस (एक पौधा) के हृदयाकार के पत्तों के बूंटे थे जिनमें से लम्बी डण्डीवाले श्वेत पुष्पों को पहिले डोरे तथा रंगीन स्फटिकों से बनाया गया था। दरियाई घोड़े के उभरे तारों से बने काम का देवदूत का सिर था। पादरी के बहुमूल्य वस्त्र लाल और सुनहरे सिल्क से बुने हुए थे और सेंट सिबास्टियन आदि सन्तों और शहीदों के पदकों के तारकों से जटित थे। अम्बर के रंग की सिल्क, सोने के बूंटेदार नीली सिल्क डेमास्क्स की पीली सिल्क और सोने के कपड़े पर बने काम तथा ईसा की बलि के चित्रों से युक्त और शेरों-मोरों आदि के चिह्नों के बूंटों वाले बेबाँहों के वस्त्र, सफेद साटन और डेमास्क्स की लाल सिल्क के डलमेटिक (चौड़ी बाहों के कुर्त्ते जैसे वस्त्र) पर दुपहरिया के फूल, विभिन्न रंग की वक्राकार मछली और फ्रांसीसी सम्राट् के राजचिह्न कमल की सजावट थी, वेदी के अग्रभाग पर डाली जाने वाली लाल मखमल और नीली मलमल, और बहुत से शरीर सम्बन्धी छोटे वस्त्र, प्यालों के आवरण तथा ईसा की मुखाकृति से चित्रित वस्त्र उसके पास थे।

ये खजाने और जो कुछ भी उसने अपने प्यारे मकान में एकत्रित किया था उस भय से दूर ले जाने वाले आत्म-विस्मरण के साधन थे जो किसी समय दुर्वह हो गया था। जहाँ उसने अपने बचपन का अधिकांश समय बिताया था उस निर्जन और बन्द कमरे की दीवार पर अपने ही हाथों से उसने वह भयानक चित्र टाँगा था जिसके बदलते हुए रूप उसके पतनोन्मुख जीवन के वास्तविक दिग्दर्शक थे। उसके सामने उसने कफन पर डाले जाने वाले सुर्ख और सुनहरे वस्त्र का पर्दा बनाकर डाल दिया था। हफ्तों वह वहाँ न जाता, भयानक चित्त को भुलाता, भार-मुक्त हृदय, अनोखी प्रसन्नता और अस्तित्व मात्र में एकाग्रता पाता। अचानक किसी

रात वह घर से खिसक जाता, ब्लूगेट फील्ड्स के पास भयानक स्थानों में जाता और जब तक भगाया न जाता तब तक वहाँ कई दिन ठहरता। वापिसी पर वह चित्र के सामने बैठता, कभी उस पर और अपने पर घृणा करता, फिर जैसा कि पाप का प्रभाव होता है अहंभाव से भर जाता और मन ही मन मुस्कराता कि जो भार उसे वहन करना पड़ता उसे उसकी अभागी आत्मा वहन करती है।

कुछ वर्ष बाद, अधिक दिन तक इंगलैंड के बाहर रहना उसे असह्य हो उठा और उसने ट्रौविल की वह कोठी जिसमें वह लार्ड हेनरी के साथ रहता था तथा एलजियर्स के उस श्वेत दीवालों वाले छोटे से मकान को भी जहाँ उसने एक से अधिक शीत व्यतीत किया था, छोड़ दिया। उसके जीवन का जो इतना महत्त्वपूर्ण अंग था उस चित्र को छोड़ना उसे बुरा लगा, साथ ही उसे यह भी भय हुआ कि द्वार पर मजबूत छड़ें लगवा देने पर भी उसकी अनुपस्थिति में कोई उस कमरे में पहुँच न जाय।

वह भली प्रकार समझता था कि चित्र से वे कुछ न जान सकेंगे। यह सत्य था कि चित्र के चेहरे की अप्रियता और भद्देपन के नीचे उसकी समानता शेष है, पर वे इससे क्या जान सकते थे। जो भी उसका मजाक उड़ाने की चेष्टा करेगा उस पर वह हँसेगा। इसे उसने चित्रित नहीं किया था। इससे उसे क्या कि यह कितना बुरा और लज्जास्पद दीखता है। यदि वह बता भी दे तो क्या वे विश्वास करेंगे ?

फिर भी जब कभी वह नौटिंघमशायर के अपने बड़े मकान में अपने प्रमुख साथियों, समान स्थिति के फैशनेबिल युवकों का मनोरंजन करता होता और अपने जीवन के मुक्त भोग-विलास और शान-शौकत से आश्चर्य चकित करता होता, वह अचानक ही अपने आमंत्रितों को छोड़कर यह देखने नगर की ओर झपटता कि द्वार तोड़ा तो नहीं गया और चित्र वहाँ अब भी है या नहीं। यदि चोरी हो जाय तो क्या हो ? यह विचारमात्र ही उसे भय से ठंडा कर देता। निश्चय ही तब संसार उसका भेद जान लेगा। सम्भवतः दुनिया सन्देह करने लग गयी थी।

क्योंकि, यद्यपि वह बहुतों को मोहित करता था, ऐसे भी कम न थे जो उस पर अविश्वास करते थे। वेस्ट एण्ड के एक क्लब में उसे लगभग

बहिष्कृत कर दिया गया, यद्यपि जन्म और सामाजिक स्थिति के कारण वह सदस्य बनने के सर्वथा योग्य था और यह कहा जाता था कि एक बार जब वह अपने मित्र द्वारा चाँचिल के धूम्रपान कक्ष में ले जाया गया, बरविक का ड्यूक तथा एक अन्य सज्जन एक विशेष मुद्रा में उठ बैठे और बाहर निकल गये। पच्चीसवाँ वर्ष पार कर चुकने पर उसके विषय में विचित्र कहानियाँ प्रचलित हो गयीं। यह अफवाह उड़ी कि दूरस्थित ह्वाइट चेपल की एक गन्दी कोठरी में वह विदेशी नाविकों से गाली-गलौज करते देखा गया और उसका मेल चोरों तथा जाली सिक्के बनाने वालों से है और उनके रहस्यों से वह परिचित है। उसकी अनोखी अनुपस्थितियाँ, कुख्यात हो गयीं और जब वह समाज में पुनः प्रगट होता, मनुष्य कानों में एक-दूसरे से फुसफुसाते अथवा उसके पास से नाक चढ़ाते हुए निकलते या उसे ऐसी क्रूर खोजती हुई आँखों से घूरते मानो उसका रहस्य खोज लेने का निश्चय कर चुके हों।

इस प्रकार की उद्दण्डताओं और जान-बूझकर की गयी उपेक्षाओं पर उसने वस्तुतः कोई ध्यान न दिया। बहुत से व्यक्तियों के विचार में उसका निष्कपट प्रसन्न व्यवहार, बच्चों जैसी उसकी मोहक मुस्कान और कभी न छोड़ते प्रतीत होनेवाले उसके तारुण्य का अपार सौन्दर्य उसके विषय में प्रसारित इस प्रकार के कथित मिथ्या कलंक के स्वयं ही उत्तर थे। यह अवश्य कहा गया कि जो किसी समय उसके अत्यन्त घनिष्ठ थे, उनमें से कुछ, कुछ समय बाद उससे दूर-से रहने लगे। जिन स्त्रियों ने उसे अपार प्यार किया था, उसके लिए समस्त सामाजिक बन्धनों का सामना किया था और नियमों का उल्लंघन किया था, डोरियन ग्रे के कक्ष में प्रवेश करने पर वे लज्जा अथवा भय से पीली पड़ती प्रतीत होती थीं।

फिर भी बहुतों की दृष्टि में बुराइयों की इन फुसफुसाहटों ने उसके अनोखे और भयानक आकर्षण को ही बढ़ाया। उसकी अपार धन-राशि से कुछ हद तक उसकी बचत थी। समाज, कम से कम सभ्य समाज उनके विरुद्ध सहज ही विश्वास करने को तैयार नहीं होता जो धनिक भी हैं और प्रभावपूर्ण भी। यह अनुभव करता है कि नैतिकता की अपेक्षा

व्यवहार अधिक महत्त्वपूर्ण है और इसके विचार में अधिकाधिक सम्मान भी एक अच्छे बावर्ची के स्वामित्व से बहुत कम मूल्यवान है। और, आखिर बुरा भोजन और साधारण शराब देनेवाले व्यक्ति के विषय में यह कहा जाना कि अपने व्यक्तिगत जीवन में वह अनिन्दनीय है, विशेष संतोष की बात नहीं है। इस विषय के वाद-विवाद के अवसर पर जैसा कि लार्ड हेनरी ने एक बार कहा था कि प्रमुख भोजन के पूर्व अध-बासा भोजन देना प्रधान गुणों के होने पर भी क्षम्य नहीं है। उसके दृष्टिकोण के विषय में, सम्भवतः बहुत कुछ कहा जा सकता है, क्योंकि अच्छे समाज के नियम वही हैं अथवा वैसे ही होने चाहिएँ जैसे कला के। रूप इसके लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसका महत्त्व संस्कारपूर्ण और साथ ही काल्पनिक भी होना चाहिए और एक रोमांटिक नाटक के अवास्तविक चरित्र का सयोग ऐसे रस और सौन्दर्य से होना चाहिए जिनसे ऐसे नाटक हमें आनंदित कर सकें। क्या अवास्तविकता ऐसी भयानक वस्तु है ? मेरे विचार में नहीं। अपने व्यक्तित्व को बढ़ाने का यह साधनमात्र ही है।

जो भी हो, ऐसा डोरियन ग्रे का विचार था। उन व्यक्तियों के अपूर्ण मनोविज्ञान पर उसे आश्चर्य होता था जो मनुष्य के अहंभाव को साधारण, स्थायी, विश्वसनीय और रूपयुक्त मानते थे। उसके विचार में मनुष्य में अनेक जीवनियाँ और वासनाएँ सन्निहित हैं, वह ऐसा मिश्रित जीव है जिसे उत्तराधिकार में अनेक विचार और अभिलाषाएँ प्राप्त हैं और जिसके मांस-मज्जा में पूर्व-पुरुषों के भयानक मर्ज समाये हुए हैं। अपने देहात-स्थित मकान की क्षीण चित्र-पंक्ति में लगे उन व्यक्तियों के चित्रों को देखना उसे अच्छा लगता था जिनका रक्त उसकी शिराओं में प्रवाहित हो रहा था। यह फिलिप हरबर्ट था जिसके विषय में फ्रांसिस आस्बोर्न ने, अपनी 'मेमायर्स ऑन दि रेन्स आफ क्वीन एलिजाबेथ एण्ड किंग जेम्स' (महारानी एलिजाबेथ तथा सम्राट् जेम्स के शासन-काल के संस्मरण) में लिखा है कि अपनी सुन्दर मुखाकृति के कारण उसे दरबार में प्यार किया जाता था और इसीलिए वह अधिक साथ नहीं रहता था। क्या वह कभी-कभी उस तरुण हरबर्ट का ही जीवन

व्यतीत करता था ? क्या कोई विषैला कीटाणु शरीर से शरीर में प्रवेश करता हुआ उसमें प्रवेश कर चुका था ? क्या यह उस विगत सौन्दर्य का अस्पष्ट प्रभाव ही था कि बेसिल हावर्ड के स्टूडियो में अचानक और अकारण ही उसके मुख से वह पगली इच्छा मुखरित हुई जिसने उसके जीवन को इतना परिवर्तित कर दिया ? यह सोने के बूंटेदार चुस्त लाल जाकेट, रत्नजटित बड़ा कोट, चमकदार किनारेवाला चुन्नटदार गुलूबन्द तथा कलाई की पट्टी धारण किये सर एन्थोनी शिराई खड़ा था। इस व्यक्ति को उत्तराधिकार में क्या मिला था ? क्या नैपिल्स की गियोवेन्ता के प्रेमी से उसे किसी पाप और लज्जा का उत्तराधिकार प्राप्त हुआ था ? क्या उसके कार्य इन मृत व्यक्तियों के वही स्वप्न थे जिन्हें वे क्रिया रूप में परिणित करने का साहस न कर सके थे ? इस धुंधले पड़ते हुए चित्र-पट पर लेडी एलिजाबेथ डेवरियेक्स मुस्करा रही हैं जिसके सिर और ग्रीवा पर गाज (रेशमी महीन कपड़ा) का आवरण है, छाती पर बँधा हुआ मोतियों का आभूषण है और लम्बे सुर्ख टुकड़ों की बाँहें हैं। उसके दाहिने हाथ में एक पुष्प था और बायाँ हाथ श्वेत तथा दमश्क के गुलाब पकड़े हुए था। उसके एक ओर रखी हुई मेज पर मेण्डोलिन (डोरीदार एक वाद्य) तथा एक सेब पड़ा हुआ था। उसकी नुकीली छोटी-सी जूतियों पर फीतों के बने बड़े हरे गुलाब जैसे फूल थे। वह उसके जीवन तथा उसके प्रेमियों के विषय में कही जानेवाली विचित्र कहानियों से परिचित था। क्या उसमें उसके स्वभाव का कुछ अंश था ? ये अण्डाकार भारी पलकोंवाली आँखें उसे उत्सुकता से घूरती प्रतीत होती थीं। यह पाउडर लगे बालों और भद्दे पैबन्द लगाये जार्ज विलूबी ? वह कितना मनहूस लगता था। उसका चेहरा गम्भीर और श्याम था और उसके विलासी अधर घृणा से सिकुड़े हुए प्रतीत होते थे। फीते की हल्की झालरें अत्यधिक अँगूठियों से लदे पीले हाथों पर पड़ी हुई थीं। वह अठारहवीं सदी का मर्कोनी अपनी तरुणाई में लार्ड फेररर्स का मित्र था। प्रिंस रीजेंट के उच्छृंखल दिनों का साथी और मिसेज फिट्स हरबर्ट के साथ हुए गुप्त विवाह का गवाह द्वितीय लार्ड बेकेन्हम ? शाह वलूत जैसे घुँघराले बालों और निठुर मुद्रा वाला वह कितना गर्वीला और सुन्दर था ! उसने

कौनसी उत्कट अभिलाषाएँ छोड़ीं। संसार उसे बदनाम समझता था। कार्लटन हाउस के आनन्द भोग का वह नेता था। गार्टर का सितारा उसकी छाती पर चमकता था। उसकी बगल में काली रेखाओं में पीली और पतले ओठोंवाली उसकी पत्नी का चित्र टँगा था। उसका रक्त भी उसमें प्रवाहित था। यह सब कितना विचित्र प्रतीत होता था! और लेडी हेमिल्टन जैसी मुखाकृति तथा मदिरा से भीगे-से नम ओठोंवाली उसकी माँ—वह जानता था कि उससे उसने क्या पाया। उससे उसने सौन्दर्य और दूसरों के सौन्दर्य के प्रति आसक्ति पायी। अपनी बरबाल्टि ढीली वेशभूषा में वह उस पर हँस रही थी। उसके बालों में अँगूर के पत्ते थे। जो प्याला उसने पकड़ रखा था, सुर्खी उसमें से छलकी पड़ती थी। चित्र का गुलनार-सा रंग उड़ गया था किन्तु आँखों की गहराई और उनका रंग अब भी अनोखा था। वह जहाँ भी जाता वे उसका पीछा करते प्रतीत होते।

फिर भी पूर्वज साहित्य में होते हैं और अपनी जाति में भी, सम्भवतः उसी प्रकार के और उसी स्वभाव के, बहुत से, और निश्चय ही ऐसे प्रभाव के कि अपने आपको उसकी पूर्ण अनुभूति रहे। कभी-कभी ऐसा होता कि समस्त इतिहास डोरियन ग्रे को अपने ही जीवन का लेखा मात्र प्रतीत होता, वैसा नहीं जैसा कि परिस्थितियों में उसने किया, बल्कि उसकी कल्पना ने जैसा उसके लिए बनाया, जैसा उसके मस्तिष्क में और उत्कट अभिलाषाओं में था। वह अनुभव करता था कि वह उन सबको जानता था, उन विचित्र भयानक पात्रों को जो संसार के रंगमंच के पार जा चुके थे, जिन्होंने पाप को इतना सुन्दर रूप दिया था और जिन्होंने बुराई को इतना भव्यतापूर्ण कर दिया था। उसे ऐसा लगता था कि किसी रहस्यपूर्ण ढँग से उनके ही जीवन उसके हो गये थे।

जिस उपन्यास ने उसके जीवन को इतना प्रभावित किया था उसके नायक की कल्पना भी ऐसी ही थी। सातवें परिच्छेद में वह बतलाता है कि उपाधि प्राप्त हो जाने के बाद विद्युताघात के डर से वह किस प्रकार टिबेरियस के समान केप्री की एक वाटिका में बैठकर एलीफेन्टिस की लज्जास्पद पुस्तकें पढ़ता रहा, जब कि बौने और मोर ऐंठकर उसके चारों

ओर घूमते रहे और वंसीवाला धूपदान को हिलानेवाले का मजाक उड़ाता रहा; और जिस प्रकार कौलिग्यला घोड़े के सौदागरों के साथ उनके अस्तबलों में मदिरापान करता रहा और हाथीदाँत के लेबरे में रत्नाग्र घोड़े के साथ खाता रहा; और जिस प्रकार डोमीशियन संगमर्मर के दर्पणों की पंक्तिवाले बरामदे में चक्कर काटता रहा, बाज जैसी आँखों से अपने जीवन का अन्त कर देनेवाले छुरे की छाया को खोजता रहा और जिन्हें जीवन में कोई अभाव नहीं होता उन्हीं पर आनेवाली नीरसता तथा भयंकर शिथिलता से ऊब उठा; और पारदर्शी पन्ने में से झाँककर सर्कस की मांस की लाल दूकानों को देखा और चाँदी के खुरोंवाले खच्चरों से खींची जानेवाली मोती की पालकी में पोमीग्रेनेट्स की सड़क पर घूमता हुआ गोल्ड के मकान पहुँचा तथा मनुष्यों को निकलते हुए नीरो सीजर पर चिल्लाते हुए सुना; और जैसे इलागाबालूस ने अपना चेहरा रंग लिया था, ऊन पकड़नेवाली छड़ी को नारियों में झुका दिया था, मून को कार्थेज से ले आया था और उनके साथ उसकी रहस्यपूर्ण शादी कर दी थी।

डोरियन इस परिच्छेद को तथा इसी के बाद के उन दो परिच्छेदों को बारंबार पढ़ता जिनमें दीवार के चित्र बने कपड़ों अथवा चतुरता से किये गये कलई के काम के समान उनके चित्र खींचे गये थे। जिन्हें पाप, रक्त और शैथिल्य ने भयानक अथवा पागल बना दिया था। मिलन का ड्यूक फिलिप्पो जिसने अपनी पत्नी को मार डाला और उसके अधरों को लाल रंग के विष से इसलिए रंग दिया कि अपनी मृत प्रियतमा के ओठों से उसका प्रेमी मृत्यु का चुम्बन करे। द्वितीय पॉल के नाम से प्रसिद्ध वेनिस का पीट्रो बार्बी जिसने अहंकारवश फोरमोसस की उपाधि धारण की और बीस लाख फ्लोरिन (रुपये के मूल्य के बराबर चाँदी का सिक्का) मूल्यवाला जिसका ताज एक भयानक पाप के मूल्य पर क्रय किया गया, ग्यान मेरिया विस्कॉन्टी जिसने जीवित मनुष्यों का पीछा करने के लिए शिकारी कुत्ते प्रयुक्त किये और जिसके मृत शरीर को उसकी प्रेमिका वेश्या ने गुलाब के फूलों से ढँक दिया; फ्रेट्रिसाइड की बगल में अपने श्वेत घोड़े पर चढ़ा हुआ बोर्गिया और पेरोट्टो के रक्त से रंजित उसका ढीला जामा; चतुर्थ सिक्स्टस का बच्चा और लाड़ला

फ्लॉरेंस का नन्हा कार्डिनल आर्च बिशप जिसका सौन्दर्य उसकी लम्पटता के ही समान था और जिसने परियों तथा आधामनुष्य आधाघोड़ा जैसे जीवों से युक्त श्वेत और लाल सिल्क के तम्बू में अरागौन की लियोनोरा का स्वागत किया और दावत के समय गेनीमीड़ अथवा हेलास के समान सेवा करने के लिए एक लड़के को सजाया; एज्जैलिन, जिसका मर्ज मृत्यु ही मिटा सकती थी, लाल शराब के समान जिसकी उत्कट अभिलाषा लाल रक्त के लिए थी, फियेन्ड का पुत्र, जिसने पाँसे के जुए में अपने ही पिता को धोखा दिया; ग्याम्बैटिस्टा सीबो जिसने मजाक में अपना नाम 'निर्दोष' रखा और जिसकी निश्चल शिराओं में एक यहूदी डाक्टर ने तीन बच्चों का रक्त भरा; सिगिस्मोन्डो मलाटेस्टा जो इसोट्टा का प्रेमी और रिमिनी का स्वामी था, ईश्वर तथा मानव का शत्रु होने के कारण जिसकी अर्थी रोम में जलायी गयी, जिसने एक रूमाल से पोलीसिना का गला घोंट दिया और एस्टी के जिनेवरा को पन्ने के प्याले में विष दिया और एक लज्जास्पद वासना के वश होकर ईसाई पूजा के लिए मन्दिर बनवा दिया; चार्ल्स षष्ठ जो अपने भाई की पत्नी को इतना चाहता था कि आनेवाले पागलपन के विषय में एक कोढ़ी ने उसे आगाह कर दिया था, और मस्तिष्क बेकार तथा विचित्र होने पर जिसे प्रेम, मृत्यु तथा पागलपन के चित्रों से चित्रित सारासेन के कार्डो द्वारा ही शान्ति प्राप्त हो सकती थी; और बाँकड़ा लगी मिरजई, रत्नजटित टोपी तथा एकन्थस जैसे घुँघराले बालवाला ग्रिफोनिटो बेग लिओनी जिसने पत्नी सहित एस्टोरी को तथा सेवक सहित सीमोनिटो को मार डाला, जो इतना सुन्दर था कि जब वह परगिया के पीले बरामदे में मर रहा था तो जो उसे घृणा करते थे वे भी अपने आँसू न रोक सके और शाप देनेवाली एटलान्टा ने उसे आशीर्वाद दिया।

उन सब में भयानक जादू था। वे उसे रात में दिखलायी देते और दिन में उसकी कल्पना में बाधक बनते। नवयुगारम्भ में विष देने के विचित्र ढँग थे—लोहे के टोप से, जलती हुई मशाल से, बूँटेदार दस्ताने से, रत्नजटित पंखे से, मुलम्मा किये हुए पोमेन्डर से और अम्बर की जंजीर से। डोरियन ग्रे को एक किताब से विष दिया गया। बुराई को वह प्रायः

सौन्दर्य के विषय में अपने विचारों को साकार रूप देने का एक साधन मात्र मानता था।

१२

जैसा कि उसे बाद में प्रायः स्मरण होता रहा, नवम्बर की नौ तारीख थी, उसी के अड़तीसवें जन्मदिवस की रात्रि !

लगभग ग्यारह बजे, लार्ड हेनरी के यहाँ से, जहाँ उसने भोजन किया था, रात्रि ठंडी और कुहरे से युक्त होने के कारण, भारी रुआँदार लबादे में लिपटा हुआ वह घर चला आ रहा था। ग्रासवेनर स्क्वायर और साउथ आडले स्ट्रीट के नुक्कड़ पर कुहरे में एक व्यक्ति अत्यन्त तीव्र गति से चलता हुआ अपने भूरे अल्स्टर के कालर को खड़ा किये हुए उसके पास से निकल गया। उसके हाथ में एक बैग था। डोरियन ने उसे पहिचान लिया। वह बेसिल हालवर्ड था। भय की एक विचित्र भावना, जिसे वह समझ न सका, उस पर छा गई। पहिचानना उसने प्रकट नहीं किया और शीघ्रता से अपने घर की ओर चलता रहा।

किन्तु हालवर्ड ने उसे देख लिया था। डोरियन ने पहिले सड़क के फर्श पर उसके रुकने और फिर शीघ्रता से पीछे आने की आहट पायी। कुछ ही क्षण में उसका हाथ उसकी भुजा पर था।

'डोरियन ! कैसे भाग्य की बात है ! नौ बजे से ही तुम्हारे पुस्तकालय में मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा। अन्त में तुम्हारे श्रान्त सेवक पर मुझे दया आयी और बाहर निकलते समय मैंने उसे जाकर सोने के लिए कह दिया। आधी रात की ट्रेन से मुझे पेरिस चला जाना है और जाने से पूर्व मैं तुमसे विशेष रूप से मिल लेना चाहता था। तुम मेरे पास से जब निकले तो मुझे ऐसा लगा कि तुम थे, अथवा तुम्हारा ही रुआँदार लबादा। किन्तु मैं निश्चय न कर सका था। क्या तुमने मुझे नहीं पहिचाना ?'

'मेरे प्यारे बेसिल, इस कुहरे में ? अरे मैं तो ग्रासवेनर स्क्वायर को भी नहीं पहिचान पा रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि मेरा घर यहीं कहीं है, किन्तु मैं निश्चय नहीं कर पा रहा। युग-युग से तुम्हारे दर्शन नहीं हुए. इसलिए तुम्हारे जाने का मुझे दुख है। किन्तु मैं आशा करता हूँ कि

तुम शीघ्र ही लौटोगे ?'

'नहीं, मैं छः महीने के लिए इंगलैंड छोड़ रहा हूँ। पेरिस में मैं एक स्टूडियो लेने का इरादा कर रहा हूँ और मेरे मस्तिष्क में जो एक महान् चित्र है उसे जब तक समाप्त न कर लूँ तब तक वहीं का होकर रह जाना चाहता हूँ। फिर भी अपने विषय में मुझे बातें नहीं करनी थीं। लो, हम तुम्हारे द्वार पर आ गये। मुझे अन्दर आने दो, तुमसे कुछ कहना है।'

'मुझे प्रसन्नता होगी, किन्तु तुम्हारी गाड़ी छूट तो नहीं जायेगी ?' —सिड्डियाँ चढ़ते तथा द्वार की सिटकनी खोलते हुए डोरियन ग्रे ने धीमे स्वर में कहा।

लैम्प का प्रकाश कुहरे से संघर्ष-निरत था। हावर्ड ने घड़ी देखी। 'मेरे पास बहुत समय है'—उसने उत्तर दिया। गाड़ी सवा बारह से पहिले नहीं जाती और अभी तो ठीक ग्यारह बजा है। वास्तव में जब मैं मिला उस समय तुम्हें ही खोजने क्लब जा रहा था। देखो न, मैंने सारी वस्तुएँ पहिले ही भेज दी हैं इसलिए सामान के कारण बिलकुल देर न लगेगी। मेरे साथ जो कुछ भी है इस बेग में है और बीस मिनट में मैं सरलता से विक्टोरिया पा सकूँगा।'

डोरियन ग्रे ने उसकी ओर दृष्टि डाली और मुस्करा पड़ा—'फैशनेबल चित्रकार के सफर का कैसा अच्छा ढँग है! एक ग्लैडस्टन-बेग और एक अल्स्टर! अन्दर आओ, नहीं तो कुहरा घुस आयेगा। और देखो, किसी गम्भीर विषय पर बात न करना। आजकल गम्भीर कुछ भी नहीं है, कम-से-कम होना नहीं चाहिए।'

प्रवेश करते समय हावर्ड ने सिर हिलाया और डोरियन के पीछे-पीछे पुस्तकालय में चला गया। खुली हुई बड़ी अँगीठी में जलती हुई लकड़ी चमक रही थी। लैम्प जल रहे थे और पच्चीकारी के काम से युक्त एक छोटी-सी मेज पर डच सिल्वर का एक खुला हुआ स्पिरिट-केस, सोडा-वाटर की कुछ बोतलें तथा शीशे के बड़े गिलास रखे हुए थे।

'तुम देखते हो डोरियन, तुम्हारे सेवक ने मुझे सभी सुविधाएँ दीं। तुम्हारे सर्वोत्तम सुनहरे सिरेवाली सिगरेट सहित जो कुछ भी मैंने चाहा उसने दिया। अतिथि-सत्कार में उसे अत्यन्त रुचि है। तुम्हारे पास जो

फ्रांसीसी था उसकी अपेक्षा मैं इसे कहीं अधिक पसन्द करता हूँ। बहरहाल, उस फ्रांसीसी का क्या हुआ ?'

डोरियन ने कंधे उचकाये—'मेरे विचार में उसने लेडी रैडले की नौकरानी से विवाह कर लिया और अंगरेजी वस्त्र बनानेवाली के रूप में उसे पेरिस में बसा दिया। मैंने सुना है कि वहाँ अंगरेजी रीति-रिवाजों की अत्यधिक प्रशंसा और फैशन है। यह फ्रांसीसियों की मूर्खता प्रतीत होती है, है न ? किन्तु जानते हो, वह बुरा सेवक न था। मुझे वह कभी अच्छा न लगा, किन्तु उसके विरुद्ध कोई भी शिकायत भी नहीं थी। प्रायः बिलकुल बेकार बातें सूझ जाया करती हैं। वास्तव में वह अत्यन्त स्वामि-भक्त था और जाते समय अत्यन्त दुखी प्रतीत होता था। ब्राण्डी और सोडा और लोगे ? या हाक-एंड-सेल्टजर पसन्द है ? मैं स्वयं तो सदैव हाक-एंड-सेल्टजर लेता हूँ। दूसरे कमरे में अवश्य रखा होगा।'

'धन्यवाद, मैं अब कुछ न लूँगा।'—चित्रकार ने टोपी और कोट को उतारते तथा कोने में रखे हुए बेग पर फेंकते हुए कहा—'और अब, मेरे प्यारे, मैं तुमसे गम्भीरतापूर्वक कुछ बातें करना चाहता हूँ। इस प्रकार भृकुटी न चढ़ाओ, तुम मेरे लिए इतनी अधिक कठिनाई उपस्थित कर रहे हो !'

'यह सब कुछ है किस विषय में ?'—सोफे पर लुढ़कते हुए अपने ढिठाईपूर्ण ढँग में डोरियन चिल्लाया—'आशा करता हूँ यह मेरे विषय में नहीं है। इस रात मैं स्वयं से ही थका हुआ हूँ। काश, मैं कोई अन्य ही होता।'

'यह तुम्हारे ही विषय में है,'—अपने गम्भीर और गहरे स्वर में हावर्ड ने उत्तर दिया—'और मैं तुमसे कहूँगा अवश्य, केवल आधे घंटे का समय लूँगा।'

डोरियन ने निःश्वास खींचा और एक सिगरेट सुलगायी—'आधा घंटा !' वह बड़बड़ाया।

'तुमसे इतने की आशा करना अधिक नहीं है, डोरियन, और मेरी ये सब बातें तुम्हारे ही हित की हैं। मैं यह उचित समझता हूँ कि तुम यह जान लो कि लन्दन में तुम्हारे विरुद्ध अत्यन्त आपत्तिपूर्ण बातें कही जा रही हैं।'

'उनके विषय में मैं कुछ नहीं जानना चाहता। दूसरों की मिथ्या निन्दाओं में मुझे आनन्द आता है लेकिन अपनी निन्दाओं में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं। इनमें नवीनता का आकर्षण नहीं होता।'

'तुम्हें इनमें अवश्य दिलचस्पी होनी चाहिए, डोरियन, प्रत्येक सज्जन को अपने सुनाम में दिलचस्पी होती है। तुम नहीं चाहते कि अधम और पतित समझकर तुम्हारे विषय में बात की जाय। निश्चय ही तुम्हारी अपनी स्थिति है, धन है और ऐसा ही सभी कुछ है, किन्तु स्थिति और धन ही सब कुछ नहीं है। देखो, मुझे इन अफवाहों में तनिक भी विश्वास नहीं है। कम-से-कम जब मैं तुम्हें देखता हूँ तब तो उन पर विश्वास ही नहीं कर सकता। पाप मनुष्य के मुख पर अंकित हो जाता है। यह छिपाया नहीं जा सकता। कभी-कभी लोग गुप्त बुराइयों के विषय में बातें करते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है। यदि एक दुष्ट व्यक्ति में कोई बुराई है तो वह उसकी मुख की रेखाओं में, उसकी पलकों के झुकाव में और हाथ की शकल तक में प्रकट हो जायगी। कोई—मैं उसका नाम नहीं बतलाऊँगा, किन्तु तुम उसे जानते हो, पिछले वर्ष अपना चित्र बनवाने मेरे पास आया था। मैंने उसे पहले भी न देखा था और यद्यपि तब से बहुत कुछ सुना है किन्तु उस समय उसके बारे में कुछ सुना ही न था। उसने बहुत रुपया देना चाहा, किन्तु मैंने अस्वीकार कर दिया। उसकी अँगुलियों का कुछ ऐसा आकार था जिससे मुझे घृणा थी। अब मैं जानता हूँ कि उसके विषय में मैंने जो अनुभव किया था वह बिलकुल ठीक था। उसका जीवन भयानक है। किन्तु तुम डोरियन, तुम्हारा निर्मल, कान्तिमान, भोला चेहरा और अद्भुत अविश्रृंखलित तारुण्य—तुम्हारे विरुद्ध मैं कुछ भी विश्वास नहीं कर सकता। और फिर भी तुम जब कभी ही दिखायी देते हो, अब तुम स्टूडियो कभी आते नहीं और जब मैं तुमसे दूर चला जाऊँगा और तुम्हारे विषय में, लोग जो कुछ फुसफुसा रहे हैं वे सब भयानक बातें सुनूँगा तो क्या कहूँगा—मैं नहीं जानता। ऐसा क्यों डोरियन, कि क्लब के कमरे में तुम्हारे प्रवेश करने पर वरविक के ड्यूक जैसा व्यक्ति उठकर चल दे। ऐसा क्यों है कि लन्दन के अनेक सज्जन न तो तुम्हारे यहाँ आते हैं और न तुम्हें अपने यहाँ बुलाते हैं। तुम लार्ड स्टेनले

के मित्र थे। पिछले सप्ताह मैं भोजन पर उससे मिला, डडले की प्रदर्शनी के लिए तुमने जो छोटी मूर्तियाँ दी उनकी चर्चा होते हुए तुम्हारा नाम अचानक आया, स्टेनले ने अपना ओठ मोड़ लिया और कहा कि तुम्हारी रुचि अत्यन्त कलात्मक हो सकती है किन्तु तुम ऐसे व्यक्ति हो जिसका परिचय किसी भी निर्मल लड़की को नहीं मिलने देना चाहिए और जिसके साथ उसी कमरे में किसी सती स्त्री को नहीं बैठना चाहिए। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ और पूछा कि उसके कहने का तात्पर्य क्या है। उसने बतलाया। उसने सभी के सामने मुझे बतलाया! यह भयानक था! तुम्हारी मित्रता तरुणों के लिए इतनी घातक क्यों है? गार्डस् (रेलरोड कन्डक्टर) के उस तुच्छ लड़के ने आत्म-हत्या कर ली। तुम उसके परम मित्र थे। सर हेनरी एशटन को कलंकित होकर इंगलैंड छोड़ना पड़ा। तुम दोनों अभिन्न थे। एड्रियन सिंगलिटन और उसका भयानक अन्त? लार्ड केन्ट के इकलौते पुत्र और उसके जीवन का क्या हुआ! कल सेन्ट जेम्स स्ट्रीट में उसके पिता से मै मिला था। लज्जा और दुख से विह्वल प्रतीत होता था। पर्थ के तरुण ड्यूक को क्या हुआ? अब उसका जीवन कैसा है? कौन सज्जन उसका साथ देगा?'

'ठहरो, बेसिल! जिनके विषय में तुम कुछ नहीं जानते उनकी बातें कर रहे हो!"—ओठ काटते तथा स्वर में असीम घृणा भरे हुए डोरियन ने कहा—'तुम पूछते हो कि मेरे प्रवेश करने पर वरविक कमरा क्यों छोड़ देता है! यह इसलिए कि मैं उसके जीवन के विषय में सब कुछ जानता हूँ। उसकी शिराओं में जैसा रक्त प्रवाहित हो रहा है, उसमे उसका चरित्र निर्मल हो ही कैसे सकता था। तुम मुझ से हेनरी एशटन और तरुण पर्थ के विषय में पूछते हो। एक के बुरे कर्म और दूसरे की लम्पटता का शिक्षक मैं ही था? केन्ट का मूर्ख पुत्र यदि सड़क से अपनी पत्नी चुनता है तो उससे मुझे क्या? यदि एड्रियन सिंगिलिटन बिल पर अपने मित्र का नाम लिख देता है तो उसका उत्तरदायित्व मुझ पर है? मैं जानता हूँ कि इंगलैंड में कैसी बातें की जाती हैं। मध्य वर्ग अपने नैतिक द्वेषों के उद्गार भोजन की रद्दी मेजों पर निकालते हैं और उच्च वर्गवालों के कथित दुराचारों के विषय में इसलिए फुसफुसाते हैं कि अपने आपको

कठोर समाज से सम्बन्धित तथा निंदित व्यक्तियों का नैकट्य दिखाने का प्रयत्न और बहाना कर सकें। इस देश में उसके विरुद्ध प्रत्येक साधारण जिह्वा के हिलने के लिए व्यक्ति का विशेषता और मस्तिष्क से सम्पन्न होना पर्याप्त है। और ये व्यक्ति जो नैतिक होने का ढोंग करते हैं, स्वयं कैसा जीवन व्यतीत करते हैं ? मेरे प्यारे, तुम भूलते हो कि हम लोग पाखन्डियों के जन्म-स्थान में रहते हैं।'

'डोरियन'—हावर्ड चिल्लाया—'प्रश्न यह नहीं है। इंगलैंड बहुत खराब है, मैं जानता हूँ, और अंग्रेजी समाज पूर्णतया दोषी है। इसी कारण मेरी यह इच्छा है कि तुम अच्छे बनो। तुम अच्छे नहीं रहे। एक मनुष्य को उसके मित्रों पर पड़े प्रभाव द्वारा परखा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि तुम तो सम्मान, सज्जनता और पवित्रता को खो ही बैठे हो। तुमने उन्हें आनन्द के पीछे पागल कर दिया है। वे पतन के गर्त में गिर गये हैं। उन्हें वहाँ तुम्हीं ने पहुँचाया है। हाँ, तुमने पहुँचाया है और फिर भी तुम मुस्करा सकते हो, जैसे इस समय मुस्करा रहे हो। और इसके बाद तो और भी बुरा है। मैं जानता हूं कि तुम और हेनरी अभिन्न हो। यदि और किसी कारण नहीं तो निश्चय ही इसीलिए तुम्हें उसकी बहिन के नाम को जन-प्रवाद का विषय नहीं बनाना था !'

'सावधान, बेसिल ! तुम सीमा का अतिक्रमण कर रहे हो।'

'मुझे अवश्य कहना चाहिए और तुम्हें अवश्य सुनना चाहिए। तुम्हें सुनना होगा। लेडी ग्वेन्डोलेन से जब तुम्हारी भेंट हुई थी तब तक कलंक की हवा तक उसे न लगी थी। लन्दन में ऐसी कोई भी भली स्त्री है जो उसके साथ पार्क में सैर करने जाय ? स्वयं उसके बच्चे भी उसके साथ नहीं रखे जाते, क्यों ? इनके अतिरिक्त और भी बहुत सी कहानियाँ हैं—कहानियाँ कि तुम प्रातःकाल भयानक स्थानों से सिसकते हुए और लन्दन के निकृष्टतम अड्डों में वेष बदलकर चुपके से सरकते हुए देखे गये ! क्या वे सच हैं ? क्या वे सच हो सकती हैं ? पहली बार जब मैंने उन्हें सुना था, मैं हँसा था। अब जब सुनता हूँ तो कंपित हो उठता हूँ। तुम्हारे देहाती मकान का क्या हाल है और वहाँ का जीवन क्या है ? डोरियन तुम जानते कि तुम्हारे विषय में क्या कहा जाता है। मैं नहीं कहूँगा कि मेरा

अभिप्राय तुम्हें उपदेश देने का नहीं है। हेनरी का एक बार का कथन मुझे याद है कि तत्काल शौकीन प्रबन्धक बन जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति सदैव यही कहकर आरम्भ करता है और तदुपरान्त अपना वचन भंग करने लगता है। मैं तुम्हें उपदेश देने की इच्छा रखता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा जीवन ऐसा हो कि तुम्हें संसार का आदर प्राप्त कराये। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा नाम निष्कलंक हो और कार्य अच्छे। मैं चाहता हूँ कि तुम उन भयानक व्यक्तियों से अलग हो जाओ जिनकी संगत में रहते हो। कन्धों को इस प्रकार न उचकाओ। इतने उदासीन न होओ। तुम्हारा प्रभाव अनोखा है। इसका प्रयोग अच्छे में करो, बुरे में नहीं। यह कहा जाता है कि जिस किसी से तुम्हारी घनिष्ठता होती है तुम उसी को बिगाड़ देते हो, किसी लज्जास्पद बात के घटित होने के लिए किसी मकान में तुम्हारा प्रवेश पर्याप्त है। मैं नहीं जानता कि ऐसा है अथवा नहीं मैं जानूँ ही कैसे ? किन्तु तुम्हारे विषय में ऐसा कहा जाता है। मुझे ऐसी बातें बतायी गयी हैं जिनपर सन्देह करना सम्भव नहीं प्रतीत होता। लार्ड ग्लाडसेस्टर आक्सफोर्ड के मेरे परम मित्रों में से था। मेन्टोन के अपने बंगले में एकाकी मरते समय अपनी पत्नी का लिखा हुआ पत्र उसने मुझे दिखलाया। जैसी कदाचित् ही पढ़ी होगी ऐसी अत्यन्त भयानक स्वीकारोक्ति में तुम्हारा नाम सम्मिलित था। मैंने उसे बतलाया कि यह वाहियात है क्योंकि मैं तुम्हें पूर्णतया जानता हूँ और ऐसी कोई बात तुमसे कभी सम्भव नहीं हो सकती। तुम्हें जानता हूँ ? आश्चर्य है, क्या मैं तुम्हें जानता हूँ ? इसका उत्तर देने से पूर्व मुझे तुम्हारी आत्मा देखनी चाहिए।'

'मेरी आत्मा देखोगे !'—सोफे से उचकते हुए और भय से लगभग श्वेत पड़ते हुए डोरियन ग्रे बड़बड़ाया।

'हाँ'—हावर्ड ने गंभीरता तथा दुखपूर्ण स्वर में उत्तर दिया—'तुम्हारी आत्मा का अवलोकन ! किन्तु वैसा ईश्वर के लिए ही सम्भव है।'

अल्प-वयस्क के अधरों से खिल्ली भरा तीव्र हास्य फूट पड़ा। 'इस रात तुम स्वयं ही देखोगे !'—मेज से लैम्प उठाते हुए वह चिल्लाया—

'आओ, यह तुम्हारी ही करतूत है ! तुम इसे क्यों न देखो ? चाहो तो बाद में यह सभी कुछ दुनिया को बता डालना। कोई भी तुम्हारा विश्वास न करेगा। यदि उन्होंने तुम्हारा विश्वास किया भी तो इसी कारण मुझे और अधिक अच्छा समझेंगे। यद्यपि तुम इसके विषय में थका डालनेवाली बक-बक करोगे, किन्तु तुम्हारी अपेक्षा दुनिया को मैं अधिक अच्छी तरह जानता हूँ। आओ, मैं तुम्हें बतलाऊँ। पतन के विषय में तुमने बहुत कुछ कह लिया। अब तुम इसे मुँह-दर-मुँह देखो।'

उसके प्रत्येक शब्द में अहंकार का पागलपन था। मूर्ख लड़कों जैसे ढँग में उसने पृथ्वी पर पैर पटके। उसे घोर प्रसन्नता हुई कि अब कोई अन्य भी उसके रहस्य से परिचित होगा, कि उसकी लज्जा के मूल जिस चित्र को जिस व्यक्ति ने बनाया था, जीवन पर्यन्त के लिए वह अपने कर्म के स्मृति-भार से दबा रहेगा।

'हाँ'—उसके निकट आते हुए तथा उसकी कठोर आँखों में दृढ़ता-पूर्वक देखते हुए उसने पुनः कहा—'मैं तुम्हें अपनी आत्मा दिखलाऊँगा। तुम वह देखोगे जिसे तुम्हारी समझ में केवल ईश्वर ही देख सकता है।'

हावर्ड चिहुँककर पीछे हट गया। 'यह निन्दा है, डोरियन !'—वह चिल्लाया—'तुम्हें वैसी बातें नहीं करनी चाहिएँ। वे भयानक हैं और कुछ अर्थ नहीं रखतीं।'

'तुम ऐसा सोचते हो ?'—वह पुनः हँसा।

'मैं ऐसा ही जानता हूँ। आज रात जो कुछ मैंने तुमसे कहा तुम्हारे ही भले के लिए कहा। तुम जानते हो कि मैं सदैव ही तुम्हारा पक्का दोस्त रहा हूँ।'

'मुझे स्पर्श न करो ! जो कुछ तुम्हें कहना है उसे कह डालो।'

चित्रकार के मुख पर पीड़ा की मरोड़ कौंध-सी गयी। क्षणभर वह रुका और दया की तीव्र भावना उस पर छा गयी। आखिर डोरियन के जीवन के विषय में पूछताछ करने का उसे क्या अधिकार था ? उसके विषय में जो जन-प्रवाद है उसका दशमांश भी यदि उसने किया होगा तो स्वयं उस पर कैसी बीती होगी। तब वह तनकर खड़ा हो गया, चलकर अँगीठी के पास आया और वहाँ खड़ा होकर पाले जैसी राख तथा उसकी भीतरी

कँपती-सी लपट से युक्त जलती हुई लकड़ी के कुन्दे देखता रहा।

'मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ, बेसिल !'—तरुण ने कठोर, स्पष्ट स्वर में कहा।

वह घूमा। 'मुझे जो कहना है वह यह है'—उसने तीव्र स्वर में कहा—'तुम्हारे विरुद्ध जो ये भयानक आरोप हैं उनका कुछ उत्तर तुम मुझे दो। यदि तुम कह दो कि वे आदि से अन्त तक मिथ्या हैं, मैं तुम्हारा विश्वास कर लूँगा। तुम उन्हें अस्वीकार कर दो डोरियन, अस्वीकार कर दो ! क्या तुम नहीं देखते कि मुझ पर कैसी बीत रही है? मेरे भगवान् ! मुझे यह बतलाना कि तुम बुरे हो, पतित हो और लज्जास्पद हो।'

डोरियन ग्रे मुस्कराया। उसके अधरों में घृणा की मरोड़ थी। 'ऊपर आओ, बेसिल,'—उसने शान्तिपूर्वक कहा। 'दैनिक दिनचर्या की मैंने एक डायरी बना रखी है और जिस कमरे में यह लिखी जाती है वहाँ से कभी नहीं हटती। मेरे साथ आओ तो तुम्हें दिखाऊँ।'

'तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो मैं तुम्हारे साथ आऊँगा। मैं देखता हूँ कि मेरी गाड़ी छूट चुकी है। इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। मैं कल जा सकता हूँ। किन्तु इस रात मुझसे कुछ भी पढ़ने के लिए मत कहो। अपने प्रश्न का मैं केवल स्पष्ट उत्तर चाहता हूँ।'

'वह तुम्हें ऊपर दे दिया जायगा। मैं यहाँ नहीं दे सकता। तुम्हें देर तक न पढ़ना पड़ेगा।'

१३

वह कमरे के बाहर निकला और ऊपर चढ़ने लगा, बेसिल हावर्ड उसका अनुसरण कर रहा था। वे पैर दबाकर चल रहे थे, जैसा कि मनुष्य रात्रि के समय स्वभावतः करते हैं। लैम्प के कारण दीवाल तथा सीढ़ियों पर अद्भुत छायाएँ पड़ रही थीं। हवा के एक झोंके ने कुछ खिड़कियों को खड़खड़ा दिया।

जब वे अंतिम सीढ़ी पर पहुँचे, डोरियन ने लैम्प फर्श पर रख दिया और कुञ्जी निकालकर उसे ताले में घुमा दिया—'तुम जानना ही चाहते हो, बेसिल ?'—उसने धीमे स्वर में पूछा।

'हाँ।'

'मुझे प्रसन्नता है।'—मुस्कराते हुए उसने उत्तर दिया। फिर वह कुछ कठोर स्वर में बोला—'संसार में तुम्हीं अकेले व्यक्ति हो जिसे मेरे विषय में सब कुछ जानने का अधिकार है। तुम जितना सोचते हो उससे कहीं अधिक तुम्हारा सम्बन्ध मेरे जीवन से रहा है।'—लैम्प को उठाते हुए उसने द्वार खोला और अन्दर प्रवेश किया। शीतल समीर का एक झोंका उनके समीप से निकला और प्रकाश क्षण भर के लिए बढ़कर धुँधली नारंगी शिखा के रूप में हो गया। 'अपने पीछे का द्वार बन्द कर दो।'—मेज पर लैम्प रखते हुए वह फुसफुसाया।

हावर्ड की व्याकुल दृष्टि अपने चारों ओर घूमी। कमरा ऐसा प्रतीत होता था मानो वर्षों से इसमें कोई न रहा हो। फ्लैण्डर्स का बना एक धूंधला दीवाल का चित्रित कपड़ा, पर्दे से ढँका एक चित्र, इटली का बना एक पुराना कैसोन और किताबों की एक रिक्तप्राय आलमारी—बस एक कुर्सी और एक मेज के अतिरिक्त उसमें कुल यही सामान प्रतीत होता था। अग्निकुण्ड के चौखटे पर रखी एक अधजली मोमबत्ती को डोरियन ग्रे ने जैसे ही जलाया, उसने देखा कि समस्त स्थान धूल से आच्छादित है और कालीन में छेद हैं। भीतरी दीवाल की आड़ में धक्का देता हुआ एक चूहा भागा। वहाँ सीलन की खुम्मी जैसी गंध आ रही थी।

'बेसिल, तो तुम सोचते हो कि आत्मा का दर्शन केवल परमात्मा ही कर सकता है? उस पर्दे को पीछे हटा दो और तुम मेरी आत्मा देख सकोगे।'

बोलनेवाला स्वर तीखा और क्रूर था।

'डोरियन, तुम पागल हो गये हो अथवा अभिनय कर रहे हो।' हावर्ड ने भृकुटि चढ़ाते हुए कहा।

'तुम नहीं हटाओगे? तब मैं स्वयं हटाऊँगा।'—तरुण ने कहा और पर्दे को छड़ से अलग खींचकर पृथ्वी पर फेंक दिया।

धुँधले प्रकाश में कैनवास पर के भयानक मुख को अपनी ओर घृणा-पूर्ण मुद्रा में ताकते देखते ही चित्रकार के अधरों से एक भयकातर चीत्कार फूट पड़ी। उसकी मुद्रा कुछ ऐसी थी जिसने उसे अरुचि और घृणा से भर दिया। ओह, भगवन्! यह डोरियन ग्रे का ही चेहरा था

जिसे वह देख रहा था ! वह जो कुछ भी भयानकता थी उस अनोखे सौंदर्य को नष्ट न कर पायी थी। उसके पतले बालों में अब भी कुछ सुनहरापन था और विलासी मुख पर कुछ अरुणिमा शेष थी। शुष्क हो गये नेत्रों में उनकी नीलिमा का थोड़ा-सा आकर्षण अवशेष था, सुगठित नथुनों और प्लास्टिक जैसे कंठ की श्रेष्ठ रेखाएँ पूर्णतया धूमिल न हो पायी थीं। हाँ, यह स्वयं डोरियन ही था। किन्तु इसे बनाया किसने ? अपनी तूलिका की कारीगरी को वह पहिचान रहा था; और चौखटे की रूपरेखा उसी की थी। भावना निर्दय थी, देखकर वह भयभीत हुआ। जलती हुई मोम-बत्ती को उसने उठा लिया और चित्र के सामने कर दिया। बायें कोने में चमकते हुए सुर्ख लम्बे अक्षरों में उसी का नाम अंकित था।

यह कोई अनुचित व्यंग्यार्थ था, कोई तुच्छ, हीन हास्य था। उसने वैसा कभी नहीं बनाया था। फिर भी यह चित्र उसी का था। वह यह जानता था और उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि क्षणभर में ही उसके रक्त की उष्णता गतिहीन हिम में परिवर्तित हो गयी है। उसी का चित्र ? यह क्या अर्थ रखता है ? यह परिवर्तित क्यों हो गया ? वह घूमा और रोगी जैसी आँखों से डोरियन ग्रे को देखा। उसके मुख ने झटका खाया और उसकी झुलसी जिह्वा से स्वर का फूटना असम्भव प्रतीत हुआ। उसने अपने माथे पर हाथ फेरा। वह चिपचिपे पसीने से तर था।

उस तरुण ने अग्निकुण्ड का सहारा ले रखा था, उसकी दृष्टि में वह अनोखी भावना थी जो किसी महान् कलाकार के अभिनय को एकाग्र-चित्त होकर देखने वालों के चेहरों पर होती है। वहाँ न दुख की छटा थी, न प्रसन्नता की। वहाँ केवल दर्शकी भावना थी और आँखों में संभवतः विजय की एक क्षीण ज्योति। उसने कोट से पुष्प निकाल लिया था और उसे सूँघ रहा था या सूँघने का बहाना कर रहा था।

'इसका क्या अर्थ है ?'—हाबर्ड अंत में चिल्लाया। अपना स्वर उसे स्वयं अपने ही कानों को तीखा और विचित्र सुनायी दिया।

'कई बर्ष बीते, जब मैं लड़का था,'—हाथ के पुष्प को मसलते हुए डोरियन ग्रे ने कहा—'तुम मुझे मिले, मेरी अतिशय प्रशंसा की और मुझे अपने सौंदर्य पर गर्व करना सिखाया। एक दिन तुमने अपने एक मित्र

से मेरा परिचय कराया, उसने मुझे तारुण्य की विशेषतायें समझायीं और तुमने मेरा ऐसा चित्र बनाया जिसने मेरे समक्ष अनोखा सौंदर्य प्रत्यक्ष कर दिया। पागलपन के एक क्षण में, जिसके लिए मुझे अब भी पछतावा है या नहीं यह मैं नहीं जानता, मैंने एक इच्छा की, सम्भवतः तुम इसे एक प्रार्थना कहो···'

'मुझे याद है ! ओह, मुझे इसकी कितनी अच्छी तरह याद है ! नहीं, वैसा होना सम्भव नहीं ! कमरे में सीलन है। कैनवास में खुम्भी व्याप्त हो गयी है। मैंने जो रंग प्रयुक्त किये थे उनमें निकृष्ट खनिज विष था। मैं कहता हूँ वैसा होना असम्भव है।'

'आह, क्या असम्भव है ?'—खिड़की की ओर जाते और शीतल, तुषारसिक्त शीशे पर अपना सिर टिकाते हुए उस तरुण व्यक्ति ने धीमे स्वर में पूछा।

'तुमने कहा था कि तुमने इसे नष्ट कर दिया था।'

'मैंने गलत कहा था। इसने मेरा विनाश कर दिया।'

'मुझे विश्वास नहीं होता कि यह चित्र मेरा है।'

'क्या तुम्हें अपना आदर्श इसमें दृष्टिगोचर नहीं होता ?'—डोरियन ने कटु स्वर में कहा।

'मेरा आदर्श, जैसा कि तुम कहते हो·····।'

'जैसा तुम कहते थे।'

'इसमें कुछ भी बुरा नहीं था, कुछ भी लज्जास्पद नहीं था। तुम मेरे लिए ऐसे आदर्श थे जैसा मुझे कभी न मिल सकेगा। यह एक सैटर[1] की मुखाकृति है।'

'यह मेरी आत्मा की मुखाकृति है।'

'भगवन् ! मैंने किसे पूजा ! इसकी आँखें शैतान की हैं।'

'हम में से प्रत्येक में स्वर्ग और नरक है, बेसिल !'—निराशा की तीव्र भाव-भंगिमा में डोरियन ने कहा।

---

१. एक वन-देवता जिसका ऊपरी भाग मनुष्य का और निचला धड़ बकरे का वर्णित है।

हावर्ड चित्र की ओर पुनः मुड़ा और उसका निरीक्षण किया। 'हे भगवन्! यदि यह सच है,'—वह बोला—'और तुमने जीवन के साथ यही किया है तब तो तुम्हारे विरुद्ध कहनेवाले तुम्हें जितना अनुमानते हैं तुम उससे भी बुरे होगे!' उसने कैनवास पर पुनः प्रकाश डाला और उसे ध्यान से देखा। सतह अछूती प्रतीत होती थी और जैसी उसने छोड़ी थी वैसी ही थी। स्पष्टतः यह नीचता और भयानकता अन्दर से ही प्रकट हुई थी। आन्तरिक जीवन की किसी अद्भुत गति के कारण पाप का कोढ़ इसे खाये जा रहा था। पानी से भरी कब्र में विनष्ट होता शव इतना डरावना नहीं होता।

उसका हाथ काँपा, मोमबत्ती अपने आधार से फर्श पर गिर पड़ी और वहीं पड़ी टपकती रही। अपना पैर रखकर उसने उसे बुझा दिया। फिर मेज पर रखी हुई जीर्ण कुर्सी पर जा बैठा और हाथों में अपना मुख ढाँप लिया।

'हे भगवन्! डोरियन, यह कैसी शिक्षा! कितनी भयानक शिक्षा!' उसे उत्तर न मिला, किन्तु खिड़की पर तरुण का रोदन सुनायी दे रहा था। 'प्रार्थना करो डोरियन, प्रार्थना'—वह फुसफुसाया—'बचपन में क्या कहना सिखलाया गया था? "मोह में हमें मत डालो, हमारे पापों को क्षमा करो, हमारी दुष्टताओं को दूर बहा दो।" हम दोनों वही कहें। तुम्हारे गर्व की प्रार्थना सुन ली गयी, प्रायश्चित्त की प्रार्थना भी स्वीकृत होगी। मैं तुम्हें बहुत मानता था। हम दोनों को दण्ड मिला।'

डोरियन ग्रे धीरे से घूमा और अश्रु-धूमिल नेत्रों से उसे देखा, 'बहुत देर हो चुकी है, बेसिल!'—वह लड़खड़ाया।

'बहुत देर कभी नहीं होती! डोरियन, यदि प्रार्थना याद नहीं आती तो हम झुककर ही बैठें। कहीं ऐसा पद्य है न—तुम्हारे पाप कितने भी लाल हों, मैं उन्हें हिमवत श्वेत कर दूँगा?'

'वे शब्द अब मेरे लिए कोई अर्थ नहीं रखते।'

'हुश! ऐसा न कहो। तुमने जीवन में बहुत कुछ बुरा किया है। ओह, उस अपदस्थ को अपनी ओर कनखियों से देखते हुए क्या तुम नहीं देख रहे?'

डोरियन ग्रे ने चित्र पर दृष्टि फेंकी और अचानक ही बेसिल हालवर्ड के लिए एक अदम्य घृणा-भावना उस पर छा गयी, मानो कैनवास की मूर्ति ने उसे संकेत किया हो अथवा उन घृणापूर्ण अधरों ने उसके कानों में फुसफुसा दिया हो। वध्य पशु जैसा आक्रोश उसके अन्तर में हिलोरें ले उठा और कुर्सी पर बैठे हुए व्यक्ति के लिए उसे जितनी घृणा हुई उतनी अपने जीवन में उसे किसी के लिए नहीं हुई। उसकी बर्बर दृष्टि चारों ओर घूम गयी। सामने रखे पेंट किये हुए बड़े बॉक्स पर कुछ चमका। वह जानता था यह क्या था। यह एक चाकू था जिसे कुछ पहिले वह डोरी का टुकड़ा काटने के लिए लाया था और ले जाना भूल गया था। हालवर्ड के पास से निकलता हुआ वह धीरे से उस ओर बढ़ा। उसके पीछे पहुँचते ही उसने उसे उठा लिया और घूमा। हालवर्ड कुर्सी पर हिला, मानो उठ रहा हो। वह उस पर झपटा और कान के पीछे की बड़ी नस में चाकू भोंक दिया। उस मनुष्य का सिर मेज पर कुचल डाला और बारंबार प्रहार करता रहा।

गला घुटने और रक्त में किसी का श्वास रुद्ध होने का स्वर हुआ। फैले हुए हाथ तीन बार शीघ्रता से ऊपर उठे, कठोर अँगुलियों वाले विलक्षण हाथ शून्य में घूमे। उसने दो बार और आघात किया, किन्तु वह मनुष्य हिला नहीं। कुछ बूँद-बूँद करके फर्श पर टपकने लगा। सिर को अब भी दबाये हुए वह क्षणभर रुका। फिर उसने चाकू मेज पर फेंक दिया और कान लगाये।

फर्श पर टप-टप के अतिरिक्त वह और कुछ न सुन सका। उसने द्वार खोला और सीढ़ी पर जा पहुँचा। घर पूर्णतया नीरव था। वहाँ कोई न था। कुछ क्षण वह लोहे के छड़ से मिले हुए छोटे खंभों की पंक्ति पर झुका खड़ा रहा और नीचे घने अन्धकार के कूप में झाँकता रहा। फिर उसने कुञ्जी निकाली और कमरे में आकर बन्द हो गया। मेज पर फैलकर सिर झुकाये, पीठ पर कुब्बड़ बनाये और लम्बे विचित्र हाथ फैलाये वह वस्तु (शव) अब भी कुर्सी पर स्थित थी। ग्रीवा में लाल दाँतेदार घाव और मेज पर धीरे-धीरे बढ़ता हुआ थक्के जैसा काला रक्त यदि न होता तो कोई भी कह सकता था कि वह मनुष्य केवल निद्रित है।

कितनी शीघ्रता से सब कुछ हो गया था ! वह अनोखी शान्ति अनुभव कर रहा था, खिड़की के पास आकर उसने उसे खोला और बाहर निकलकर बालकनी पर आ गया। वायु ने ठंडक भगा दी थी, और आकाश ऐसा प्रतीत होता था मानो एक विशालकाय मोर की पूँछ में असंख्य सुनहरी आँखें जड़ी हों। उसने नीचे दृष्टि फेंकी और पुलिसमैन को अपनी गश्त पर जाते तथा अपनी लालटेन का लम्बा प्रकाश शान्त घरों के द्वार पर डालते हुए देखा। कोने पर एक रेंगती हुई हैन्सम गाड़ी का लाल अंग चमका और ओझल हो गया। एक स्त्री फड़फड़ाता हुआ शाल ओढ़े धीरे-धीरे लड़खड़ाती रेलिंग के किनारे चली जा रही थी। जब तक वह रुकती थी और पीछे देखती थी। एक बार वह फटे स्वर में गाने लगी। पुलिसमैन निकट गया और उसने कुछ कहा। हँसती हुई वह लड़खड़ाकर चली गयी। एक प्रचंड झोंका स्क्वायर में घुस गया। गैस की बत्तियाँ चमककर नीली हो गयीं और पत्र-विहीन वृक्षों की काली लौह-शाखाएँ इधर-उधर हिल उठीं। वह काँप गया और लौटकर खिड़की बन्द कर ली।

द्वार पर पहुँचकर उसने कुञ्जी घुमायी और द्वार खोल लिया। बधित मनुष्य पर उसने दृष्टि तक न डाली। वह अनुभव कर रहा था कि परिस्थिति को अनदेखी करने में ही उसका कल्याण निहित है। जिस घातक चित्र पर उसकी समस्त दुरावस्था निर्भर थी उसे चित्रित करनेवाला मित्र मर चुका था। इतना ही पर्याप्त था।

फिर उसे लैम्प की याद आयी। चमक-विहीन रजत और अन्दर लगे अनोखे चमकदार इस्पात की बनी तथा रत्नों से जड़ी मूरलैंड की यह एक अनोखी कारीगरी थी। सम्भव है कि सेवक इसे खोजे और तब इसके विषय में पूछताछ हो। क्षणभर वह झिझका, फिर पीछे घूमकर उसने इसे मेज से उठा लिया। शव को देखे बिना वह न रह सका। वह कितना गतिहीन था ! लम्बे हाथ कितने श्वेत दिखायी देते थे। वह मोम की भयानक मूर्ति जैसा था।

द्वार बन्द करके वह दबे पाँव सीढ़ी से उतरने लगा। लकड़ी की सीढ़ियाँ चीं-चीं कर उठीं, मानो पीड़ा में चीख रही हों। वह कई बार

रुका और प्रतीक्षा की। नहीं, सब कुछ शान्त था। यह केवल उसी का पद-चाप था।

पुस्तकालय में पहुँचने पर उसे कोने में रखे हुए बैग और कोट दिखायी दिये। इन्हें कहीं अवश्य छिपाना चाहिए। अपने विचित्र वेशों का सामान वह जहाँ रखता था दीवाल के उसी गुप्त भीतरी आले को उसने खोला और उन्हें वहीं रख दिया। बाद में वह इन्हें सरलता से जला सकेगा। तब उसने अपनी घड़ी निकाली। दो बजने में बीस मिनट थे।

वह बैठ गया और सोचने लगा। प्रत्येक वर्ष—लगभग प्रत्येक महीने, इंगलैंड में उसके कृत्यों के लिए मनुष्यों को फाँसी लगती थी। हत्या का वातावरण व्याप्त था। कोई लाल तारा पृथ्वी के अत्यन्त समीप आ गया था·····फिर भी उसके विरुद्ध कौनसा प्रमाण था? बेसिल हावर्ड ग्यारह बजे घर से चला गया था। उसे पुनः अन्दर आते हुए किसी ने नहीं देखा। अधिकांश सेवक सेल्बी रायल गये हुए थे। उसका सेवक सोने चला गया था।·····पेरिस! हाँ, अपने विचारानुसार अर्धरात्रि की ट्रेन से वह पेरिस ही तो चला गया। उसके विचित्र एकान्तिक स्वभाव के कारण संदेह होते-होते भी महीने लग जायँगे। महीने! तब से बहुत पूर्व ही सभी कुछ नष्ट हो सकता है।

अचानक एक विचार आया। उसने रुँएदार लबादा तथा हैट धारण किया और हॉल में चला गया। बाहर के चबूतरे पर पुलिसमैन की धीमी किन्तु भारी पदचाप सुनकर तथा खिड़की पर चमक का प्रतिबिम्ब देखकर वह वहीं रुक गया। उसने प्रतीक्षा की और अपनी साँस रोकी।

कुछ क्षण बाद उसने सिटकनी खोली और द्वार को धीमे-से बन्द करके वह बाहर खिसक गया। फिर वह घंटी बजाने लगा। लगभग पाँच मिनट में उसका सेवक अधनंगा और उनींदा-सा आया।

'मुझे खेद है कि तुम्हें जगाना पड़ा, फ्रांसिस!'—अन्दर प्रवेश करते हुए उसने कहा—'किन्तु मैं कुञ्जी भूल गया था। क्या बजा है?'

'दो बजकर दस, सरकार!'—घड़ी पर दृष्टि फेंकते और चिमचिमाते हुए उस मनुष्य ने उत्तर दिया।

'दो बजकर दस मिनट! इतनी देर हो गयी! तुम मुझे कल नौ

बजे अवश्य जगा देना। मुझे कुछ काम करना है।"

'बहुत अच्छा सरकार!'

'आज शाम कोई आया?'

'मि० हावर्ड, सरकार! वे यहाँ ग्यारह बजे तक ठहरे और तब ट्रेन पकड़ने चले गये।'

'ओह, मुझे दुख है कि मैं मिल न सका। कोई संदेशा छोड़ गये?'

'नहीं सरकार, सिर्फ यही कि यदि आपको क्लब में न पा सके तो पेरिस से लिखेंगे।'

'ठीक है, फ्रांसिस! कल नौ बजे मुझे जगाना न भूलना।'

'नहीं, सरकार!'

स्लीपर पहिने हुए वह व्यक्ति भद्दी चाल से नीचे चला गया।

डोरियन ग्रे ने अपने हैट तथा कोट मेज पर फेंक दिये और पुस्तकालय में जा पहुँचा। लगभग चौथाई घंटे तक वह अपने ओठ चबाता और सोचता हुआ इधर से उधर चहल-कदमी करता रहा। तब उसने पुस्तकों की आलमारी से नीली पुस्तक निकाली और पृष्ठ उलटने लगा। 'एलन कैम्पबेल, १५२, हर्टफोर्ट स्ट्रीट, मेफेयर।' हाँ, उसे इसी मनुष्य की आवश्यकता है।

१४

दूसरे दिन प्रातः नौ बजे एक ट्रे पर चाकलेट का प्याला रखे हुए उसके सेवक ने प्रवेश किया और झिलमिलियाँ खोल दीं। डोरियन दाहिनी ओर करवट लिये और कपोल के नीचे एक हाथ रखे हुए अत्यन्त शान्ति-पूर्वक सो रहा था। वह एक ऐसे बच्चे जैसा दिखाई देता था जो खेल अथवा पढ़ाई से थक चुका हो।

सेवक के दो बार कंधा स्पर्श करने पर ही वह जागा और जैसे ही उसने आँखें खोलीं एक हल्की-सी मुस्कान उसके अधरों पर खेल गयी, मानो वह किसी आनन्दपूर्ण स्वप्न में मग्न रहा हो। पर उसने कोई भी स्वप्न न देखा था। आनन्द अथवा पीड़ा किसी की मूर्तियों ने उसकी रात्रि को अशान्त न किया था। किन्तु तारुण्य अकारण ही मुस्कराता है। यह इसका प्रमुखतम आकर्षण है।

वह घूमा और कुहनी पर झुककर चाय की चुस्की लेने लगा। नवम्बर का आनंदप्रिय सूर्य कमरे में वेग से बढ़ता चला आता था। आकाश खुला हुआ था और पवन में आनन्ददायक उष्णता थी। मई के प्रातःकाल जैसा ही यह दिन था।

धीरे-धीरे पिछली रात की घटनाएँ धीमे रक्त-रंजित पग धरती हुई उसके मस्तिष्क में प्रविष्ट हो गयीं और वहाँ भयानक सुस्पष्ट आकार धारण कर लिया। जो कुछ उस पर बीती थी उसकी स्मृति ने उसे पीड़ित किया और क्षणभर के लिए बेसिल हावर्ड के प्रति वही घृणापूर्ण भावना उस पर छा गयी जिसके कारण उस कुर्सी पर बैठे हुए को उसने मार डाला था। भावावेग ने उसे कठोर बना दिया। मृत व्यक्ति अब भी वहीं बैठा था और अब तो धूप फैल चुकी थी। यह कितना भयानक था। ऐसी भयानक बातें अंधकार के लिए होती हैं, दिन के लिए नहीं।

उसने अनुभव किया कि जो कुछ हो चुका है उसी की उसने यदि चिन्ता की तो वह बीमार अथवा पागल हो जायगा। बहुत से पापों का मोह व्यवहार की अपेक्षा मानसिक अधिक होता है। आवेगों की अपेक्षा विचित्र सफलताओं की स्मृति गर्व को अधिक तृप्त करनेवाली और इन्द्रियों के लिए जुटाने अथवा जुटा सकनेवाले किसी भी आनन्द की अपेक्षा मस्तिष्क को अधिक तीव्र आनन्दानुभूति देती है। किन्तु यह उनमें से एक भी न थी। यह भुला देने योग्य वस्तु थी, पापीज के पुष्पों में मिला देने योग्य, कहीं दम न घोंट बैठे इसलिए समाप्त कर देने योग्य!

घंटे का अद्धा जैसे ही बजा, उसने माथे पर हाथ फेरा, शीघ्रता से उठ बैठा तथा नेकटाई और स्कार्फपिन के पसन्द करने में पर्याप्त ध्यान देने और अँगूठियों को बार-बार बदलकर सुसज्जित होने में प्रतिदिन की अपेक्षा अधिक सावधानी बरती। विभिन्न वस्तुओं का स्वाद लेते, सेल्बी में अपने सेवकों के लिए नयी वर्दियाँ बनवाने के विषय में सेवक से बातें करते तथा पत्रों को पढ़ते हुए उसने जलपान में बहुत समय बिता डाला। कुछ पत्रों को पढ़ते समय वह मुस्कराया। तीन में वह ऊब उठा। एक को उसने कई बार पढ़ डाला और फिर मुख पर कुछ क्रोध का भाव लाते हुए उसे फाड़ डाला। 'यह भयानक वस्तु, एक नारी को यादगार!'—

जैसा कि लार्ड हेनरी ने एक बार कहा था।

काली काफी का प्याला पीकर उसने एक रूमाल से ओठ पोंछे, सेवक को रुकने का संकेत किया, मेज के पास जाकर बैठ गया और दो पत्र लिख डाले। एक उसने अपनी जेब में रख लिया और दूसरा सेवक को दे दिया।

'फ्रांसिस, इसे १५२, हर्टफोर्ड स्ट्रीट ले जाओ और मि० कैम्पबेल यदि शहर से बाहर गये हुए हों तो उनका पता ले लेना।'

जब वह अकेला रह गया, उसने एक सिगरेट सुलगायी और एक कागज के टुकड़े पर फूल, शिल्प के नमूने और फिर मानव-मुखाकृतियों के स्केच (रेखाचित्र) बनाने लगा। अचानक ही उसने देखा कि जो भी मुखाकृति वह बनाता है उसमें बेसिल हालवर्ड का विचित्र सादृश्य होता है। उसकी भृकुटि तन गयीं, उठकर वह पुस्तकों की आलमारी के पास गया और योंही एक किताब निकाल ली। उसने निश्चय कर लिया था कि जब तक अनिवार्य न हो जाय वह घटित घटना के विषय में न सोचेगा। सोफे पर पड़ जाने के बाद उसने पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर दृष्टि डाली। यह गाटियर की 'इमाक्स इट कैमीज'[1] थी, चारपेंटियर के जापानी कागज का संस्करण जैक्वी मार्ट की डिजाइन से सयुक्त। कुम्हड़े जैसे हरे रंग के चमड़े की उसकी जिल्द थी जिसपर सुनहरी जाली का काम और यत्र-तत्र बिंदु जैसे अनारों की डिजाइन बनी हुई थीं। यह उसे एड्रियन सिंगलटन ने दी थी। पृष्ठ पलटते ही उसकी दृष्टि लेसिनायर के हाथ से सम्बन्धित कविता पर पड़ी—कठोर पीला हाथ जिसे पर्याप्त दण्ड प्राप्त नहीं हुआ था, जिसके लाल बाल और अर्ध-मृग अर्ध मानव जैसी अँगुलियाँ नीचे की ओर लटकी हुई थीं। उसने अपनी नुकीली अँगुलियों पर दृष्टि डाली, अनायास ही काँप उठा और आगे बढ़ गया जब तक कि उसे वेनिस से सम्बन्धित प्यारी कविता न मिल गयी—

अर्ध पद राग पर
गिराती मोतियों को वक्ष से

---

१. छोटी कविताओं की एक प्रसिद्ध पुस्तक

एड्रियाटिक की देवी वीनस वह
उभरती थी जल से
श्वेत और गुलाबी काया ले।
चमकीली नीली लहरों के ऊपर के
गुम्बद (उस नगरी के)
करते थे अनुकरण बाह्य रेखाओं से शैली का;
फूले थे ऐसे
जैसे गोल कंठ भरते हों निश्श्वास प्रेम का!
नन्ही-सी नौका लगती है किनारे
और मुझको उतारती है
खम्भे पर रस्सी एक
फेंकी जा चुकी थी जहाँ,
सामने गुलाबी रंग के सुन्दर एक भवन के नीचे।
संगमर्मर की एक सीढ़ी के!

वे कितने मनोरम थे। उनको पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता था मानो रजत के अग्र भाग और पीछे पर्दों से युक्त गोंडोला[२] में बैठकर लाल और मोती जैसे शहर के हरे जलमार्गों में उतराने लगता हो। निरी पंक्तियाँ भी उसे नीलम जैसी नीली वे रेखाएँ प्रतीत होतीं जो लिडो की ओर बढ़ने पर अनुसरण करती हैं। रंग की आकस्मिक चमक उसे बदलते रंग दर्शाने वाले दूधिया पत्थर और आकर्षक पुष्प जैसे कंठोंवाली उन चिड़ियों की याद दिलाते जो लम्बे और शहर के छतों से युक्त घंटाघरों के चारों ओर फड़फड़ाती या अँधेरी, धूलभरी महराबों में होकर शान से चलतीं। अर्धोन्मीलित नेत्र किये पीछे टिककर रह अपने आप से ही बारम्बार कहने लगा—

सामने गुलाबी रंग के सुन्दर एक भवन के
नीचे संगमर्मर की एक सीढ़ी के!

---

२. वेनिस की नहरों में प्रयुक्त होने वाली लम्बी किन्तु कम चौड़ी नाव।

सम्पूर्ण वेनिस इन दो पंक्तियों में समाया हुआ था। उसे वहाँ व्यतीत किये हुए पतझड़ के मौसम और मतवाली तथा प्रसन्नतापूर्ण भूखताओं को प्रेरित करनेवाले अनोखे प्रेम का स्मरण हो आया। रोमांस सर्वत्र था। किन्तु आक्सफोर्ट के समान ही वेनिस में रोमांस के लिए वातावरण था और सच्चे रोमांस् प्रेमी के लिए वातावरण ही सब कुछ अथवा सभी कुछ के लगभग था। कुछ समय तक बेसिल उसके साथ था और टिनटोरेट ने उसे पागल कर दिया था। बेचारा बेसिल ! एक मनुष्य की मृत्यु का कितना भयानक ढंग था।

उसने निश्श्वास खींचा, पुस्तक पुनः उठा ली और भूल जाने की चेष्टा की। स्मरना के छोटे से जलपान गृह के भीतर-बाहर फुदकनेवाली बड़ी रंगीन तितलियों के विषय में उन्होंने पढ़ा, जहाँ बैठकर जड़जी अम्बर के गुरिया गिनते रहते हैं, साफा (पगड़ी) बाँधे हुए व्यापारों लम्बे रेशमी फुंदनोंवाली पाइप द्वारा धूम्रपान करते रहते है और एक दूसरे से गम्भीरतापूर्वक बातें करते हैं; प्लेसडिला कान्कार्डि में उस अब्लिस्क के विषय में पढ़ा जो सूर्यप्रकाश से हीन क्षेत्र में ग्रेनाइट[1] के अश्रु गिराता है और कमलों से ढकी नाइल (नदी) के समीप लौट जाने की इच्छा रखता है। जहाँ स्फिक्स[2] हैं, पानी में चलनेवाली गुलाब जैसी लाल चिड़िया हैं, चमकदाद पंजोंवाले श्वेत गरुड़ हैं और हरितमणि जैसी छोटी आँखोंवाले तथा वाष्प छोड़नेवाले हरे कीचड़ में रेंगनेवाले घड़ियाल हैं। वह उन कविताओं में मग्न होने लगा जिनका संगीत चुंबन-रंजित संगमर्मर का था, जिसमें उस विचित्र मूर्ति के विषय में कहा गया था जिसकी तुलना गाटियर ने स्त्री के क्षीणतम स्वर से की थी, वह मोहित करनेवाला देव जो लौवर श्वेतकणों से युक्त गहरी लाल रंग की चट्टन के कक्ष में दुबकता है। किन्तु कुछ समय बाद किताब उसके हाथ से गिर पड़ी। वह अस्थिर हो उठा और एक भयानक भय-कातरता उसपर छा गयी। यदि एलन कैम्पबेल इंगलैंड के बाहर हुआ तो ? उसके लौटने तक अनेक दिन बीत जायँगे।

---

१ एक रत्न

२ स्त्री के शिर और सिंह के धड़वाले जन्तु

सम्भव है कि वह आना अस्वीकार कर दे। तब वह क्या करेगा ? प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण है। वे गहरे मित्र थे, पाँच वर्ष पूर्व सचमुच अभिन्न-से थे। फिर घनिष्टता का अचानक ही अन्त हो गया था। अब जब भी वे समाज में मिलते, डोरियन ग्रे ही मुस्कराता; एलन कैम्पबेल कभी न मुस्कराता।

यद्यपि दृश्यकलाओं में उसे कोई वास्तविक अभिरुचि न थी, वह एक अत्यन्त चतुर नौजवान था और काव्य का जो कुछ भी थोड़ा बहुत ज्ञान उसे था वह उसने पूर्णतया डोरियन से ही पाया था। उसका बौद्धिक ज्ञान-विज्ञान के लिए था। कैम्ब्रिज में उसने अपना अधिकांश समय रसायन-शाला में कार्य करते हुए बिताया था और अपने वर्ष की प्राकृतिक विज्ञान की सम्मानजनक परीक्षा की सूची में अच्छा स्थान प्राप्त किया था। वास्तव में रसायन शास्त्र के अध्ययन में वह अब भी अनुरक्त था और उसकी अपनी रसायन शाला थी, जहाँ वह अपने आपको दिन भर बन्द रखता। उसकी मां, जिसकी हार्दिक इच्छा थी कि वह पार्लियामेंट के लिए खड़ा हो और जिसकी समझ के अनुसार रासायनी केवल एक नुस्खे तैयार करनेवाला होता था, इससे अत्यन्त खिन्न थी। फिर भी, वह एक अच्छा संगीतज्ञ भी था और बहुत से शौकीनों की अपेक्षा वायलिन और प्यानो, दोनों ही अच्छे बजा लेता था। वास्तव में यह संगीत ही था जिसने उसका और डोरियन ग्रे का सामीप्य कराया—संगीत और वह अवर्णनीय मोहकता जिसके प्रयोग की सामर्थ्य डोरियन में प्रतीत होती थी और अनजाने ही जिसका प्रयोग वह प्रायः करता था। लेडी बर्कशायर के यहाँ जिस रात रूबिन्स्टीन का वाद्यवादन था, वे मिले थे और उसके बाद ऑपेरा तथा संगीत के किसी भी अच्छे स्थान पर सदैव साथ ही देखे जाते। उनकी घनिष्ठता अठारह महीने तक रही। कैम्पबेल सदैव ही सेल्बी रॉयल अथवा ग्रासवेनर स्क्वायर में मिलता। उसके लिए, अन्य बहुतों के समान ही, डोरियन ग्रे एक ऐसा नमूना था जिसमें जीवन की सभी विचित्रता और मोहकता थी। उनमें कभी झगड़ा हुआ भी था या नहीं यह किसी को ज्ञात न था। किन्तु अचानक ही लोगों ने देखा कि मिलने पर वे कदाचित् ही बोलते और जिस किसी पार्टी में डोरियन ग्रे उपस्थित रहता कैम्पबेल सदैव ही पहले जाता दिखायी दिया। उसमें परिवर्तन भी हो गया था—

प्रायः अनोखी उदासीनता होती और संगीत सुनने में लगभग अरुचि रखता प्रतीत होता। बुलाये जाने पर यह बहाना करके कभी वाद्य-वादन न करता कि विज्ञान में अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण अभ्यास के लिए समय ही नहीं बच पाता था। और यह निश्चय ही सच था। प्रतिदिन जीवन-तत्त्व-विद्या में उसकी अभिरुचि बढ़ती प्रतीत होती और किसी विचित्र प्रयोग के सम्बन्ध में वैज्ञानिक समालोचनाओं में उसका नाम एक-दो बार निकल जाता।

यही वह व्यक्ति था जिसकी प्रतीक्षा डोरियन ग्रे कर रहा था। वह प्रति सेकिंड घड़ी ही देखता रहा। मिनटों के व्यतीत होते ही वह उत्तेजित हो उठा। अन्त में वह उठ बैठा और पिंजरे में बन्द सुन्दर पक्षी के समान कमरे में ऊपर-नीचे-चहलकदमी करने लगा। उसने लम्बे शान्त डग बढ़ाये। उसके हाथ विचित्र रूप से ठंडे थे।

अनिश्चितता उसे असह्य हो उठी। जबकि तूफानी हवाएँ उसे ब्लुआ चट्टान की दाँतेदार किनारों की काली दरार की ओर लिये जाती थीं। समय उसे शीशे के (भारी) पैरों से रेंगता प्रतीत होता था। वह जानता था कि वहाँ उसकी प्रतीक्षा में क्या है, उसने वास्तव में देखा और, काँपते हुए, मानो दृष्टि शक्ति को लूट लेने और पुतलियों को उनके गड्ढों में रख देने के लिए जलती पलकों पर नम हाथ रगड़ दिये। यह व्यर्थ था। मस्तिष्क की मजबूती का अपना भोजन था और भय के कारण विलक्षण बनी हुई कल्पना जीवित वस्तु के समान पीड़ित होने पर मुड़ने और विकृत होने के कारण पुतले के समान नाचती और अस्थिर आवरणों में दाँत दिखाती प्रतीत होती थी। तभी अचानक समय उसे स्थिर प्रतीत हुआ। हाँ, उस अन्धी, धीरे-धीरे साँस लेती वस्तु का रेंगना रुक गया और समय के निष्प्राण हो जाने के कारण भयानक विचार द्रुतगति से सामने दौड़ते प्रतीत हुए, कब्र से भयानक भविष्य खींच लाते और उसे दिखलाते-से। उसने यह देखा। इसकी भयानकता ने उसे पाषाण बना दिया।

अन्त में द्वार खुला और उसके सेवक ने प्रवेश किया। अपनी चमकती आँखें उसने उसकी ओर घुमायीं।

'मि० कैम्पबेल, सरकार···'—उस व्यक्ति ने कहा। उसके शुष्क

अधरों से शान्ति की एक साँस निष्कृत हुई और उसके कपोल पुनः सवर्ण हो गये।

'फ्रांसिस, उससे कहो कि वह शीघ्र अन्दर आये।' उसने अनुभव किया कि निजत्व उसे पुनः प्राप्त हो गया है। उसकी कायरता की भावना तिरोहित हो चुकी थी।

सेवक ने नमन किया और चला गया। कुछ ही क्षण में एलन कैम्पबेल ने प्रवेश किया। वह अत्यन्त कठोर और पीला दिखायी देता था, कोयले जैसे काले बालों और काली भौंह के कारण उसका पीलापन और भी विवर्धित था।

'एलन! यह तुम्हारी कृपा है। आगमन के लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।'

'ग्रे, मेरा इरादा था कि तुम्हारे घर में फिर कभी प्रवेश न करूँ, किन्तु तुमने कहा था कि यह तुम्हारे लिए जीवन और मृत्यु का प्रश्न था।' उसका स्वर कठोर और शीतल था। सुविवेचित धीमेपन से वह बोल रहा था। डोरियन पर पड़ती हुई उसकी खोजपूर्ण दृष्टि में तुच्छता की भावना थी। अपने हाथों को वह अस्ट्रखां[1] के कोट की जेब में डाले हुए था और ऐसा प्रतीत होता था कि जिस भाव से उसका स्वागत किया गया था उसे वह देख नहीं पाया था।

'हाँ, यह जीवन और मृत्यु का प्रश्न है, एलन! और एक से अधिक व्यक्ति का। बैठ जाओ।'

मेज के पास एक कुर्सी पर कैम्पबेल बैठ गया और डोरियन उसके सामने बैठा। दो व्यक्तियों की आँखें मिलीं। डोरियन की आँखों में अपार संवेदना थी। वह जानता था कि वह जो कुछ करने जा रहा है भयानक है।

क्षणभर के मौन के पश्चात् वह झुक गया और धीमे स्वर में कहने लगा, किन्तु जिसे उसने बुलाया था उस पर प्रत्येक शब्द का प्रभाव देखता

---

१ अस्ट्रखां में पायी जानेवाली एक विशेष प्रकार की भेड़, जिसके लम्बे और घुंघराले बालों का उपयोग कोट अथवा लबादे के कॉलर के लिए किया जाता है।

रहा—'एलन, इस मकान के ऊपर एक ताला लगे कमरे में, जहाँ मेरे सिवाय और किसी का प्रवेश नहीं है, मेज पर एक मृत व्यक्ति बैठा है। उसको मरे दस घंटे हो चुके हैं। हड़बड़ाओ नहीं और मेरी ओर इस प्रकार न देखो। वह मनुष्य कौन है, क्यों मरा, कैसे मरा ये वे बातें हैं जिनसे तुम्हें कोई मतलब नहीं। तुम्हें जो करना है वह यह है—'

'रुको ग्रे, आगे मैं कुछ नहीं जानना चाहता। जो कुछ तुमने कहा है सत्य है अथवा असत्य इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। तुम्हारे जीवन में मिलकर चलना मुझे पूर्णतया अस्वीकार है। अपने भयानक भेद अपने ही तक रखो। अब उनमें मेरी कोई रुचि नहीं।'

'एलन, उनमें तुम्हारी रुचि होनी ही होगी। इस विषय में तुम्हें रुचि लेनी होगी। तुम्हारे लिए मुझे अत्यन्त खेद है, एलन! किन्तु स्वयं से मैं विवश हूँ। तुम्हीं एक अकेले व्यक्ति हो जो मुझे बचा सकते हो। तुम्हें इसमें सम्मिलित करने के लिए मैं विवश हूँ। मेरे पास कोई अन्य उपाय नहीं। एलन, तुम वैज्ञानिक हो। तुम रसायन शास्त्र और इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं के विषय में जानते हो। तुमने प्रयोग किये हैं। ऊपर की वस्तु को तुम्हें नष्ट करना है—ऐसी नष्ट करना है कि उसका चिह्न भी अवशेष न रहे। उस व्यक्ति को मकान में आते किसी ने भी नहीं देखा। वास्तव में, इस समय उसकी स्थिति पेरिस में मानी जाती है। महीनों तक उसका पता न लगेगा। जब उसकी खोज हो तब उसका कोई भी चिह्न यहाँ नहीं मिलना चाहिए। तुम, एलन, उसे और उसकी प्रत्येक वस्तु को मुट्ठीभर राख में परिवर्तित कर दो जिससे कि मैं उसे हवा में फैला सकूँ।'

'तुम मूर्ख हो, डोरियन!'

'आह! मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि तुम मुझे डोरियन कहकर पुकारो।'

'तुम मूर्ख हो, मैं कहे देता हूँ—मूर्ख हो जो यह सोचते हो कि तुम्हारी सहायता के लिए मैं अँगुली भी उठाऊँगा, मूर्ख हो जो इतनी भयानक स्वीकारोक्ति की है। वह चाहे कोई हो मुझे उसका कुछ नहीं करना। क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारे लिए मैं बदनाम होने का खतरा उठाऊँगा? तुमने शैतान जैसा क्या काम किया है उससे मुझे क्या?'

'यह आत्महत्या थी, एलन !'

'मुझे इससे प्रसन्नता हुई, किन्तु इसके लिए उसे किसने प्रेरित किया ? मैं सोचता हूँ, तुमने !'

'मेरे लिए यह करना तुम्हें अब भी अस्वीकार है ?'

'निश्चय ही, मैं अस्वीकार करता हूँ। मुझे इसमें रंचमात्र भी कुछ नहीं करना है। तुम कितने लज्जित होते हो—मुझे इसकी चिन्ता नहीं। तुम इसी सबके योग्य हो। जनसमूह के समक्ष तुम्हारा अपमान देखकर मुझे दुख न होगा। संसार के व्यक्तियों में से मुझसे ही इस भयानकता में सम्मिलित होने के लिए पूछने का तुम्हें साहस कैसे हुआ ? मेरा विचार था कि व्यक्तियों के चरित्र के विषय में तुम पर्याप्त ज्ञान रखते हो। तुम्हारे मित्र लार्ड हेनरी वाटन ने तुम्हें और जो कुछ भी सिखाया हो, मनोविज्ञान के विषय में अधिक नहीं सिखा पाया होगा। तुम्हारी सहायता के लिए एक पग बढ़ाने की भी प्रेरणा मुझे नहीं हो सकती। तुमने गलत व्यक्ति चुना। अपने कुछ मित्रों के पास जाओ। मेरे पास न आओ।'

'एलन, यह हत्या थी। मैंने उसे मार डाला। तुम नहीं जानते कि क्या सहने के लिए उसने मुझे बाध्य किया। मेरा जो कुछ भी जीवन है इसके निर्माण अथवा विनाश में बेचारे हेनरी की अपेक्षा उसका हाथ कहीं अधिक था। उसने ऐसा इरादा भले ही न किया हो किन्तु परिणाम तो वही हुआ।'

'हत्या ! हे भगवान् ! डोरियन, क्या तुम यहाँ तक पहुँच गये ? मैं तुम्हारी सूचना नहीं दूँगा। यह मेरा काम नहीं है। इसके अतिरिक्त, मेरे क्रियाशील हुए बिना भी तुम निश्चय ही बन्दी बना लिये जाओगे। बिना किसी बेवकूफी को किये कभी भी कोई जुर्म नहीं करता। किन्तु मुझे इसमें कुछ भी नहीं करना है।'

'तुम्हें इसमें कुछ अवश्य करना होगा। रुको, एक क्षण रुको; सुनो। केवल सुन लो, एलन ! मैं तुमसे केवल एक वैज्ञानिक प्रयोग करने के लिए कहता हूँ। तुम अस्पतालों और मुर्दाघरों में जाते हो और वहाँ जो भयानक कृत्य करते हो उनसे अप्रभावित रहते हो। यदि किसी भयानक चीरफाड़ के कमरे में अथवा बदबूदार रसायनशाला में तुमने रक्त निकलने के लिए

बाहर की ओर उठी हुई लाल नलियों से युक्त इस मनुष्य को शीशे की मेज पर लेटा हुआ पाया होता तो तुम इसे केवल एक अच्छा विषय मानते। तुम आनाकानी न करते। तुम यह न सोचते कि तुम कोई गलत काम कर रहे हो। इसके विपरीत तुम सम्भवतः अनुभव करते कि तुम मानव जाति का भला कर रहे हो, संसार में ज्ञान की अभिवृद्धि कर रहे हो, बौद्धिक कौतूहल को तृप्ति प्रदान कर रहे हो अथवा कुछ ऐसा ही कर रहे हो। मैं तुमसे केवल वही कराना चाहता हूँ जो तुम पहिले प्रायः कर चुके हो। वास्तव में, जो कुछ भी करने के तुम आदी हो चुके हो, शरीर नष्ट करना उससे कहीं कम भयानक होगा। और, स्मरण रखो, मेरे विरुद्ध वही एक-मात्र सबूत है। यदि इसका पता चल गया, मैं कहीं का न रहूँगा, और यदि तुमने सहायता न दी तो इसका पता अवश्य चल जायगा।'

"तुम्हारी सहायता करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है। तुम यह भूल जाते हो। इस सबमें मेरी कोई भी रुचि नहीं है। मुझसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं।

'एलन, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ। मैं जिस परिस्थिति में हूँ उस पर विचार करो। तुम्हारे आने से पूर्व ही मैं भय से अचेत-सा हो गया था। किसी दिन स्वयं तुम्हें भय की अनुभूति हो सकती है। नहीं! उसका विचार न करो। इसे केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखो। तुम नहीं खोजते कि जिन मृतवस्तुओं पर तुम प्रयोग करते हो, कहाँ से आती हैं। अब भी खोज न करो। जैसा भी है मैंने तुम्हें बहुत कुछ बतला दिया है। किन्तु इसे करने का तुमसे मेरा निवेदन है। हम कभी मित्र थे, एलन!'

'उन दिनों की बात मत करो, डोरियन, वे मर गये!'

'मरे हुए भी कभी-कभी देर तक उस दशा में बने रहते हैं। ऊपर का मनुष्य जायगा नहीं। वह मेज पर सिर झुकाये और हाथ फैलाये बैठा है। एलन! एलन! तुमने यदि मेरी सहायता न की तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा। वे मुझे फाँसी पर लटका देंगे, एलन! क्या तुम नहीं समझते? जो कुछ मैंने किया है उसके लिए मुझे फाँसी लगा देंगे।'

'इस दृश्य को बढ़ाने से कोई लाभ नहीं। इस विषय में कुछ भी

करना मैं पूर्णतया अस्वीकार करता हूँ। इसके लिए मुझसे कहना तुम्हारा सिड़ीपन है।'

'तुम अस्वीकार करते हो ?'

'हाँ।'

'मैं प्रार्थना करता हूँ, एलन !'

'यह व्यर्थ है।'

डोरियन ग्रे के नेत्रों में वही वेदना झलक उठी। तब उसने हाथ बढ़ाया, कागज का एक टुकड़ा लिया और उसपर कुछ लिख दिया। उसने इसे दो बार पढ़ा, सावधानी से मोड़ा और मेज के उस ओर सरका दिया। ऐसा करने के पश्चात् वह उठा और खिड़की तक चला गया।

कैम्पबेल ने आश्चर्य में उसे देखा, कागज उठा लिया और उसे खोल डाला। जैसे ही उसने पढ़ा, उसका मुख भयानक रूप से पीला पड़ गया और वह अपनी कुर्सी पर पीछे गिर गया। मुर्दनी की एक भयंकर भावना उस पर छा गयी। उसने अनुभव किया कि उसका हृदय मृत्यु की ओर किसी रिक्त गर्त में धड़क रहा है।

दो अथवा तीन मिनट की भयानक शान्ति के उपरान्त डोरियन घूमा, आया और उसके कंधे पर हाथ रखकर खड़ा हो गया।

'तुम्हारे लिए मुझे अत्यन्त दुख है, एलन !' —उसने धीमे स्वर में कहा—'किन्तु तुमने मेरे लिए अन्य कोई राह न छोड़ी। मैंने एक पत्र लिख ही लिया है, यह है। तुम पता देख लो। यदि तुम सहायता नहीं करते हो, मैं इसे भेज दूँगा। तुम जानते हो इसका क्या परिणाम होगा। किन्तु तुम मेरी सहायता करोगे। अस्वीकार करना अब तुम्हारे लिए असम्भव है। मैंने तुम्हें छोड़ने की चेष्टा की यह स्वीकार करके तुम मेरे साथ अन्याय करोगे। तुम कठोर, क्रूर और अपमान करनेवाले रहे। तुमने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जैसा किसी भी व्यक्ति ने—कम-से-कम किसी भी जीवित व्यक्ति ने, कभी भी करने का साहस नहीं किया। मैंने यह सब कुछ सहा। शर्तें रखने की अब मेरी बारी है।'

कैम्पबेल ने हाथों में अपना मुख छिपा लिया और एक कँपकँपी उसमें दौड़ गयी।

'हाँ, शर्तें रखने की अब मेरी बारी है, एलन ! तुम जानते हो वे क्या हैं। काम बिलकुल सरल है। आओ, इस विषय में परेशान मत होओ। काम करना ही है। बढ़ो और करो।'

कैम्पबेल के अधरों से एक आह फूट पड़ी और उसका पूरा शरीर काँप उठा। मेंटल-पीस पर रखी हुई घड़ी की टिकटिक समय को पीड़ा के अलग-अलग क्षणों में विभाजित करती प्रतीत हो रही थी और पीड़ा का वह प्रत्येक क्षण उसे अत्यन्त असह्य था। उसे ऐसा लग रहा था मानो लोहे का एक घेरा उसके माथे पर धीरे-धीरे कसा जा रहा हो. मानो जिस अपमान की उसे धमकी दी गई थी उसपर छा चुका था। कंधे पर रखा हुआ हाथ शीशे के हाथ के समान बोझिल प्रतीत हो रहा था। यह असह्य था। यह उसे कुचलता प्रतीत होता था।

'आओ, एलन, तुम्हें अभी निश्चय करना होगा।'

'मैं यह नहीं कर सकता'—यंत्रवत् उसने कह दिया, मानो शब्दों में स्थिति-परिवर्तन की शक्ति थी।

'तुम्हें करना होगा। तुम्हारे लिए अन्य कोई उपाय नहीं है। विलम्ब न करो।'

क्षणभर वह झिझका। 'ऊपर के कमरे में आग है ?'

'हाँ, अजबिस्टोस[1] से युक्त गैस की अग्नि।'

'मुझे घर जाना होगा और रसायनशाला से कुछ वस्तुएँ लानी होंगी।'

'नहीं, एलन ! तुम्हें घर छोड़कर नहीं जाना होगा। जो कुछ तुम चाहते हो एक कागज पर लिख दो, मेरा सेवक एक कैब (गाड़ी) लेगा और वस्तुएँ लाकर तुम्हें दे देगा।'

कैम्पबेल ने कुछ पंक्तियाँ लिखीं, उन्हें सुखाया और एक लिफ़ाफे पर अपने सहकारी का पता लिख दिया। डोरियन ने उसे ले लिया और ध्यान से पढ़ा। तब उसने घंटी बजायी और शीघ्र-से-शीघ्र लौटने तथा वस्तुओं को अपने साथ लाने की आज्ञा देकर उसे सेवक को दे दिया। हॉल (विशाल कक्ष) का द्वार बन्द होते ही कैम्पबेल व्याकुल हो गया और कुर्सी से उठकर चिमनी-पीस तक चला गया। उसे जूड़ी के समान कँप-

[1] न जलने वाला एक खनिज।

कॅपी आ रही थी। लगभग बीस मिनट तक उनमें से कोई भी न बोला। एक मक्खी कमरे में भिनभिनाती फिरती थी और घड़ी की टिकटिक एक हथौड़े की चोट के समान थी।

घड़ी ने जैसे ही एक बजाया कैम्पबेल घूमा और देखा कि डोरियन ग्रे की आँखें, अश्रुपूर्ण हैं। उस करुण मुख की निर्मलता और शुद्धता में कुछ ऐसा था जो उसे क्रोधित करता प्रतीत होता था। 'तुम दुष्ट हो, पूरे दुष्ट !'—क्रुद्ध स्वर में उसने कहा।

'हुश, एलन ! तुमने मेरे जीवन की रक्षा की है।' डोरियन ने कहा।

'तुम्हारा जीवन ? ओह भगवान् ! यह कैसा जीवन है ! तुम भ्रष्टता-से-भ्रष्टता की ओर गये और अब तुमने इस अपराध के रूप में चरम सीमा प्राप्त की। जो मैं करने जा रहा हूँ, जो तुम मुझसे बलात् करा रहे हो, उसे करते समय मैं तुम्हारे जीवन के विषय में नहीं सोच रहा हूँ।"

'आह, एलन !'—एक निश्श्वास लेते हुए डोरियन ने कहा—'काश, तुम्हारे लिए जो सहानुभूति मुझे है उसका एक हजारवाँ भाग भी तुममें मेरे लिए होता !'—कहने के साथ ही वह मुड़कर चला गया और खिड़की के पास खड़ा होकर बाहर बगीचा देखने लगा। कैम्पबेल ने कोई उत्तर न दिया।

लगभग दस मिनट बाद द्वार खटका और इस्पात तथा प्लैटिनम के तार की लम्बी लच्छी तथा विचित्र आकार की दो कच्ची ईंटों से युक्त महोगनी लकड़ी से बनी रसायनों की एक बड़ी-सी पेटी लिए सेवक ने प्रवेश किया।

'जनाब, क्या मैं इन वस्तुओं को यहीं छोड़ दूँ ?' उसने कैम्पबेल से पूछा।

'हाँ'—डोरियन ने कहा—'और फ्रांसिस, तुम्हारे लिए मेरे पास एक और दूसरा काम है। रिचमोंड के उस व्यक्ति का क्या नाम है जो सेल्बी के साथ आर्चिड के दिखावटी पुष्प देता है ?'

'हार्डेन, सरकार।'

'रिचमोंड शीघ्र जाओ, हार्डेन से स्वयं मिलो और उससे कह दो कि जितने आर्चिड मँगाये थे उनके दूने भेजो और जहाँ तक सम्भव हो सफेद

कम हों। वास्तव में, मुझे सफेद चाहिए ही नहीं। आज का दिन सुहावना है, फ्रांसिस, और रिचमोंड एक अत्यन्त रमणीक स्थान है अन्यथा मैं तुम्हें इसके लिए कष्ट न देता।'

'कोई कष्ट नहीं, सरकार। मैं किसी समय तक लौटूँ ?'

डोरियन ने कैम्पबेल पर दृष्टि डाली। "तुम्हारे प्रयोग में कितना समय लगेगा, एलन ?'—उसने शान्त, निरासक्त स्वर में कहा। कमरे में तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति उसे अद्भुत शक्ति प्रदान करती प्रतीत होती थी।

कैम्पबेल ने भृकुटि चढ़ायी और ओठ काटा। 'लगभग पाँच घंटे लगेंगे।'—उसने उत्तर दिया।

'तब यदि तुम साढ़े सात बजे लौटो तो समय काफी होगा, फ्रांसिस ! अथवा ठहरो, मेरे पहिनने के कपड़े निकाले जाओ। संध्या तुम्हारी रही। मैं घर पर भोजन नहीं करूंगा इसलिए तुम्हारी आवश्यकता नहीं होगी।'

'धन्यवाद, सरकार।'—सेवक ने कमरे से जाते हुए कहा।

"अब, एलन, एक भी क्षण खोया नहीं जा सकता। यह पेटी कितनी भारी है ! तुम्हारे लिए इसे मैं ले चलूंगा। तुम अन्य वस्तुएँ ले आओ।' वह शीघ्रता से और आज्ञापूर्ण स्वर में बोल रहा था कैम्पबेल स्वयं को अधिकृत अनुभव कर रहा था। कमरे से साथ ही गये।

जब वे जीने के ऊपरी भाग में पहुँच गये, डोरियन ने कुंजी निकाली और ताले में घुमा दी। तब वह रुका और उसके नेत्र व्यथित हो उठे। वह काँपा।

'मैं नहीं सोचता कि मैं अन्दर जा सकूँगा, एलन !' वह फुसफुसाया।

'मेरा इससे कोई प्रयोजन नहीं। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है।'—कैम्पबेल ने कठोर स्वर में कहा।

डोरियन ने आधा द्वार खोला। ऐसा करते ही उसने सूर्य के प्रकाश में कटाक्ष करते चित्र का मुख देखा। उसके सामने फर्श पर फटा हुआ पर्दा पड़ा था उसे याद आया कि पिछली रात, जीवन में प्रथम बार, घातक कैनवास (चित्र) को छिपाना भूल गया था। वह शीघ्रता से आगे बढ़ने को ही था कि काँपकर पीछे हट गया।

वह बीभत्स लाल बूँद जो चमक रही थी, तर थी और एक हाथ पर दमक रही थी। क्या थी, मानो चित्र को रक्त-स्वेद हुआ हो ? यह कितना भयानक था ? क्षणभर उसे लगा कि यह उससे भी भयानक है जिसे वह जानता था व जो शान्त और मेज पर फैला हुआ है, दागीले फर्श पर, जिसकी विलक्षण छाया यह बता रही थी कि वह हिला नहीं, बल्कि जहाँ उसने छोड़ा था अब भी वहीं है।

उसने एक गहरी साँस ली, द्वार को कुछ और अधिक चौड़ा खोला और यह इरादा करके कि मृत व्यक्ति की ओर वह एक बार भी नहीं देखेगा, वह अर्द्धोन्मीलित नेत्र किये तथा सिर को बचाये हुए शीघ्रता से अन्दर चला गया। फिर सामने की ओर झुकते हुए उसने सुनहरा और लाल पर्दा उठाकर तसवीर के ठीक ऊपर डाल दिया।

पीछे घूमने में डरता हुआ वह वहीं रुक गया और नमूने की सूक्ष्मताओं पर अपनी आँखें जमा दीं। भयानक कृत्य के लिए जिन वस्तुओं की कैम्पबेल को आवश्यकता थी उन भारी पेटी, लोहे तथा अन्य वस्तुओं को लाने की उसे आहट मिली। वह आश्चर्य करने लगा कि वह और बेसिल हालवर्ड क्या कभी मिले थे, यदि हाँ तो एक दूसरे के विषय में क्या सोचते थे।

'अब मुझे छोड़ दो !'—पीछे से एक कठोर स्वर हुआ।

वह घूमा और यह अनुभव करता हुआ शीघ्रता से बाहर निकला कि मृत व्यक्ति को कुर्सी में घुसेड़ा गया था और कैम्पबेल उसके पीछे दमकते मुख को घूर रहा था। नीचे जाते समय उसने ताले में कुँजी के घूमने का स्वर सुना।

सात के बहुत बाद कैम्पबेल पुस्तकालय में लौटा। वह पीला किन्तु पूर्णतया शान्त था। 'तुमने मुझसे जो करने को कहा था मैंने कर दिया'—उसने धीरे-धीरे कहा—' और अब नमस्कार, अब हम एक दूसरे को फिर कभी न देखें।'

'तुमने मुझे सत्यानाश से बचाया है, एलन ! मैं यह भूल नहीं सकता।'—डोरियन ने सीधे-ढंग से कह दिया।

कैम्पबेल के जाते ही वह ऊपर गया। कमरे में नाइट्रिक एसिड की भयानक दुर्गन्ध थी। किन्तु कुर्सी पर बैठी हुई वस्तु जा चुकी थी।

१५

उस रात साढ़े आठ बजे सुन्दर वस्त्रों में सुसज्जित और बटन के काज में बनफसी पुष्पों का एक बड़ा गुच्छा लगाये डोरियन ग्रे को आदरपूर्ण नमन करते हुए सेवकों ने लेडी नारबोरो का ड्राइङ्ग-रूम (बैठक) में प्रवेश कराया। स्फूर्ति के कारण उसका माथा स्पन्दित हो रहा था और वह अत्यन्त उत्तेजित था, किन्तु गृहिणी के हाथ पर झुकने का उसका ढंग सदैव के समान ही स्वाभाविक एवं आकर्षक था। सम्भवतः मनुष्य अभिनय के समय जितना सहज स्वाभाविक प्रतीत होता है उतना और कभी नहीं। निश्चय ही उस रात डोरियन ग्रे को देखकर कोई भी यह विश्वास न कर सकता था कि हमारे युग के इतने बड़े अपराध को वह कर चुका था। वे सुन्दर आकार की अँगुलियाँ पाप-कर्म के लिए कभी भी चाकू न पकड़ सकती थीं और न वे मुस्कराते हुए अधर ईश्वर और देवियों पर चिल्ला सकते थे। अपने शान्त बर्ताव पर उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था और क्षणभर उस दुहरे जीवन में उसे विचित्र आनन्द मिला।

यह एक छोटी-सी पार्टी थी जिसे लेडी नारबोरो ने कुछ जल्दी में आयोजित कर लिया था। वह अत्यन्त चतुर स्त्री, जैसा कि लार्ड हेनरी कहा करता था, कुरूपता के अवशेषों से युक्त थी। वह हमारे एक अत्यन्त नीरस राजदूत की योग्य पत्नी सिद्ध हुई थी, अपनी ही रूपरेखा (डिजायन) के अनुसार बने संगमर्मर के मकबरे में उसे दफनाकर और अपनी लड़कियों को धनी तथा प्रौढ़ व्यक्तियों से विवाहित करके अपने सुभीते के अनुसार उसने अपना ध्यान फ्रांसीसी कथा-साहित्य, फ्रांसीसी पाक-विद्या तथा फ्रांसीसी आनन्द से पूर्ण सरसता की ओर लगाया।

डोरियन उसके विशेष कृपापात्रों में से एक था और उससे वह सदैव कहा करती थी कि वह उसे यौवनकाल में नहीं मिला वह अच्छा ही हुआ। वह कहती थी—"मैं जानती हूँ प्यारे कि मैं तुम्हारे प्रेम में पागल हो जाती और तुम्हारे लिए सभी कुछ त्याग देती। यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि उस समय तुम्हारा कोई ध्यान नहीं था। हमारी टोपियाँ इतनी अनाकर्षक थी और समय इतना विपरीत था कि मैं किसी के साथ प्यार का बहाना भी न कर सकी। फिर भी, इसमें दोष नारबारी का ही

था। उसकी दृष्टि काम ही न करती थी और ऐसे पति से क्या आनन्द जो कभी कुछ देखे ही नहीं।"

उसके उस दिन के अतिथि कुछ उकता डालनेवाले थे। कारण, जैसा कि उसने डोरियन को बतलाया, यह था कि उसकी एक विवाहिता लड़की अचानक ही उसके साथ रहने आ गयी थी और दुर्भाग्यवश अपने पति को भी साथ ले आई थी। 'मेरे विचार में यह उसकी ज्यादती है, प्यारे!'—वह फुसफुसाई—'निश्चय ही होमबर्ग से वापिसी पर मै प्रत्येक ग्रीष्म में उनके यहाँ ठहरती हूँ, लेकिन मुझ जैसी बूढ़िया को कभी-कभी स्वच्छ वायु मिलनी ही चाहिए और मैं तो उन्हें जगाती ही हूँ। तुम नहीं जानते कि उनका वहाँ का जीवन कैसा है। शुद्ध एवं अमिश्रित देहाती-जीवन! उन्हें बहुत-कुछ करना होता है इसलिए प्रातःकाल उठ बैठते हैं और जल्दी ही सोते है क्योंकि उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती। महारानी एलिजाबेथ के समय से ही पड़ौस में कोई मिथ्याचार नहीं हुआ इसीलिए सब भोजन के उपरान्त ही सो जाते हैं। तुम उनमें से किसी के पास नहीं बैठोगे। तुम मेरे पास बैठना और मेरा मनोरंजन करना!'

डोरियन ने धीमे स्वर मनोहर अभिनन्दन दिया और कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ायी। हाँ, यह पार्टी (दावत) निश्चय ही उकता डालनेवाली थी। इनमें से दो व्यक्तियों को उसने कभी न देखा था और शेष थे अर्नेस्ट हैरोडन (मध्य युगीन साधारण व्यक्तियों में से एक जैसे कि लन्दन के क्लबों में सरलता से मिल जाते हैं, जिनका कोई शत्रु नहीं, पर जिनके मित्र उन्हें बिलकुल भी पसन्द नहीं करते), लेडी रक्सटन (टेढ़ी नाकवाली एक अत्यधिक वस्त्र पहिने हुए सैंतालिस वर्षीया स्त्री जो समझौते के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती थी पर इतनी सीधी-सादी थी कि उसके विरुद्ध विश्वास करने के लिए कोई भी प्रस्तुत न था), मिसेज अर्लीन (अप्रेरक, सुन्दर तुतलाहट भरे स्वर और वेनिस जैसे लाल बालोंवाली), लेडी एलिस चैपमैन (गृहिणी की अव्यवस्थित कुंद किस्म की लड़की जिसकी मुखाकृति उस विशेष ब्रिटिश प्रकार की थी जो एक बार देख लेने पर फिर याद नहीं आती) और लाल गाल तथा श्वेत गल-मुच्छोंवाला उसका पति जिसका अपने वर्ग के समान ही यह विचार था कि अत्यधिक प्रसन्नता-

पूर्ण भाव-शून्यता की क्षतिपूर्ति करने में असमर्थ है।

आने का उसे कुछ अफसोस हो रहा था कि तभी अँगीठी के चौखटे पर बिछे बकाइन के रंग की भड़कीली रेखाओंवाले कपड़े पर चित रखी हुई चमकीले सुनहरे रंग की विशाल घड़ी देखते हुए लेडी नारबोरो ने कहा—'हेनरी वाटन का इतनी देर करना कितना आपत्तिजनक है। अचानक ही आज सुबह मैंने उसे सूचित किया था और उसने मुझे निराश न करने का वचन दिया था।'

हेनरी वहाँ आयेगा, इसमें कुछ आश्वासन था और जब द्वार खुला तथा अवास्तविक क्षमायाचना को आकर्षक बनाता हुआ उसका धीमा संगीतमय स्वर सुना तो उसकी उकताहट रुक गयी।

किन्तु दावत में वह कुछ भी न खा सका। तश्तरियों पर तश्तरियाँ बिना चखे ही चली गयीं। लेडी नारबोरो उसे यह कहकर झिड़कती रही—'यह बेचारे एडाल्फी का अपमान है जिसने विशेष रूप से तुम्हारे लिए ही खाद्य-सूची तैयार की थी' और लार्ड हेनरी जब तब उसे देखता और उसकी चुप्पी तथा गूढ़मुद्रा पर आश्चर्य करता। बटलर (सेवक) चैम्पेन से बारंबार उसका गिलास भर देता। आतुरतापूर्वक वह पीता और उसकी प्यास बढ़ती ही प्रतीत होती।

'डोरियन'—अन्त में जब चाउफ्राइड सबको दिया जा रहा था, लार्ड हेनरी ने कहा—"आज तुम्हें क्या हो गया है? तुम बिलकुल अस्त-व्यस्त हो रहे हो!'

'मुझे विश्वास है कि वह प्रेम में संलग्न है"—लेडी नारबोरो ने ऊँचे स्वर में कहा—"और मुझे बतलाने में डरता है कि कहीं मैं ईर्षा न करूँ उसका विचार बिलकुल ठीक है। मेरा ईर्षा करना स्वाभाविक है।'

'प्यारी लेडी नारबोरो'—मुस्कराते हुए धीमे स्वर में डोरियन ने कहा—'मैंने एक हफ़्ते से, वास्तव में जबसे मैडम डि फैरोल इस शहर से गयी, किसी से प्रेम नहीं किया।'

तुम लोग उस औरत के प्रेम में कैसे पड़ जाते हो' वृद्धा चिल्लायी—'सचमुच मैं यह नहीं समझ पाती।'

'लेडी नारबोरो, इसका कारण यही है कि उसे तब की याद है जब

तुम नन्हीं-सी लड़की थीं'—लार्ड हेनरी ने कहा—'हममें और तुम्हारी छोटी फ्राकों में वह एक शृङ्खला है।'

'लार्ड हेनरी, उसे मेरी छोटी फ्राकों की तनिक भी याद नहीं है। किन्तु मुझे वियना में तीस साल पहिले उसकी अच्छी तरह याद है और तब वह नीचे गले की कैसी फ्राक पहिनती थी!'

'वह अब भी वैसी ही है'—लम्बी अँगुलियों से जैतून उठाते हुए उसने उत्तर दिया—'और जब वह चुस्त गाउन पहिन लेती है तो एक भद्दे फ्रांसीसी उपन्यास की राज संस्करण-सी दिखलाई देती है। वह वास्तव में अनोखी और आश्चर्य में डाल देनेवाली है। पारिवारिक स्नेह की उसकी योग्यता अद्भुत है। तीसरे पति की मृत्यु हो जाने पर उनके बाल शोक से बिलकुल सुनहले हो गये।'

'यह तुम कैसे कहते हो, हेनरी!'—डोरियन चिल्लाया।

'यह व्याख्या बेहद रोमांटिक है'—गृहिणी हँसी—'किन्तु उसका चौथा पति, लार्ड हेनरी! क्या तुम यह कहना चाहते हो कि फैरोल चौथा है।'

'निश्चय ही, लेडी नारबोरो!'

'मैं एक शक पर भी विश्वास नहीं कर सकती।'

'तब, मिस्टर ग्रे से पूछिये। यह उसके घनिष्ठतम मित्रों में से हैं।'

'क्या यह सच है, मिस्टर ग्रे?'

'वह मुझे ऐसा ही विश्वास दिलाती है, लेडी नारबोरो!'—डोरियन ग्रे ने कहा—'मैंने उससे पूछा कि क्या मार्गुराइट डि नेवेर के समान ही उनके दिलों को मसाला भरकर अपनी पेटी से टाँग लिया था। उसने बतलाया कि उसने ऐसा नहीं किया, क्योंकि उनमें से किसी के दिल थे ही नहीं।'

'चार पति! मेरे विचार में यह उत्साहपूर्ण कार्य है!'

'मैंने उसे साहसपूर्ण बतलाया।'

'ओह, मेरे प्यारे, वह प्रत्येक कार्य के लिए साहसी है! और फैरोल कैसा है? मैं उसे नहीं जानती।'

'अत्यन्त सुन्दरी स्त्रियों के पति अपराधीवर्ग के होते हैं।'—शराब

की चुस्की लेते हुए लार्ड हेनरी ने कहा।

लेडी नारबोरो ने उसके पंखा मार दिया—"लार्ड हेनरी दुनिया के इस कथन पर मुझे तनिक भी आश्चर्य नहीं है कि तुम अत्यन्त दुष्ट हो।"

'किन्तु ऐसा कौनसी दुनिया कहती है ?'—भृकुटि ऊँची उठाते हुए लार्ड हेनरी ने पूछा—"वह दूसरी ही दुनिया होगी। मेरी और इस दुनिया की खूब पटती है।'

"जिसे भी मैं जानती हूँ यही कहता है कि तुम अत्यन्त दुष्ट हो।'—सिर हिलाते हुए उस वृद्धा ने कहा।

कुछ क्षण तक लार्ड हेनरी गंभीर प्रतीत हुआ।

'आजकल जिस ढंग से लोग किसी के विरुद्ध पूर्णतया सत्य बातों को पीठ पीछे कहते फिरते हैं, यह बहुत बुरा है।'—अंत में उसने कहा।

'क्या इन्हें सुधारा नहीं जा सकता ?'—कुर्सी पर आगे की ओर झुकते हुए डोरियन ग्रे ने कहा।

'मैं ऐसी ही आशा करती हूँ,'—गृहिणी ने हँसते हुए कहा—"किन्तु सचमुच यदि तुम सब मैडम डि फैरोल को इस हास्यास्पद ढँग से पूजने लगोगे तो फैशन के लिए ही मुझे पुनः शादी करनी होगी।"

"लेडी नारबोरो, तुम पुनर्विवाह कभी न करोगी"—लार्ड हेनरी ने बीच में ही कहा—'तुम कही अधिक प्रसन्न थीं। जब स्त्री पुनर्विवाह करती है तो इसका कारण होता है पहले पति के लिए घृणा। पुरुष जब पुनर्विवाह करता है तो उसका कारण होता है पहिली पत्नी के लिए अत्यधिक प्रेम। स्त्रियाँ अपने भाग्यको आजमाती हैं; पुरुष खतरा उठाते हैं।'

'नारबोरो पूर्ण (सर्वगुणसंपन्न) नही था'–वृद्धा ने ऊँचे स्वर में कहा।

'यदि वह होता तो तुमने उसे प्रेम न किया होता।'—वाक्य की पूर्ति हुई—"हमारे दोषों के कारण ही स्त्रियाँ हमें प्रेम करती हैं। यदि हममें दोष बहुत हैं तब भी वे हमें पूर्णतया क्षमा कर देती हैं, हमारी बुद्धि को भी ! मुझे भय है लेडी नारबोरो कि इस कथन के बाद तुम मुझे दावत में न बुलाओगी पर यह सब बिलकुल सच है।"

'निश्चय ही यह सच है, लार्ड हेनरी ! तुम्हारे दोषों के लिए यदि हम तुम्हें प्रेम न करतीं तो तुम लोगों का कहाँ ठिकाना लगता ? किसी

की भी कभी शादी न होती। तुम लोग अभागे अविवाहितों के समूह होते। फिर भी तुममें बहुत परिवर्तन हो जाता, ऐसा नहीं है। आजकल सभी विवाहित पुरुष अविवाहितों के समान रहते हैं और सभी अविवाहित विवाहितों को पसन्द करते हैं।'

'शताब्दी का अंत हो गया है।'—लार्ड हेनरी ने धीमे स्वर में कहा।

'दुनिया का अन्त !'—गृहिणी ने उत्तर दिया।

'मैं चाहता हूँ कि दुनिया का अन्त हो जाता।'—डोरियन ग्रे ने निश्श्वास लेकर कहा—"जीवन एक घोर निराशा है।'

'आह, मेरे प्यारे !'—दस्ताने पहिनते हुए लेडी नारबोरो चिल्लायी—'मुझे वह न बताओ कि तुमने जीवन समाप्त कर डाला। मनुष्य जब ऐसा कहता है, वह जानता है कि जीवन ने उसे समाप्त कर डाला है। लार्ड हेनरी अत्यन्त दुष्ट है और कभी-कभी मैं चाहती हूँ कि मैं भी होती, किन्तु तुम्हारा निर्माण अच्छे के लिए हुआ है—तुम इतने अच्छे दिखाई देते हो। मैं तुम्हारे लिए एक अच्छी-सी दुलहिन अवश्य खोजूँगी। लार्ड हेनरी, क्या तुम्हारे विचार में मिस्टर ग्रे को शादी नहीं कर लेनी चाहिए ?"

'लेडी नारबोरो, मैं इससे सदैव ही यह कहता रहता हूँ।'—लार्ड हेनरी ने झुककर कहा।

'अच्छा, हमें इसके योग्य संगिनी की खोज अवश्य करनी चाहिए। आज रात मैं ध्यान से डेब्रेट (अमीरों की सूचीवाली पुस्तक) देखूँगी और सभी उपयुक्त तरुणियों की सूची बनाऊँगी।'

'उनकी आयु सहित, लेडी नारबोरो ?'—डोरियन ने पूछा।

'निश्चय ही, कुछ सम्पादित उनकी आयु सहित। किन्तु कोई भी कार्य जल्दी में नहीं करना चाहिए। 'दि मार्निंग पोस्ट' (एक समाचार पत्र) के समान ही मैं योग्य सम्बन्ध की इच्छा रखती हूँ और तुम दोनों को सुखी चाहती हूँ।'

'सुखी विवाह की क्या मूर्खतापूर्ण बात की जाती है !'—लार्ड हेनरी बोल पड़ा—'पुरुष किसी भी नारी के साथ तब तक सुखी रह सकता है जब तक उसे प्यार नहीं करता।'

'आह, तुम कितने कुटिल हो !'—कुर्सी पीछे खिसकाती तथा लेडी

रक्स्टन की ओर सिर हिलाती हुई वृद्धा बोल पड़ी—'तुम मेरे साथ भोजन करने के लिए शीघ्र ही फिर आना। तुम वास्तव में एक प्रशंसनीय 'टानिक' हो, मेरे लिए सर एंड्रियू के द्वारा बताये गये से कहीं अधिक उपयुक्त। यद्यपि मैं एक आनन्दपूर्ण उपस्थिति चाहती हूँ, पर तुम किन व्यक्तियों से मिलना चाहोगे—यह मुझे अवश्य बतलाओ।'

'मैं उन पुरुषों को चाहता हूँ जिनके सामने भविष्य हो और उन नारियों को जिनका अतीत रह चुका हो'—उसने उत्तर दिया—'अथवा क्या तुम्हारा विचार है कि इस प्रकार वह सम्मेलन नारी-प्रधान होगा?'

'मुझे यही भय है'—उठते हुए उसने हँसकर कहा—'कोटिशः क्षमा याचना, प्यारी लेडी रक्स्टन—मैंने देख नहीं पाया था कि तुमने सिगरेट समाप्त नहीं की।'

'चिन्ता न करो लेडी नारबोरो, मैं अत्यधिक धूम्रपान करती हूँ। भविष्य में मैं नियन्त्रण रखूँगी।'

'कृपाकर ऐसा न करना, लेडी रक्स्टन!'—लार्ड हेनरी ने कहा—'संयम घातक होता है। पर्याप्त भोजन के समान ही बुरा है और पर्याप्त से अधिक ही दावत के समान अच्छा है।'

लेडी रक्स्टन ने उसपर उत्सुकतापूर्ण दृष्टि डाली—'लार्ड हेनरी, किसी शाम आकर तुम मुझे यह अवश्य समझाओ। यह सिद्धान्त अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होता है।'—कमरे से जाते हुए उसने धीमे स्वर में कहा।

'अब देखो अपनी नीति और निन्दा में अधिक न उलझे रहो'—लेडी नारबोरो द्वार से चिल्लायी—'अन्यथा ऊपर हम लोग निश्चय ही छोटी-छोटी बातों पर झगड़ेंगे।'

लोग हँस पड़े और मिस्टर चैपमैन मेज के पार्श्वों के पास से गंभीरतापूर्वक उठकर ऊपर आ गया। डोरियन ग्रे ने अपनी जगह बदल ली और लार्ड हेनरी के पास जाकर बैठ गया। मिस्टर चैपमैन ऊँचे स्वर में 'हाउज आफ कामन्स' (दरबार-ए-आम) के विषय में कहने लगा। अपने प्रतिद्वंदियों के लिए उसने कहकहे लगाये। ब्रिटिश के लिए भयानक शब्द 'ड्राक्टनायर' का उसके वक्तव्य में बारंबार प्रयोग हुआ। बारी-बारी का उपसर्ग भाषण के भूषण का काम कर रहा था। विचार-शिखरों पर

उसने यूनियन जैक को फहरा दिया था। उत्तराधिकार में प्राप्त जातिगत मूर्खता—वह हँसकर इसे अँगरेजों की पूर्ण सहज बुद्धि कहता था, समाज के लिए उपयुक्त गढ़ के रूप में दिखलायी गयी।

एक मुस्कान लार्ड हेनरी के अधरों पर खेल गयी, वह घूमा और डोरियन पर दृष्टि डाली।

'मेरे प्यारे साथी, अब कुछ अच्छे हो ?'—उसने पूछा—'भोज के समय तुम कुछ अन्यमनस्क प्रतीत होते थे।'

'मैं बिलकुल ठीक हूँ, हेनरी। थका हुआ हूँ, बस !'

'कल रात तुम मनोहर थे। डचेस तुमपर पूर्णतया अनुरक्त है। उसने मुझे बतलाया कि वह सेल्बी जा रही है।'

'उसने बीस तारीख को आने का वायदा किया है।'

'वहाँ मौनमाउथ भी रहेगा ?'

'हाँ, अवश्य, हेनरी।'

'वह मुझे बहुत उकता डालता है, लगभग उतना ही जितना उसे। वह अत्यन्त चतुर है, स्त्री होते हुए अत्यन्त चतुर। दुर्बलता के अथक आकर्षण की उसमें कमी है। मिट्टी का आधार ही मूर्ति के स्वर्ण को मूल्यवान् बनाता है। उसके पैर अत्यन्त सुन्दर हैं, किन्तु वे मिट्टी के नहीं हैं। सफेद चीनी मिट्टी के, यदि तुम्हें पसन्द हों। वे अग्नि के पार हो चुके हैं और आग जिसे बर्बाद नहीं करती, सख्त बना देती है। उसने अनुभव प्राप्त किये हैं।'

'उसकी शादी कब हुई थी ?'—डोरियन ने पूछा।

'सनातन काल में, उसने मुझे बतलाया। मेरे विचार में धनियों की वंश सूची के अनुसार दस वर्ष पूर्व। किन्तु समय के व्यवधान में मौन-माउथ के साथ दश वर्ष युग-युगान्तर से ही रहे होंगे। और कौन आ रहा है ?'

'ओह, विल्लूबी, लार्ड रुबी, उसकी पत्नी, हमारी गृहिणी (होस्टेस) ज्योफ्रे क्लाउस्टन, वही सदैव का घुट्टू ! मैंने लार्ड ग्रेट्रियन को चाहा है।"

'मैं उसे पसंद करता हूँ'—लार्ड हेनरी ने कहा—"बहुत से व्यक्ति उसे पसन्द नहीं करते परन्तु मुझे वह मनोहर प्रतीत होता है। कभी-

कभी की उसकी अत्यधिक वेशभूषा सदैव ही अत्यधिक शिक्षित होने से मेल खा जाती है। वह बिल्कुल आधुनिक है।'

'हेनरी, मैं नहीं जानता कि वह आ सकेगा या नहीं। सम्भव है उसे अपने पिता के साथ मोन्टी कार्लो जाना पड़े।'

'आह, ये व्यक्ति कैसे उत्पाती हैं! प्रयत्न करो और उसे लाओ। और डोरियन, कल तुम बहुत जल्द भाग गये। ग्यारह से पहिले ही तुम चले गये। फिर तुमने क्या किया? क्या तुम सीधे घर गये?'

डोरियन ने शीघ्र ही उसे ताका और भृकुटि चढ़ा ली। 'नहीं हेनरी,'—अन्त में उसने कहा—'मैं लगभग तीन बजे तक घर नहीं पहुँचा।'

'क्या तुम क्लब गये?'

'हाँ'—उसने उत्तर दिया। फिर उसने अपना होंठ काटा—'नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है, मैं क्लब नहीं गया। मैं टहलता रहा। मुझे याद नहीं मैंने क्या किया···हेनरी, तुम कितनी तहकीकात करते हो! तुम यह सदैव जानना चाहते हो कि कोई क्या करता रहा। मैं सदैव भूलना चाहता हूँ कि मैं क्या करता रहा। यदि तुम ठीक समय जानना चाहो तो मैं ढाई बजे अन्दर गया। सिटकनी की चाभी मैं घर भूल आया था और सेवक को मुझे अन्दर ले जाने का कष्ट उठाना पड़ा। इसके समर्थन में यदि तुम कोई और प्रमाण चाहो तो उससे पूछ सकते हो?'

लार्ड हेनरी ने कंधे उचकाये—'मेरे प्यारे साथी, मैं ही जैसे चिन्ता करता हूँ! हमें ऊपर ड्राइंग-रूम में चलना चाहिए। टौरी नहीं, धन्यवाद, मिस्टर चैपमैन। तुम्हें कुछ हो गया है, डोरियन! मुझे बतलाओ, क्या बात है? आज तुम अपने में नहीं हो।'

'मेरी ओर ध्यान मत दो, हेनरी! मैं झुँझलाया हुआ और क्रोधित हूँ। मैं आऊँगा और तुमसे कल या परसों मिलूँगा। लेडी नारबोरो से मेरे लिए क्षमा माँग लेना। मैं ऊपर नहीं जाऊँगा। घर जाऊँगा। मुझे घर अवश्य जाना चाहिए।'

'अच्छी बात है, डोरियन! मैं कहता हूँ कि कल चाय के समय तुमसे भेंट करूँगा। डचेस आ रही है।'

'मैं आने की चेष्टा करूँगा, हेनरी !'—कमरे से जाते हुए उसने कहा। घर जाते हुए उसने अनुभव किया कि भय की जिस भावना को समाप्त समझता था उसपर पुनः सवार थी। लार्ड हेनरी के आकस्मिक प्रश्नों ने उसे हतोत्साहित कर डाला था और वह अब भी स्फूर्तियुक्त बना रहना चाहता था। खतरनाक वस्तुओं को नष्ट करना ही था। वह पीड़ित हुआ। उन्हें स्पर्श करने तक के भाव से उसे घृणा थी।

फिर भी यह करना ही था। उसने यह समझ लिया और अपने पुस्तकालय का द्वार बंद कर लेने पर उसने वह गुप्त दराज खोली जहाँ बेसिल हावर्ड के कोट और बैग को उसने घुसेड़ दिया था। अग्नि बड़े परिमाण में जल रही थी। उसने उसपर और लकड़ी रख दी। झुलसते हुए कपड़े और जलते हुए चमड़े की गंध अत्यन्त विकट थी। सब कुछ जला डालने में उसे चौथाई घंटा लगा। अन्त में उसने स्वयं को श्रान्त एवं शिथिल अनुभव किया और एल्जीरिया के सुगंधित द्रव को अंगीठी में जलाकर उसने अपने हाथ और माथे को कस्तूरी के सुगंधित सिरके से धोया।

अचानक ही वह चिहुंक पड़ा। उसकी आँखें अद्भुत रूप से चमकने लगीं और परेशान होकर वह अपना निचला होंठ कुतरने लगा। दो खिड़कियों के बीच फ्लारेंस की कैबिनेट (छोटे कमरे जैसी अलमारी) थी, जो आबनूस की बनी तथा हाथी-दाँत और नीले खनिज प्रस्तर से जड़ी थी। वह इसे ऐसे देख रहा था मानो इसमें मोहित करने तथा डराने की शक्ति थी, मानो इसमें कुछ ऐसा था जिसकी उसे इच्छा थी, परन्तु घृणा करता था। उसकी साँस तीव्र गति से चलने लगी। एक पागल इच्छा उस पर सवार हो गयी। उसने एक सिगरेट सुलगायी और फिर उसे फेंक दिया। उसकी पलकें तब तक झुकती चली गयीं जब तक लम्बी झालर के फुँदनों ने उसके कपोलों का लगभग स्पर्श ही नहीं कर लिया। किन्तु कैबिनेट को वह अब भी देख रहा था। अन्त में सोफा से, जहाँ वह लेटा हुआ था, उठकर वह वहाँ गया, उसे खोला, किसी गुप्त स्प्रिंग को छुआ और एक त्रिकोण दराज धीरे से बाहर निकल आया। उसकी अँगुलियाँ स्वभावतः उस ओर बढ़ीं, अन्दर गयी और कुछ ग्रहण किया। यह एक छोटा-सा काले और सुनहले चमड़े का बक्स था जो सुन्दरता

से निर्मित हुआ था, जिसपर टेढ़ी लहरें बनी हुई थीं और सिल्क की डोरियों में गोल चमकदार धातु के डोरों के फुँदने लटक रहे थे। उसने इसे खोला। अन्दर मोम जैसी प्रभा की हरी लेही थी, जिसकी गंध भारी और अनवरत आनेवाली थी।

कुछ क्षण मुख पर अद्भुत स्थिर मुस्कान लिये वह झिझका। फिर काँपते हुए, यद्यपि कमरे का वातावरण अत्यन्त गरम था, वह ऊपर की ओर उन्मुख हुआ और घड़ी पर दृष्टि डाली। बारह बजने में बीस मिनट थे। बक्सा (डब्बा) पुनः रखते हुए अपने कैबिनेट के दरवाजे बन्द कर दिये और शयन-कक्ष में चला गया।

धूमिल वातावरण में जब अर्ध-रात्रि के घंटे बज रहे थे, डोरियन ग्रे साधारण वस्त्र पहिने और गले पर मफलर लपेटे चुपचाप घर से खिसक गया। बान्ड स्ट्रीट में उसे एक अच्छे घोड़े से युक्त हैनसम गाड़ी मिली। उसने उसे बुलाया और धीमे स्वर में ड्राइवर को एक पता बतलाया।

उस मनुष्य ने सिर हिलाया। 'बहुत दूर है'—वह बड़बड़ाया।

'तुम्हारे लिए यह अशरफी है'—डोरियन ने कहा—'यदि तेज चलाओगे तो एक और मिलेगी।'

'बहुत अच्छा, सरकार!'—उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—'आप वहाँ एक घंटे में पहुँच जायेंगे'—और किराया लेकर उसने घोड़ा घुमाया तथा तीव्रता से हाँककर नदी की ओर ले चला।

१६

शीतल मेह बरसने लगा और कुहरे में डूबे हुए सड़क के धुंधले लैम्प अनाकर्षक दिखायी देने लगे। सार्वजनिक-गृह बन्द हो रहे थे और अस्पष्ट पुरुष तथा नारियों के बिखरे हुए समूह अपने-अपने द्वारों पर एकत्र होने लगे थे। कुछ मधुशालाओं से भयंकर अट्टहास की ध्वनि सुनायी देती थी। दूसरों में पियक्कड़ लोग गाली-गलौज कर रहे तथा चीख-चिल्ला रहे थे।

हेन्सम गाड़ी में पुनः लेटते हुए तथा टोपी को माथे पर खींचकर महान् नगर की निम्नस्तर की लज्जा को डोरियन ग्रे उदासीन दृष्टि से देखता रहा और प्रथम मिलन के अवसर पर कहे गये शब्दों को बारंबार दुहराता रहा—'आत्मा को इन्द्रियों द्वारा और इन्द्रियों को आत्मा द्वारा

तोप !' हाँ, भेदभरी बात यही थी। उसने इसे प्रायः आजमाया था और अब पुनः आजमायेगा। अफीमखाने हैं जहाँ विस्मृति क्रय की जा सकती है, भयानकता की गुफाएँ जहाँ पुराने पापों की स्मृति नवीन पापों के पागलपन द्वारा भुलायी जा सकती है।

पीली खोपड़ी के समान चाँद आकाश में नीचे लटक आया था। जब-तब दुर्भाग्य-बादल का एक लम्बा हाथ फैलकर उसे ढक लेता था। गैस की बत्तियाँ कम होती जाती थीं और गलियाँ अपेक्षाकृत सँकरी तथा अँधेरी। गाड़ीवाला एक बार रास्ता भूल गया और उसे आधा मील पुनः लौटना पड़ा। कुहरे में से छींटे उड़ाते हुए घोड़े से भाप छूट रही थी। हेन्सम की दोनों ओर की खिड़कियाँ भूरी फलालेन जैसे कोहरे से ढक गयी थीं।

'आत्मा को इन्द्रियों द्वारा और इन्द्रियों को आत्मा द्वारा तोप !' ये शब्द उसके कानों में कैसे बज रहे थे ! उसकी आत्मा निश्चय ही मृत-प्राय हो रही थी। क्या यह सच था कि इन्द्रियाँ उसे तोष दे सकती थीं ? निर्दोष रक्त बहाया गया था। उसकी शान्ति कैसे हो सकती थी ? आह, उसके लिए कोई शान्ति नहीं है; किन्तु क्षमा यद्यपि असम्भव थी, विस्मृति फिर भी सम्भव थी और उसने भूल जाने का, उसे निकाल डालने का निश्चय कर लिया था, वह इसे नष्ट कर देगा जिस प्रकार एक कारखाने-वाले विषधर सर्प को नष्ट कर दिया जाता है। सचमुच बेसिल उससे जिस प्रकार बोला था उसका उसे अधिकार ही क्या था ? दूसरों के गुण-दोषों का विवेचक उसे किसने बनाया था। उसने जो बातें कही थीं वे भयानक थीं और सही नहीं जा सकती थीं।

रगड़ खाती हुई हेन्सम आगे बढ़ती ही जाती थी और उसे ऐसा प्रतीत होता था कि प्रति पद पर धीमी-से-धीमी होती चली जाती है। फंदा उसने ऊपर खींच दिया और चालक को तेज चलाने का आदेश दिया। अफीम की भयानक भूख उसे ही खाने लगी। उसका गला जलने लगा और कोमल हाथ आतुरता के कारण मुड़ने-सिकुड़ने लगे। आवेश में आकर उसने घोड़े के छड़ी दे मारी। चालक हँसा और कोड़ा सटकाने लगा। उत्तर में वह भी हँस पड़ा, चालक चुप हो गया।

राह अनन्त प्रतीत होती थी और गलियाँ चित्त पड़ी हुई मकड़ी के

काले जाले के समान लगती थीं। स्वर समानता असह्य हो उठी और कुहरे के सघन होने के साथ ही उसे भय लगने लगा।

फिर वे निर्जन ईंट के मैदानों के पास से निकले। कुहरा यहाँ घना था और पंखे जैसी अग्नि-जिह्वाओं से युक्त बोतल के आकार की भट्टियाँ उसे दिखाई दे रही थीं। पास से निकलते समय, एक कुत्ता भौंका और दूर अँधेरे में घूमती हुई कोई लम्बे परवाली समुद्री चिड़िया चीखी। पहियों की एक लकीर में घोड़े ने ठोकर खायी, घूमा और छलाँग मारकर दौड़ पड़ा।

कुछ देर बाद उन्होंने कच्ची सड़क छोड़ दी और असम गलियों में उनकी गाड़ी खड़खड़ा उठी। अधिकांश खिड़कियाँ अँधेरी थीं, किन्तु जब-तब लैम्प के प्रकाश से युक्त झिलमिलियों पर विचित्र छायाएँ छाया-चित्र से बनाती थीं। वह उन्हें कौतूहलपूर्वक देख रहा था। वे भयंकर कठपुतलियों के समान गतिशील थीं और चेतन के समान भाव-प्रदर्शन करती थीं। उसे उनसे घृणा हो रही थी। उसका हृदय क्रोध से भरा हुआ था। एक मोड़ पर घूमते ही खुले द्वार से एक स्त्री उनपर चिल्लायी और दो मनुष्य लगभग सौ गज तक हेन्सम के पीछे दौड़े। चालक ने उन पर कोड़ा फटकारा।

कहा जाता है कि आवेग मनुष्य के विचारों को चक्कर खिलाता रहता है। निश्चय ही, दुहराते और दाँतों से काटे जाते हुए डोरियन ग्रे के अधर आत्मा और इन्द्रियों से सम्बन्धित उन भव्य शब्दों को तब तक बारंबार आकार देते रहे जब तक उसकी मनःस्थिति ने मानो अपना प्रकाशन न पा लिया और बुद्धि द्वारा उन आवेगों को ठीक न मान लिया जो ठीक न मानने पर उसके स्वभाव पर छाये रहते। मस्तिष्क के एक स्नायु से दूसरे स्नायु में एक ही विचार स्थान पाता रहा और मनुष्य की समस्त भूखों से भयंकर जीने की इच्छा उसकी नस-नस को प्रबलता प्रदान करती रही। वास्तविक रूप देने के कारण जिस कुरूपता से उसे एक दिन घृणा थी, उसी कारण वही उसे आज प्रिय हो गयी थी। कुरूपता ही एकमात्र सत्य थी। भद्दी गाली-गलौज, घृणित अड्डा, अव्यवस्थित जीवन की असभ्य हिंसा और चोरों तथा बहिष्कृतों की अधमता भी

समस्त ललितकलाओं और संगीत की स्वप्नवत् छायाओं की अपेक्षा सत्यतः प्रभावित करने में अधिक स्पष्ट थीं। वे वही थीं—विस्मृति के लिए जिनकी उसे आवश्यकता थी। तीन दिन में वह मुक्त हो जायगा।

अचानक ही एक अँधेरी गली के सिरे पर चालक ने एक झटके के साथ लगाम खीच दी। जहाजों के काले मस्तूल नीची छतों और मकानों की चिमनियों से ऊपर उठे हुए थे। श्वेत पाले की लड़ियाँ लट्ठों से अस्पष्ट पालों के समान चिपकी हुई थीं।

'यहीं कहीं है न हुजूर ?'—जाली से उसने रूखे स्वर में पूछा।

डोरियन चौंका और चारों ओर झाँका। 'ठीक है'—उसने उत्तर दिया और शीघ्र ही उतरकर तथा वादे के अनुसार चालक को अतिरिक्त किराया देकर जहाज पर सामान चढ़ाने-उतारनेवाले घाट की ओर शीघ्र गति से चल दिया। जहाँ-तहाँ व्यापारिक वस्तुएँ ले जानेवाले किसी जहाज के अग्रभाग पर लालटेन चमक उठती थी। प्रकाश हिलता था और जलकुंडों में विभाजित हो जाता था। बाहर जानेवाले और कोयला लेते हुए एक जहाज से लाल प्रकाश चमक रहा था। साधारण और पक्की पगडंडी भीगे हुए मोमजामे के समान दिखलायी देती थी।

बार-बार पीछे की ओर यह देखता हुआ कि कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा वह शीघ्रता से बायीं ओर बढ़ता चला गया। लगभग सात-आठ मिनट में वह एक छोटे-से अनाकर्षक मकान के पास पहुँचा जो दो क्षीण फैक्टरियों के बीच गड़ा हुआ-सा था। ऊपर की एक खिड़की में लैम्प रखा हुआ था। वह रुका और विचित्र ढँग से खटखटाया।

थोड़ी देर में उसने बरामदे में पद-ध्वनि और साँकल का खुलना सुना। द्वार धीरे से खुला और चलते समय छाया में चौड़ा आकार धारण करने वाले उस मनहूस नाटे व्यक्ति से एक शब्द भी बिना कहे वह अन्दर चला गया। विशाल कक्ष के एक सिरे पर फटा हुआ एक हरा पर्दा टँगा था जो पीछे-पीछे आयी हुई झोकेदार हवा से हिल-डुल रहा था। उसने इसे एक ओर खींच दिया और एक लम्बे और निचले कमरे में घुस गया जो ऐसा लगता था मानो कभी एक निकृष्ट नाच-घर रहा हो। झिल-मिलाते और चमकते हुए गैस सामने दीवारों पर चारों ओर श्रेणी-बद्ध

लगे तथा मक्खियों से लदे दर्पणों में धुंधले और अपूर्ण प्रतिबिंबित थे। चिकनी और मुड़ी हुई टीन के प्रतिबिंबक उनपर लगे हुए थे और प्रकंपित गोलाकार प्रकाश विकीर्ण कर रहे थे। फर्श गेरू के रंग के लकड़ी के बुरादे से ढका हुआ था, जहाँ-तहाँ मिट्टी में रौंदा हुआ और गिरी हुई शराब के काले चक्रों से रंगा हुआ था। मलाया के कुछ निवासी तारकोल के स्टोव के पास झुके हुए थे और हड्डी के नकली सिक्कों से खेल रहे थे तथा बातचीत में अपने श्वेत दाँत प्रदर्शित कर देते थे। एक कोने में, हाथों में सिर छिपाये एक नाविक मेज पर चित्त पड़ा हुआ था और एक ओर पूरी जगह घेरे हुए भड़कीले रंगों में रँगी मधुशाला के किनारे खड़ी हुई दो क्षीणकाय स्त्रियाँ असंतोष प्रकट करती अपने कोट की बाँहों को झाड़ते हुए एक वृद्ध का मजाक उड़ा रही थीं। डोरियन जब पास से निकला, उनमें से एक ने हँसते हुए कहा—'वह समझता है कि लाल चीटियाँ उस पर चढ़ गयी हैं' उस व्यक्ति ने भयपूर्ण दृष्टि से उसे देखा और धीरे-धीरे रोने लगा।

उस कमरे के एक सिरे पर एक अँधेरे कक्ष की ओर ले जानेवाला एक छोटा-सा जीना था। डोरियन ग्रे जैसे ही इसके तीन जर्जर सोपान पर शीघ्रता से चढ़ा, उसे अफीम की भारी गंध आयी। उसने एक गहरी साँस ली और उसके नथुने आनन्द से कंपित हो उठे। जब उसने प्रवेश किया—चिकने पीले बालोंवाले, लैम्प पर झुके, लम्बी पतली पाइप सुलगाते हुए तरुण ने सिर उठाकर उसे देखा और झिझकते हुए स्वीकारात्मक ढँग से सिर हिलाया।

'तुम यहाँ, एड्रियन ?'—डोरियन ने पूछा।

'मैं और कहाँ जा सकता हूँ ?'—उसने उदासीन स्वर में उत्तर दिया—'अब मुझसे कोई भी बात न करेगा।'

'मेरा विचार था कि तुमने इंगलैंड छोड़ दिया।'

'डार्लिंगटन कुछ भी नहीं करेगा। मेरे भाई ने अन्त में बिल चुकता कर ही दिया। जार्ज भी मुझसे नहीं बोलता···चिन्ता नहीं'—निश्श्वास लेकर उसने कहा—'जब तक पास में यह वस्तु है, मित्रों की आवश्यकता नहीं। मैं सोचता हूँ मेरे बहुत मित्र रह चुके हैं।'

डोरियन ने दुख प्रकट किया और जर्जर गद्दों पर पड़ी हुई विलक्षण मुद्राओं की अद्भुत वस्तुओं पर दृष्टि डाली। मरोड़ी हुई पिंडलियाँ, खुले हुए मुख और घूरती हुई आभाहीन आँखों ने उसे आकर्षित किया। वह जानता था कि किन विचित्र स्वर्गों में वे पीड़ित हैं और किन नरकों में उन्हें किसी नवीन आनन्द के रहस्य का ज्ञान प्राप्त हो रहा है। उससे वे अधिक अच्छे थे। विचार ने उसे बन्दी बना रखा था। एक विकट पीड़ा के समान स्मृति उसकी आत्मा को खाये डालती थी। जब-तब उसे ऐसा प्रतीत होता कि बेसिल हालवर्ड की आँखें उसे ताक रही हैं। फिर भी, उसे लगता था कि वह रुक नहीं सकता। एड्रियन सिंगलटन की उपस्थिति उसे खल रही थी। वह वहाँ रहना चाहता था जहाँ कोई भी उसका परिचय न पा सके। वह स्वयं से ही भाग जाना चाहता था।

'मैं दूसरी जगह जा रहा हूँ'—कुछ रुककर उसने कहा।

'जहाज का माल उतारने-चढ़ानेवाले घाट पर ?'

'हाँ !'

'वह पागल बिल्ली वहाँ अवश्य होगी। वे अब उसे यहाँ न रखेंगे।'

डोरियन ने कंधे उचकाये—"प्यार करनेवाली औरतों से मैं तंग आ गया हूँ। घृणा करनेवाली औरतें अधिक दिलचस्प होती हैं। फिर, यह वस्तु अपेक्षाकृत अच्छी है।'

'एक ही बात है।'

'मैं इसे अधिक पसन्द करता हूँ। आओ, कुछ पिओ। मैं अवश्य कुछ लूँगा।'

'मुझे कुछ नहीं चाहिए'—तरुण बड़बड़ाया।

'कोई बात नहीं।'

एड्रियन सिंगलटन श्रान्त होकर उठा और डोरियन के पीछे मधुशाला जा पहुँचा। जर्जर साफा और गंदा अल्स्टर पहिने एक अकुलीन ने उनके सामने ब्रांडी की एक बोतल और दो गिलास बढ़ाते हुए दाँत निकालकर विचित्र अभिवादन किया। दोनों स्त्रियाँ बगल की ओर हो गयीं और बातें करने लगीं। डोरियन ने उनकी ओर पीठ फेर ली और धीमे स्वर में ऐड्रियन सिंगलटन से कुछ कहा।

स्त्रियों में से एक के मुख पर मलायी झुर्री के समान क्रूर मुस्कान मरोड़ खा उठी। 'आज हमें अत्यन्त गर्व है'—उसने नाक चढ़ायी।

'भगवान् के लिए मुझसे मत बोलो'—जमीन पर पैर पटकते हुए डोरियन चिल्लाया—'तुम्हें क्या चाहिए? पैसा? यह लो। अब मुझसे कभी न बोलना।'

क्षणभर के लिए स्त्री की रूखी आँखों में दो लाल अंगारे जल उठे, फिर बुझ गये और उन्हें शिथिल एवं चमकता छोड़ गये। उसने सिर नचाया और ललचायी हुई अँगुलियों से विक्रेता की मेज से पैसे बटोर लिये। उसकी साथिन उसे ईर्षा भरी दृष्टि से देखती रही।

'कोई लाभ नहीं है'—एड्रियन सिंगलटन ने निश्श्वास लिया—'लौट जाने की मुझे चिन्ता नहीं। प्रयोजन ही क्या? मैं यहाँ पूर्णतया संतुष्ट हूँ।'

'यदि आवश्यकता पड़े, तुम मुझे लिखोगे, लिखोगे न?'—कुछ रुक-कर डोरियन ने कहा।

'सम्भव है!'

'तब, नमस्कार।'

'नमस्कार'—सीढ़ियों पर पैर बढ़ाते तथा झुलसे हुए मुख को रूमाल से पोंछते हुए उस तरुण ने उत्तर दिया।

वेदनापूर्ण दृष्टि लिये डोरियन द्वार की ओर चला। जैसे ही उसने पर्दा एक ओर खींचा, पैसा ले जानेवाली स्त्री के रँगे हुए अधरों से एक भयंकर हास्य फूट पड़ा। 'धूर्त वह चला'—भर्राये स्वर में उसने हिचकी ली।

'तुम्हारा बुरा हो'—वह बोला—'मुझे यह न कहो।'

उसने अँगुलियाँ चटकायीं। 'तुम 'प्रिंस चार्मिंग' (मनोहर राजकुमार) कहलाना चाहते हो, यही न?'—वह चिल्लाई।

उसका स्वर सुनते ही उनींदा नाविक उछलकर खड़ा हो गया और चारों ओर देखने लगा। विशाल कक्ष के द्वार के बन्द होने की ध्वनि उसके कानों में पड़ी। पीछा करता हुआ-सा वह झपट चला।

रिमझिम वर्षा में जहाज पर सामान उतारने चढ़ानेवाले घाट की ओर डोरियन ग्रे बढ़ा चला जा रहा था। एड्रियन सिंगलटन के मिलन

ने उसे विचित्र रूप से द्रवित कर दिया था और वह सोच रहा था कि अपमान भरे बदनाम करनेवाले बेसिल हावर्ड के वचन के अनुसार इस तरुण जीवन के विनाश का उत्तरदायित्व क्या उसी पर है। उसने होंठ काटा और कुछ क्षण के लिए उसके नेत्र उदास हो गये। फिर भी, आखिर, उसे इससे क्या? दूसरे की भूलों का भार लेने के लिए यह जीवन अत्यन्त लघु है। प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन-यापन करता है और अपने कर्मों को स्वयं भोगता है। खेद यही है कि भूल के लिए अनेक बार सहन करना होता है। सचमुच ऐसा बारम्बार होता है। भाग्य मनुष्य से अपने लेन-देन का खाता कभी भी बन्द नहीं करता।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ऐसे क्षण आते हैं जब पाप का आवेग अथवा दुनिया द्वारा कथित पाप स्वभाव पर ऐसा अधिकार जमा लेता है कि शरीर की रग-रग, मस्तिष्क का प्रत्येक स्नायु भयानक विचार की ओर प्रवृत्त प्रतीत होता है। ऐसे क्षणों में नर और नारी अपना इच्छा-स्वातंत्र्य खो बैठते हैं। स्वयं गतिशील यंत्र के समान वे अपने भयानक अन्त की ओर बढ़ते जाते हैं, रुचि की उनकी शक्ति जाती रहती है और आत्मा मर जाती है, अथवा, यदि जीवित रहती भी है तो विद्रोह को आकर्षक रूप और नियम-भंग की मनोहरता प्रदान करने के लिए! चूँकि सभी पाप, जैसा कि वेदान्ती कहते नहीं थकते, नियम भंग के पाप हैं। वह महान् साहस, शैतान का वह प्रातःकालीन तारा जब स्वर्ग से गिरा तो यह पतन विद्रोह के कारण ही था।

कठोर, दुष्टता में दत्तचित्त, रँगा हुआ रूप और विद्रोह के लिए भूखी आत्मा लिये डोरियन ग्रे शीघ्रता से बढ़ता गया, चलते-चलते गति को तीव्र करता गया, किन्तु जिस बदनाम जगह वह जा रहा था वहाँ के लिए प्रायः संक्षिप्त राह का काम देनेवाली दोनों ओर से घिरी अँधेरी राह पर जैसे ही वह बढ़ा उसने अपने आप को पीछे से पकड़ा हुआ अनुभव किया और जब तक आत्मरक्षा का अवसर पाये उसके गले को दबोचे हुए क्रूर हाथ ने उसे दीवाल से सटा दिया।

जीवन के लिए उसने घोरतम संघर्ष किया और विकट प्रयत्न के द्वारा कसती हुई अँगुलियों को मरोड़कर अलग कर दिया। एक ही सेकिंड

में उसने तमंचे के घोड़े के चढ़ने की ध्वनि सुनी और देखा कि पालिस की हुई चमकदार नली का निशाना ठीक उसके सिर पर है और ठिगने दुहरे बदन के मनुष्य का अस्पष्ट आकार उसके सम्मुख है।

'तुम क्या चाहते हो ?'—उसने साँस ली।

'चुप रहो'—मनुष्य ने कहा—'यदि हिले तो गोली मार दूंगा।'

'पागल हो ! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?'

'तुमने सिविल वेन का जीवन विनष्ट किया'—उत्तर था—'और सिविल वेन मेरी बहिन थी। उसने आत्महत्या की। मैं यह जानता हूँ। उसकी मृत्यु का उत्तरदायित्व तुम पर है। मैंने शपथ खायी थी कि बदले में तुम्हें मार डालूँगा। वर्षों से मैं तुम्हें खोज रहा हूँ। कोई पता-ठिकाना न था। दो व्यक्ति जो तुम्हारे विषय में बता सकते थे, मर चुके थे। जिस प्रिय नाम से वह तुम्हें पुकारती थी उसके अतिरिक्त मैं तुम्हारे विषय में कुछ भी न जानता था। अचानक ही आज इसे मैंने सुना। ईश्वर से शान्ति की प्रार्थना करो, क्योंकि आज तुम मर जाओगे।'

डोरियन ग्रे भय से दुर्बल हो गया। 'मैं उसे नहीं जानता'—अटकते हुए स्वर में उसने कहा—'उसके विषय में मैंने कभी कुछ भी नहीं सुना। तुम पागल हो।'

'अच्छा हो कि तुम अपना पाप स्वीकार कर लो क्योंकि जहाँ तक मैं जेम्स वेन हूँ तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।'

भयानक क्षण उपस्थित था। डोरियन ग्रे की समझ में न आ रहा था कि वह क्या कहे और क्या करे।

'घुटने टेको !'—मनुष्य गुर्राया—'शान्ति-प्रार्थना के लिए तुम्हें एक मिनट देता हूँ, अधिक नहीं। आज ही रात मुझे भारत के लिए प्रस्थान करना है और पहिले मैं अपना काम अवश्य करूँगा। एक मिनट ! बस !'

डोरियन के हाथ लटक गये। भय से अशक्त उसकी समझ में न आता था कि वह क्या करे। अचानक ही एक आशा उसके मस्तिष्क में कौंध गयी—'ठहरो !'—वह चिल्लाया—'तुम्हारी बहिन को मरे कितना समय हुआ ? शीघ्र बताओ !'

'अठारह वर्ष'—उस मनुष्य ने कहा—'क्यों पूछते हो ? वर्षों से क्या होता है ?"

'अठारह वर्ष'—विजयपूर्ण स्वर में डोरियन ग्रे हँसा—'आठरह वर्ष ! लैम्प के नीचे मेरे मुख को तो देखो।'

जेम्स वेन क्षणभर झिझका, तात्पर्य उसकी समझ में न आ रहा था। फिर उसने डोरियन ग्रे को पकड़ लिया और घिरी हुई राह से घसीटा।

प्रकाश हवा के कारण धुँधला और काँपता हुआ था फिर भी, जैसा कि उसे लगा, जो भयानक भूल उसने की थी उसे दिखाने का काम उसने कर दिया, क्योंकि जिस मनुष्य को उसने मारने का विचार किया था उसका मुख बच्चों जैसा मुकुलित था, निष्कलुष तारुण्य से युक्त था। बीस ग्रीष्म देखे हुए छोकरे से वह कुछ ही अधिक प्रतीत होता था, यदि अधिक था ही तो कठिनता से उसकी उस समय की बहिन के बराबर जब उतने वर्ष पूर्व वे बिछड़े थे। यह स्पष्ट था कि यह वह मनुष्य नहीं था जिसने उसका जीवन विनष्ट किया था।

उसने पकड़ ढीली कर दी और लड़खड़ाकर पीछे हट गया। 'मेरे भगवन् ! मेरे भगवन् !'—वह चिल्लाया—'और मैंने तुम्हें मार डाला होता !'

डोरियन ग्रे ने निश्श्वास लिया। 'साथी, तुम एक भयानक अपराध करने जा रहे थे'—कठोरता से देखते हुए उसने कहा—'बदला लेने का कार्य अपने हाथ न लेने के लिए इसे चेतावनी समझो।'

"मुझे क्षमा करिये, महाशय !'—जेम्स वेन ने कहा—'मुझे धोखा हुआ था। उस गर्हित अड्डे में अचानक सुने शब्द ने मुझे भटका दिया।"

'अच्छा हो तुम घर जाओ और उस पिस्तौल को रख दो अन्यथा संकट में पड़ जाओगे'—मुड़ते और धीरे से गली में जाते हुए डोरियन ने कहा।

जेम्स वेन पक्के मार्ग पर भयभीत खड़ा रहा। वह सिर से पैर तक काँप रहा था। थोड़ी ही देर में टपकती हुई दीवाल के सहारे रेंगती काली छाया प्रकाश में बढ़ी और चुपचाप पग रखती हुई उसके समीप आयी। अपनी भुजा पर उसे एक हाथ प्रतीत हुआ और चौंककर उसने

चारों ओर देखा । यह मधुशाला में मदपान करनेवाली स्त्रियों में से एक थी ।

'तुमने उसे मारा क्यों नहीं ?' क्षीण मुख को बिलकुल उसके समीप लाते हुए उसने फुसफुसाया—'डैली के यहाँ से जब तुम झपटे, मैं समझ गयी थी कि तुम उसका पीछा कर रहे हो । मूर्ख ! तुम्हें चाहिए था कि उसे मार देते । उसके पास अपार धन है और बुराई का वह साकार रूप है ।'

'वह, वह व्यक्ति नहीं है जिसकी मै खोज कर रहा हूँ'—उसने उत्तर दिया—'और मुझे किसी का धन नहीं चाहिए । मुझे एक मनुष्य के प्राण चाहिए । मैं जिस मनुष्य के प्राण चाहता हूँ वह अब चालीस के लगभग होगा । यह तो लड़के से कुछ ही बड़ा है । भगवान् को धन्यवाद कि उसके रक्त से मैंने अपने हाथ नहीं रँगे ।'

स्त्री तीखे स्वर में हँसी—'लड़के से कुछ ही बड़ा'—उसने नाक चढ़ायी—'अरे, लगभग अठारह वर्ष हुए जब 'प्रिंस चार्मिंग' ने मेरी यह दशा कर दी ।'

'तुम झूठ बोलती हो !'—जेम्स वेन चिल्लाया ।

उसने आकाश की ओर हाथ उठाया । "भगवान् के सामने मैं सच बोल रही हूँ"—वह चिल्लायी ।

'ईश्वर के सामने ?'

'मुझे मारकर गूगी कर दो, यदि ऐसा न हो । यहाँ आनेवालों में वह सबसे बुरा है । कहा जाता है कि एक सुन्दर मुख के लिए उसने अपने आपको शैतान के हाथ बेच दिया है । लगभग अठारह वर्ष हुए जब मैं उससे मिली थी । तबसे उसमें विशेष परिवर्तन नहीं हुआ । मुझमें यद्यपि हुआ है'—निर्बल चितवन सहित उसने कहा ।

'तुम यह शपथपूर्वक कहती हो ?'

'मैं शपथपूर्वक कहती हूँ'—उसके चपटे मुख से भर्रायी हुई प्रतिध्वनि हुई—'किन्तु मुझे उसके सुपुर्द न कर देना'—धीमे क्रन्दन में उसने कहा—'मैं उससे डरती हूँ । रात के समय ठहरने के लिए मुझे कुछ पैसे दे दो ।'

शपथ खाता हुआ वह उससे अलग हुआ और गली के कोने की ओर झपटा, किन्तु डोरियन ग्रे ओझल हो चुका था। पीछे घूमकर जब उसने देखा, स्त्री भी जा चुकी।

१७

एक सप्ताह के बाद डोरियन ग्रे सेब्बी रायल के कोमल पौधों के सुरक्षा-स्थल में बैठा हुआ मानमाउथ की सुन्दरी डचेज से बातें कर रहा था जो अपने शिथिल प्रतीत होते हुए साठ वर्षीय पति के साथ उसकी अतिथि थी। चाय का समय था, प्रधान बनी हुई डचेज जिस मेज पर बैठी थी उस पर रखा हुआ झालर से ढका विशाल लैम्प प्रयुक्त होते हुए चीनी और गढ़ी चाँदी के सामान पर मधुर प्रकाश डाल रहा था। उसके श्वेत हाथ प्यालों में सुन्दरता से क्रियाशील थे और डोरियन ग्रे ने धीमे स्वर में उससे जो कुछ कहा था उसपर उसके पूर्णतया रक्ताभ अधर मुस्करा रहे थे। लार्ड हेनरी सिल्क से ढकी बेत की कुर्सी पर आराम से लेटा हुआ उन्हें देख रहा था। आड़ू जैसे रंग के सोफे पर बैठी हुई लेडी नारबोरो डचूक द्वारा संग्रह के लिए हाल ही में जुटाये ब्रेजील के मोगरे का वर्णन सुनने का बहाना कर रही थी। सुन्दर सूट पहिने हुए तीन तरुण कुछ महिलाओं को डबल रोटी दे रहे थे। घर की इस पार्टी में बारह व्यक्ति थे, दूसरे दिन कुछ और आनेवाले थे।

'तुम दोनों क्या बातें कर रहे हो ?'—मेज की ओर जाते तथा प्याले को रखते हुए लार्ड हेनरी ने पूछा—'ग्लेडीस, आशा है डोरियन ग्रे ने सभी नाम बदल डालने की मेरी योजना तुम्हें बता दी है। यह बहुत सुन्दर विचार है।"

'लेकिन हेनरी, मैं अपना नाम पुनः नहीं रखाना चाहती'—अनोखी आँखों से उसे देखते हुए डचेज ने उत्तर दिया—'मैं अपने नाम से पूर्णतया संतुष्ट हूँ और मुझे विश्वास है कि मिस्टर ग्रे को भी अपने नाम से संतोष होगा।'

'प्यारी ग्लेडीस, संसार के कहने पर भी इनमें से कोई भी नाम मैं न बदलूँगा। ये दोनों बिलकुल ठीक हैं। मेरा विचार विशेषतया फलों से सम्बन्धित था। कल मैंने एक आर्चिड[1] अपने कोट के लिए तोड़ा। बुंद-

[1]तीन पँखड़ियों वाला बुंदकीदार एक आकर्षक पुष्प।

कियोंदार यह सुन्दर वस्तु सात भयानक पापों के समान ही प्रभावोत्पादक थी। बिना सोचे एक माली से मैंने उसका नाम पूछा। उसने बतलाया कि रोबिन सोनियाना का वह एक सुन्दर नमूना अथवा कुछ वैसा ही-सा था। यह एक खेदजनक सत्य है, किन्तु वस्तुओं को सुन्दर नाम देने की हमारी योग्यता निश्शेष हो चुकी है। नाम ही सब कुछ है, कर्म से मैं कभी नहीं झगड़ता, मेरा एकमात्र संघर्ष शब्दों से है। यही कारण है कि साहित्य की भद्दी यथार्थता से मैं घृणा करता हूँ। कठोर सत्य कहनेवाले को एक ही प्रयोग के लिए विवश किया जाना चाहिए। वह इसी योग्य है।'

'हेनरी, तब हम तुम्हें क्या कहकर पुकारें ?'—उसने पूछा।

'इनका नाम प्रिंस पैराडाक्स[1] है'—डोरियन ने कहा।

'मैं इन्हें क्षणमात्र में ही पहिचान लेती हूँ'—इचेज ने कहा।

'मैं यह नहीं सुनना चाहूँगा'—एक कुर्सी पर बैठते हुए लार्ड हेनरी हँसा—'परिचय-पत्र से पलायन असम्भव है, मैं इस उपाधि को अस्वीकार करता हूँ।'

'राजवंशी सिंहासन-त्याग नहीं कर सकते।'—सुन्दर अधरों ने सावधान किया।

'तब तुम चाहती हो कि मैं अपने सिंहासन की रक्षा करूँ ?'

'हाँ।'

'मैं भविष्य का सत्य बताता हूँ।'

'मुझे वर्तमान की भूलें पसन्द हैं।'—उसने उत्तर दिया।

'ग्लेडीस, तुम मुझे निश्शस्त्र किया चाहती हो।'—उसके मनस्थित हठ पर अधिकार पाते हुए वह चिल्लाया।

'ढाल से हेनरी, भाले से नहीं।'

'सौन्दर्य पर मेरे भाले का आक्रमण कभी नहीं होता'—हाथ हिलाते हुए उसने कहा।

'विश्वास करो हेनरी, यह तुम्हारी भूल है। तुम सौन्दर्य को अत्यधिक मूल्यवान् समझते हो।'

---

१ जो वास्तव में सत्य किन्तु देखने में झूठ प्रतीत हो।

'तुम यह कैसे कह सकती हो ? मैं यह मानता हूँ कि मेरे विचार में सज्जन होने से सुन्दर होना अच्छा है। किन्तु दूसरी ओर मेरे अतिरिक्त दूसरा यह भी सहर्ष स्वीकार नहीं कर सकता कि सज्जन होना बदसूरत होने से अच्छा है।'

'तब कुरूपता सात भयानक पापों में से एक है ?' डचेज चिल्लायी--'आर्चिड की तुम्हारी उपमा कैसी रही ?'

'कुरूपता सात भयानक गुणों में से एक है ग्लेडीस ! एक सच्ची टोरी[२] होते हुए तुम्हें इन्हें हीन न समझना चाहिए। हमारा इंगलैंड जो कुछ भी है वह शराब, बाइबिल और सात भयानक गुणों का ही परिणाम है।'

'तब तुम अपना देश पसन्द नहीं करते ?'—उसने पूछा।

'मैं इसमें रहता हूँ।'

'तब क्या तुम्हारा इसे कलंकित करना अच्छा है ?'

'तुम चाहती हो कि इसपर मैं पूरोरा का निर्णय लूँ ?'—उसने पूछा।

'वे हमारे विषय में क्या कहते हैं ?'

'कि तारतुफे इंगलैंड चला गया है और एक दूकान खोल ली है।'

'यह कथन तुम्हारा है, हेनरी ?'

'मैं तुम्हें देता हूँ।'

'मैं इसका प्रयोग नहीं कर सकती। यह अत्यन्त सत्य है।'

'डरने की आवश्यकता नहीं हमारे देशवासी वर्गान कभी नहीं समझ पाते।'

'वे व्यवहारिक है।'

'व्यवहारिक की अपेक्षा वे चालाक अधिक हैं। खाता पूरा करते समय वे मूर्खता का धन और बुराई का कपट में संतुलन करते हैं।'

'फिर भी हमने बड़े काम किये हैं।'

'बड़े काम हमपर थोप दिये गये हैं, ग्लेडीस।'

'हमने उनके भार को वहन किया है।'

'केवल हुण्डी करने तक।'

---

२ जेम्स द्वितीय के निष्कासन का विरोधी दल।

उसने सिर हिलाया। 'मैं रेम में विश्वास करती हूँ'—वह चिल्लाई।

'इसमें धक्के से बचने का प्रतिनिधित्व है।'

'इसमें विकास है।'

'ह्रास मुझे अधिक पसन्द है।'

'कला ?'—उसने पूछा।

'यह एक बीमारी है।'

'प्रेम ?'

'एक भ्रमजाल।'

'धर्म ?'

''विश्वास का व्यवहारिक स्थानापन्न।'

'तुम नास्तिक हो।'

'कभी नहीं ! नास्तिकता में विश्वास का आरम्भ है।'

'तुम क्या हो ?'

'परिभाषा देना सीमित कर देना।'

'संकेत बतलाओ।'

'सूत्र टुकड़े-टुकड़े हो जाते है। गोरखधन्धे में तुम भटक जाओगी।'

'तुमने मुझे चकरा दिया है। कुछ और बात करो।'

'हमारा गृहस्वामी अत्यन्त अच्छा विषय है। कई वर्ष हुए इनका नाम 'प्रिंस चार्मिंग' रखा गया था।'

'आह, मुझे उसकी याद न दिलाओ'—डोरियन ग्रे चिल्लाया।

'हमारा गृहस्वामी आज कुछ भयभीत है'—डचेज ने लजाते हुए उत्तर दिया—'मुझे विश्वास है कि इनके विचार में आधुनिक तितली का सर्वोत्तम नमूना समझकर वैज्ञानिक कारणों के वशीभूत होने पर ही मानमाउथ ने मुझसे विवाह किया।'

'अच्छा, आशा है वह तुम्हारे पिन नहीं गाड़ेगा'—डोरियन हँसा।

'ओह, मिस्टर ग्रे, मुझसे असंतुष्ट होने पर मेरी नौकरानी ऐसा ही करती है।'

'और वह तुमसे असंतुष्ट क्यों हो जाती है, डचेज ?'

'बहुत ही साधारण बातों पर मिस्टर ग्रे, मैं तुम्हें विश्वास दिलाती

हूँ। प्रायः इसलिए कि मैं नौ बजने में दस मिनट पर घर पहुँचती हूँ और उसे आज्ञा देती हूँ कि साढ़े आठ बजे तक मुझे कपड़े अवश्य पहिना दे।'

'वह कितनी बेतुकी है ! उसे सावधान कर दो।'

'मैं साहस न कर सकी, मिस्टर ग्रे ! कारण, वह मेरे लिए टोपियों का आविष्कार करती है। तुम्हें उसकी याद है जो मैंने लेडी हिलस्टोन की गार्डन-पार्टी में पहिनी थी ? तुम्हें नहीं याद, पर यह तुम्हारा अनुग्रह है कि याद होने का तुम बहाना करते हो। हाँ, तो न कुछ में से उसने वह टोपी बनायी थी। अच्छी टोपियाँ महत्त्वहीन वस्तुओं की ही बनती हैं।

'सुयश के ही समान, ग्लेडीस'—बीच में ही लार्ड हेनरी बोल दिया—'प्रत्येक प्रभाव एक शत्रु की सृष्टि करता है। प्रसिद्ध होने के लिए साधारण होना आवश्यक है।'

'महिलाओं के साथ नहीं'—डचेज ने सिर हिलाते हुए कहा—'और महिलाएँ संसार पर शासन करती हैं। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ, साधारण स्थितिवालों को हम सहन नहीं कर सकतीं। हम स्त्रियाँ, जैसा कि किसी ने कहा है, कानों से सुनकर उसी प्रकार प्रेम करती हैं जिस प्रकार तुम पुरुष आँखों से देखकर, यदि तुम लोग प्रेम करते हो तो !'

'मुझे ऐसा लगता है कि हम लोग और कुछ करते ही नहीं'—डोरियन ने धीमे स्वर में कहा।

'आह, मिस्टर ग्रे, तब तुम वास्तविक प्रेम करते ही नहीं'—कृत्रिम उदासीनता के साथ डचेज ने उत्तर दिया।

'प्यारी ग्लेडीस'—लार्ड हेनरी ने उच्च स्वर में कहा—'तुम यह कैसे कह सकती हो ? रोमांस पुनरुक्ति पर जीता है और पुनरुक्ति एक भूख को कला में परिवर्तित कर देती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बार जब एक व्यक्ति प्रेम करता है, वही वास्तविक समय होता है जबकि उसने प्रेम किया है। व्यक्ति के परिवर्त्तन से उत्कट प्रेम की एकाग्रता में अन्तर नहीं आता। इसमें परिवर्धन ही होता है। जीवन में हमें एक ही महान् अनुभव प्राप्त हो सकता है और जीवन का रहस्य यही है कि जितनी बार भी सम्भव हो सके उस अनुभव को नया रूप दिया जाय।'

'उससे पीड़ित होने पर भी, हेनरी ?'—कुछ रुककर डचेज ने पूछा।

'विशेषतया तभी जब पीड़ित हुआ हो'—लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया।

डचेज घूमी और आँखों में विचित्र भाव भरकर डोरियन ग्रे को देखा—'मिस्टर ग्रे, इस विषय में तुम क्या कहते हो ?'—उसने पूछा।

डोरियन क्षणभर हिचकिचाया। फिर सिर पीछे टेका और हँस पड़ा—'मैं हेनरी से सदैव सहमत हूँ, डचेज !'

'वह गलती पर हो, तब भी ?'

'हेनरी कभी गलती नहीं करता, डचेज !'

'और क्या उसकी दार्शनिकता तुम्हें संतुष्ट करती है ?'

संतोष की खोज मैंने कभी नहीं की। संतोष किसे चाहिए ? मैंने आनन्द की खोज की है।'

'और पाया, मिस्टर ग्रे ?'

'प्रायः, बहुधा।'

डचेज ने एक निश्श्वास लिया। 'मैं शान्ति खोज रही हूँ'—उसने कहा—'और जाकर यदि मैं वस्त्र धारण नहीं करती तो इस संध्या को मुझे बिलकुल शान्ति न मिलेगी।'

'डचेज, तुम्हारे लिए मैं कुछ आर्चिड ले आऊँ'—डोरियन ग्रे ने उठकर खड़े होते तथा सुरक्षास्थल में जाते हुए उच्च स्वर से कहा।

'उसके साथ तुम लज्जास्पद रूप में प्यार के चोचले कर रही हो'—लार्ड हेनरी ने अपनी चचेरी बहिन से कहा—'अच्छा हो कि तुम सावधान रहो। वह अत्यन्त मोहक है।'

'यदि वह न होता तो संघर्ष ही न होता।'

'तब यह एक यूनानी से यूनानी का मिलन है।'

'मैं ट्राजन्स की ओर हूँ। वे एक स्त्री के लिए लड़े थे।'

"वे हार गये थे।"

'बन्दी होने से भी बुरी अवस्थाएँ हैं।'—उसने उत्तर दिया।

'तुम लगाम ढीली छोड़कर छलाँग मारती हो।'

'दौड़ में ही जीवन प्राप्त होता है,' उत्तर था।

'आज रात में इसे डायरी में लिखूँगा।'

'क्या ?'

'कि एक जला हुआ बच्चा अग्नि से प्रेम करता है।'

'मैं तो झुलसी भी नहीं। मेरे पर अछूते हैं।'

'उड़ने के अतिरिक्त उनका और कोई भी उपयोग कर सकती हो।'

'साहस मनुष्यों से स्त्रियों में पहुँच गया है। हमारे लिए यह नया अनुभव है।'

'तुम्हारी एक प्रतिद्वंद्विनी है।'

'कौन ?'

वह हँसा। 'लेडी नारबोरो'—वह फुसफुसाया—'वह उसपर पूर्ण-तया आसक्त है।'

'तुम मुझे डराते हो। हम वैचित्र्यवादियों के लिए रीति-रिवाज की पुकार घातक है।'

'वैचित्र्यवादी ! तुम्हारे रानी ढंग वैज्ञानिक है।'

'पुरुषों ने हमें शिक्षित किया है।'

'किन्तु समझाया नहीं।'

'लिंग-रूप में हमारा परिचय दो'—उसकी चुनौती थी।

'रहस्यहीन स्फिन्क्स[1] !'

मुस्कराकर उसने उसे देखा। 'मिस्टर ग्रे को कितनी देर हो गयी'—उसने कहा—'चलकर उसकी सहायता करनी चाहिए। अपनी फ्राक का रंग तो मैंने उसे अब तक बतलाया ही नहीं।'

'आह ग्लेडीस ! उसके फूलों के अनुसार ही फ्राक तुम पहनना।'

'वह अकाल आत्मसमर्पण होगा।'

'वैचित्र्यवादी कला का आरम्भ चरम स्थिति से ही होता है।'

'लौटने का अवसर मेरे पास अवश्य रहना चाहिए।'

'पार्थियन के समान ?'

'वे रेगिस्तान में सुरक्षित हो सके। मैं वैसा नहीं कर सकती।'

'स्त्रियों को मन के अनुकूल पसन्द करने का अवसर सदैव नहीं

---

१ यूनानी धर्मग्रन्थ में वर्णित एक राक्षसी जिसका सिर और वक्ष नारी का था, शरीर शेरनी का और साथ ही पंख भी थे। रहस्य खुल जाने पर चट्टान से गिरकर उसने आत्म-हत्या कर ली थी।

मिलता'—उसने उत्तर दिया, किन्तु वाक्य कठिनता से समाप्त हो पाया था कि सुरक्षास्थल के सुदूर कोने से रुँधे गले का क्रन्दन और तत्पश्चात् गिरने की धमक सुनाई दी। सब चिहुंक पड़े। डचेज भय से जड़ित खड़ी रह गयी। और आँखों में आशंका लिये हुए लार्ड हेनरी फड़फड़ाते हुए ताड़ के पौधों में से झपटता हुआ मृत्यु जैसी मूर्छा में खपरैल के फर्श पर मुँह के बल पड़े हुए डोरियन ग्रे के पास पहुँचा।

शीघ्र ही उसे नीली बैठक में ले जाया गया और एक सोफे पर लिटा दिया गया। थोड़ी देर में चेतना लौटी और घबरायी हुई अवस्था में उसने चारों ओर दृष्टि डाली।

'क्या हुआ ?'—उसने पूछा—'ओह, याद आया। क्या मैं यहाँ सुरक्षित हूँ हेनरी ?' वह काँपने लगा।

'प्यारे डोरियन'—लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—तुम्हें केवल मूर्छा आयी थी, बस। तुमने अपने आपको अत्यधिक थका डाला होगा। अच्छा हो तुम भोजन पर न जाओ। तुम्हारा स्थान मैं ग्रहण कर लूँगा।'

'नहीं मैं चलूँगा' पैरों पर बल डालते हुए उसने कहा—'चलना मेरे लिए अधिक अच्छा है। मुझे अकेला नहीं रहना चाहिए।'

वह कमरे में गया और वस्त्र धारण किये। मेज के पास बैठने पर उसके ढंग में विचारहीन उल्लास अत्यधिक था, किन्तु जब-तब यह याद आ जाने पर कि सुरक्षास्थल की खिड़की से श्वेत रूमाल के समान सटकर उसे देखते हुए जेम्स वेन का मुख दिखलायी दिया था, भय की एक कँप-कँपी उसके समस्त शरीर में दौड़ जाती थी।

१८

दूसरे दिन वह घर से न निकला, मृत्यु-भय से पीड़ित, और फिर भी अपने जीवन से उदासीन। अपना अधिकाँश समय उसने कमरे में ही व्यतीत किया। शिकार होने, फँसने और खोज लिये जाने की भावनाओं से वह अभिभूत होता चला जा रहा था। पर्दा यदि हवा में भी हिलता तो वह काँप उठता शीशों से आकर टकराने वाले निष्प्राण पत्ते उसे अपने ही नष्ट इरादों और निकट पश्चात्तापों-से प्रतीत होते थे। आँखें बन्द करने पर उसे कुहरे से आच्छादित शीशे में से झाँकते हुए नाविक का

मुख पुनः दिखलायी दिया और लगा कि भय का हाथ उसके हृदय को पुनः आच्छादित कर लेगा।

किन्तु सम्भवतः यह उसकी कल्पना ही थी जो रात्रि में से प्रतिबोध निकाल लायी थी और उसके ऐसे भयंकर दण्ड उपस्थित कर दिये थे। वास्तविक जीवन गड़बड़ था, किन्तु कल्पना में कुछ विचित्र वास्तविकता थी। यह कल्पना ही थी जिसने प्रायश्चित को पाप के पीछे लगा दिया था। वास्तविक जीवन में दुष्ट दंडित नहीं होते और न सज्जन ही पुरस्कृत होते हैं। बलशाली विजयी होता है और दुर्बल पर असफलता लाद दी जाती है। बस, केवल यही! इसके अतिरिक्त यदि कोई अपरिचित मकान के पास घात में घूमता होता तो सेवकों अथवा रक्षकों द्वारा अवश्य देख लिया जाता। यदि फूल की क्यारियों पर कोई पद-चिह्न मिलता तो माली इसकी सूचना देते। हाँ, यह कोरी कल्पना थी। सिविल बेन का भाई उसे मारने के लिए पुनः नहीं आया। वह तो अपना जहाज लेकर किसी तूफानी समुद्र में टक्कर खाने के लिए चला गया था। उससे तो वह प्रत्येक दशा में सुरक्षित था। वह तो इसे जानता ही न था, जान ही न सकता था। तारुण्याभास ने उसे बचा लिया था।

और फिर भी, यदि यह केवल भ्रमजाल ही था तो यह विचार करना कितना भयानक था कि आत्मा ऐसी भयानक कल्पित मूर्तियाँ उपस्थित कर सकती है, उन्हें साकार कर सकती है और सामने ही गतिशील कर सकती है। उसका जीवन कैसा हो जायगा यदि दिन-रात उसके अपराध की छाया-मूर्तियाँ सुनसान कोनों से झाँकेंगी, गुप्त स्थानों से उसे चिढ़ायेंगी, दावत में बैठते समय उसके कानों में फुसफुसायेंगी, शीतल अँगुलियों से उसे सोते से जगायेंगी। यह विचार आते ही वह भय से पीला पड़ गया और वायु उसे अचानक ही शीतल होती प्रतीत हुई। ओह, किस पागलपन की अवस्था में उसने अपने मित्र की हत्या कर डाली थी। उस दृश्य का स्मरणमात्र कितना भयानक है। उसे वह सब पुनः दिखलायी दिया। प्रत्येक भयकारी विवरण अधिकाधिक भयानक होकर उसके समक्ष उपस्थित हुआ। समय की काली गुफा से रक्तावरण लिपटी उसके पाप की मूर्ति उठ खड़ी हुई। छै बजे जब लार्ड हेनरी अन्दर आया

तो उसे भग्न-हृदय के समान चिल्लाते पाया।

तीसरे दिन से पहिले वह बाहर जाने का साहस न कर सका। उस शीतकालीन प्रातःकाल की स्वच्छ और अनन्नास से सुगन्धित वायु में ऐसा कुछ था जो उसकी प्रसन्नता को और जीवन के प्रति उत्साह को पुनः लाता हुआ प्रतीत हुआ। किन्तु ये वातावरण की शारीरिक परिस्थितियाँ ही नहीं थीं जिन्होंने परिवर्तन उपस्थित कर दिया था। उसकी शान्ति की पूर्णता को पंगु करने और बरबाद कर डालनेवाली मानसिक पीड़ा के आधिक्य के विरुद्ध स्वयं उसका स्वभाव विद्रोह कर बैठा था। सुन्दर और सुसंस्कृत स्वभाव में सदैव ऐसा ही होता है। उनकी सुदृढ़ भावनाएँ या तो कुचल डालती हैं अथवा झुक जाती हैं। वे या तो मनुष्य को मार डालती हैं अथवा स्वयं नष्ट हो जाती हैं। तुच्छ शोक और तुच्छ प्रेम बने रहते हैं। जो प्रेम और शोक महान् होते हैं वे अपनी पूर्णता के कारण ही नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त उसे विश्वास हो गया था कि वह भयग्रस्त कल्पना का शिकार हुआ था और अब अपने भयों को वह घृणा से नहीं, बल्कि सहानुभूति से देखता था।

जलपान के बाद वह डचेज के साथ घण्टे भर तक वाटिका में घूमा और फिर पार्क पार करता हुआ शिकारी-दल में सम्मिलित होने चला गया। भुरभुरा पाला घास पर नमक के समान पड़ा हुआ था। आकाश नीली धातु का औंधा प्याला था। सरकंडों की उपज से घिरी चपटी झील के चारों ओर बर्फ की एक पतली तह जमी हुई थी।

अनन्नास के वन के कोने पर उसने डचेज के भाई सर ज्योफ्रे क्लाउस्टन को झटका देकर दो खाली कारतूसों को बन्दूक से बाहर निकालते देखा। वह गाड़ी से कूद पड़ा और सईस से घोड़ी घर ले जाने के लिए कहकर वह मुर्झायी हुई झाड़ी-झँखाड़ों में होकर अपने मेहमान की ओर चला।

'खेल-कूद खूब रहा, ज्योफ्रे ?'—उसने पूछा।

'भली प्रकार नहीं, डोरियन ! मेरे विचार में अधिकांश पक्षी मैदानों में चले गये हैं। मैं कह सकता हूँ कि भोजन के बाद नये स्थान पर चलने से अच्छा रहेगा।'

डोरियन उसके साथ-साथ चलता रहा। तीव्र सुगन्धित वायु वन में जगमगानेवाले भूरे और लाल प्रकाश, बीच-बीच में गूँज उठनेवाली ढोल पीटनेवालों की भारी आवाजें और तदुपरान्त होनेवाली बन्दूकों की तड़कें उसे अच्छी लगती थीं और उसे आनन्दपूर्ण स्वतन्त्रता की भावना से भरती थीं। अचिन्तनीय सुख और लापरवाही से भरी प्रसन्नता उस पर छायी हुई थी।

अचानक ही, पुरानी घास के ढेर से, उनके सामने बीस गज के अन्तर पर काली बुँदकियोंदार खड़े कान और लम्बी पिछली टाँगों को आगे फेंकता हुआ एक खरगोश निकला। वह सनोवर जैसे वृक्षों के घने वन की ओर भागा। सर ज्योफ्रे ने बन्दूक कन्धे से लगायी, किन्तु उसकी गति में कोई ऐसा विशेष आकर्षण था जिसने डोरियन ग्रे को विचित्र रूप से आकर्षित किया और वह शीघ्र ही चिल्ला पड़ा —'ज्योफ्रे, इसे मत मारो। इसे जीवित रहने दो।'

'यह कैसी मूर्खता डोरियन !'—उसका साथी हँसा और खरगोश के सघन वन में घुसते ही उसने गोली दाग दी। दो चीत्कार सुनायी दिये, पीड़ित खरगोश का स्वर, जो भयानक था और एक मनुष्य की मृत्युयंत्रणा का स्वर जो और भी बुरा था।

'हे भगवन् ! मैंने एक ढोल पीटनेवाले को मार दिया !'—सर ज्योफ्रे चिल्ला उठा—'कितना गधा था जो बन्दूकों के सामने आ गया ! शिकार बन्द करो !'—उच्चातिउच्चतम स्वर में उसने कहा—'एक मनुष्य घायल हो गया है।"

प्रधान रक्षक लकड़ी लिये दौड़ता चला आया।

'कहां हुजूर ? वह कहां है ?'—उसने उच्च स्वर में पूछा। गोली का दगना वहीं उसी समय बन्द हो गया।

'यहाँ,'—सघन झाड़ियों की ओर बढ़ते हुए सर ज्योफ्रे ने क्रुद्ध हो कर उत्तर दिया। 'आखिर तुम अपने आदमियों को पीछे क्यों नहीं रखते हो ? मेरा आज का शिकार मिट्टी कर दिया।'

डोरियन ग्रे उन्हें झाड़ियों के कुँज में घुसते और लचीली टहनियों को बलपूर्वक एक ओर हटाते देखता रहा। कुछ ही क्षण में धूप में एक

शरीर घसीटते हुए वे निकले। भयभीत होकर वह हट गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि जहाँ भी वह जाता है दुर्भाग्य उसका पीछा करता है। उसने सर ज्योफ्रे को यह पूछते कि क्या वह मनुष्य वास्तव में मर गया है और रक्षक के स्वीकारसूचक उत्तर को सुना। अचानक ही वन उसे मुखों से पूर्ण प्रतीत हुआ। असंख्य पैर चल रहे थे और आवाजों की धीमी गुनगुनाहट हो रही थी। ऊपर कुंजों में से एक बड़ा, ताम्रवर्ण के वक्ष-वाला तीतर आ गया।

कुछ क्षण बाद, जो अशान्त अवस्था के कारण उसके लिए अनन्त पीड़ा के घण्टों के समान थे उसने कँधे पर एक हाथ का रखा जाना अनुभव किया। वह चौंका और चारों ओर देखने लगा।

'डोरियन!'—लार्ड हेनरी ने कहा—'अच्छा हो कि मैं उन्हें बतला दूँ कि आज शिकार बन्द किया गया। चालू रखना अच्छा न दिखाई देगा।'

'हेनरी, मैं चाहता हूँ कि इसे हमेशा के लिए बन्द कर दिया जाय!'—कटुतापूर्वक उसने उत्तर दिया—'यह सब भयानक और निर्दय है। क्या वह मनुष्य·····?'

वाक्य को वह पूरा न कर सका—'भय है कि ऐसा ही है।'—लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—'गोली पूर्णतया उसकी छाती में लगी। वह तत्काल मर गया होगा। चलो, घर चलें।'

लगभग पचास गज तक वे साथ ही साथ बिना बोले उस मार्ग की ओर चले। तब डोरियन ने लार्ड हेनरी की ओर देखा और गहरी निश्श्वास लेते हुए कहा—'यह अपशकुन है, हेनरी! बहुत बुरा अपशकुन!'

'क्या?'—लार्ड हेनरी ने पूछा—'ओह, सम्भवतः यह घटना। प्यारे साथी, यह बस के बाहर की बात है। दोष उसी का था। वह बन्दूकों के सामने क्यों आया? इसके अतिरिक्त, हमसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं। निश्चय ही ज्योफ्रे के लिए बुरा है। ढोल पीटनेवालों पर आरोप लगाना व्यर्थ है। लोग सोचेंगे कि निशाना लगाना नहीं आता। और ज्योफ्रे में यह बात नहीं है, वह सीधी गोली दागता है। किन्तु इस विषय में बात करने से कोई लाभ नहीं।'

डोरियन ने सिर हिलाया। 'यह बुरा अपशकुन है, हेनरी ! मुझे लगता है कि हममें से किसी पर कोई आफत आनेवाली है। सम्भवत: मुझपर !'—पीड़ा-प्रदर्शन के साथ आँखों पर हाथ फेरते हुए उसने यह भी कह दिया।

उसका साथी हँसा। "संसार में केवल थकाऊ वस्तु ही भयानक है। वही एकमात्र पाप है जिसकी कोई क्षमा नहीं है। किन्तु ये लोग यदि भोजन के समय भी इसी विषय में बातें न करते रहें तो हमें इससे कोई हानि नहीं है। मैं उनसे अवश्य कह दूँगा कि यह विषय वर्जित होगा। जहाँ तक अपशकुन का प्रश्न है, अपशकुन जैसी कोई वस्तु नहीं है। भाग्य हमें कोई संवाद नहीं भेजता। इस विषय में वह अत्यन्त बुद्धिमान अथवा अत्यन्त निर्दय है। इसके अतिरिक्त, तुम्हें हो ही क्या सकता है, डोरियन ? एक मनुष्य जो कुछ भी इच्छा कर सकता है वह सभी कुछ तुम्हें इस संसार में उपलब्ध है। कोई भी ऐसा नहीं है जो तुम्हारा स्थानापन्न होने में प्रसन्नता अनुभव न करे।"

'कोई भी ऐसा नहीं है हेनरी जिससे मैं अदला-बदली न करना चाहूँ। इस प्रकार न हँसो ! मैं ठीक कह रहा हूँ। जो अभागा मरा है वह मुझसे अच्छा है। मृत्यु का मुझे कोई भय नहीं है। मृत्यु का आना ही मुझे भय-भीत करता है। मेरे चारों ओर की हवा में इसके पंख चलते प्रतीत होते हैं। हे भगवन् ! पेड़ों के पीछे क्या तुम्हें एक मनुष्य घूमता हुआ, मुझे ताकता हुआ, मेरी प्रतीक्षा करता हुआ दिखलायी नहीं देता ?'

काँपता हुआ, दस्तानों में ढँका हाथ जिधर संकेत कर रहा था लार्ड हेनरी ने उस दिशा में देखा। 'हाँ'—उसने मुस्कराते हुए कहा—'तुम्हारी प्रतीक्षा करता हुआ माली मुझे दिखलायी दे रहा है। मेरे विचार में वह तुमसे यह पूछना चाहता है कि आज रात मेज के लिए तुम्हें कौनसे फूल चाहिए। मेरे प्यारे साथी, तुम कितने अस्थिर चितवाले हो ! शहर लौटने पर तुम मेरे डाक्टर से अवश्य मिलना।'

माली को आता देखकर डोरियन ने निश्चिन्तता की साँस ली। उस मनुष्य ने अपनी टोपी का स्पर्श किया (सलाम किया), सकुचाते हुए क्षण-भर लार्ड हेनरी की ओर देखा और फिर एक पत्र निकाला जिसे उसने

अपने स्वामी को दे दिया। 'उन्होंने मुझे उत्तर की प्रतीक्षा करने के लिए कहा था'—उसने धीमे स्वर में कहा।

डोरियन ने पत्र जेब में रख लिया। 'उनसे कहना कि मैं आ रहा हूँ।'—उसने गम्भीरतापूर्वक कहा। सेवक घूमा और मकान की ओर चला गया।

'स्त्रियों को भयानक कृत्यों का कितना शौक होता है!'—लार्ड हेनरी हँसा। "उनके इस गुण की मैं अत्यन्त प्रशंसा करता हूँ। जब तक दूसरे लोग देखनेवाले हैं, एक स्त्री संसार के किसी भी व्यक्ति से सम्बन्ध स्थापित कर सकती है।"

'हेनरी, तुम्हें भयानक बातें कहने का कितना शौक है! प्रस्तुत बात में तुम बिलकुल बहके हुए हो। डचेज को मैं अत्यन्त पसन्द करता हूँ, पर प्यार नहीं करता।'

'और डचेज तुम्हें अत्यन्त चाहती है पर पसन्द कम करती है अतएव तुम्हारी जोड़ी अत्यन्त उपयुक्त है।'

'तुम मिथ्या निन्दा कर रहे हो हेनरी, और निन्दा का कोई भी आधार नहीं है।'

'प्रत्येक निन्दा का आधार एक अनैतिक निश्चितता होती है।'—लार्ड हेनरी ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

'हेनरी, चुटकुले के लिए तुम किसी का भी बलिदान कर सकते हो।'

'संसार स्वयं ही बलिवेदी की ओर जाता है।' उसका उत्तर था।

'काश, मैं प्यार कर सकता!'—स्वर में गहरी वेदना भरकर डोरियन ग्रे ने कहा—'किन्तु ऐसा लगता है कि भावावेश समाप्त हो चुका है और इच्छा भुलायी जा चुकी है। मैं स्वयं में ही अत्यधिक एकाग्र होकर रह गया हूँ। मैं स्वयं अपने ऊपर भार हो गया हूँ। मैं पलायन चाहता हूँ, चला जाना चाहता हूँ, भूल जाना चाहता हूँ। मेरा यहाँ आना ही मूर्खतापूर्ण था। शीघ्रगामी जहाज तैयार रखने के लिए हार्वे को तार दे देने का मेरा विचार है। शीघ्रगामी जहाज पर मनुष्य सुरक्षित है।'

'सुरक्षित किससे, डोरियन? तुम किसी संकट में हो। मुझे क्यों

नहीं बतलाते कि वह क्या है ? तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।'

'मैं तुम्हें नहीं बतला सकता, हेनरी !'—उदास होकर उत्तर दिया—'और मैं यह कह सकता हूँ कि यह मेरी कल्पना ही है। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने मुझे अस्त-व्यस्त कर दिया है। मुझे कुछ चेतावनी-सी मिल रही है कि ऐसा कुछ मेरे साथ हो सकता है।'

'क्या मूर्खता है !'

'ऐसा ही है, किन्तु इसका अनुभव किये बिना मुझसे नहीं रहा जाता। आह, दर्जी के बनाये गाउन में आर्टिमिस जैसी दिखायी देनेवाली यह डचेज है। देखा, हम लोग लौट आये, डचेज !'

'मैंने इस विषय में सब कुछ सुन लिया है, मिस्टर ग्रे'—उसने उत्तर दिया—'बेचारा ज्योफ्रे बिलकुल अस्तव्यस्त है और तुमने सम्भवतः उसे खरगोश मारने से मना किया था। कितनी विचित्र बात है।'

'हाँ, यह अत्यन्त विचित्र रहा। मैं नहीं जानता कि मैं वैसा कैसे कह बैठा। सोचता हूँ, कोई झख थी। छोटे जीवों में वह सर्वाधिक सुन्दर दिखलायी दे रहा था। किन्तु मुझे खेद है कि उन्होंने तुम्हें उस मनुष्य के विषय में बतलाया। यह एक भयानक विषय है।'

'यह एक क्रोधोत्पादक विषय है,'—लार्ड हेनरी ने बीच ही में कहा—'इसका कोई मनोवैज्ञानिक मूल्य नहीं है। यदि ज्योफ्रे ने किसी उद्देश्य से ऐसा किया होता तो वह कितना आकर्षक होता। मैं किसी ऐसे को जानना चाहूँगा जिसने वास्तविक हत्या की हो।'

'तुममें कितनी भयानकता है, हेनरी !'—डचेज चिल्लायी—'है न मिस्टर ग्रे ? हेनरी, मिस्टर ग्रे पुनः अस्वस्थ हैं। उन्हें मूर्च्छा आ रही है।'

प्रयत्न करके डोरियन ने स्वयं को सँभाला और मुस्कराया। 'यह कुछ नहीं है, डचेज !'—उसने धीमे स्वर में कहा—'मेरे स्नायु घोर रूप से अस्तव्यस्त हैं। बस ! लगता है कि आज सुबह मैं अधिक दूर तक घूमा। हेनरी ने क्या कहा, मैंने नहीं सुना। क्या बहुत बुरा कहा ? किसी समय मुझे अवश्य बतलाना। सोचता हूँ, मुझे जाकर अवश्य लेट जाना चाहिए। तुम मुझे क्षमा करोगी, करोगी न ?'

कन्जरवेटरी से चबूतरे तक जानेवाले सोपानों के बड़े क्रम के समीप वे पहुँच चुके थे। शीशे का द्वार जैसे ही डोरियन के पीछे बन्द हुआ, लार्ड हेनरी घूमा और उन्हीं की आँखों से डचेज को देखने लगा।

'क्या तुम्हें उससे बहुत प्रेम हो गया है ?'—उसने पूछा।

कुछ देर तक वह चुप रही और प्रकृति की छटा निहारती रही। 'काश, मैं जानती !'—उसने अन्त में कहा।

उसने सिर हिलाया—'ज्ञान घातक होगा। अनिश्चितता में ही आकर्षण होता है। कुहरा वस्तुओं को अद्भुत रूप देता है।'

'राह में भटक जाने की सम्भावना होगी।'

'प्यारी ग्लेडी, सभी मार्ग एक ही स्थान पर समाप्त होते हैं।'

'वह क्या है ?'

'भ्रम-मुक्ति।'

'जीवन में यह मेरा प्रथम प्रवेश था।'—उसने निश्वास लिया।

'यह सफलता लिये हुए आया।'

'स्ट्रावेरी के पत्तों से मैं ऊब चुकी हूँ।'

'वे तुम्हारे अनुकूल हैं।'

'केवल जन समाज में।'

'उनका अभाव हो जायगा।'—लार्ड हेनरी ने कहा।

'मैं एक दल से भी वंचित न रहूँगी।'

'मानमाउथ के कान हैं।'

'बुढ़ापे में सुनायी कम देता है।'

'क्या उन्हें ईर्षा कभी नहीं हुई ?'

'अच्छा होता यदि होती।'

वह इधर-उधर देख रहा था, मानो कुछ खोज रहा हो।

'क्या खोज रहे हो ?'—उसने पूछा।

'तुम्हारे आभूषण का बटन,'—उसने उत्तर दिया—'तुमने गिरा दिया है।'

वह हँसी—'मुख का आवरण अभी भी मेरे पास है।'

'इससे तुम्हारी आँखें और भी प्यारी लगती हैं।'—उत्तर था।

वह पुनः हँसी। उसके दाँत लाल फल में सफेद बीज के समान दिखलायी दिये।

डोरियन ग्रे ऊपर अपने कमरे में सोफे पर लेटा हुआ था, उसके शरीर की प्रत्येक सनसनाती हुई नस में भय समाया हुआ था। जीवन अचानक ही उसे दुर्वह भार हो गया था। सघन वन में पशुवत मारे गये अभागे ढोल पीटने वाले की भयानक मृत्यु उसकी मृत्यु को भी पहिले से ही साकार करती प्रतीत हुई। लार्ड हेनरी ने अचानक ही कुटिल मजाक की मनोदशा में जो कुछ कहा था उसे सुनकर वह लगभग मूर्च्छित ही हो गया था।

पाँच बजे उसने सेवक के लिए घंटी बजायी, रात की एक्सप्रेस से शहर जाने के लिए सामान बाँधने और साढ़े आठ बजे तक ब्राघम गाड़ी द्वार पर ले आने के लिए आज्ञा दी। उसने निश्चय कर लिया था कि दूसरी रात सेल्वी रॉयल में नहीं सोयेगा। यह मनहूस जगह थी जहाँ मृत्यु दिन दहाड़े घूमती थी। वन की घास रक्त के छींटों से रंजित थी।

फिर उसने यह बताते हुए लार्ड हेनरी को एक पुर्जा लिखा कि डाक्टर से राय लेने वह शहर जा रहा है और उसकी अनुपस्थिति में अतिथियों का स्वागत वह करे। जैसे ही वह इसे लिफाफे में रख रहा था, द्वार पर खटका हुआ और सेवक ने सूचित किया कि प्रधान रक्षक मिलना चाहता है। भृकुटि चढ़ गयी और उसने होंठ काट लिया। 'उसे अन्दर भेज दो'—कुछ क्षण की झिझक के बाद वह बड़बड़ाया।

उसके प्रवेश करते ही डोरियन ने दराज से चेक बुक निकाली और उसने सामने खोलकर रख दी।

'थार्नटन, मेरे विचार से तुम सुबह की दुर्घटना के सम्बन्ध में आये हो।'—कलम लेते हुए उसने पूछा।

'जी, हुजूर!'—शिकाराध्यक्ष ने उत्तर दिया।

'उस बेचारे की शादी हुई थी? उसका कोई आश्रित था?'—उकताया हुआ दिखायी देनेवाले डोरियन ग्रे ने पूछा। 'यदि ऐसा हो तो मैं नहीं चाहता कि वे अभाव पीड़ित रहें, जो धन तुम उचित समझो वही उनके लिए भेजूँ।'

'हुजूर हम नहीं जानते कि वह कौन है। इसी कारण मैंने आपके

पास आने की आवश्यकता समझी।'

'नहीं जानते वह कौन है ?' डोरियन ने उदासीन होकर पूछा। 'क्या कहते हो ? क्या वह तुम्हारे आदमियों में नहीं था ?'

'नहीं हुजूर ! पहिले से कभी नहीं देखा। नाविक जैसा दिखता है, हुजूर !'

कलम डोरियन के हाथ से गिर पड़ी और उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसकी हृदय-गति अचानक ही रुक गयी हो—'नाविक !'—वह चिल्लाया—'क्या तुमने 'नाविक' कहाँ ?'

'जी, हुजूर ! वह ऐसा ही दिखलायी देता है जैसे नाविक-सा रहा हो, दोनों बाँहों पर गुदा हुआ और कुछ वैसा ही।'

'उसके पास कुछ मिला ?'—आगे को झुकते तथा चकित दृष्टि से देखते हुए डोरियन ने पूछा।—'कुछ जिससे उसका नाम ज्ञात हो सके ?'

कुछ रुपया, हुजूर—अधिक नहीं और एक छै गोलीवाली पिस्तौल। नाम कोई भी न था। देखने में भला, हुजूर ! पर रूखा-सा। हमारे विचार में एक नाविक जैसा।'

डोरियन उचककर खड़ा हो गया। उसके अंतर में एक विकट आशा नाच उठी। अधीर होकर वह पीछे पड़ा—'शव कहाँ है ?'—उसने पूछा—'शीघ्रता करो, मैं अभी देखूँगा।'

'होम फार्म के खाली अस्तबल में है, हुजूर ! ऐसी वस्तु को देहाती अपने घरों में रखना नहीं पसंद करते। उनका कहना है कि शव दुर्भाग्य लाता है।'

'होम फार्म ! शीघ्र जाओ और मुझे मिलो। एक साईस से मेरा घोड़ा लाने के लिए कह देना। नहीं, चिन्ता न करो। मैं स्वयं ही अस्तबल जाऊँगा। समय बचेगा।'

पन्द्रह मिनट भी न हुए होंगे कि डोरियन यथासम्भव तीव्रगति से लम्बे सीधे मार्ग की ओर छलाँग मारता चला जा रहा था। भूतों के जुलूस के समान वृक्ष पीछे छूटते जा रहे थे और छायाएँ पथ पर फैलती जाती थीं। द्वार के एक श्वेत खंभे पर घोड़ी एक बार चक्कर खा गयी और उसे फेंक ही दिया होता। कोड़े की मूँठ से उसने गरदन पर मारा। तीर के

समान वह संध्याकालीन वायु को चीरने लगी। कंकड़ खुरों से उड़ने लगे।

अन्त में वह होम फार्म पहुंचा। दो आदमी वहाँ घूम रहे थे। वह जीन से कूद पड़ा और उनमें से एक पर लगाम फेंक दी। दूर के अस्तबल में प्रकाश जगमगा रहा था। उसे कुछ संकेत-सा मिला कि शव वहीं है, वह द्वार की ओर झपटा और सिटकनी पर हाथ रख दिया।

वहाँ क्षणभर यह सोचते हुए वह रुका कि उस खोज के निकट वह पहुँच गया है जो उसका जीवन बनायेगी अथवा मिटा देगी। फिर द्वार धकेला और अन्दर घुस गया।

दूर के कोने में, टाट के ढेर पर मैली कमीज और नीला पायजामा पहिने एक मानव-शव पड़ा था। दागदार एक रूमाल उसके मुख पर रखा हुआ था। बोतल में लगी हुई एक रद्दी मोमबत्ती उसके पास रखी टपक रही थी।

डोरियन ग्रे काँप गया। उसने अनुभव किया कि उसका हाथ रूमाल हटा न सकेगा, और फार्म के सेवकों में से एक को अपने पास बुलाया।

'इसे मुख से हटाओ। मैं इसे देखना चाहता हूँ।'—सहारे के लिए द्वार थामते हुए उसने कहा।

फार्म के सेवक ने जब वैसा कर दिया तो वह आगे बढ़ा। आनन्द-स्वर उसके अधरों से मुखरित हो उठा। सघन वन में मारा जानेवाला मनुष्य जेम्स वेन था।

शव को देखता हुआ वह कुछ मिनट तक वहीं खड़ा रहा। घर के लिए सवार होते समय उनकी आँखें अश्रुपूर्ण थीं, क्योंकि वह जानता था कि वह सुरक्षित है।

१६

'तुम्हारे इस कथन से कोई लाभ नहीं कि तुम अच्छे बनने जा रहे हो'—लार्ड हेनरी ने गुलाबजल से भरे हुए लाल ताँबे के प्याले में श्वेत अँगुलियाँ डुबाते हुए उच्च स्वर में कहा—'तुम बिलकुल ठीक हो। कृपया, बदलो नहीं।'

डोरियन ग्रे ने सिर हिलाया—'नहीं हेनरी, मैंने अपने जीवन में बहुत से बुरे काम किये हैं। अब और नहीं करूँगा। अच्छे कामों का

आरम्भ मैंने कल से कर दिया है।'

'कल तुम कहाँ थे ?'

'देहात में, हेनरी ! एक छोटी-सी सराय में मैं अकेला ही ठहरा था।'

'प्यारे बच्चे !'—लार्ड हेनरी ने मुस्कराते हुए कहा—'देहात में कोई भी अच्छा रह सकता है। वहाँ कोई प्रलोभन नहीं है। यही कारण है कि शहर से दूर रहनेवाले इतने असभ्य होते हैं। सभ्यता प्राप्त करना किसी भी प्रकार सरल नहीं है। मनुष्य इसे केवल दो मार्गों से प्राप्त कर सकता है। एक है संस्कृत होकर और दूसरा भ्रष्ट होकर। देहातियों के लिए इनमें से कोई भी होने का अवसर नहीं होता इसीलिए वे स्थिर रहते हैं।'

'संस्कृति और भ्रष्टता'—डोरियन ने दुहराया—'मैंने दोनों ही को कुछ-कुछ जाना है। अब इन दोनों का कभी भी साथ होना मुझे खटकता है क्योंकि मेरा नया आदर्श है, हेनरी ! मैं परिवर्तित होने जा रहा हूँ। सोचता हूँ मुझमें परिवर्तन हो चुका है।'

'तुमने मुझे अब तक नहीं बतलाया कि तुम्हारा वह अच्छा कृत्य क्या था, अथवा, क्या तुमने यह कहा कि तुमने अनेक अच्छे कृत्य किये हैं ?'—बीजदार स्ट्राबेरी के लाल टुकड़े को अपनी तश्तरी में लेते हुए तथा घोंघे के आकारवाली छेददार चम्मच से उनपर श्वेत शक्कर छिड़कते हुए उसके साथी ने पूछा।

'मैं तुम्हें बता सकता हूँ, हेनरी ! यह कहानी नहीं है जो मैं किसी को भी बता सकूँ। मैंने किसी को छोड़ दिया—यह कथन गर्वीला प्रतीत होता है, पर तुम मेरा अभिप्राय समझते हो। वह अत्यन्त सुन्दर थी और सिबिल वेन से उसका अद्भुत साम्य था। सोचता हूँ उसके प्रति मेरे आकर्षण का प्रथम कारण यही था। सिबिल की तुम्हें याद है, है न ? कितने दिनों की बात है ! खैर, निश्चय ही हेट्टी हमारे वर्ग की न थी। बस वह एक ग्रामबाला थी। किन्तु मैं उसे वास्तव में प्रेम करता था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं उसे प्रेम करता था। यह मई का अनोखा महीना जो हम बिता रहे हैं, इसमें मैं सप्ताह में दो या तीन बार मिलने के लिए जाया करता था। कल वह मुझे एक छोटे-से कुंज में मिली।

सेव के फूल उसके बालों पर लुढ़कते रहे और वह हँसती रही। आज सुबह हम दोनों साथ-साथ चले जाने वाले थे, अचानक ही, फूल के समान जैसी वह मुझे मिली थी वैसी ही छोड़ने का निश्चय कर लिया।'

'डोरियन, मेरे विचार में मनोभाव की नवीनता से तुममें वास्तविक आनन्द का स्पन्दन अवश्य हुआ होगा,'—लार्ड हेनरी ने टोका—'किन्तु ग्राम्य जीवन के वर्णन की तुम्हारी कविता को मै समाप्त कर दूँ। तुमने उसे अच्छी सलाह दी और उसका दिल तोड़ दिया। तुम्हारे सुधार का यही आरम्भ था।'

'हेनरी, तुम भयानक हो। ऐसी भयानक बातें तुम्हें नहीं कहनी चाहिए। हेट्टी का दिल टूटा नहीं है। निश्चय ही वह खूब रोयी-गायी, किन्तु उसपर कोई कलंक नहीं आया। अपनी गेंदे की बगिया में वह परडिटा के समान ही जीवन बिता सकती है।'

'और अविश्वासी फ्लोरिजल के लिए रो सकती है।'—हँसकर लार्ड हेनरी ने कुर्सी का सहारा लेते हुए कहा—'प्यारे डोरियन, तुम्हारी मनःस्थितियाँ बच्चों जैसी अत्यन्त विचित्र होती हैं। क्या तुम्हारे विचार में यह लड़की अब अपने ही वर्ग के किसी व्यक्ति के साथ संतुष्ट रह सकेगी? सोचता हूँ कि किसी दिन इसकी शादी एक कठोर गाड़ीवान अथवा खीसें निपोरनेवाले हलवाहे से हो जायगी। तुमसे मिलन और प्रेम की वास्तविकता इसे अपने पति को तुच्छ समझना सिखला देगी और यह दुखी रहेगी। कर्त्तव्य की नीति के दृष्टिकोण से मैं तुम्हारे इस महान् त्याग को महत्त्वपूर्ण समझने में असमर्थ हूँ। आरम्भ के लिए भी यह निम्नकोटि का है। इसके अतिरिक्त तुम यह कैसे जान सकते हो कि हेट्टी इस समय ओफेलिया के समान ही तारों से प्रकाशित रात में कुमुदिनियों से घिरी हुई किसी सरोवर में संतरण नहीं कर रही?'

'यह असह्य है, हेनरी! तुम प्रत्येक बात का मजाक उड़ाते हो और फिर अत्यन्त दुखपूर्ण बातों की ओर संकेत करते हो। खेद है कि मैंने तुम्हें अभी बतला दिया। तुम जो भी कहो मुझे उसकी चिन्ता नहीं। मैं जानता हूँ कि मैंने जो भी किया ठीक ही किया। बेचारी हेट्टी! आज सुबह घोड़े पर सवार जब मैं फार्म होकर निकला तो मैंने चमेली की

टहनी के समान उसका श्वेत मुख खिड़की पर देखा। इस विषय पर अब अधिक बात मत करो और मुझे यह समझाने का प्रयत्न मत करो कि वर्षों में जो मैंने पहिला अच्छा काम किया, जो थोड़ा-सा यह प्रथम त्याग किया, वास्तव में एक पाप ही है। मैं अच्छा होना चाहता हूँ। मैं अच्छा बनने जा रहा हूँ। अपने विषय में कुछ बतलाओ। शहर में क्या हो रहा है ? मैं बहुत दिनों से क्लब नहीं गया।'

'लोग अब भी बेचारे बेसिल के गायब होने के विषय में बातें कर रहे हैं।'

'मेरा विचार था कि अब तक वे इस विषय से ऊब चुके होंगे।'—कुछ शराब लेते हुए तथा तनिक भृकुटि चढ़ाते हुए डोरियन ने कहा।

'मेरे प्यारे, इस विषय में बातें करते हुए उन्हें अभी कुछ ही हफ्ते तो हुए हैं और ब्रिटिश जनता का मस्तिष्क तीन महीने में एक से अधिक विषय का भार वहन नहीं कर सकता है। यद्यपि, हाल ही में उसका भाग्य खुल गया है। उन्हें मेरे तलाक का किस्सा और एलन कैम्पबैल की आत्महत्या मिली है। अब उन्हें एक चित्रकार की रहस्यपूर्ण अनुपस्थिति मिली है। स्काटलैंड यार्ड का अब भी यही कहना है कि भूरा अल्स्टर पहिने हुए नौ नवम्बर को आधी रात की गाड़ी से पेरिस के लिए जानेवाला व्यक्ति बेचारा बेसिल ही था और फ्रांस की पुलिस घोषित करती है कि बेसिल फ्रांस में आया ही नहीं। मेरे विचार में लगभग पन्द्रह दिन बाद हमें बतलाया जायगा कि उसे सेनफ्रांसिस्को में देखा गया। यह विचित्र बात है, किन्तु जो कोई भी गायब होता है उसके विषय में यही कहा जाता है कि उसे सेनफ्रांसिस्को में देखा गया। अवश्य ही वह एक सुन्दर नगर होगा और दूसरी दुनिया के सभी आकर्षण वहाँ होंगे।'

'तुम्हारे विचार में बेसिल को क्या हुआ ?'—बर्गण्डी (शराब) को प्रकाश की ओर थामे हुए और स्वयं पर ही यह आश्चर्य करते हुए कि इस विषय में वह इतनी शान्ति से बातें कैसे कर सका, डोरियन ग्रे ने पूछा।

'मुझे कुछ भी ध्यान नहीं है। यदि बेसिल स्वयं को छिपाये रखना चाहता है तो मुझे इससे क्या ? यदि वह मर गया है तो उसके विषय में

मैं सोचना नहीं चाहता। मृत्यु ही एक अकेली ऐसी है जो मुझे डराती है। मैं इससे घृणा करता हूँ।'

'क्यों ?'—अल्पवयस्क ने श्रान्त भाव से पूछा।

'क्योंकि'—मुलम्मा की हुई जालीदार गन्धपूर्ण छोटी शीशी को नथुनों से लगाते हुए लार्ड हेनरी ने उत्तर दिया—'आजकल मनुष्य सिवाय उसके और सबका पार पा सकता है। उन्नीसवीं शताब्दी में मृत्यु और नीचता ये ही दो ऐसे सत्य हैं जिन्हें कहकर टाला नहीं जा सकता। डोरियन, हम लोग काफी संगीतकक्ष में पियें। तुम मुझे चापिन अवश्य सुनाओ। मेरी पत्नी जिस व्यक्ति के साथ भाग गयी वह चापिन बहुत अच्छा बजाता था। बेचारी विक्टोरिया ! मैं उसे बहुत चाहता था। घर उसके बिना सूना-सा है। निश्चय ही विवाहित जीवन एक आदत है, बहुत बुरी आदत। किन्तु मनुष्य को अपनी बुरी-से-बुरी आदतों के टूटने का भी दुख होता है। सम्भवतः अत्यधिक दुख होता है। मनुष्य के व्यक्तित्व की वे इतनी आवश्यक अंग होती हैं।'

डोरियन कुछ भी उत्तर न देकर मेज से उठा और दूसरे कमरे में जाकर प्यानो पर बैठ गया तथा हाथी-दाँत की श्वेत और श्याम स्वर-कुञ्जियों पर अँगुलियाँ चलाने लगा। काफी आ जाने पर वह रुका और लार्ड हेनरी की ओर देखते हुए कहा—'हेनरी, क्या तुम्हें कभी यह भी विचार हुआ कि बेसिल की हत्या कर दी गयी ?'

लार्ड हेनरी ने जँम्हाई ली—'बेसिल अत्यन्त लोकप्रिय था और सदैव वाटरबरी की घड़ी बाँधे रहता था। उसकी हत्या क्यों हुई होगी। शत्रु पैदा करनेवाली धूर्तता उसमें नहीं थी। निश्चय ही उसकी चित्रण-प्रतिभा अद्भुत थी। किन्तु विलासक्वेज के समान चित्रण-कला में पटु होने पर भी व्यक्ति अत्यन्त मूर्ख हो सकता है। उसने मुझे केवल एक बार आकर्षित किया और वह भी वर्षों पूर्व तब जब उसने मुझे बतलाया कि वह तुम्हारी ओर अत्यधिक आसक्त है और तुम उसकी कला की प्रमुख प्रेरणा हो।'

'बेसिल मुझे अत्यन्त प्रिय था'—वेदना-विह्वल स्वर में डोरियन ने कहा—'किन्तु क्या लोग यह नहीं कहते कि उसकी हत्या कर दी गयी ?'

'ओह, कुछ समाचार-पत्र कहते हैं। मुझे यह बिलकुल सम्भव प्रतीत

नहीं होता। मैं जानता हूँ कि पेरिस में अत्यन्त भयानक स्थान हैं पर बेसिल उन व्यक्तियों में नहीं था जो वहाँ जाता। वह कौतूहल-शून्य था। यही उसका सबसे बड़ा दोष था।"

'हेनरी, यदि मै यह कहूँ कि मैंने बेसिल की हत्या की थी, तो तुम क्या कहोगे ?'

'मेरे प्यारे साथी, मैं कहूँगा कि तुम उस चरित्र का रोब जमा रहे हो जो तुम्हारे अनुकूल नही है। जिस प्रकार सभी नीचता अपराध है उसी प्रकार सब अपराध नीचतापूर्ण हैं। हत्यारे का यह गुण तुममें नहीं है, डोरियन ! इस प्रकार कहकर मैंने तुम्हारे अहं पर जो आघात किया है उसके लिए मुझे खेद है, किन्तु मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि बात ऐसी ही है। अपराध केवल निम्नकोटि के व्यक्तियों से ही सम्बन्धित है। उन्हें मैं बिलकुल भी दोषी नही ठहराता। मेरे विचार में अपराध का उनके लिए वही महत्त्व है जो हमारे लिए कला का—केवल असाधारण हलचल प्राप्त करने का एक ढंग।'

'असाधारण हलचल प्राप्त करने का एक ढंग ? तब क्या तुम्हारा यह विचार है कि जिसने एक बार हत्या की हो वह वही अपराध फिर कर सकता है ?'

'ओह ! बार-बार करने पर मनुष्य किसी भी काम में आनन्द प्राप्त कर सकता है।'—लार्ड हेनरी ने हँसते हुए कहा—'यह बात जीवन के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहस्यों में से एक है। फिर भी मेरे विचार में हत्या सदैव ही एक भूल है। मनुष्य को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिसके विषय में वह भोजन के उपरान्त बात न कर सके। किन्तु, बेचारे बेसिल के विषय को छोड़ो। काश, मैं विश्वास कर सकता कि तुम्हारे कथनानुसार उसका अन्त ऐसा ही विचित्र हुआ है, पर मैं कर नहीं पाता। मैं कह सकता हूँ कि वह ओम्नी बस से सीन नदी में गिर पड़ा और कन्डक्टर ने उस चर्चा को दबा दिया। हाँ, मेरे विचार में उसका अन्त ऐसा ही हुआ। अब वह मुझे शान्त हरे जल में पीठ के बल पड़ा हुआ प्रतीत होता है जहाँ सामान लादनेवाली भारी नावें उसके ऊपर से निकल रही हैं और सेवार की घास उसके बालों में उलझी हुई है। जानते हो,

मेरे विचार में वह अब कोई और महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं करता। पिछले दस वर्षों में उसकी चित्रण-कला बहुत-कुछ गिर गयी थी।'

डोरियन ने गहरी साँस ली और लार्ड हेनरी कमरे में चलता हुआ जाकर जावा के विचित्र तोते का सिर छेड़ने लगा जो लाल चोटी और पूँछवाला बड़े भूरे पंखों का पक्षी बाँस की एक छतरी पर सधा हुआ बैठा था। उसकी नुकीली अँगुलियों ने जैसे ही उसे स्पर्श किया वैसे ही उसने अपनी झुर्रीदार पलकों की श्वेत रूखी पपड़ी शीशे जैसी काली आँखों पर गिरा ली और पीछे-आगे हटने बढ़ने लगा।

'हाँ,' घूमते और जेब से रूमाल निकालते हुए उसने पुनः क्रम जोड़ा—'उसकी चित्रण-कला बिलकुल गिर गयी थी। उसमें मुझे कुछ अभाव प्रतीत होने लगा था। उसका एक आदर्श खो गया था। जिस दिन से तुम्हारी और उनकी महान् मित्रता में व्यवधान पड़ा तभी से वह महान् चित्रकार न रहा। तुम किस कारण विमुख हो गये? मेरे विचार में तुम उससे ऊब उठे। यदि यही कारण था तो वह तुम्हें कभी क्षमा न कर सका। उबा डालनेवालों का स्वभाव ऐसा ही होता है। अच्छा, उसने तुम्हारा जो अद्भुत चित्र बनाया था उसका क्या हुआ? निर्माण के बाद से मैंने उसे नहीं देखा। ओह, कई वर्ष पूर्व का तुम्हारा कथन याद आया कि तुमने उसे सेल्बी भेजा था और वह राह में ही कहीं भटक गया अथवा चुरा लिया गया। तुम्हें वह वापिस नहीं मिला? कितने दुख की बात है। निश्चय ही वह एक उत्तम कृति थी। मुझे स्मरण है कि मैं उसे खरीद लेना चाहता था। काश, वह इस समय मेरे पास होता। वह बेसिल के सर्वोत्तम दिनों की कृति थी। तबसे उसकी कृतियाँ निकृष्ट चित्रण और सदुद्देश्य की ऐसी विचित्र मिश्रण थीं जिनके कारण एक व्यक्ति को प्रतिनिधि ब्रिटिश चित्रकार कहा जाता है। उसके लिए तुमने विज्ञापन किया था? तुम्हें करना चाहिए!'

'स्मरण नहीं,'—डोरियन ने कहा—'सोचता हूँ, किया था। किन्तु वह मुझे वास्तव में कभी पसन्द नहीं आया। खेद है कि मैं उसके लिए बैठा। उसकी स्मृति भी मेरे लिए घृणापूर्ण है। उसके विषय में तुम बात क्यों करते हो। उससे मुझे किसी नाटक की वे विचित्र पंक्तियाँ याद हो

आती थीं—सम्भवतः हेमलेट में, क्या हैं वे ?—

'शोक का चित्र-सा हृदय-हीन एक मुख'

'हाँ, वह ऐसा ही था।'

लार्ड हेनरी हँसा—'यदि मनुष्य जीवन का उपयोग कलात्मक ढंग से करता है तो उसका मस्तिष्क ही हृदय हो जाता है।'—आराम कुर्सी पर बैठते हुए उसने उत्तर दिया।

डोरियन ग्रे ने सिर हिलाया और प्यानो पर कुछ कोमल स्वर छेड़ दिया—'शोक का चित्र-सा'—उसने दुहराया—'हृदयहीन एक मुख।'

हेनरी सिरहाने का सहारा लेकर लेट गया और अधखुली आँखों से उसे देखने लगा—'अच्छा डोरियन,'—उसने कुछ ठहरकर कहा—'एक व्यक्ति को समस्त संसार प्राप्त कर लेने और खो बैठने से क्या लाभ, वह उद्धरण क्या है ?—'अपनी ही आत्मा ?'

संगीत गड़बड़ा गया, डोरियन ग्रे चौंका और अपने मित्र को घूरने लगा—'तुम यह क्यों पूछते हो, हेनरी ?'

'प्यारे साथी'—आश्चर्य में भौंहें उठाते हुए लार्ड हेनरी ने कहा—'तुमसे मैंने इसलिए पूछा कि मेरा विचार था कि तुम मुझे उत्तर दे सकोगे। बस। पिछले रविवार को मैं पार्क होकर जा रहा था और संगमरमर के घेरे के पास मैले दिखायी देनेवाले कुछ व्यक्तियों की भीड़ सड़कों पर फिरनेवाले एक उपदेशक के उपदेश को सुन रही थी। जैसे ही मैं पास से निकला, मैंने उसे दर्शकों से वह प्रश्न करते सुना। मुझे वह कुछ नाटकीय-सा प्रतीत हुआ। लन्दन इस प्रकार के विचित्र प्रभावों से सुसम्पन्न है। बरसता हुआ रविवार, बरसाती में छिपा एक अशोभन ईसाई, टपकटे हुए टूटे छातों के नीचे रोग-ग्रस्त-से मुखों की शृङ्खला और अधरों से तीखे, दौर में आये हुए-से शब्दों का उच्चारण—निश्चय ही अपने ढंग में अच्छा था कि कला के आत्मा होती है पर उसके नहीं थी। यद्यपि लगता है, कि वह मुझे समझ न पाता।'

'नहीं हेनरी, आत्मा एक भयानक सत्य है। इसका क्रय-विक्रय और परिवर्तन में लेन-देन हो सकता है, इसे विषाक्त अथवा परिपूर्ण किया जा सकता है। हम सबमें एक आत्मा है, मैं यह जानता हूँ।'

'क्या तुम्हें इसका पूर्ण विश्वास है, डोरियन ?'

'पूर्ण ।'

'आह ! तब यह निश्चय ही एक धोखा होगा । जिन वस्तुओं के विषय में मनुष्य पूर्णतया आश्वस्त होता है वे कभी भी वास्तविक नहीं होती । यही विश्वास का आघात और साहसपूर्ण असत्य की शिक्षा है । तुम कितने शान्त हो ! इतने गंभीर न बनो । अपने युग के मिथ्या विश्वासों से तुम्हें या मुझे क्या प्रयोजन ? नहीं; आत्मा में विश्वास करना हमने छोड़ दिया । मुझे कुछ सुनाओ ! डोरियन, स्वप्नमय संगीत सुनाओ और धीमे स्वरों में मुझे यह बतलाओ कि तुमने अपना यौवन स्थिर कैसे रखा । तुम्हारे पास इसका कोई भेद अवश्य होगा । तुमसे मैं केवल दस वर्ष बड़ा हूँ, किन्तु मेरे झुर्रियाँ पड़ गयी है, जर्जर हूँ और पीला पड़ गया हूँ । डोरियन, तुम निश्चय ही अद्भुत हो । इस रात तुम जितने आकर्षक लग रहे हो उतने पहिले कभी नहीं लगे । मुझे उस दिन की याद आ रही है जब तुम्हें पहिली बार देखा था । तुम्हारे गाल भरे हुए थे, तुम लजीले थे और थे एकदम अद्भुत । निश्चय ही तुममें परिवर्तन हुआ है, पर देखने में नहीं । मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम मुझे अपना भेद बतलाओ । अपना यौवन पुनः पाने के लिए मैं व्यायाम करने, प्रातः उठने अथवा आदरणीय बनने के अतिरिक्त संसार में सभी कुछ करने के लिए प्रस्तुत हूँ । यौवन ! इसके समान कुछ भी नहीं है । मुझसे कम आयुवाले ही एकमात्र वे व्यक्ति हैं जिनकी राय अब मैं आदरपूर्वक सुनता हूँ । वे ही मुझे अपने समक्ष प्रतीत होते हैं । जीवन अपनी नवीनतम विचित्रता के साथ उनमें प्रकट हुआ है । जहाँ तक वयस्क व्यक्तियों का प्रश्न है मैं उनका सदैव विरोध करता हूँ । ऐसा मैं सिद्धान्तवश करता हूँ । कल की किसी घटना पर यदि तुम उनकी राय पूछो तो वे सन् १८२० में प्रचलित विचार प्रकट करेंगे जब ऊँचे मोजे पहिने जाते थे, प्रत्येक बात में विश्वास किया जाता था और पूर्ण अज्ञान था । तुम जो ध्वनित कर रहे हो वह कितना प्यारा है । मुझे आश्चर्य होता है कि क्या चापिन ने गृह के चारों ओर चीत्कार करते सागर और खिड़कियों के शीशों से टकराती हुई खारी जल की बूँदों से युक्त मैजारका में इसे ही लिखा ? यह अत्यन्त

साहसमय है। हम कितने सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास एक अनुकरण-शून्य कला अवशेष है। रुको मत ! आज रात मैं संगीत ही चाहता हूँ। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तरुण अपोलो तुम्हीं हो और मैं मर्सियस हूँ जो तुम्हें सुन रहा हूँ। डोरियन, मेरे अपने दुख हैं जिनके विषय में तुम भी नहीं जानते। बुढ़ापे का दुख वार्द्धक्य नहीं, बल्कि तारुण्य है। कभी-कभी मुझे अपनी सच्चाई पर आश्चर्य होने लगता है। आह, डोरियन, तुम कितने सुखी हो ! तुम्हारा जीवन कितना सुन्दर रहा है। तुमने प्रत्येक अनुभव प्राप्त किया है। अंगूर तुमने अपने तालू से दबाये हैं। तुमसे कुछ भी नहीं छिपा है। और यह सब तुम्हारे लिए संगीत-स्वर से अधिक न रहा। इससे तुम्हारा कुछ भी न बिगड़ा। तुम अब भी वही हो।'

'मैं वही नहीं हूँ, हेनरी।'

'हाँ, तुम वही हो। मुझे आश्चर्य है कि तुम्हारा शेष जीवन कैसा होगा ? त्यागों द्वारा इसे नष्ट न करो। इस समय तुम सर्वगुण सम्पन्न हो। अपने को अपूर्ण मत करो। अभी तुम निष्कलंक हो। सिर हिलाने की आवश्यकता नहीं है, तुम जानते हो कि तुम ऐसे ही हो। इसके अतिरिक्त, डोरियन, आत्मप्रवंचन मत करो। जीवन इच्छा अथवा इरादों से शासित नहीं होता। जीवन स्नायुतंतुओं और क्रमशः निर्मित होने वाले शारीरिक अवयवों पर निर्भर होता है जहाँ विचार निवास करते हैं और उत्कट अभिलाषा के स्वप्न पलते हैं। तुम स्वयं को सुरक्षित कल्पित कर सकते हो और सुदृढ़ समझ सकते हो, किन्तु डोरियन, मैं तुम्हें बतलाये देता हूँ कि कमरे में अथवा प्रातःकालीन आकाश में अचानक ही परिवर्तित हो जानेवाले रंग, एक विशेष गंध जिसे तुमने बहुत पसन्द किया है और जिसके साथ भव्य स्मृतियाँ जुड़ी हों, भूली हुई कविता की एक पंक्ति जो पुनः प्राप्त हो गयी हो, संगीत की एक लय जो तुमने बजाना छोड़ दी हो—ऐसी ही बातों पर हमारा जीवन निर्भर होता है। ब्राउनिंग ने इस विषय में कहीं लिखा है किन्तु हमारे लिए हमारी इन्द्रियाँ ही उसकी कल्पना कर लेती हैं। ऐसे क्षण आते हैं जब कमल-गंध मेरा स्पर्श करता है और मेरे जीवन का अद्भुत समय मुझे फिर से प्राप्त हो जाता है।

काश, मैं तुमसे परिवर्तित हो सकता ! डोरियन, संसार हम दोनों के विरुद्ध चिल्लाया है पर तुम्हारी सदैव पूजा की है। वह सदैव ही तुम्हें पूजेगा। तुम वह नमूने हो यह युग जिसकी खोज कर रहा है और भयभीत है कि पा लिया है। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि तुमने कोई रचना नहीं की —मूर्ति निर्माण नहीं की, चित्र चित्रित नहीं किये, अपने से बाहर कुछ भी नहीं बनाया ! जीवन ही तुम्हारी कला रहा है। तुमने संगीत से सम्बन्ध जोड़ा, तुम्हारे दिन ही तुम्हारे धन्य हैं।'

डोरियन प्यानो से उठ बैठा और बालों पर हाथ फेरा। 'हाँ, जीवन सुन्दर रहा है'—उसने धीमे स्वर में कहा—"किन्तु हेनरी, मैं वही जीवन नहीं चाहता। और तुम इस प्रकार की अनावश्यक बातें मुझसे मत कहो। मेरे विषय में तुम सब कुछ नहीं जानते। मेरे विचार में यदि तुम जानते होते तो तुम भी मुझे पीठ दिखा देते। तुम हँसते हो, हँसो मत !'

'तुमने संगीत क्यों बन्द कर दिया, डोरियन ? जाओ, मुझे रात्रि-गीत पुनः सुनाओ, झुटपुटे वातावरण में लटकते-से मधु के रंग के उस चाँद को देखो। वह प्रतीक्षा में है कि तुम उसे मोहित करो और सुनाने पर वह पृथ्वी के अधिक निकट आ जायगा। नहीं सुनाओगे ? तब चलो, हम क्लब चलें। यह संध्या मनोहर रही, इसका अन्त भी मनोहर होना चाहिए। वहाँ, 'व्हाइट हाउस' में एक व्यक्ति है जो तुम्हारा परिचय पाने के लिए अत्यन्त उत्सुक है—तरुण लार्ड पूल, बोर्नमाउथ का सबसे बड़ा लड़का। तुम्हारी नेकटाई का अनुकरण तो वह कर भी चुका है और मुझसे निवेदन किया है कि तुमसे उसका परिचय कराऊँ। उसे देखकर चित्त अत्यन्त प्रसन्न होता है और तुम्हारी याद दिलाता है।'

'मुझे आशा नहीं है,'—वेदनापूर्ण दृष्टि से डोरियन ने कहा—'किन्तु आज मैं थका हुआ हूँ, हेनरी ! मैं क्लब नहीं जाऊँगा। लगभग ग्यारह बजा है और मैं जल्दी ही सो जाना चाहता हूँ।'

'अभी ठहरो। आज जैसा अच्छा तुमने पहिले कभी नहीं बजाया। तुम्हारा स्पर्श ही कुछ अद्भुत था। ऐसी अभिव्यक्ति मैंने पहिले कभी नहीं सुनी।'

'इसका कारण यही है कि मैं अच्छा बनने जा रहा हूँ।'—मुस्कराते

हुए उसने उत्तर दिया—'मुझमें कुछ परिवर्तन तो हो भी चुका है।'

'तुम मेरे लिए परिवर्तित नहीं हो सकते, डोरियन!'—लार्ड हेनरी ने कहा—'तुम और मैं सदैव ही मित्र रहेंगे।'

'फिर भी, एक बार, एक पुस्तक द्वारा तुमने मुझमें विष घोला था। उसे मैं क्षमा नहीं कर सकता। हेनरी, वचन दो कि तुम वह पुस्तक किसी को न दोगे। वह हानिकारक है।'

''प्यारे, वास्तव में तुममें नैतिक सुधार का आरम्भ हो गया है। शीघ्र ही तुम परिवर्तित और पुनरुद्धारित होकर उन सभी पापों से लोगों को सचेत करते फिरोगे जिनसे तुम स्वयं ऊब चुके हो। अरे, तुम तो वैसा करने की अपेक्षा कहीं अधिक प्रसन्न हो। इसके अतिरिक्त इसमें कोई लाभ भी नहीं है। तुम और मैं जो हैं वह हैं और जो होंगे वही होंगे। जहाँ तक पुस्तक द्वारा विपाक्त होने का प्रश्न है वैसी कोई बात नहीं है। कला का कर्म पर कोई प्रभाव नहीं होता। इससे कर्म करने की इच्छा होती है। यह पूर्णतया अनुत्पादक है। संसार जिन पुस्तकों को अनैतिक कहता है। वे उसी की लज्जा का उद्घाटन करती हैं। बस। किन्तु हम साहित्य पर विवाद नहीं करेंगे। कल आओ। ग्यारह बजे मैं घुड़सवारी को जाऊँगा। हम लोग साथ ही जा सकेंगे और तदुपरान्त मैं तुम्हें लेडी ब्रेंकसम के साथ भोजन करने ले चलूँगा। वह एक आकर्षक स्त्री है और कुछ कामदार पर्दे जो वह खरीदने का विचार कर रही है, उनके विषय में तुम्हारी राय लेना चाहती है। आने का ध्यान रहे। अथवा हमारी डचेज के साथ भोजन करोगे? उसका कहना है कि अब वह तुम्हें देख ही नहीं पाती। सम्भवतः तुम ग्लेडीज़ से ऊब उठे हो। मेरा विचार था कि तुम ऊब जाओगे। उसकी चतुर जिह्वा परेशान कर डालती है। अच्छा, प्रत्येक दशा में तुम्हें ग्यारह बजे आ जाना है।'

'क्या मुझे वास्तव में आना होगा, हेनरी?'

'निश्चय ही, पार्क अब अत्यन्त मनोहर हो गया है। मेरे विचार में हमारे मिलन के वर्ष से अब तक इतने अच्छे कमल नहीं हुए।'

'बहुत अच्छा, मैं ग्यारह बजे आ जाऊँगा।'—डोरियन ने कहा—'हेनरी, नमस्कार।'

द्वार तक जाने पर वह एक क्षण झिझका, जैसे उसे कुछ और कहना हो। फिर उसने निश्श्वास खींचा और चला गया।

२०

प्यारी रात थी, इतनी गर्म कि कोट को उसने बाँह पर डाल लिया और गले पर सिल्क का रूमाल तक न लपेटा। सिगरेट पीता और चहलकदमी करता हुआ जब वह घर की ओर चला जा रहा था, संध्याकालीन वस्त्र पहिने दो तरुण उसके पास से निकले। उसने एक को दूसरे से धीमे स्वर में कहते सुना—'वह डोरियन ग्रे है।' उसे याद आया कि जब उसकी ओर संकेत किया जाता था, घूरा जाता था या उसके विषय में बातें की जाती थीं तो उसे कितनी प्रसन्नता होती थी। पिछले कुछ दिनों से जिस ओर से गाँव में वह प्रायः आता था उसका आधा आकर्षण यही था कि उसे कोई जानता न था। जिस लड़की के प्रेम को उसने आकर्षित किया था उसे उसने प्रायः बताया था कि वह निर्धन है और उसने विश्वास कर लिया था। उसे उसने एक बार बताया था कि वह दुष्ट है, वह हँस पड़ी थी और कहा था कि दुष्ट व्यक्ति सदैव ही वयस्क और अत्यन्त कुरूप होते हैं। उसका हास्य कैसा हास्य था, जैसे एक चिड़िया गा रही हो। अपने सूती वस्त्रों तथा बड़ी टोपी में वह कितनी सुन्दर लगती थी। वह अबोध थी पर उसमें वह सभी कुछ था जिससे वह हाथ धो बैठा था।

घर पहुँचने पर उसने सेवक को प्रतीक्षा करते पाया। उसने उसे सोने के लिए भेज दिया, स्वयं पुस्तकालय के सोफा पर लुढ़क गया और लार्ड हेनरी ने उससे जो कुछ कहा था उन्हीं में से कुछ बातों पर विचार करने लगा।

क्या यह वास्तव में सत्य है कि परिवर्तित नहीं हुआ जा सकता? अपने बचपन की निष्कलुष पवित्रता के लिए वह अत्यन्त उत्सुक था—अपने गुलाब जैसे शुभ्र बचपन के लिए, जैसा कि लार्ड हेनरी ने एक बार कहा था। वह जानता था कि उसने अपने आपको मलिन कर डाला है, मस्तिष्क को दूषित विचारों से भर लिया है और कल्पना को भयानकता दे दी है; कि दूसरों पर उसका प्रभाव बुरा पड़ता है और इसके लिए उसने अतीव प्रसन्नता का अनुभव किया है; कि जो भी प्राणी उसके सामीप्य में आये उनमें से सबसे अच्छों और होनहारों को ही उसने लज्जास्पद बनाया। किन्तु

क्या यह सब शोधनातीत था ? क्या उसके लिए कोई आशा नहीं ?

आह ! गर्व और अभिलाषा के किस विनाशक क्षण में उसने प्रार्थना की थी कि उसका चित्र उसके जीवन का भार वहन करे और वह तारुण्य की निष्कलुष शोभा बनाये रखे। उसकी समस्त असफलता का कारण वही थी। उसके लिए यह अच्छा ही था कि उसका प्रत्येक पाप अपने साथ निश्चित और तुरत दंड लेकर आया। दंड से ही पवित्रता आती है। अत्यन्त न्यायी भगवान् से मनुष्य की प्रार्थना, 'हमारे पापों को क्षमा करो' नहीं बल्कि 'हमारी दुष्टताओं के लिए हमें मारो' होनी चाहिए।

कई वर्ष पूर्व लार्ड हेनरी का दिया हुआ, विचित्र आकार का बना दर्पण मेज पर रखा हुआ और उसके आसपास श्वेत पिंडलियों के कामदेव पूर्ववत् हँस रहे थे। उस भयंकर रात के समान ही जब उसने घातक चित्र में प्रथम बार परिवर्तन देखा था और आवेगपूर्ण आँसू से भरी हुई आँखों से इस पालिश किये हुए दर्पण में झाँका था, उसे उठा लिया। एक बार किसीने उसके प्रति घोर रूप से आसक्त होकर एक प्रमादपूर्ण पत्र लिखा था जिसका अन्त इन भक्तिपूर्ण शब्दों में हुआ था—'संसार परिवर्तित हो गया है, क्योंकि तुम्हारा निर्माण हाथी दाँत और स्वर्ण से हुआ है। तुम्हारे अधरों की भंगिमाएँ नया इतिहास लिखती हैं।' वाक्यांश उसे स्मरण आ गये और वह स्वयं ही उन्हें बारंबार दुहराने लगा। फिर उसे अपने ही सौन्दर्य से घृणा हुई और दर्पण को पृथिवी पर पटककर, एड़ी से कुचलकर उसने रुपहले टुकड़े कर डाले। यह उसका सौन्दर्य ही था जिसने उसका विनाश कर डाला था, उसका सौन्दर्य और तारुण्य जिनके लिए उसने प्रार्थना की थी। इन दोनों के न होने पर उसका जीवन निष्कलुष होता। सौन्दर्य तो उसके लिए केवल एक आवरण था और तारुण्य एक विद्रूप। तारुण्य आखिर क्या था ? एक हरा, अपरिपक्व समय, अगंभीर मनस्थितियों और रुग्ण विचारों का समय। उसकी वेशभूषा उसने क्यों धारण की ? तारुण्य ने उसे नष्ट कर डाला था।

अतीत का सोच न करना ही अच्छा ! उसका परिवर्तन सम्भव नहीं। उसे अपने और अपने भविष्य के विषय में विचार करना है। जेम्स वेन सेल्बी चर्च यार्ड की बेनाम कब्र में दफनाया हुआ है। एलन कैम्पबेल

ने प्रयोगशाला में अपने आपको गोली मार ली पर उस भेद को प्रकट न किया जिसे उसने बरबस जाना था। बेसिल हावर्ड के गायब होने पर भी जो कुछ सनसनी है शीघ्र ही शान्त हो जायेगी। समाप्त हो रही है। वह पूर्णतया सुरक्षित है। बेसिल हावर्ड की मृत्यु की भी उसे चिन्ता नहीं है। उसे तो अपनी ही आत्मा की जीवित मृत्यु परेशान कर रही है। बेसिल ने जो चित्र बनाया था उसने उसका जीवन ही नष्ट करा दिया। उसके लिए वह उसे क्षमा नहीं कर सकता। चित्र ने ही सब कुछ किया। बेसिल ने उसे ऐसी बातें कही थीं जो असह्य थी और उसने फिर भी धैर्य के साथ सहन कीं। हत्या तो क्षण भर का पागलपन थी। जहाँ तक एलन कैम्पबेल का प्रश्न है, उसने स्वयं ही आत्महत्या की। उसने ऐसा ही करना चाहा। उसका इससे कोई सम्बन्ध नहीं।

एक नया जीवन। यही वह चाहता है। इसी की वह प्रतीक्षा कर रहा है। निश्चय ही उसने इसका आरम्भ कर दिया है। कैसे भी हो, एक अबोध को उसने छोड़ ही दिया। अबोध को वह कभी न लुभायेगा। वह अच्छा बनेगा।

हेट्टी मेर्टन के विषय में विचार आने पर उसे कौतूहल हुआ कि क्या बन्द कमरे का चित्र परिवर्तित हो गया है ? निश्चय ही वह अब पूर्ववत् भयानक न होगा ? सम्भवतः जीवन के निष्कलुष होने पर दुरभिलाषा के प्रत्येक चिह्न को मुख से दूर कर सकेगा। बुरे चिह्न सम्भवतः मिट भी चुके हैं। वह जायगा और देखेगा।

उसने मेज से लैम्प उठाया और जीने पर चढ़ गया। द्वार खोलते समय उसके विचित्र रूप से तरुण दिखायी देने वाले मुख पर प्रसन्नता की मुस्कराहट आयी और क्षणभर उसके अधरों पर ठहरी। हाँ, वह अच्छा बनेगा और जो भयानक वस्तु उसने छिपा रखी है अब उसे आतंकित न करेगी। उसे लगा कि भार उसपर से उठ चुका है।

जैसी उसकी आदत थी, अपने पीछे किवाड़ बन्द करके वह चुपके से अन्दर गया और चित्र पर टँगे लाल पर्दे को खींच दिया। पीड़ा और अतिक्रोध का चीत्कार फूट पड़ा। नेत्रों में धूर्त की दृष्टि और मुख पर कपटी की भंगिमा के अतिरिक्त उसे और कोई परिवर्तन दृष्टिगोचर न

हुआ। चित्र अब भी घृणापूर्ण था—सम्भवतः पहिले से अधिक घृणापूर्ण—और हाथ पर पड़ी हुई लाल बूँद अधिक चमकदार तथा हाल ही में गिरे रक्त जैसी थी। तब वह काँप उठा। क्या यह उसका अहंभाव ही था जिसने उससे एक अच्छा कृत्य कराया? अथवा एक नयी अनुभूति की इच्छा, जैसा कि मजाक उड़ाते हुए हास्य द्वारा लार्ड हेनरी ने संकेत किया था? अथवा अभिनय करने की वह उत्कट अभिलाषा जो हमसे अपनी अपेक्षा अच्छे कृत्य करा लेती है? अथवा, सम्भवतः ये सभी? और यह लाल बूँद बड़ी क्यों हो गयी थी? एक भयानक रोग के समान यह झुरी भरे हाथ पर फैल गयी थी। चित्रित पैरों पर भी रक्त था, मानो टपका हो—जिस हाथ ने चाकू न पकड़ा था उस पर रक्त! स्वीकार? क्या इसका यह अर्थ है कि वह स्वीकार करे? आत्मसमर्पण कर दे और मौत के घाट उतार दिया जाय? वह हँसा। उसने अनुभव किया कि वह विचार भयानक था। इसके अतिरिक्त, यदि वह स्वीकार भी करे तो उस पर कौन विश्वास करेगा? जिसकी हत्या की गयी उसका कोई भी चिह्न कहीं भी न था। उसकी सभी वस्तुएँ नष्ट की जा चुकी थीं। नीचे जो कुछ था उसने स्वयं ही जला दिया था। दुनिया यही कहेगी कि वह पागल हो गया है। अपनी बात पर यदि वह अड़ा रहा तो बन्द कर दिया जायगा··· फिर भी स्वीकार कर लेना, जनता के सामने लज्जित होना और जनता के ही सामने शान्ति प्राप्त करना उसका कर्तव्य है। ईश्वर चाहता है कि मनुष्य संसार में और स्वर्ग में भी अपने पापों को बतलाये। जब तक वह अपना पाप नहीं सुनायेगा कोई भी उपाय उसे पवित्र नहीं कर सकता। उसका पाप? उसने कंधे उचकाये। बेसिल हावर्ड की मृत्यु उसे नगण्य प्रतीत हुई। वह हेट्टी मेर्टन के विषय में सोच रहा था क्योंकि यह दर्पण ठीक नहीं था, उसकी आत्मा का दर्पण जिसे वह देख रहा था। अहा! कौतूहल! पाखंड! उसके त्याग में क्या इससे अधिक कुछ भी नहीं था? कुछ और भी था। कम से कम उसका विचार ऐसा ही था। किन्तु कौन कह सकता था?···नहीं। और कुछ नहीं था। अहं के कारण ही उसने उसे छोड़ा था। कपट के लिए ही उसने सज्जनता का आवरण डाल

रखा था। कौतूहल के लिए ही उसने आत्मत्याग किया था। अब उसकी समझ में आया।

किन्तु यह हत्या—क्या यह जीवनभर उसके पीछे लगी रहेगी ? क्या वह अतीत के बोझ से सदैव ही दबा रहेगा ? क्या उसे वास्तव में स्वीकार करना होगा ? कदापि नहीं। उसके विरुद्ध केवल एक ही प्रमाण है। स्वयं चित्र—यही प्रमाण है। वह इसे नष्ट कर देगा अब तक वह इसे क्यों रखे रहा ? कभी वह इसे परिवर्तित और जर्जर देखकर प्रसन्न होता था। इधर कुछ दिनों से उसे कोई प्रसन्नता नहीं हुई। इसने उसे रात्रि-जागरण कराया ! कहीं चले जाने पर उसे यह भय बना रहता था कि कहीं किसी अन्य की दृष्टि इस पर न पड़ जाय। इसने उसकी अभिलाषाओं को दुख से पूर्ण कर दिया था। इसकी स्मृतिमात्र ने आनन्द के अनेक क्षणों को विनष्ट कर डाला था। यह उसके अन्तःकरण जैसा हो गया था। हाँ, वह उसका अन्तःकरण था। वह इसे नष्ट कर देगा।

उसने चारों ओर दृष्टि डाली और वही चाकू देखा जिससे बेसिल ह्वार्ड की हत्या हुई थी। उसने इसे अनेक बार साफ किया था, जब तक कि उस पर कोई चिह्न न रह गया। यह चमकता और दमकता हुआ था। जिस प्रकार इससे चित्रकार की हत्या हुई थी उसी प्रकार उसकी कृति और जो भी इसका अर्थ हो, को भी विनष्ट किया जायगा। अतीत को यह समाप्त कर देगा और इसका अन्त होने पर वह मुक्त हो जायगा। इस भयानक आत्मिक जीवन का यह अन्त कर देगा और इसकी अप्रिय चेतावनियों के अभाव में वह शान्ति प्राप्त करेगा। उसने इसे उठाया और चित्र पर आघात कर दिया।

एक चीत्कार और चरचराहट सुनायी दी। दुखभरा चीत्कार इतना भयानक था कि डरे हुए सेवक उठकर अपनी कोठरियों से बाहर निकल आये। दो सज्जन जो नीचे; स्क्वायर से जा रहे थे, रुक गये और ऊपर विशाल अट्टालिका को देखने लगे। वे तब तक चले जब तक उन्हें एक पुलिसमैन न मिला और उसे वे ले आये। उसने कई बार घंटी बजायी पर कोई उत्तर न मिला। ऊपर की खिड़की में ही प्रकाश था उसके अतिरिक्त सभी घर अन्धकारपूर्ण था। कुछ देर बाद वह चला गया और

पास के बरामदे से जाकर देखने लगा।

'कान्स्टेबल, यह किसका मकान है ?'—दोनों सज्जनों में से वयस्क ने पूछा।

'मिस्टर डोरियन ग्रे का, महाशय !'—पुलिसमैन ने उत्तर दिया।

चलते हुए उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और दाँत निपोरे। उनमें से एक सर हेनरी एशटन का चचा था।

अन्दर, सेवकों के वासस्थान में अर्धनग्न प्राणी धीमे स्वरों में एक दूसरे से फुसफुसा रहे थे। वृद्धा मिसेज लीफ चिल्ला रही थी और हाथ मरोड़ रही थी। फ्राँसिस मृत्यु के समान पीला पड़ गया था।

लगभग चौथाई घंटे बाद वह कोचवान और गाड़ी के साथ दौड़नेवाले एक सेवक को लेकर जीने पर चढ़ा। उन्होंने दरवाजा खटखटाया पर कोई उत्तर न मिला। उन्होंने पुकारा। सब शान्त था। अन्त में, द्वार को धकेलकर खोलने की व्यर्थ चेष्टा के बाद वे छत पर चढ़ गये और छज्जे पर कूद पड़े। खिड़कियाँ सरलता से खुल गयीं, उनकी चटखनियाँ जर्जर थीं।

प्रवेश करने पर, अद्भुत तारुण्य और सौन्दर्य से युक्त अपने स्वामी (जैसा की उन्होंने उसे देखा था) के भव्य चित्र को दीवाल पर लटकता पाया। फर्श पर संध्याकालीन वस्त्र पहिने, हृदय में चाकू घुसेड़े एक मृत व्यक्ति पड़ा हुआ था। उसका मुख मुर्झाया हुआ, झुर्रीदार और घृणापूर्ण था। जब तक अंगूठियाँ न देख लीं वे पहिचान न सके कि वह कौन है।